राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और मीडिया

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और मीडिया

डॉ॰ प्रेरणा चतुर्वेदी

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला –171005

प्रथम संस्करण 2025

© भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला

सर्वाधिकार सुरक्षित

ISBN: 978-81-978281-2-6

प्रकाशक
सचिव
भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला 171005

टाईपसेट
सांई ग्राफिक डिज़ाईन, नई दिल्ली

मुद्रक
एक्सेल प्रिंटिंग युनिवर्स, नई दिल्ली

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय	राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की पूर्व पीठिका	1
द्वितीय अध्याय	मीडिया की अवधारणा	32
तृतीय अध्याय	राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं जनसंचार माध्यम	63
चतुर्थ अध्याय	हिन्दुस्थान समाचार का प्रारंभ	95
पंचम अध्याय	विश्व संवाद केंद्र	148
षष्ठ अध्याय	राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर उपलब्ध साहित्य	174
सप्तम अध्याय	सूचना संप्रेषण के आधुनिक विकल्प और संघ	253
अष्टम अध्याय	राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के साहित्य एवं साहित्यकार	268
नवम अध्याय	उपसंहार	280
	संदर्भ ग्रंथ सूची	301
	परिशिष्ट	309

प्रथम अध्याय

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की पूर्व पीठिका

विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से श्रेष्ठ भारतीय संस्कृति है। इसकी श्रेष्ठता का मूल कारण ही विविधता में एकता से है। कबीर के शब्दों में यह मरजीवा, तांत्रिकों के शब्दों में छिन्नमस्ता, वैष्णव भक्तों के शब्दों में 'दरददीवानी' व गीता के शब्दों में ब्रह्मकवि है। यह मूल से भी उखड़कर कभी खत्म नहीं हो सकती, क्योंकि इसमें जीने की अदम्य आकांक्षा है। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः', 'एकं सद्विप्रा बहुधा बदन्तिस्म' और 'वसुधैव कुटुम्बकम' इसी भारतीय संस्कृति के आधार स्तम्भ है। जिसमें संपूर्ण विश्व को अपने में समाहित करने की अपार शक्ति, सामर्थ्य है। यह 'मैं नहीं तू ही' तथा 'मैं नही हम में' विश्वास करने वाली संस्कृति है और आज इसी भारतीय संस्कृति का प्रमुख संवाहक '**राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ**' है। बयानबाजी, व्यर्थ प्रचार और नाम सम्मान प्राप्ति की इच्छा से विलग संघ और उसके स्वयंसेवक प्रतिकूल परिस्थितियों में भी सांस्कृतिक संक्रमण के बीच अपनी राष्ट्रभक्ति की लौ जलाये हुए है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एक निष्काम कर्म आंदोलन है। जिसके संगठन का आधार सक्षम, स्थायी, आत्मनिर्भर तथा कालजयी राष्ट्र है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एक निष्काम कर्म आंदोलन है। भारत अपने देश में राष्ट्रीयता हेतु सभी आवश्यक तत्वों की पूर्ति हिंदू समाज के जीवन में हो जाती है। अत हिंदू समाज का जीवन ही राष्ट्रीय जीवन है अर्थात हिंदुत्व ही राष्ट्रीयत्व है। व्यवहारिक रूप से राष्ट्रीय, भारतीय तथा हिंदू शब्द पर्यायवाची हैं।

जो स्वयं की प्रेरणा से बिना किसी प्रतिफल या पुरस्कार की इच्छा के अनुशासनपूर्वक, निर्धारित पद्धति से निरंतर योजनाबद्ध रूप से मातृभूमि की सेवा करे वह 'स्वयंसेवक' है।

'संघ' का शाब्दिक अर्थ संगठन या समुदाय होता है। समान विचार वाले, समान लक्ष्य को समर्पित, परस्पर आत्मीय भाव वाले व्यक्तियों के निकट आने से संगठन बनता है।

संघ स्थापना पूर्व सामाजिक और राजनीतिक परिदृश्य-

भारत के समाज जीवन का समुन्नत बनाने और नवोन्मेश करने के लिए समय समय पर ऋषि मुनियों का पदार्पण हुआ है। जब-जब समाज में विकृतियां आई और समाज विघटित हुआ। तब-तब महापुरूषों ने समाज का मार्गदर्शन किया। भारतीय समाज का संगठन कर नई दिशा देने में आचार्य चाणक्य, निबंकाचार्य, वल्लभाचार्य, रामानंदाचार्य, संत कबीर, गुरू नानक देव, गुरू तेग बहादुर, जगत गुरू शंकराचार्य, शिवाजी महाराज तथा महाराणा प्रताप के नाम उल्लेखनीय हैं।

मुगलों और अंग्रेजों के आक्रमण बाद हिन्दू समाज स्वयं को अत्यंत दुखी और निर्बल प्रतीत कर रहा था। क्योंकि उस समय ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न की जा रही थी कि भारतीय समाज एकजुट न हो सके। ऐसे सबसे बड़ी आवश्यकता थी समाज के संगठन की। जो विभिन्न जाति उपजाति में बंटकर अपनी क्षमता और कौशल से अनभिज्ञ होता जा रहा था। जो समाज में मैकाले की शिक्षा नीति पाश्चात्य विद्वानों और शासकों द्वारा दिखाई गई दृष्टि से अपने देश को कमतर आंकने लगा था। उस समाज को उस गौरवशाली अतीत का स्मरण कराते हुए उस वर्तमान में सशक्त बनाना था ताकि वह भविष्य में आने वाली कठिनाईयों का सामना निर्भयता से कर सके।

इसी विचार को ध्यान में रखते हुए डॉ॰ केशव बलिराम हेडगेवार ने एक सशक्त, समृद्ध, तपस्वी, राष्ट्रप्रथम भावना वाले संगठन के निर्माण का विचार किया। इस विचार को एकदृढ़ संकल्प में बदलने के लिए यह प्रमुख घटनाएं भी उत्तरदायी रहीं। जो इस प्रकार है-

1. खिलाफत-

खिलाफत (मार्च 1919-जनवरी 1921) तक प्रभावकारी था। खिलाफत आंदोलन का मुख्य उद्देश्य तुर्की खलीफा के पद को पुनः स्थापित करना तथा वहां के धार्मिक क्षेत्रों से प्रतिबंधों का हटाना था। सन् 1919 में अली बंधुओं द्वारा 'अखिल भारतीय खिलाफत कमेटी' का गठन किया गया। ज्ञातव्य है कि महात्मा गाँधी, शौकत अली मौलाना अब्दुल कलाम आजाद जैसा नेताओं का सहयोग इस आन्दोलन को प्राप्त था।

खिलाफत (मार्च 1919 जनवरी 1921) तक प्रभावकारी था। प्रायः आंदोलन जनता के द्वारा, जनता के हित के लिए होता है। जबकि खिलाफत का स्वरूप गांधी ने एक वर्ग को संतुष्ट करने के लिए किया। जबकि उस समय कांग्रेस के भी अनेक नेता इसके खिलाफ थे।

इसका नेतृत्व प्रमुख रूप से महात्मा गांधी, अब्दुल कलाम आजाद, हसरत मोहानी तथा मोहम्मद अली जिन्ना ने किया। डॉ. साहब का मानना था कि इस आंदोलन से स्वराज्य प्राप्ति का कोई संबंध नहीं है।[1] वे इसे 'अखिल आफत' ही कहते थे।[2] खिलाफत आंदोलन का मुख्य उददेश्य तुर्की खलीफा के पद को पुन:स्थापित करना तथा वहां के धार्मिक क्षेत्रों से प्रतिबंधों को हटाना था। सन् 1919 में अली बंधुओं द्वारा अखिल भारतीय खिलाफत कमेटी का गठन किया।

महात्मा गांधी के प्रभाव से खिलाफत आंदोलन एवं असहयोग आंदोलन एकरूप हो गये। खिलाफत आंदोलन को समर्थन देने के विषय में महात्मा गांधी का विचार था कि-'यदि मुसलमान चाहते हैं कि उनके पवित्र स्थलों पर खलीफा की हुकूमत रहनी चाहिए और उनकी मांगों को अस्वीकार किया जाय तथा उसके फलस्वरूप अशांति फैले तो उसमें मुसलमानों का दोष नहीं, बल्कि सरकार का दोष माना जायेगा। जिस बात से सात करोड़ मुसलमानों का दिल दुखी होता है, उससे हिन्दुओं को भी चोट पहुंचनी ही चाहिए।[3]

2. मोपला जनसंहार-

20 अगस्त सन् 1921 में दक्षिण मालाबार (केरल) में मोपला विद्रोह फैल गया जिसने साम्प्रदायिकता का रूप धारण कर हजारों निर्दोष हिन्दुओं के प्राण हर लिये। दक्षिण मालाबार में केरल राज्य के मुसलमान पट्टेदार तथा खेतिहर थे जो पहले हिन्दूओं की निम्न जाति से संबंधित थे। इनको मोपला कहा जाता था। ये हिन्दू जमींदारों के बंधुआ मजदूर थे।[4]

इस विद्रोह के फलस्वरूप निहत्थे हिन्दू परिवारों को मुसलमान विद्रोहियों के क्रोध का शिकार बनना पड़ा।[5]

ज्ञातव्य है कि महात्मा गांधी, शौकत अली, मौलाना अब्दुल कलाम आजाद जैसे नेताओं का सहयोग इस खिलाफत को प्राप्त था।

खिलाफत आंदोलन का भाग कहकर मालाबार के मोपलाओं ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध आंदोलन करते समय हिन्दुओं पर हमले किये। जिसमें पंद्रह सौ हिन्दू मारे गये। बीस हजार हिन्दुओं का बलात् धर्मान्तरण हुआ और उस समय के अनुमान के अनुसार लगभग तीन करोड़ की सम्पत्ति का नुकसान किया गया। किंतु इस हृदयविदारक हिंसाचार पर महात्मा गांधी ने प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि-शूरवीर मोपला, उन्हें जो धर्मप्रतीत होता है, उसके लिए वह धार्मिक प्रतीत होने वाली पद्धति से लड़े।[6]

ज्ञातव्य है कि पहली बार खुले तौर पर मुसलमानों द्वारा हिन्दुओं पर हिंसा की

गयी। यह मोपला जनसंहार इतिहास में मुस्लिम कट्टरपंथियों के द्वारा की गयी अपार जनधन हानि का उदाहरण बनकर दर्ज हो गया।

मालाबार के धार्मिक दंगों की धमक अन्य राज्यों तक जा पहुंची थी। इसका उल्लेख पट्टाभि सीतारामीया ने किया है- 1924 वर्ष की सबसे विपदकारी घटना कोई थी, तो यह थी-दिल्ली, गुलबर्गा, नागपुर, लखनऊ, शाहजहांपुर, इलाहाबाद, जबलपुर ऐसे अनेक स्थानों पर और इन सबसे बड़े पैमाने पर कोहाट में हुए जातीय दंगे कोहाट के दंगों के कारण तो भारत की रीढ़ की हड्डी मानों टूट गयी।[7]

यह सब देखकर डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार का मन व्यथित हो गया। उन्हें स्पष्ट अनुभव हुआ कि इस प्रकार समाज का ह्रास अंग्रेजों या मुसलमानों द्वारा नहीं हुआ। अपितु उन्होंने माना कि शिथिल राष्ट्रीय भावना होने के कारण यह हुआ। हिन्दू समाज में मानव बल, पुरूषार्थ सब कुछ था। किन्तु मैं राष्ट्र का घटक हूँ तथा उसके लिए मेरा जीवन लगना चाहिए। यह कर्तव्य भावना नष्ट हो गयी है। इसका एकमात्र उपाय है कि समाज में राष्ट्रीयता की उत्कट भावना भरकर तथा उससे प्रेरित होकर संपूर्ण समाज अनुशासित एवं संजीवित होकर पुनः दिग्विजयी राष्ट्र बनें।[8]

3. इनामुल्ला और समीउल्ला की धर्मांधता-

स्वतंत्रता संग्राम में मुसलमानों की सहभागिता बढ़े। इसके लिए महात्मा गांधी ने तुर्की में चल रहे खिलाफत का भारत में समर्थन किया। कारावास के दौरान डॉ. हेडगेवार जी के साथ उत्तर प्रदेश का इंटर में पढ़ने वाला छात्र इनामुल्ला भी था।

कारावास में इनामुल्ला किताब पर जिल्द चढ़ाकर फिर उस पर मोटी पुस्तक रामचरितमानस रखकर खुद उस पर खड़ा हो जाता और पूछने पर कहता कि किताब के पन्ने ऐसे ठीक ढंग से चिपक जायेंगे। जब डॉ. साहब के मित्र हरकरे ने उसे ऐसा करने पर मना किया। डॉ. साहब के मना करने पर उस लड़के ने उनसे कहा- तुम लोगो ने गोवधबंदी का आग्रह किया, तो हम जानबूझकर गाय काटेंगे।[9]

इनामुल्ला के उपरोक्त कथन में हिन्दुओं एवं उनके पूजनीय प्रतीकों के प्रति उसकी एकतरफा घृणा साफ दिख रही है। इसी तरह प्रौढ़ आयु के कांग्रेसी समीउल्ला खान ने डॉ. साहब के साथ काम किया था। जहां सभी कांग्रेसी सफेद रंग की खादी टोपी लगाते। समीउल्ला खान के तुर्की टोपी लगाने पर डॉ. साहब ने जब पूछा कि, आप खादी टोपी क्यों नहीं पहनते?

तो समीउल्ला खान ने कहा-"मैं पहले मुसलमान हूँ"।[10]

इनामुल्ला एक किशोर आयु का लड़का था और समीउल्ला खान प्रौढ़ आयु के। किन्तु दोनों के विचारों में भारत भारतीयता स्वतंत्रता संग्राम राष्ट्रीयता की भावना प्रथमत न होकर केवल 'इस्लाम प्रथम' का ही भाव था।

4. नागपुर का दंगा–

'यंग इंडिया' में महात्मा गांधी ने हिन्दू–मुस्लिम एकता हेतु दोनों समाज के नेताओं को जेल में बंद करके समस्या का समाधान खोजने का विकल्प दिया।

देश के भिन्न–भिन्न भागों में होने वाले दंगों के कारण नागपुर का मुस्लिम समाज भी प्रभावित था। जिस क्षेत्र में हिन्दू अल्पसंख्यक थे वहाँ पर हिन्दुओं को मारना तथा उनके लड़कियों को भगाने की घटनाएँ दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही थीं।

मुसलमान 'अल्ला हो अकबर' तथा 'दीन–दीने' का नारा जोर जोर से लगा रहे थे। उनके हाथों में लाठी, तलवार, भाला तथा छुरिका आदि शस्त्रास्त्र थे। तीन दिनों तक शहर में दंगे हुए हिन्दुओं ने जाति, पंथ, उद्योग धंधा का भेद भूलकर एकता दिखायी। डॉ मुंजे तथा राजा लक्ष्मणराव भोसले के नेतृत्व में नागपुर हिन्दू सभा की ओर से आपदग्रस्त व्यक्तियों के सहयोग हेतु समिति बनी। ये प्रहार इतने शुभदर्शन सिद्ध हुए कि फिर कभी नागपुर में दंगे का नाम नहीं निकला।[11]

5. मुस्लिम समाज की अराष्ट्रीय मानसिकता और डॉ. हेडगेवार–

मोपला विद्रोह और खिलाफत आंदोलन से ही मुस्लिम समाज की हिंदू समाज के प्रति नस्लभेदी घृणात्मक भावना का प्रदर्शन होने लगा था। यद्यपि महात्मा गांधी का प्रयास था कि स्वतंत्रता प्राप्ति आदोलन में हिन्दू–मुसलमान मिलकर सहयोग करें। किंतु अनेक प्रयासों एवं तमाम मुस्लिम तुष्टीकरण के बाद भी यह समय होता नामुमकिन ही रहा।

डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार का व्यवहार एक देशभक्त हिंदू तथा एक देशभक्त मुसलमान के साथ एक समान रहता था। किंतु केरल तथा देश के विभिन्न भागों में हुए दंगों के बाद महात्मा गांधी ने आक्रामक मुसलमानों की आलोचना के बजाय उन्हें 'बहादुर खुदा के बंदों' के रूप में उल्लेख किया। मुंबई उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश पूर्व केंद्रीय शिक्षा मंत्री तथा अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय में न्यायाधीश रहे मोहम्मद करीम छागला का कहना था कि–कांग्रेस तथा यहां तक कि महात्मा गांधी राष्ट्रवादी मुसलमानों के प्रति उदासीन रहा करते थे। गांधी जी ने जिन्ना को 'कायद–ए–आजम' का खिताब दे दिया था। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपनी जीवनी में लिखा है कि–महात्मा गांधी के मन में स्वतंत्रता तथा राष्ट्रीयता की भावना थी, तो अली बंधुओं की भाषा में खिलाफत के लिए खून तक बहाने की थी। उन्होंने अली बंधुओं को **Most irrationally religious** भी कहा है।

डॉ. साहब ने कोलकाता जीवन में मौलवी लियाकत हुसैन से आत्मीय संबंध स्थापित कर लिया था। मौलवी साहब लोकमान्य तिलक के अनुयाई थे तथा गरीबी

जीवन जीते हुए भी 'स्वदेशी वस्तु भंडार' चलाते थे। मौलवी साहब की बीमारी में डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने दिन-रात सेवा की।

नागपुर के स्वाधीनता आंदोलन में समीउल्ला खान का प्रमुख स्थान था। उन्होंने डॉक्टर साहब के साथ कांग्रेस आदोलन में सक्रियता से कार्य किया था। डॉक्टर साहब का खान साहब से आत्मीय संबंध थे।

सन् 1932 में मध्य प्रांत सरकार ने सरकारी कर्मचारियों पर संघ शाखा ने भाग लेने पर रोक लगा दी, तो निर्दलीय सदस्यों ने विरोध किया। उसमें बरार से एक मुस्लिम सदस्य 'ए.आर.रहमान' भी थे। विजयादशमी के शुभ अवसर पर नागपुर में राष्ट्रीय स्वयसेवक संघ की गणवेशधारी स्वयंसेवकों का पथ संचलन देखकर एक अरब सिपाही (जो 90 वर्ष के थे) का उद्गार था- "कौन कहता है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मुस्लिम विरोधी है"।

6. हिन्दू-मुस्लिम समस्या के राजनीतिकरण का विरोध-

डॉ. हेडगेवार सामाजिक समरसता के पक्षधर थे। वे कांग्रेस की हिंदू मुस्लिम एकता की घोषणा तथा उसके पीछे की मानसिकता को दोषपूर्ण मानते थे। डॉ साहब का यह मत था कि पांथिक आधार पर अलग-अलग राय नहीं हो सकती। किसी भी राष्ट्र की राष्ट्रीयता एक ही होती है. मिश्रित नहीं।[12] 14 दिसंबर 1935 के वर्धा शिविर में डॉ हेडगेवार ने कहा- महात्मा गांधी हिंदू-मुस्लिम एकता की बातें करते हैं मैं भी यही चाहता हूं लेकिन मेरा दृष्टिकोण थोड़ा भिन्न हैं। महात्मा गांधी कहते हैं-**"An average Muslim is a bully and an average Hindu is coward"** (औसत मुसलमान गुंडा है तथा औसत हिंदू भीरु है)

डॉ. साहब ने कहा था जिस दिन उन्हें यह आभास हो जाएगा कि हिंदू भी संगठित हो गए है और आजादी प्राप्त करने में सक्षम है, उस दिन वे स्वयं राष्ट्रीय धारा में शामिल हो जाएंगे।[13]

जब 16 अप्रैल, 1932 को ब्रिटिश सरकार ने 'कम्युनल अवार्ड' की घोषणा की तो डॉ हेडगेवार ने विरोध किया तथा कहा कि इससे अलगाववाद का विषैला बीज देर-सवेर देश के विभाजन का कारण बनेगा। डॉ केशव बलीराम हेडगेवार हिंदू-मुस्लिम समस्याओं के राजनीतिकरण के प्रबल विरोधी थे। उनकी मान्यता थी कि भारतवर्ष के मुसलमानों तथा अन्य पंथी भी उसी प्रजाति, सभ्यता और संस्कृति के अंग हैं, जिसके हिंदू तथा अन्य। अतः सभी अनुयाई उसी हिंदू राष्ट्र के अंग है।

डॉ साहब ने कहा कि मेरा उद्देश्य राजनीतिक नहीं है अपितु शुद्ध राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत है। मुसलमानों का दिल जीतने के लिए एक तो संगठित हिंदू शक्ति की आवश्यकता है, तो दूसरी ओर मुस्लिम समाज की मानसिकता में परिवर्तन

लाना है। उनका धर्म परिवर्तन हुआ है। लेकिन यह इसी हिंदू राष्ट्र के घटक हैं। अतः शुद्ध राष्ट्रभक्ति द्वारा ही मानसिक परिवर्तन किया जा सकता है केशव बलिराम हेडगेवार राष्ट्रीय आदोलन में मुसलमानों की सक्रिय भूमिका के पक्षधर थे परंतु बिना किसी तुष्टीकरण के। राष्ट्रीय दृष्टिकोण के अनुसार सहभागिता की अपेक्षा करते हुए दिखाई देते हैं।

7. जन्मजात देशभक्त डॉ. केशव बलीराम हेडगेवार

डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार (9 अप्रैल, 1886–21 जून 1640) भारतीय संस्कृति के परम उपासक, लेखक, पत्रकार, संपादक, कर्मठ, सत्यनिष्ठ, जन्मजात देशभक्त[14], युगप्रवर्तक[15]। राष्ट्रवादी होने के साथ-साथ वह एक स्वतंत्र विचारक थे। घटना 22 जून, 1897 की है जब ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया के राज्यारोहण के 60 साल पूरे होने पर 'नील सिटी स्कूल' में मिठाईयां बांटी जा रही थी, तो 8 वर्षीय राष्ट्रभक्त केशव ने अपने हिस्से की मिठाई फेंकते हुए कहा, लेकिन यह हमारी महारानी तो नहीं है। एक दूसरी घटना 1901 की है जब इंग्लैण्ड के राजा के राज्यारोहण के अवसर पर राज्यनिष्ठ लोगों द्वारा आतिशबाजी का आयोजन किया गया था. तो केशव ने अपने बालमित्रों को समझाया कि-"विदेशी राजा का राज्यारोहण उत्सव मनाना हमारे लिए शर्म की बात है।"

महाराष्ट्र में छत्रपति शिवाजी की गाथा घर-घर में सुनायी जाती थी। राष्ट्रभक्त केशव शिवाजी महाराज की वीरता, संकल्प शक्ति एवं राष्ट्रीय भाव से प्रभावित हुए तथा नागपुर के सीताबर्डी किले पर फहरने वाले यूनियन जैक को उतार फेंकने के लिए उन्होंने बझे गुरूजी के घर से मित्रों सहित दो किलो मीटर लंबी सुरंग खोद डाली। बालक केशव के चाचा मोरेश्वर उपाख्य आबाजी थत्ते के शब्दों में, जिस आयु में अन्यान्य बालक खेलने-कूदने में मस्त रहते हैं। उसी आयु में अंग्रेजों को निकाल बाहर करने का यह उद्देश्य पूर्ण होने से पूर्व ही सेनापति अपने छोटे से गुरिल्ले दल के साथ घरवालों द्वारा बंदी बना लिया गया।[16]

नागपुर में **'मराठा'** एवं **'केसरी'** के राष्ट्रवादी विचारों से प्रभावित केशव ज्योंही बी. एस. मुंजे के संपर्क में आए। ये बी.एस.मुंजे एवं लोकमान्य बालगंगाधर तिलक के अनुयायी बन गए।

8. वंदे मातरम् का उद्घोष

बंगाल विभाजन के बाद सरकारी दमन की तीव्रता पूरे देश में बढ़ती जा रही थी। बंगाल में राजनीतिक आंदोलन में विद्यार्थियों की अहम भूमिका को देखते हुए

सरकार ने 'वंदे मातरम्' तथा 'तिलक महाराज की जय को 'रिस्ले सर्कुलर' के तहत दंडनीय अपराध घोषित कर दिया। इस सर्कुलर का मध्यप्रांत में विरोध नागपुर से शुरू हुआ। सन् 1907 के मध्य में विद्यालय निरीक्षक प्रतिवर्ष की भांति 'नील सिटी स्कूल' आए थे। जैसे ही निरीक्षक कक्षा में गए सभी छात्रों ने उठकर एक साथ 'वंदे मातरम्' की जोरदार घोषणा से उनका स्वागत किया। चूंकि इस योजना के सूत्रधार बालक केशव ही थे। फलतः केशव को नील सिटी स्कूल से 'वंदे मातरम' के कारण निष्कासित कर दिया गया। भरी सभा में साम्राज्यवाद विरोधी और राष्ट्रभक्त केशव ने कहा–"अगर मातृभूमि की आराधना अपराध है, तो मैं यह अपराध एक नहीं, अनगिनत बार करूंगा और इसके लिए मिलने वाली सजा को मैं सहर्ष स्वीकार करूंगा।"17

9. अनुशीलन समिति में प्रवेश

सन् 1909-10 में हेडगेवार डॉक्टरी की शिक्षा के लिए कलकत्ता गए। वहां पहुंचते ही अनुशीलन समिति से जुट गए त्रैलोक्यनाथ चक्रवर्ती, अरविन्द घोष, विपिनचंद्र पाल, नलिनी किशोर गुह, प्रतुल गांगुली तथा योगेश चंद चटर्जी इत्यादि अनुशीलन समिति के सक्रिय सदस्यों के साथ जुड गए।

'बंग्लार विल्पववाद' के लेखक नलिनी किशोर ने ही हेडगेवार नारायण राव सावरकर एवं अन्य छात्रों को प्रवेश दिलाया था। उन्होंने कहा–"डॉ हेडगेवार सच्चे अर्थो में आदर्श क्रांतिकारी थे।" समिति के सदस्यों के बीच वह रचनात्मक सोच एवं काम के लिए जाने जाते थे क्रांतिकारियों के बीच हेडगेवार का छद्म नाम 'कोकेन' था। वे शस्त्रों के लिए 'एनाटोमी' शब्द का प्रयोग किया करते थे। क्रांतिकारी गतिविधियों के साथ डॉ हेडगेवार ने सितंबर, 1914 में 70.08 प्रतिशत अंकों के साथ मेडिकल की डिग्री प्राप्त की। जनवरी 1914 में भारत सरकार द्वारा प्रकाशित भारत के राजनीति अपराधियों नामक पुस्तिका में मध्य प्रांत से डॉ केशव बलीराम हेडगेवार का भी नाम शामिल था।

10. देशसेवा का व्रत

डॉ. साहब के मन में राष्ट्र सर्वोपरि भावना थी। 1915 में हेडगेवार ने आजीवन ब्रह्मचारी रहकर देशसेवा का व्रत लिया तथा अपने चाचा को एक लंबा पत्र लिखा– घर–गृहस्थी बसाकर मैं पारिवारिक दायरे में सिमटना तथा जीविकोपार्जन की चिंता में उलझना नहीं चाहता राष्ट्र को विदेशी दासता से मुक्त देखना चाहता हूँ इसलिए मुझे हिंसा तथा अहिंसा दोनों ही मार्ग प्रिय हैं यदि आज हम परतंत्र है, तो इसका कारण हमारी कायरता है। हमें एक राष्ट्र शुद्ध राष्ट्रीयता और भ्रातृत्व का बोध नहीं

है। अंग्रेजों को परास्त करने का समाधान मुझे राष्ट्र के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने में दिखायी पड़ रहा है। मेरे मन तन, बुद्धि, विवेक और आत्मा सब में एक ही बात का बोध है कि यदि राष्ट्र को संगठित करने राष्ट्रीयता का प्रसार करने, लोगों में से हीनता का भाव दूर करने का कार्य किया जाए तो जीवन का इससे बड़ा सकारात्मक सदुपयोग और कुछ भी नहीं हो सकता है।[18]

सन् 1921 में मध्यप्रांत की राजधानी में ब्रिटिश सरकार ने उन पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया था। मुकदमे की सुनवाई के दौरान उन्होंने उपनिवेशवाद को अमानवीय, अनैतिक, अवैधानिक एवं क्रूर शासन[19]की संज्ञा देते हुए ब्रिटिश न्यायिक व्यवस्था पुलिस प्रशासन एवं राज्य सत्ता के खिलाफ सभी प्रकार के विरोधों का समर्थन किया।

11. देशभक्ति की कसौटी

यूनियन जैक को उतारने हेतु लंबी सुरंग, वंदेमातरम् अनुशीलन समिति, गांधीवादी पथ एवं 'स्वातंत्र्य' का संपादन करते हुए डॉ. हेडगेवार ने यह निष्कर्ष निकाला कि देशभक्ति से ओत-प्रोत एक ऐसा संगठन होना चाहिए, जो एक राष्ट्र एक जन एवं एक संस्कृति के लिए पूर्ण से प्रतिबद्ध हो तथा उसके लिए 10 सूत्रीय कसौटी हो।

डॉ हेडगेवार ने देशभक्ति की दस सूत्री कसौटी बताई है-

(1) देशभक्ति का अर्थ है- हम जिस भूमि एवं समाज में जन्में हैं, उस भूमि व समाज के लिए आत्मीयता एवं प्रेम
(2) जिस समाज में हमारा जन्म हुआ है, उसकी परंपरा एवं संस्कृति के प्रति लगाव एवं आदर
(3) समाज के जीवन मूल्यों के प्रतिनिष्ठा
(4) समाज, राष्ट्र के लिए उत्कर्ष विकास के लिए सर्वस्व समर्पण करने के निमित्त उत्सफूर्त करने की प्रेरणा शक्ति
(5) व्यक्ति निरपेक्ष रहकर समष्टिनिष्ट जीवन का पवित्र प्रवाह
(6) भौतिकताओं से दूर रहकर मातृभूमि और उसकी संतानों की निःस्वार्थ सेवा,
(7) व्यक्तिगत आकांक्षाओं से अधिक राष्ट्र की आवश्यकताओं एवं अपेक्षाओं को महत्वः
(8) मातृभूमि के चरणों में अनन्य निःस्वार्थ कर्तव्य कठोर जीवन कुसुमों की नादक सुगंध भरना,
(9) समाज एवं राष्ट्र को ही सर्वस्व देवी-देवता मानकर उसी की अराधना करना और
(10) संपूर्ण समाज में एकात्म भाव का आविष्कार करना।[20]

12. संपादन

डॉ हेडगेवर ने क्रांतिकारी गांधी मार्ग के साथ ही स्वातंत्र्य के संपादन का निर्णय लिया। 1924 से पूर्व महाराष्ट्र में **'महाराष्ट्र''संकल्प''प्राणवीर' हितवाद, प्रजापक्ष, स्वतंत्र्य, हिन्दुस्थान, उदया, यंग पेट्रियट, रणसंग्राम** इत्यादि पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन हो रहा था। इनमें से कुछ ब्रिट्रिश सरकार के तो कुछ उग्र राष्ट्रवाद के समर्थक थे। डॉ. हेडगेवर क्रांतिकारी नीति के प्रबल पक्षधर थे। जनवरी, 1924 के प्रथम अंक में संपादकीय नीति के संबंध में लिखा हमारा स्वतंत्रता का जो उद्देश्य है यह किसी खास दल मात्र का लक्ष्य न होकर पूरे राष्ट्र का लक्ष्य है और यह आशा की जाती है कि सभी दल अपने मतभेदों को भूलकर इस समान उद्देश्य की प्राप्ति हेतु एकताबद्ध होकर कार्य करेंगे।[21]

डॉ. साहब प्रसिद्धि परांङ्गमुख थे तथा वे उक्त पत्र में बेनाम लेख लिखा करते थे। सरकार और जनता द्वारा पर्याप्त समर्थन के अभाव में इसे बंद करना पड़ा तथा

1924 के अंत में ही 11000रूपये का घाटा सहना पड़ा। डॉ. साहब अखबारी प्रचार से सतर्क रहा करते थे। वह अपनी किसी भी समाज सेवा राष्ट्र सेवा का कार्य प्रसार-प्रसार करना पसन्द नही करते थे।

"वृत्तपत्र में नाम छपेगा पहनूंगा स्वागत समुहार
छोड़ चलो यह क्षुद्र भावना, हिन्दू राष्ट्र के तारनहार।।
कंकड़-पत्थर बन बन हमको, राष्ट्र नींव को भरना है।
ब्रहमतेज के क्षात्र तेज के अमर पुजारी बनना है।।"

उपर्युक्त पंक्तियों में समाहित भारतीय संस्कृति की भावना ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों कार्यकर्ताओं तथा प्रचारकों के कर्मपथ का पाथेय रही है। यहां तो मातृभूमि की सेवा करने की लंबी परंपरा रही है और इसी का नाम भारतीय संस्कृति है।

13. स्वतंत्रता संग्राम और डॉ. हेडगेवार-

सन् 1915 में नागपुर लौटने पर वह कांग्रेस में सक्रिय हो गए। सन् 1920 में जब नागपुर में कांग्रेस का देश-स्तरीय अधिवेशन हुआ, तो डॉ. केशव बलीराम हेडगेवार ने कांग्रेस में पहली बार पूर्ण स्वतंत्रता को लक्ष्य बनाने के बारे में प्रस्ताव प्रस्तुत किया तो तब वह पारित नहीं किया गया।

सन् 1921 में जब प्रांतीय कांग्रेस की बैठक में क्रांतिकारियों की निंदा का प्रस्ताव रखा गया तो डॉ. हेडगेवार ने इसका कड़ा विरोध किया। फलतः यह प्रस्ताव

वापिस लिया गया। नागपुर नेशनल यूनियन में डॉ. हेडगेवार ने अंग्रेजों के खिलाफ 'असहयोग' विषय पर लंबी बहस चलाते हुए 18 अगस्त 1920 को इस विषय पर एक कार्यक्रम निर्धारित करने के लिए डॉ. चोलकर, मनोहर पंत बोबड़े, आर. एन. पाधये एवं विश्वनाथ राव केलकर की एक समिति का गठन किया। असहयोग आंदोलन समिति' की स्थापना का उद्देश्य था-कार्यकर्ताओं को इस आंदोलन के लिए बौद्धिक, शारीरिक, मानसिक रूप से तैयार करना। नागपुर असहयोग समिति ने 11 नवंबर 1920 से एक सप्ताह तक 'असहयोग सप्ताह' मनाया था। इसमें शराबबंदी, नशाबंदी को प्रमुखता दी गयी[22]।

नागपुर में डॉ. साहब के नेतृत्व में 'असहयोग आंदोलन' को दबाने के लिए ही ब्रिटिश सरकार ने धारा 144, सभा-जुलुसों में भाषणों पर रोक आदि दमनकारी कार्यवाहियों के साथ ही जनवरी 1921 में मध्यप्रांत में डॉ. हेडगेवार सहित सात लोगों पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया। मइ 1921 में डॉ. साहब पर आपराधिक दंड संहिता धारा 108 के तहत मुकदमा दर्ज करने के लिए उनके छह माह पूर्व (अक्टूबर 1920) के भाषण को आधार बनाया गया[23]।

उनके मुकदमें के फैसले की तिथि 19 अगस्त निर्धारित हुई। मुकदमें में न्यायाधीश एवं औपनिवेशिक शासन व्यवस्था को ललकारते हुए डॉ. हेडगेवार ने कहा-"आपको जो भी निर्णय देना है, दें। मैं दोषी नहीं हूँ। मेरी अंतरआत्मा की आवाज है कि मैं निर्दोष हूँ। सरकार अपनी दमनकारी नीति से पहले से जल रही आग में घी डालने का ही काम कर रही है। मुझे विश्वास है कि जल्दी ही विदेशी सत्ता को अपने लिए प्रायश्चित करने का समय आएगा। मुझे सर्वशक्तिमान ईश्वर के न्याय पर भरोसा है। अत: जमानत देना मुझे स्वीकार नहीं है"। इसके बाद न्यायाधीश ने उन्हें एक वर्ष के सश्रम कारावास की सजा देने की घोषणा की[24]।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना के बाद पहली बार शाखाओं में निर्देश भेजते हुए परिपत्र में लिखा कि "रविवार दिनाँक 26 जनवरी 1930 को संपूर्ण भारत में **'स्वाधीनता दिवस'** मनाया जाए"[25]। इसलिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सभी शाखाएँ रविवार दिनाँक: 26 जनवरी 1930 को साँयकाल 6 बजे अपने-अपने संघ स्थानों पर अपनी-अपनी शाखाओं में स्वयंसेवकों की सभा आयोजित करके राष्ट्रीय ध्वज अर्थात् भगवा ध्वज का वंदन करें[26]। 26 जनवरी 1930 को सांधयकाल में स्वतंत्रता दिवस पर सभाएँ सभी मराठी मध्यप्रांत की सबसे प्रभावशाली घटना थी।

12 मार्च 1930 को महात्मा गांधी ने दांडी यात्रा शुरू की थी। इसी समय डॉ. हेडगेवार ने भी **'जंगल सत्याग्रह'** किया। चूंकि संघ कार्य अभी मध्यप्रांत तक ही प्रभावी था। अत: 'नमक कानून' के स्थान पर **'जंगल कानून'** तोड़कर सत्याग्रह करने का निश्चय हुआ। वास्तव में उस समय मध्य प्रदेश की सरकार ने जंगल से घास, लकड़ी, वृक्षादि काटने पर प्रतिबंध लगाया था। जिससे लोगों का व्यवसाय

प्रभावित हुआ। अतः लोगों को चारा और घास की उपलब्धता कराने के लिए 21 जुलाई 1930 को यवतमाल से 10 किलोमीटर दूर लोहरा जंगल में जंगल काटकर इस कानून को डॉ. हेडगेवार ने तोड़ा। फलतः उन्हें 9 माह के सश्रम कारावास की सजा दी गयी। डॉ. साहब स्वतंत्रता संग्राम में जुटे लोगों में व्यक्ति निर्माण, चरित्र निर्माण का सार्थक प्रयास करते रहे।

14. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना

एक प्राचीन भारतीय राष्ट्र का पराभव क्यों हुआ और इसे सबल एवं संगठित राष्ट्र बनाने का एकमात्र उपाय था हिंदुओं को संगठित कर उसकी सोई हुई शक्ति को जागृत एवं संगठित कर राष्ट्र के हित, पुनर्निर्माण एवं संगठन के लिए पुनः जागृत करना राष्ट्रहित के लिए किया गया कार्य ईश्वरीय कार्य होता है।

डॉक्टर साहब ने यह अनुभव किया कि इस देश के इस नैसर्गिक संबंध को ही लोगों ने भुला दिया और तभी देश की अवनति हुई। हिंदू समाज के लोग विगठित अनुशासनहीन, स्वार्थी एवं राष्ट्रीयता से विमुख हो गए। तभी आक्रांताओं को इस देश पर आक्रमण करने के लिए खाली मैदान मिला।

इसी प्रेरणा से 27 सितंबर सन् 1925 में विजयादशमी के शुभ दिन **'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ'** की स्थापना डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार द्वारा की गई। इस नवगठित संगठन में भाऊजी कावरे, अण्णा सोहोनी, विश्वनाथ राव केलकर बालाजी पोद्दार, बापूराय भेदी आदि डॉ हेडगेवार के बाल्यजीवन के साथी तथा नागपुर नेशनल यूनियन एवं गांधीवादी आंदोलन के सहकर्मी थे। संघ की पहली शाखा मोहिते की बाड़ा, महाल, नागपुर में 5-6 बाल स्वयंसेवकों के साथ शुरू हुई।[27]

15. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की पूर्व पीठिका

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में मानवता, राजनीति, अर्थतंत्र, प्रशासन, भाषा संबंधी मुद्दे, धर्म, तथा सामाजिक उत्थान आदि संबंधी आयामों को महत्व प्रदान किया जाता है। इन सबके मूल में मातृभूमि की सेवा और उसके प्रति समर्पण का भाव है।

सन् 1925 में स्थापित 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' संगठन स्वस्थ वैयक्तिक संबंधों तथा समूह में काम करने की प्रवृत्ति के आधार पर कार्यरत रहा है। इसमें पद एवं वरिष्ठता के जटिल पदानुक्रम नहीं मिलते। इस प्रकार प्रबंधन के मूल सिद्धांत को लेकर संघ चलता है। इसकी संरचना में विकेंद्रीकृत तथा स्वयात्त एवं स्वभाव से सहयोगी गतिशीलता अपने आप में अनूठी है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ0 केशव बलिराम हेडगेवार में राष्ट्रीयता एवं देशभक्ति की भावना जन्मजात थी। उनके जीवन चरित में नारायण हरि पालकर ने डॉ॰ साहब के जीवन चरित का बड़ी सूक्ष्मता से विश्लेषण किया है।[28]

बाल्यकाल में ही केशव के माता-पिता का एक ही दिन प्लेग के प्रकोप से स्वर्गवास हो गया। भाई-बहनों सहित बालक केशव पर आर्थिक विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा। किन्तु ऐसी परिस्थितियों में केशव और भी अधिक दृढ़ बन गये।

किशोरावस्था आने तक केशव बलिराम नागपुर के सम्मानित व्यक्ति, मध्यभारत में प्रमुख कांग्रेस नेता हिंदू महासभा के अखिल भारतीय अध्यक्ष, स्वतंत्रता सेनानी डॉ॰ मुंजे के संपर्क में आये। इस समय तक **'वंदेमातरम्'** पर प्रतिबंध लग चुका था। क्योंकि बंगाल विभाजन के विरोध में सन् 1906 में कांग्रेस अधिवेशन से लौटते समय बालगंगाधर तिलक ने नागपुर में एक विशाल जनसभा कों संबोधित करते हुए **'वंदेमातरम्'** का नारा लगाया था।

उन्हीं से प्रभावित होकर दशहरे के पर्व पर मध्य प्रदेश एवं महाराष्ट्र की सीमा पर स्थित रामपायली गांव में उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए युवा केशव ने 'वंदेमातरम्' का जयघोष किया। फलतः धारा 180 के तहत उन्हें पकड़कर मुकदमा दर्ज कर लिया गया।

किन्तु उनकी राष्ट्रवादी गतिविधियां न तो ब्रिटिश सरकार दमनात्मक कार्यवाही से भयभीत हुई ना ही रूकीं। सन् 1908 में विद्यालय निरीक्षक के स्वागत समय पुनः केशव ने **'वंदेमातरम्'** का जयघोष किया। अन्य बालक जहां इसके बाद भयभीत होकर माफी मांगने लगे। वहीं केशव जरा भी भयभीत नहीं हुए।

नरेंद्र मंडल समूह- राष्ट्रभक्ति एवं देश के लिए अपनी प्रत्येक श्वांस को न्यौछावर करने का संकल्प ले चुके केशव बलिराम ने एक अखाड़े और वाद-विवाद संस्था का प्रारंभ किया। और देश के लिए मांगे जाने वाले चंदे से क्रांतिकारियों के लिए हथियार खरीदे जाते थे। इस समूह का कूट नाम था -**'नरेंद्र मंडल'।**

डॉ॰ केशवराव बलिराम हेडगेवार ने संत समर्थदास द्वारा रचित **'दासबोध'** एवं लोकमान्य तिलक द्वारा लिखी गयी **'गीतारहस्य'** से गहन बौद्धिक प्रेरणा प्राप्त की थी। तपस्या, उच्च चरित्र, मूल्य आधारित कर्मो तथा पावन चित्त में सर्वथा विश्वास करने वाले संत रामदास ने 1100 मठों की स्थापना की थी इसी विचारधारा को अनुप्रमाणित करते हुए डॉ॰ साहब ने भी ऐसे ही स्वयंसेवकों के निर्माण भारत परिवर्तन की कल्पना की थी। हिन्दु समाज के संगठन की प्रेरणास्रोत उनके लिए **संत रामदास** एवं **शिवाजी** थे।

स्वप्रेरणा एवं सेवाभावी डॉ॰ साहब द्वारा युवाओं के प्रशिक्षण पद्धति की प्रशंसा एवं महात्मा गाँधी ने भी की थी।

27 सितंबर 1925 को विजयादशमी पर्व पर सशक्त समाज के स्थापन की कल्पना के साथ डॉ॰ केशव बलिराम हेडगेवार ने **'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ'** की स्थापना की।

(क) परतंत्रता काल में संघ-

सन् 1937 से 1939 के मध्य तक तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को गंभीरता से लेना शुरू कर दिया था। सन् 1939 तक संघ की पूरे देश भर में 500 से अधिक शाखाएं एवं 60 हजार स्वयंसेवक बन चुके थे। सन् 1940 तक इसकी संख्या बढ़कर 700 शाखाएं और 80 हजार स्वयं सेवकों के रूप में परिणित हो चुकी थीं।[29]

(ख) संघ के सरसंघचालक-

डॉ॰ केशव बलिराम हेडगेवार ने समय के साथ संघ में कई परिवर्तन किये। सन् 1940 में डॉ॰ साहब की मृत्यु पश्चात- **'श्री गुरूजी द्वितीय सरसंघचालक'** बने। ब्रिटिश रिकार्ड के अनुसार सन् 1944 तक देशभर में 76 हजार स्वयंसेवक नियमित रूप से संघ की शाखा में उपस्थित हो रहे थे।[30]

देश विभाजन पश्चात पाकिस्तान से शरणार्थी बनकर आये लाखों हिन्दू सिख लोगों के मसीहा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के ही स्वयंसेवक बने थे।

तृतीय सरसंघचालक **बालासाहब देवरस** के नेतृत्व में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ राष्ट्र निर्माण की भूमिका के नए रूप में आया।[31]

तमाम उतार-चढ़ावों के बाद 'भारतीय जनसंघ' एक नये रूप में भारतीय जनता पार्टी के स्वरूप में राष्ट्र के समक्ष आया। यह जयप्रकाश नारायण एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के आदर्शों के अनुप्रणित था। इसके नये अध्यक्ष अटल बिहारी वाजपेयी तथा जनरल सेकेट्री बने सिकंदर बख्त।[32]

बालासाहब देवरस के बाद **राजेन्द्र सिंह** उपाख्य रज्जू भैया ने संघ कार्य का दायित्व संभाला। राजेन्द्र सिंह उपाख्य-रज्जू भैया- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के चौथे सरसंघचालक थे। रज्जू भैया की 60 वर्ष लम्बी संघयात्रा रही। प्रयाग विश्वविद्यालय (उ.प्र.) में भौतिक विभाग में सर्वथा योग्य होते हुए भी उन्होंने रीडर पद का आवेदन नहीं भरा। 11 मार्च 1944 से 10 मार्च 2000 तक रज्जू भैया ने अपना दायित्व पूर्ण किया।

के॰ सी॰ सुदर्शन जी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पांचवें सरसंघचालक थे। इन्हें **'इनसाइक्लोपीडिया ऑफ संघ'** कहा जाता था। प्रारंभ में जिला, विभाग फिर

मध्यभारत के प्रांत प्रचारक सुदर्शन जी मार्च 2000 से 21 मार्च 2009 तक इस स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक रहे। संयम, धैर्य, चातुर्य और राष्ट्रवाद का अनूठा संयम इनमें था।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के छठे सरसंघचालक **'मोहन मधुकर भागवत'** 21 मार्च 2009 से बने। यह हिन्दुत्व को आधुनिकता के साथ आगे ले जाने की बात करते हैं[33]। समाज में सभी प्रकार के जातिगत भेदभाव मिटाने की बात हर हिन्दू के घर से होनी चाहिए[34]।

(ग) संघ परिवार– संघ के स्वयंसेवकों ने समाज एवं राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति हेतु समाज के विभिन्न क्षेत्रों में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक परिवर्तन हेतु नये नये प्रकल्पों का प्रावधान किया। संघ के आदर्शों से अनुप्रणित यह विभिन्न संगठन ही **'संघ परिवार'** कहलाये।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एक बड़े वट वृक्ष की भांति है तो इसके संगठन इसकी शाखाएं तथा वृक्ष की जड़ें हैं।

(घ) स्वाधीनता दिवस और डॉ. हेडगेवार

जब 26 जनवरी, 1930 को कांग्रेस कार्यसमिति ने संपूर्ण भारत में स्वाधीनता दिवस मनाने का निश्चय किया, तो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने एक अध्यादेश जारी किया कि सभी शाखाओं को सायंकाल 6 बजे अपने-अपने संघ स्थानों पर सभी स्वयंसेवकों की सभा आयोजित करके राष्ट्रीय ध्वज अर्थात् भगवाध्वज का वंदन किया जाये।

संघ के जन्मदाता डॉ. केशव बलीराम हेडगेवार निष्काम कर्मयोगी तथा भारत माता के सुपुत्र थे। उन्होंने व्यक्तिनिष्ठा के स्थान पर तत्वनिष्ठा को सर्वोपरि माना।

16. संघ और सावरकर–

वर्तमान शताब्दी में विनायक दामोदर सावरकर पहले भारतीय नेता थे जिन्होंने **'पूर्ण स्वाधीनता'** का नारा दिया। वे पहले क्रांतिकारी थे। जिन्हें राजद्रोह के आरोप में ब्रिटिश सरकार ने दो आजन्म कारावासों का दंड देकर अण्डमान भेजा गया। वे पहले ऐसे साहसी बंदी थे, जिन्होंने इंग्लैंड से भारत आते समय जलयान से समुद्र में कूदकर भागने का प्रयास किया और जिसका निर्णय अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय द्वारा हुआ। वे पहले लेखक थे जिनका **'1857 का भारतीय स्वातंत्र्य समर'** ग्रंथ प्रकाशित होने के पूर्व ही जब्त कर लिया गया था।

वीर सावरकर के संपूर्ण राजनीतिक जीवन को 2 भागों में विभाजित किया जा

सकता है। सन् 1937 के पूर्व एक अदम्य साहसी क्रांतिकारी तथा 1937 के उपरांत एक राजनेता के रूप में हिन्दुत्व एवं हिन्दू राष्ट्र के प्रबल समर्थक। एक राजनेता के रूप में सावरकर असफल रहे। परंतु एक क्रांतिकारी के रूप में सावरकर ने इतिहास में अमर ख्याति अर्जित की थी।

विदेशी धरती पर भारत की स्वतंत्रता के लिए सावरकर क्रांतिकारी दल बनाकर गतिविधियों में संलग्न रहे। फलतः 13 मार्च 1910 में लंदन में उन्हें **'फरार अपराधी अधिनियम'** के अंतर्गत गिरफ्तार कर लिया गया। 12 मई 1910 को लंदन अदालत में सावरकर पर भारत में मुकदमा चलाने की संस्तुति दी। 29 जून 1910 को ब्रिटिश सम्राट के गृह सचिव ने सावरकर को भारत भेजने का आदेश दिया। भारतवर्ष में दो आजन्म कारावासों का उन्हें दंड मिला।

सावरकर का बंदी जीवन ढोंगरी कारागार से प्रारंभ होकर भायखला जेल फिर थाणे जेल और इसके बाद अंडमान में उन्हें कालेपानी की सजा दी गयी। सावरकर का बंदी जीवन कितना कष्टकारक था। इसकी विस्तृत जानकारी सावरकर की सन् 1927 में मराठी में लिखी पुस्तक **'मांझी जन्मठेप'** से होती है, जो पहले गुजराती में प्रकाशित हुई तथा जिसका हिन्दी अनुवाद शिवकुमार गोयल द्वारा अनुवादित व संपादित **'मेरा आजीवन कारावास'** है।

कारागार में अत्यंत खराब, अपौष्टिक भोजन, तमाम दुर्व्यवस्था, बंदियों द्वारा किए जाने वाले घोर परिश्रम के कारण तमाम व्याधियों से ग्रस्त सावरकर लिखते है कि- 'आठ वर्षों तक निरंतर एक ही जगह रहकर यातनाएँ सहन करते-करते शरीर अस्थिपंजर बन चुका है। इन तमाम कष्टों के बावजूद ईश्वर ने मुझे इन सबके बीच भी स्वाभिमान के साथ सिर ऊँचा कर, तनकर खड़े रहने की शक्ति तो प्रदान की ही है। भय, उत्पीड़न, धमकियां, गालियां, दुर्भाग्य, अश्रु तथा आहों से घिरे रहने के बावजूद मैं अपने लक्ष्य के प्रति निष्ठावान और दृढ़ संकल्पी रहा हूँ। मेरे लिए यह उपलब्धि क्या कम है[35]? शारीरिक क्षीणता के बावजूद आत्मिक दृष्टि से पूर्ण सशक्त व सक्षमता का अनुभव करते सावरकर लिखते हैं- "मैं यह दृढ़ विश्वास रखता हूँ कि अग्नि की ज्वालाएँ भी मेरी आत्मा को विचलित नहीं कर पाएंगी। इससे भी ज्यादा कष्टों से दो-दो हाथ करने की सामर्थ्य मेरी आत्मा में है"[36]। 6 जनवरी 1924 को सावरकर को कुछ निश्चित शर्तों के साथ छोड़ा गया था। 10 मई 1937 को सावरकर की सरकार द्वारा शर्त सहित स्थान बद्धता से मुक्ति के साथ हिन्दुत्व पर आधारित राजनीति को एक नयी दिशा मिली।

कोल्हापुर में शिवाजी की गद्दी पर श्रद्धासुमन अर्पित करने के बाद सावरकर ने सक्रिय राजनीति में प्रवेश करने की घोषणा की। भारतीय राजनीति की कमजोरियों की चर्चा करते हुए उन्होंने स्पष्ट कहा कि-"हिन्दू राष्ट्र ही एक शक्तिशाली भारत का निर्माण कर सकता है"। 30 दिसंबर 1937 को कर्णावती (अहमदाबाद) में

अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के 19 वें अधिवेशन में वीर सावरकर को अध्यक्ष चुना गया।

तेरह वर्ष तक जब सावरकर रत्नागिरी में स्थानबद्ध होकर रहे थे। उसी समय उन्होंने हिन्दू राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत साहित्य की रचना की। तथा इसी समय उन्होंने समाज सुधार, अछूतोद्धार, भाषा शुद्धि सुधार जैसे अनेक आंदोलन चलाए। रत्नागिरी हिन्दू सभा के तत्वावधान में सावरकर ने गणेशोत्सव, शिवाजी उत्सव, कृष्णाष्टमी, रामनवमी, विजयादशमी आदि पर्वों का आयोजन कर हिन्दुओं में नवचेतना का संचार किया। रत्नागिरी में ही सावरकर ने हिन्दू महासभा को 'कृपाण' स्वास्तिक, कुंडलिनी से युक्त **'भगवाध्वज'** दिया। इसी अवधि में अनेक राष्ट्रीय नेताओं ने सावरकर से भेंट की। इनमें प्रमुख थे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार, डॉ. मुंजे, महादेव पटवर्धन आदि। सावरकर ने स्पष्ट रूप से 'हिन्दुत्व' को स्वीकार करते हुए इसे एक शब्द नहीं वरन् एक संपूर्ण इतिहास माना था।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भी 'हिन्दुत्व' और हिन्दू समाज के गठन का संकल्प लिया था। जो निश्चित ही उस समय के सावरकर की प्रेरणा हो सकता है। सावरकर का कहना था कि- 'हिन्दुत्व एक महान जाति का जीवन है। यह सहस्रावधि पुण्यात्माओं के हुतात्वमाओं के युगानुयुग के अथक परिश्रम एवं प्रयत्नों का परिणाम है।

सावरकर ने भारतभूमि को **पुण्यभूमि, पितृभूमि** माना था। संघ ने भी भारतभूमि को मात्र भूमि का टुकड़ा नहीं वरन् इसे मातृभूमि, पितृभूमि, पुण्यभूमि, कर्मभूमि, तप-त्याग की भूमि मानकर वंदना की है। सावरकर ने हिन्दुत्व के तीन लक्षण- एक राष्ट्र, एक जाति और एक संस्कृति को स्वीकारते हुए **'हिन्दू' और हिन्दुस्थान'** को गौरवपूर्ण और देशाभिमान का प्रतीक माना। हिन्दू समाज ही नहीं, यहूदी और ईरानियों ने भी **'हिन्दू'** शब्द को उसके बल, वीरता, शौर्य के साथ ही ग्रहण किया था।

इसी प्रकार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भी 'भारतभूमि' को 'पितृभूमि', 'मातृभूमि' पुण्यभूमि रूप में स्वीकृत करते हुए यहाँ जन्म लेने वालों को **'हिन्दू'** नाम से अभिहित किया है। कुछ मामलों में संघ ने वीर सावरकर के विचारों को पूरी तरह स्वीकृत न करते हुए भी कई स्थानों पर यथावत स्वीकार किया।

17. महात्मा गांधी की हत्या और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर प्रतिबंध

राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर समय-समय पर अनेक आरोप-प्रत्यारोप और प्रतिबंध लगते रहे हैं ब्रिटिश काल में सन 1932 में संघ पर पहली बार प्रतिबंध लगा संघ के विषय में गुप्तचर विभाग की रिपोर्ट के अनुसार मध्य

प्रांत सरकार ने, जिसके क्षेत्र में नागपुर था। उसने 15 दिसंबर, 1932 को सरकारी कर्मचारियों के संघ में भाग लेने पर प्रतिबंध लगा दिया था।

डॉ हेडगेवार की मृत्यु के बाद 5 अगस्त, सन 1940 को सरकार ने भारत सुरक्षा कानून की धारा 56 एवं 58 के अंतर्गत संघ की सैनिक वेशभूषा और प्रशिक्षण पर पूरे देश में प्रतिबंध लगा दिया। इसके बाद ब्रिटिश सरकार ने सभी ब्रिटिश रेजिडेंट्स को संघ की गतिविधियों को रुकवाने व प्रमुख कार्यकर्ताओं के विषय में जानकारी एकत्र करने का निर्देश दिया। उसके बाद 30 जनवरी सन् 1948 को महात्मा गांधी की हत्या हो गई। पंडित नेहरू संघ के कट्टर विरोधी थे और वे संघ को जड़ से नष्ट करना चाहते थे। महात्मा गांधी की हत्या के समय इसे शुभ अवसर जानकर 2 फरवरी, 1947 को श्रीगुरुजी को हत्या के आरोप के तहत गिरफ्तार कर लिया गया 3 फरवरी को देश भर के हजारों कार्यकर्ताओं को जेल में बंद कर के 4 फरवरी, 1947 को संघ पर प्रतिबंध लगा दिया गया। इस समय नेहरू ने कहा-''मैं अपनी सारी शक्ति का उपयोग करके संघ को समाप्त कर दूंगा।'' शासन, सत्ता, पुलिस, सेना रेडियो पत्र-पत्रिकाएं पैसा सब उनके पास था जिसका उपयोग उन्होंने संघ पर कुठाराघात करने के लिए किया। नेहरू के बाद उनकी पुत्री इंदिरा गांधी के निरंकुश आपातकाल के दौर में सन 1975 में तथा अयोध्या में विवादित ढांचा गिराए जाने के बाद सन 1992 में भी संघ पर प्रतिबंध लगा। किंतु राजनीतिक द्वेष से लगाए गए आरोप-प्रत्यारोप और प्रतिबंध समय-समय पर अपने आप हटते और कटते चले।

18. श्रीगुरु जी और मीडिया

सन् 1940 में डॉ. साहब की मृत्यु पश्चात् श्रीगुरुजी संघ के द्वितीय सरसंघचालक बने थे। 1947 से पहले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में प्रचार-प्रसार का कोई माध्यम नहीं था तथा समाचार पत्रों में उसकी नाम मात्र की चर्चा होती थी। हां, यदि चर्चा होती थी, तो वह नकारात्मक ही। परंतु 1948 में जब महात्मा गांधी की हत्या हुई, तो पंडित जवाहर लाल नेहरू ने एक सोची समझी योजना के तहत संघ पर मिथ्यारोप गढ़ने शुरू किया। कांग्रेस के बड़े-बड़े नेताओं ने अपने समर्थकों के साथ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यालयों पर हमले किये, स्वयंसेवकों को मारा-पीटा तथा घरों को जलाया। पंडित नेहरू तथा सरकार के भय से सभी समाचार-पत्रों ने भी चुप्पी साध ली थी। स्वतंत्रता बाद प्रथम प्रधानमंत्री पंडित नेहरू ने यहां तक कई बार सार्वजनिक रूप से कहा कि-**"मैं सारी शक्ति का उपयोग करके संघ को समाप्त कर दूंगा"।** 30 जनवरी 1948 को गांधी जी की हत्या हुई। श्री गुरूजी को 2 फरवरी को जेल में डाल दिया गया, 3 फरवरी को स्वयंसेवकों को जेल में डालने के बाद 4 फरवरी, 1948 को स्वतंत्र भारत की नयी सरकार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर प्रतिबंध लगा दिया।[37]

समाचार-पत्रों में केवल सरकारी पक्ष ही प्रसारित होता था। भयवश तथा पूर्वाग्रह से ग्रसित समाचार पत्र राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विरुद्ध तरह-तरह की खबरें छापते थे। ऐसे समय में संघ ने मीडिया क्षेत्र में प्रवेश किया। हिन्दी में **'दैनिक स्वदेश'** ग्वालियर से, **'साप्ताहिक पांचजन्य'** और **आर्गनाइजर** दिल्ली से **'मासिक राष्ट्रधर्म'** लखनऊ से **'तरूण भारत'** मराठी में **'नागपुर'**, मुंबई, सोलापुर और औरंगाबाद से **'मासिक विवेक'** हिन्दी व मराठी में मुंबई से अंग्रेजी में **मदरलैंड** दिल्ली से एवं केरल के एर्नाकुलम व कालीकट से मलयालम भाषा में **दैनिक जन्मभूमि**, बंगलौर से कन्नड़ में **'दैनिक होसदिगंत'**, मलयालम भाषा में कोच्चि से **केसरी'**, तमिल में चेन्नई से **'विजय भारतम'**, कन्नड में बैंगलौर से **'विक्रम'**, तेलगु में हैदराबाद से **'जागृति'** उड़िया में कटक से **'राष्ट्रदीप'** कर्णावती से गुजराती में **साधना**, कोलकाता से बंगला भाषा में **स्वस्तिका**, गुवाहाटी से असनिया में **'आलोक'** बेलगांव से मराठी में **'चीरवार्णी'**. पणजी से मराठी में **गोमंत्र शक्ति** प्रकाशित होने लगा। पाक्षिक पत्रों में नयी दिल्ली से हिन्दू विश्व तथा जयपुर से पाथेय कण का प्रकाशन हो रहा है। मासिक पत्रों में **'राष्ट्रधर्म'** लखनऊ से बंगलौर से कन्नड़ में **'उत्थान'** व संस्कृत में **'संभाषण संदेश'** मंगलौर से अंग्रेजी में **'असीमा'**, विजयवाडा से तेलगु में **'हिन्दू राष्ट्र** पुणे से मराठी में **'एकता'**, जयपुर से संस्कृत में **'भारती'**, नई दिल्ली से हिन्दी व अंग्रेजी में **'वनबंधु'** हैदराबाद से अंग्रेजी में **भारतीय प्रज्ञा**, इंदौर से बालपत्रिका, **देवपुत्र**, जन्मू से अंग्रेजी में द्वैमासिक **वायस ऑफ जम्मू-कश्मीर** तथा नई दिल्ली से पहले हिन्दी व अंग्रेजी में मासिक **मंथन** (अब केवल हिन्दी में) तथा लखनऊ से त्रैमासिक **विश्व संवाद केन्द्र पत्रिका** का प्रकाशन हो रहा है।

संघ पर से प्रतिबंध हटने के बाद विभिन्न स्थानों पर पूज्य श्री गुरूजी के स्वागत में बड़े-बड़े कार्यक्रमों का अयोजन हुआ।

19. संघ कार्य पद्धति का विकास

डॉ. केशव बलीराम हेडगेवार जन्मजात देशभक्त तथा अपूर्व संगठक थे। सर्वप्रथम शाखा में नए-नए स्वयंसेवकों को लाना, उनको संघ मन, वचन तथा कर्म से सिखाना, डॉ. साहब का प्रमुख कार्य था। उन्होंने राष्ट्र सर्वोपरि भावना से संघ कार्य पद्धति का विकास किया तथा नए-नए कार्य पद्धति का विकास होता चला गया।

(क) शाखा

संघ स्थापना के पूर्व डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों के प्रति बहुत उग्र थे। किन्तु संघ स्थापना के बाद उग्र स्वभाव वाले डॉ. हेडगेवार

इतने प्रेमिल हो गए कि पूज्य श्री गुरू जी ने उन्हें **'अजातशत्रु'** कहा। डॉ साहब ने छत्रपति शिवाजी महाराज को अपना आदर्श माना तथा उन्हीं के अनुसार अपना जीवन ढाला। उन्होंने अपने जीवनकाल में ही श्रीगुरूजी को सरसंघचालक नियुक्त किया। संघ पर से प्रतिबंध हटने के बाद परिस्थितियाँ बदली तथा स्वयंसेवकों तथा राजनीतिज्ञों द्वारा संघ को राजनीति में आने के लिए दबाव दिया जाने लगा। श्रीगुरू जी को सरदार पटेल ने पत्र लिखा, आप संघ पर से प्रतिबंध क्यों हटाना चाहते है। संघ कांग्रेस से जुड़ जाए, इससे कांग्रेस अच्छी पार्टी बन जाएगी। परंतु श्रीगुरूजी ने दृढ़ता से यह प्रस्ताव ठुकरा दिया।[38]

"संघ के उद्देश्यों तथा मंतव्यों का प्रचार करने की इच्छा से नियमपूर्वक एकत्र आने वाले स्वयंसेवकों के एकत्रीकरण को केन्द्र (शाखा) कहा जाएगा। प्रत्येक केन्द्र स्वयं पूर्ण इकाई होगा तथा निधि प्राप्त करेगा व विनियोग करेगा। प्रत्येक शाखा संघ की इकाई होगी तथा वह अपने संचालन तथा आर्थिक व्यवहारों में स्वायत्तपूर्ण होगी शाखा कार्यकारी मंडल के निर्देश पर कार्य करेगी।

परम पूजनीय बाला साहब देवरस कहा करते थे **"संघ यानि शाखा, शाखा यानि कार्यक्रम, कार्यक्रम यानि कार्यकर्ता।"**[39]

संघ का लक्ष्य है-**समग्र हिन्दू समाज का संगठन** यानि सुसंगठित हिन्दू समाज का निर्माण।[40]

(ख) सर्वव्यापी और सर्वस्पर्शी-

डॉ. हेडगेवार ने कहा-जहाँ-जहाँ हिन्दू रहता है यहाँ-वहाँ संघ पहुंचना चाहिए।[41]

सर्वस्पर्शी का अर्थ संघ का सामाजिक विस्तार से है। समाज में सभी वर्गो जाति-बिरादरी, मत-पथ संप्रदायों, उपपथों तथा अन्य सभी स्थानों पर संघ कार्य हो। संघ कार्य विस्तार हेतु "अपरिचित को परिचित, परिचित को मित्र, मित्र को स्वयंसेवक, स्वयंसेवक को कार्यकर्ता तथा कार्यकर्ता को प्रचारक" बनाना है। संघ का कार्य हिन्दू समाज 'का' संगठन है, न कि हिन्दू समाज 'में' संगठन है। शाखा में सर्वस्पर्शी व सर्वव्यापी प्रतिनिधित्व है या नहीं, यहीं उसकी सार्थकता की सच्ची कसौटी है।[42]

(ग) श्री गुरूदक्षिणा

गुरू के प्रति आस्थावान होकर श्रद्धाभाव से जो कुछ अर्पित किया जाता है वही **'गुरू दक्षिणा'** होती है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भगवाध्वज को अपना गुरू स्वीकार किया है। अत:

वर्ष में एक बार 'गुरूपूर्णिमा' के दिन स्वयंसेवक श्रद्धापूर्वक पवित्र भाव से संचित द्रव्य (धन) अपने गुरु अर्थात् भगवाध्वज को पूजन के पश्चात् अर्पित करते है आय का 1/10 भाग समाज के लिए अर्पित करने का निर्देश भारतीय धर्मग्रंथों में भी दिया गया है।

श्रीगुरूदक्षिणा में समर्पण के कारण राष्ट्र निर्माण में स्वयंसेवकों की भूमिका का विकास हुआ है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का पहला **श्री गुरु दक्षिणा** कार्यक्रम सन् 1928 में हुआ था।[43]

(घ) संघ का संविधान

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का भी संविधान है। संघ के संविधान के अनुसार परमपूज्य सरसंघचालक का स्थान सर्वोच्च तथा मार्गदर्शक रूप में होता है। संघ में सर्वोच्च अधिकारी माननीय सरकार्यवाह होते हैं। उनका चुनाव अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधियों द्वारा 3 वर्षों के लिए किया जाता है। 3 वर्ष बीत जाने पर पुनः 3 वर्षो के लिए चुनाव किया जाता है। अखिल भारतीय प्रतिनिधियों का चुनाव प्रांतीय प्रतिनिधि करते हैं। प्रांतीय प्रतिनिधियों का चुनाव 18 वर्ष या इससे उपर की आयु के प्रशिक्षित एवं 6 वर्षो से सक्रिय स्वयंसेवकों के द्वारा ही किया जाता है। प्रांत प्रचारक तथा प्रांत संघचालक मिलकर विभाग तथा जिला स्तर के प्रचारकों की नियुक्ति करते हैं।

(ञ) संघ कार्य में परिवार

समाज को यदि जातिवाद, छुआछूत, दहेज, पाश्चात्य अंधानुकरण आदि के घातक प्रभाव से बचाना है तो इसकी शुरूआत परिवार से ही की जा सकती है। क्योंकि सभ्यता, संस्कृति का संरक्षण, संवर्धन, चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व निर्माण जब परिवार में बेहतर तरीके से होगा। तभी उसका प्रभाव एवं प्रतिबिम्ब समाज में दिखेगा।

पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित अथवा अहिंदूवादी अराष्ट्रीय विचारधारा से युक्त परिवार का बालक या व्यक्ति संघ के उद्देश्यों को लक्ष्यों को नहीं समझ सकता। इसलिए संघ प्रत्येक स्वयंसेवक के मूलाधार परिवार को भी प्रमुखता देता हैं स्वयंसेवकों के परिवारों को संघानुकूल तथा समाज के अनुकूल बनाने पर ही समाज को समग्र रूप से संगठित किया जा सकेगा।[44]

(च) प्रतिज्ञा

हिन्दू धर्म हिन्दू संस्कृति, हिन्दू समाज का संरक्षण, राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नत्ति का

संकल्प ही **संघ की प्रतिज्ञा** है। यह **प्रतिज्ञा बंधन नहीं आधार** है। निर्मित मार्ग को अधिकाधिक विशाल और वृहद बनाने के लिए संघ में प्रतिज्ञा की विधि है। हिन्दू जीवन पद्धति में कोई पवित्र कार्य करने से पूर्व संकल्प लिया जाता है। राष्ट्र निर्माण, देशभक्ति का पवित्र संकल्प ही संघ में प्रतिज्ञा है।

संघ की प्रतिज्ञा इस प्रकार है

सर्वशक्तिमान श्री परमेश्वर तथा अपने पूर्वजों का स्मरण कर मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि अपने पवित्र हिन्दू धर्म, हिन्दू संस्कृति तथा हिन्दू समाज का संरक्षण कर हिन्दू राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नत्ति करने के लिए मैं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का घटक बना हूँ। संघ का कार्य में प्रामाणिकता, निःस्वार्थ बुद्धि तथा तन-मन-धन पूर्वक करूंगा और इस व्रत का मैं आजन्म पालन करूंगा। भारत माता की जय।[45]

कर्तव्य विमुख होने के प्रसंग पर स्वयं के अवलंब हेतु 'प्रतिज्ञा' का आश्रय है।[46]

(छ) भगवाध्वज-

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ किसी व्यक्ति विशेष को गुरु नहीं मानता बल्कि **'भगवा ध्वज'** को **'गुरू'** मानता है। संघ व्यक्तिपूजक नहीं बल्कि तत्वपूजक है। ध्वज की पृष्ठभूमि में उस राष्ट्र के दीर्घकालीन गौरवशाली इतिहास, वहां की श्रेष्ठ परंपराओं, जीवन दृष्टि एवं समाज के दीर्घकालीन लक्ष्य दृष्टिगोचर होते हैं। इसलिए ध्वज मार्गदर्शक एवं प्रेरणा का केन्द्र होता है।

वैदिक काल से लेकर अंग्रेजों के साथ संघर्ष तक सभी चक्रवर्ती सम्राटों, महाराजाओं का प्रेरक यहीं भगवाध्वज था। हिन्दू धर्म ने ही नहीं, बल्कि सिख, बौद्ध, जैन धर्म ने भी यही भगवाध्वज अपनाया।[47]

डॉ. साहब ने कहा- शुद्ध स्नेह का प्रतीक लाल रंग, शुद्धता का प्रतीक पीला रंग और यश सफलता का सूचक, शुभ्ररंग इन तीनों को साथ मिलाकर बना केसरिया अथवा 'भगवाध्वज' ही संघ कार्य के लिए सर्वथा योग्य रहेगा।[48]

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ विचार परिवार

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ गत 99 वर्षो से व्यक्ति निर्माण की यज्ञशाला की भूमिका का निर्वहन कर रहा है। व्यक्ति निर्माण के इस सारस्वत अनुष्ठान ने समाज जीवन में भारतीयता और भारतबोध को प्रतिष्ठापित किया है। राष्ट्रहित में व्यक्ति निर्माण की आवश्यकता को देखते हुए संघ व्यक्ति-व्यक्ति में शुचिता, सात्विकता, सदाशयता, सहृदयता, सहजता और आध्यत्मिकता के संस्कार का बीजारोपण करता रहा है। इस ईश्वरीय कार्य के लिए संघ ने समाज जीवन के हर क्षेत्र में विचार परिवार खड़ा

किया है। राष्ट्रीय आपदा 1965, 1971 एवं कारगिल युद्ध के समय स्वयंसेवकों ने जनता और सेना की हरसंभव सहायता की। इसके अलावा उत्तरकाशी, महाराष्ट्र भुज (गुजरात) में भूकम्प, रेल दुर्घटनाओं केरल में बाढ़ से हुई भारी तबाही के समय भी संघ विचार परिवार के विभिन्न संगठनों के स्वयंसेवकों ने सहजभाव से राष्ट्रसेवा में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया है। आंध्र प्रदेश में सन् 1977 में प्राकृतिक आपदा के समय स्वयंसेवकों की निःस्वार्थ सेवा देखकर सर्वोदयी नेता प्रभाकर राव ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की नयी नाम व्याख्या करते हुए इसे **"Ready for selfless service"** कहा।

संघ के संस्कारित कार्यकर्ता ही राष्ट्र के पुर्ननिर्माण की भव्य संकल्पना साकार करते हैं। संघ की शाखा कार्यकर्ता निर्माण का केन्द्र है। यहां से संस्कारित कार्यकर्ता जीवन में विभिन्न क्षेत्रों में संघ के आदर्शों के अनुकूल कार्य करते हैं। संघ दल नहीं अपितु सम्पूर्ण समाज है।

संघ विचार परिवार का विकास इस प्रकार है

1. गीता विद्यालय, कुरुक्षेत्र, 1946 माधव सदाशिव गोलवलकर द्वारा स्थापित
2. सरस्वती शिशु मन्दिर 7-7-1952 गोरखपुर, उत्तर प्रदेश
3. शिशु शिक्षा प्रबंध समिति 1958
4. विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान (30,000 विद्यालय) दिल्ली. मुरलीधर दत्तात्रेय देवरस द्वारा स्थापित
5. भारतीय मजदूर संघ 23 जुलाई 1955,भोपाल, दत्तोपन्त ठेंगडी (1920-2004) द्वारा स्थापित
6. भारतीय किसान संघ 4-3-1979,कोटा, दत्तोपन्त ठेंगडी द्वारा स्थापित
7. अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना 24-5-1994 दिल्ली, मोरोपंत पिंगले (1919-2003) द्वारा स्थापित
8. अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् 09-7-1949 बलराज मधोक द्वारा स्थापित
9. अखिल भारतीय अधिवक्ता परिषद 7-11-1994 दिल्ली
10. अखिल भारतीय ग्राहक पंचायत 1974,पुणे में बिन्दुमाधव जोशी द्वारा स्थापित
11. संस्कार भारती श्रंदनतल, 1981 रनबादवू
12. सेवा भारती 1979
13. राष्ट्रीय सेवा भारती
14. भारतीय जनसंघ 21-10-1951 डॉ श्यामाप्रसाद मुखर्जी द्वारा स्थापित
15. भारतीय जनता पार्टी 06-4-1980दिल्ली, अटल बिहारी वाजपेयी
16. लघु उद्योग भारती

17. क्रीड़ा भारती 1992
18. आरोग्य भारती
19. नेशनल मेडिकल एसोसिएशन
20. संस्कृत भारती 1996
21. प्रज्ञा भारती 1990
22. विज्ञान भारती 1992 जबलपुर
23. बाबा साहिब आपटे स्मारक समिति 1973,नागपुर, मोरोपन्त पिंगले द्वारा स्थापित
24. भारत विकास परिषद् 12-01-1993 डॉ सूरज प्रकाश द्वारा स्थापित
25. विश्व हिंदू परिषद् 1964 मुम्बई माधव गोलवालकर एवं स्वामी चिन्मयानन्द आदि द्वारा
26. राष्ट्र सेविका समिति 25-10-1936नागपुर, लक्ष्मीबाई केलकर द्वारा स्थापित
27. राष्ट्रीय सम्पादक परिषद
28. भारत प्रकाशन 1947
29. पाञ्चजन्य हिन्दी साप्ताहिक 14-1-1948
30. आर्गनाइजर अंग्रेजी साप्ताहिक 1947
31. राष्ट्रधर्म हिन्दी मासिक 1947
32. स्वदेश हिन्दी दैनिक (अक्षय तृतीया. 1970 ई.) ग्वालियर
33. दीनदयाल शोध संस्थान 1972,दिल्ली, नानाजी देशमुख (1916-2010) द्वारा स्थापित
34. हिंदू स्वयंसेवक संघ
35. अखिल भारतीय शिक्षण मण्डल
36. वनवासी कल्याण आश्रम 26-12-1952 जशपुर, रमाकान्त केशव देशपांडे द्वारा स्थापित
37. स्वदेशी जागरण मंच 22-12-1991दत्तोपन्त ठेंगडी द्वारा स्थापित
38. मुस्लिम राष्ट्रीय मंच
39. भारतीय विचार केन्द्र 1982 वी परमेश्वरन द्वारा स्थापित
40. राष्ट्रीय सिख संगत 24-11-1986
41. विवेकानन्द केन्द्र 1972 एकनाथ रानडे (1914-1982) द्वारा स्थापित
42. अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद, उत्तर प्रदेश, 1992
43. अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ 1993
44. वित्त सलाहकार परिषद
45. सहकार भारती, गणेश चतुर्थी, 1978 ई, पुणे
46. सामाजिक समरसता मंच 14-4-1983 दत्तोपन्त ठेंगडी द्वारा स्थापित
47. हिन्दू जागरण मंच 1993

48. विश्व संवाद केन्द्र
49. अखिल भारतीय साहित्य परिषद् 27-10-1986 नई दिल्ली
50. दधीचि देहदान समिति
51. श्री सनातन भवानी सेना, अनुपम राज द्वारा स्थापित

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में सभी संगठनों की भूमिका महत्वपूर्ण है। लेकिन इसमें प्रमुख संगठनों का विवरण इस प्रकार है।

(क) राष्ट्र सेविका समिति

स्त्री शक्ति में ही मातृशक्ति है और मातृशक्ति से सम्मिलित विचार राष्ट्र जीवन से जुड़े हैं। मानव का व्यक्तिगत जीवन, पारिवारिक जीवन स्त्री और पुरुष के बिना अस्तित्व में नहीं आ सकता। विशेषकर उसमें महिलाओं की सहभागिता अनिवार्य है उसी प्रकार राष्ट्र जीवन भी बिना स्त्री सहभागिता के स्वत: ही संज्ञाशून्य बन जायेगा। स्त्री सहभागिता के अभाव में संपूर्ण राष्ट्र जीवन अपूर्ण हो जायेगा।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भी स्त्री की शक्ति को मातृस्वरूपा मानकर नमन, वन्दन करता है। स्त्री में राष्ट्रीय भावना के साथ ही आत्मविश्वास और कर्तव्य का भी विकास हो. इस दृष्टि से ही वन्दनीया लक्ष्मीबाई केलकर उपाख्य मौसी जी ने 1936 में विजयादशमी के दिन **राष्ट्र सेविका समिति** नामक भारतव्यापी महिला संगठन की स्थापना की।[49]

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक माधव सदाशिवराव गोलवलकर उपाख्य श्री गुरूजी ने भी कहा था कि संघ एवं राष्ट्र सेविका समिति साथ-साथ चलने वाली रेलवे की दो अलग-अलग पटरियों की भांति संगठन हैं. जो बाह्य तौर पर देखने से भले ही पृथक लगे परन्तु दोनों का लक्ष्य एक है। भारतमाता परम वैभव को प्राप्त करें तथा भारत पुन: विश्वगुरू के पद पर आरूढ़ हो। उसी तरह संघ एवं राष्ट्र सेविका समिति दोनों का एकमात्र लक्ष्य है। सबल समाज व सबल राष्ट्र की संकल्पना है।[50]

(ख) हिन्दुस्थान समाचार

श्री गुरुजी के मार्गदर्शन तथा बाला साहेब देवरस के आदेश से मुंबई में 1 दिसंबर, 1948 को मुंबई में शिवराम शंकर उर्फ **दादा साहेब आप्टे** ने बहुभाषी संवाद समिति **हिन्दुस्थान समाचार** की स्थापना की।[51] दादा साहेब आप्टे ने 1964 में विश्व हिन्दू परिषद की स्थापना में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया तथा उसके प्रथम महामंत्री भी बनें।

हिन्दुस्थान समाचार के दूसरे शिल्पकार हुए **श्री बापूराव लेले** थे। जिन्होंने अपने जीवन के 60 वर्ष मातृभूमि की निःस्वार्थ सेवा में व्यतीत किया। राष्ट्रवादी तथा सकारात्मक विचारों से ओत-प्रोत श्री लेले जी ने 1948 में हिन्दुस्थान समाचार बहुभाषी सहकारी संवाद समिति में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक, तृतीय सरसंघचालक माननीय बाला साहेब देवरस के सचिव, पूर्व अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख तथा हिन्दुस्थान समाचार बहुभाषी संवाद समिति के संरक्षक माननीय **श्रीकांत शंकर जोशी** ने 1985 से मूर्च्छित पड़ी **हिन्दुस्थान समाचार संवाद समिति** का नवोत्थान करने का व्रत लिया।

(ग) दीनदयाल शोध संस्थान

एकात्म मानव दर्शन के आधार पर ग्रामीण पुर्नरचना करने वाली संस्था है। जिसने राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख के मार्गदर्शन में चित्रकूट, बीड, गोंडा, अहमदाबाद में रचनात्मक कार्य कर समाज हेतु आदर्श प्रस्तुत किया है। 1972 में नानाजी देशमुख ने **दीनदयाल शोध संस्थान** की स्थापना कर पंडित दीनदयाल उपाध्याय के सपनों को साकार किया है।[52] पंडित दीनदयाल जी से प्रेरणा लेकर नानाजी ने दीनदयाल शोध संस्थान को आन्दोलनात्मक रचनात्मक तथा बौद्धिक गतिविधियों का संगम स्थल बना दिया है। संस्थान द्वारा नानाजी समग्र सहित दर्जनों पुस्तकों का प्रकाशन किया गया है।

(घ) अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद

वैभवशाली भारत के निर्माण का स्वप्न राष्ट्रभक्ति एवं दृढ इच्छाशक्ति युक्त समर्पित छात्र युवाओं द्वारा ही पूरा किया जा सकता है। इसी उद्देश्य से विद्यार्थियों को संगठित करने एवं उनके दिशाबोध हेतु 9 जुलाई, 1949 को **'अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद'** का पंजीयन हुआ।[53] 84 स्वतंत्रता पश्चात् भारत में राष्ट्रीय पुर्ननिर्माण के लक्ष्य के साथ छात्र युवाओं को जोड़ने का काम विद्यार्थी परिषद ने सफलतापूर्वक किया। विद्यार्थी परिषद का मानना है कि छात्रशक्ति ही युवाशक्ति होती है। इसका मूल उद्देश्य राष्ट्रीय पुर्ननिर्माण है। सन् 1973 में चिमन भाई पटेल सरकार के विरूद्ध गुजरात में विद्यार्थियों के नेतृत्व में मंहगाई, भ्रष्टाचार, कुशासन के विरूद्ध देशव्यापी आंदोलन हुआ। तत्पश्चात् 1974 में 'अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद' के प्रयासों से मंहगाई, भ्रष्टाचार, कुशासन, बेरोजगारी, कुशिक्षा के विरोध में बिहार में आंदोलन ने विकराल रूप धारण कर लिया। सन् 1975 में देश में आपातकाल लगने पर इसके विरूद्ध देशभर के छात्रों ने अभाविप के नेतृत्व में आन्दोलन किया।

छात्रहित से लेकर राष्ट्रहित के मुद्दों पर विद्यार्थी परिषद् हमेशा सक्रिय रहा है। बांग्लादेशी घुसपैठ एवं कश्मीर से धारा 370 हटाने के लिए भी विद्यार्थी परिषद समय-समय पर आंदोलन करता रहा है। आज हमारे देश को **'भारत'** नाम से जाना जाता है। इसके पीछे भी **'अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद'** का संघर्ष रहा। दरअसल, भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर नेहरू देश का नाम 'इंडिया'तथा राष्ट्रगान 'जन गण मन' रखना चाहते थे। उस समय विद्यार्थी परिषद ने देशभर में इस संबंध में जनमत संग्रह कर यह सिद्ध किया कि, देश की 95-98 प्रतिशत जनता देश का नाम **'भारत'** तथा राष्ट्रगान **'वंदेमातरम्'** रखना चाहती है।

(ञ) अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम

देश के सुदुर प्रांतों, दुर्गम बनों पर्वतों में आधुनिक विकास से अनभिज्ञ, असुविधाओं में जीवनयापन करने वाले वनवासियों को केन्द्र की मूलभूत सुविधाओं से जोड़ने एवं उनके जीवन को सहज बनाने के उद्देश्य से सन् 1952 में श्री रमाकांत देशपांडे उपाख्य बाला साहब देशपांडे ने मध्यप्रदेश के रायगढ़ जिले के जसपुर तालुका (अब छत्तीसगढ़ प्रांत) में **'अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम'** की स्थापना की। देश के कोने-कोने में बारह सौ केन्द्रों पर 1280 पूर्णकालिक व अन्य कार्यकर्ताओं द्वारा लगभग 16750 प्रकल्प चल रहे हैं।

(च) विद्याभारती

भारत में आदर्श शिक्षा प्रणाली की संकल्पना के साथ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने 1952 में उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले में **'सरस्वती शिशु मंदिर'** नामक विद्यालय की स्थापना की। सन् 1958 में शिशु मंदिरों के मार्गदर्शन एवं समुचित विकास के लिए उत्तर प्रदेश में 'शिशु शिक्षा प्रबंध समिति' का गठन हुआ। इस विद्यालय का उद्देश्य बालकों को भारतीय समाज, सभ्यता, संस्कृति, परंपरा,इतिहास, धर्म, पर्वो, महापुरूषों के विषय में प्रारंभ से जानकारी देते हुए उनमें आदर्श चरित्र निर्माण करना है। जिससे आगे चलकर के राष्ट्रहित में अपना अभूतपूर्व योगदान कर सकें। वर्तमान समय में विद्याभारतीश देश में शिक्षा के क्षेत्र में सबसे बडी अशासकीय संस्था है।

(छ) भारतीय जनसंघ से भाजपा

हिन्दू महासभा के नेता डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने नेहरू से मतभेद होने पर 1951 में **भारतीय जनसंघ** की स्थापना किया।

सन् 1975-77 में भारतीय लोकतंत्र पर ग्रहण लग चुका था। ऐसे में जनसंघ के सदस्यों में नानाजी देशमुख, अटल बिहारी वाजपेयी, लालकृष्ण आडवाणी, सुन्दर सिंह भंडारी, कुशाभाउ ठाकरे सहित प्रमुख जनसंघ नेताओं ने लोकतंत्र की स्थापना में संघ कार्य पद्धति में सीखे गए गुणों के आधार पर जनता पार्टी की सरकार बनवायी। लेकिन विरोधियों ने दोहरी सदस्यता का बहाना बनाकर जनसंघ को बाहर करने का प्रयास किया, सरकार गिर गयी तथा 1980 में जनसंघ ने भाजपा नाम से कार्य करना शुरू किया।

(ज) भारतीय मजदूर संघ

श्रमजगत में श्रमिक, प्रबंधक, पूंजीपति इन तीनों के समन्यय से ही कोई भी औद्योगिक परिवार चल सकता है। अधिकार के साथ कर्त्तव्य भी इसी संकल्पना के साथ श्रीगुरूजी की प्रेरणा से श्री दंतोपंत ठेंगड़ी ने 23 जुलाई, 1955 को भोपाल में **भारतीय मजदूर संघ** की स्थापना की। यह श्रमिकों का, श्रमिकों के लिए तथा श्रमिकों द्वारा संचालित संगठन हैं। भारतीय मजदूर संघ ने नारा दिया-"देश हित में करेंगे काम, काम के लेंगे पूरे दाम।"

वर्तमान समय में भारतीय मजदूर संघ में 1 करोड़ से अधिक सदस्यता तथा 5 हज़ार से अधिक यूनियन है। यह देश का पहले नंबर का केन्द्रीय श्रमिक संगठनहै।

(झ) विश्व हिन्दू परिषद

न हिन्दु पतितो भवेत, तथा 'हिन्दुवः सोदराः सर्वे' अर्थात् कोई हिन्दू पतित (निम्न जाति) नहीं है तथा सभी हिन्दु सहोदर भाई भाई है। इसी वाक्य को सत्य मानकर विश्व के सभी हिन्दुओं, उनके क्षेत्र, मत भाषायी भेद को मिटाकर उन्हें एकीकृत करने के उद्देश्य से एवं हिन्दुओं का एक सुदृढ़ समाज खड़ा करने उद्देश्य से 29 अगस्त, 1964 को जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर श्रीगुरु जी की प्रेरणा के मार्गदर्शन पाकर स्व. शिवराम शंकर (दादा साहब) आप्टे ने मुंबई के संदीपनी आश्रम में **विश्व हिन्दू परिषद** का गठन किया।

आद्य सरसंघचालक डॉ. केशवराव बलीराम हेडगेवार द्वारा स्थापित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एक विशाल वटवृक्ष बन चुका है। जिससे प्रेरणा एवं संस्कार प्राप्त स्वयंसेवक समाज जीवन के विविध क्षेत्रों में कार्य कर रहे है। जो राष्ट्रसेवा में नींव के पत्थर हैं तथा प्रसिद्धि से दूर अनथक रूप से सेवा कर रहे हैं। जिसको **राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ विचार परिवार** कहा जाता है। संघ परिवार का इतिहास जब लिखा जाएगा, तो उपर्युक्त संगठनों का नाम अग्रिम पंक्ति में होगा।

अपने स्थापना काल से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का कार्य देशभर में विभिन्न संगठनों की स्थापना के साथ बहुत तेजी से विस्तारित होने लगा। संघ की दैनिक शाखाओं में **61 प्रतिशत** शाखाएँ छात्रों की हैं और **39 प्रतिशत** व्यवसायी शाखाएँ हैं। संघ की दृष्टि से **6506** खंड हैं। इनमें से **84 प्रतिशत** से अधिक खंडों में शाखाएँ है। **59,000 मंडलों** में से लगभग **41 प्रतिशत** से अधिक मंडलों में संघ का प्रत्यक्ष शाखा के रूप में कार्य है। **2303** नगरीय क्षेत्रों में **94** प्रतिशत नगरों में शाखा का कार्य चल रहा है। संघ के शताब्दी **वर्ष 2025** तक **संघ कार्य एक लाख से अधिक** स्थानों पर ले जाने का संकल्प है। कोरोना महामारी के दौरान संघ ने समाज के साथ मिलकर सक्रियता से सहयोग दिया था। महामारी के पहले ही दिन **5 लाख 50 हजार** स्वयंसेवकों सेवा कार्य प्रारंभ कर दिया था। संघ द्वारा धर्मजागरण, कृषि विकास, पर्यावरण संरक्षण, कुटुम्ब प्रबोधन, गौसंवर्धन एवं ग्रामीण विकास का कार्य बहुत अच्छी मात्रा में एवं अच्छी गति के साथ चलाया जा रहा है।

संदर्भ सूची

1. सी.पी. भिशीकर, डॉ. हेडगेवार परिचय एवं व्यक्तित्व सुरूचि प्रकाशन, दिल्ली, 2018,पृ॰ 1।
2. प्रभाकर बलवन्त दाणी, संघ दर्शन, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ, संवत 2048, पृ॰ 39।
3. महात्मा गांधी, नवजीवन 1/7/1920, पृ॰ 1-2।
4. बी. एल ग्रोवर, आधुनिक भारत का इतिहास, एस चंद एंड कम्पनी लि., दिल्ली, 2001, पृ॰ 353।
5. वही, पृ॰ 354।
6. डॉ. वि.रा. करन्दीकर, तीन सरसंघचालक, स्नेहल प्रकाशन, पुणे, 2001,पृ॰ 94।
7. वही, पृ॰ 95।
8. प्रभाकर बलवन्त दाणी, संघ दर्शन, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ, संवत् 2048 पृ॰ 23।
9. वही, पृ॰ 93।
10. वही पृ॰ 94।
11. ना. ह. पालकर, डॉ. हेडगेवार चरित्र लोकहित प्रकाशन, लखनऊ, 2,000, पृ॰ 192।
12. वही, पृ॰ 206।
13. डॉ. वि. रा. करन्दीकर, वहीं, पृ॰ 94।
14. वही, पृ॰ 95।
15. वही, पृ॰ 76।
16. प्रभाकर बलवन्त दाणी, संघ दर्शन, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ, संवत् 2048 पृ॰ 10-11।

17. डॉ. राकेश सिन्हा, डॉ. केशव बलीराम हेडगेवार, प्रकाशन विभाग भारत सरकार, नयी दिल्ली. 2003 पृ॰ 4–5।
18. गोविन्द गणेश आवटे, महाराष्ट्र 28 जुलाई, 1940, पृ॰ 12।
19. डॉ. राकेश सिन्हा, वहीं, पृ॰ 27–29।
20. डॉ. वि.रा. करन्दीकर, तीन सरसंघचालक. स्नेहल प्रकाशन पुणे 2001 पृ॰ 81–86।
21. प्रभाकर बलवन्त दाणी, संघ दर्शन, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ, संवत् 2048 पृ॰ 30–31।
22. डॉ. राकेश सिन्हा, 'डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार' सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 2003, पृष्ठ 42।
23. फाइल नंबर 28/1921 राजनीतिक भाग–1, पैरा 17, राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली 1।
24. केसरी, 23 एवं 30 अगस्त 1921, पृष्ठ 7।
25. डॉ. राकेश सिन्हा, वहीं, पृ॰ 91।
26. वहीं, पृ॰ 97।
27. वहीं, पृ॰ 68–69।
28. नारायण हरि पालकर 'डॉ॰ हेडगेवार चरित' (पंचम संस्करण) लोकहित प्रकाशन, लखनऊ।
29. Memoranam of Government Of India 'Home department intelligence Bureau, No. 60-D, Delhi, May 18, 1942, Also, W.K Anderson op. cit., p. 595.
30. अध्यक्ष।
31. आर्गनाइजर, जून 16, 1973, टाइम्स ऑफ इंडिया, 7 अप्रैल, 1980।
32. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रकाशन 20–39।
33. संघ ने मोहन भागवत को अपना नया, प्रमुख घोषित किया– 'व्यवहारिक और आडवाणी के दोस्त, रविवार– 22 मार्च, 2009, इंडियन एक्सप्रेस।
34. समाज से भेदभाव मिटाएं, सोमवार, 29 जनवरी, 2007, 'हिन्दू'।
35. विनायक दामोदर सावरकर 'मेरा आजीवन कारावास', पृष्ठ 274।
36. वही, पृ॰ 277।
37. प्रभाकर बलवन्त दाणी, संघ दर्शन, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ, संवत् 2048 पृ॰ 30–31।
38. विजय कुमार, वही, पृ॰ 5।
39. विजय कुमार, वही, पृ॰ 5।
40. विजय कुमार, वही, पृ॰ 3।
41. वही, पृ॰ 5–10।
42. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का संविधान हेडगेवार भवन, महाल, नागपुर, 1995, पृ॰ 3।
43. बाला साहब देवरस, सामाजिक समरसता और हिंदूत्व सुरूचि प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2000, पृ॰ 15–25।

44. हो. वे शेषाद्रि मूल्यांकन, सुरूचि प्रकाशन, नयी दिल्ली, युगाब्द–5099, पृ॰ 6।
45. प्रभाकर बलवन्त दाणी, संघ दर्शन, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ, संवत् 2048 पृ॰ 34।
46. विषय–विन्दु, वही, पृ॰ 62।
47. विजय कुमार वही, पृ॰ 50–53।
48. हो. वे शेषाद्रि मूल्यांकन, सुरूचि प्रकाशन, नयी दिल्ली, युगाब्द–5099, पृ॰ 13।
49. मा. गो. वैद्य, सुगम संघ, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ, 2000, पृ॰ 45।
50. बाबा साहब आपटे, संघ चितंन जागृति प्रकाशन, नोएडा, 2003, पृ॰ 26।
51. विषय बिन्दु शरद प्रकाशन, आगरा, वर्ष 2016, पृ॰ 19।
52. बा. ना. वन्हाडपांडे, संघ कार्यपद्धति का विकास, भारतीय विचार साधना, नागपुर, 1995, पृ॰ 38।
53. विषय–विन्दु, वहीं, पृ॰ 62।

द्वितीय अध्याय

मीडिया की अवधारणा

लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ–'मीडिया' को माना गया है। मीडिया रूपी सामाजिक संस्था का उद्‌भव और विकास व्यक्तियों और समूहों की सांस्कृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के साधन के रूप में हुआ है। जनमानस को सर्वाधिक प्रभावित करने के कारण लोकतंत्र में मीडिया की अनिवार्यता कायम है। जनमानस को प्रभावित करने की इसमें असाधारण क्षमता रही है। मीडिया एक ऐसा सर्वसमावेशी क्षेत्र है जिसका संबंध समाज के हर क्षेत्र, हर घटना, और हर पहलू से है।

मीडिया का अर्थ–

'मीडिया' अंग्रेजी का एक शब्द है। जो अंग्रेजी के एक अन्य शब्द 'मीडियम' का बहुवचन है। इस प्रकार 'मीडियम' एकवचन एवं मीडिया उसी का बहुवचन है। हिन्दी में मीडिया एवं मीडियम दोनों का एक ही अर्थ है– 'माध्यम'। लेकिन वास्तव में किसी माध्यम को दर्शाने हेतु–'मीडियम' शब्द प्रयुक्त होगा। जबकि जनसंचार के विभिन्न रूपों को दर्शाने हेतु 'मीडिया' शब्द उपयुक्त है।

'दो बिन्दुओं को जोड़ने वाला भी है। वक्ता और श्रोता दो भिन्न बिन्दु है जो 'मीडिया' या 'मीडियम' द्वारा एक दूसरे से जुड़ते हैं। 'मीडिया' कुछ विशिष्ट अंग्रेजी शब्दों की भांति ही हिन्दी भाषाई समुदाय में जनसंचार माध्यमों को प्रदर्शित करने के लिए रूढ़ हो गया है।

मीडिया शब्द की उत्पत्ति–

16 वीं शताब्दी के अंत में लैटिन भाषा से 'मीडिया' शब्द की उत्पत्ति मानी गयी

है। सन् 1960 के मध्य तक मीडिया शब्द उत्तरी अमेरिका, यूनाईटेड किंगडम में सामान्यतया होने लगा। हांलाकि 'मास मीडिया' शब्द का प्रयोग संयुक्त राज्य अमेरिका में सन् 1923 में किया गया था। वास्तव में कागज एवं मुद्रण के अस्तित्व में आने के बाद ही मीडिया की सार्वभौमिकता बढ़ी है। 17 वीं शती से ईसापूर्व तक समाचार पत्रों में तस्वीरों का आगमन हुआ। साक्षरता बढ़ने के साथ समाचार पत्रों का प्रचार-प्रसार बढ़ा। इसके साथ रेलवे के आगमन सूचना संप्रेषण में गति आयी। प्रौद्योगिकी विकास के साथ समाचार पत्र रेडियो के आगमन ने सूचना संसार में नयी क्रांति ला दी। 1960 में इंटरनेट और 1990 में 'वर्ल्ड वाइड वेब' की नयी शुरूआत हुई। सन् 1998 में गूगल का आविष्कार हुआ। अब चंद सेकेण्डों में ही उलझे प्रश्नों के सुलझे उत्तर सामने आने लगे।

मीडिया की परिभाषा-

प्रायः जनसंचार के लिए आधुनिक समय में 'मीडिया' शब्द प्रयुक्त होता है। मीडिया की परिभाषा इस प्रकार मिलती है-

विश्वज्ञान कोश में कहा गया है कि-

'अत्यधिक संख्या में लोगों तक पहुँचने एवं उन्हें प्रभावित करने के लिए तैयार संप्रेषण साधन मीडिया है[1]।

व्यापार कोश में कहा गया है कि-

'मीडिया संप्रेषण का एक माध्यम है जिसके द्वारा समाचार मंनोरंजन, शिक्षा, आंकड़े या प्रचारात्मक संदेश को प्रसारित किया जाता है[2]।

मीडिया के प्रकार-

वक्ता, प्रस्तुतकर्ता एवं श्रोता, दर्शक के मध्य संप्रेषण प्रक्रिया में माध्यम की भूमिका महत्वपूर्ण है। अतः संचार माध्यम से ही मीडिया का अस्तित्व है। मीडिया के प्रकार इस तरह है-

मीडिया का उद्देश्य-

मीडिया का उद्देश्य है- समुदाय को सूचित करना, शिक्षित करना और प्रेरित करना। जिससे नये विचारों और तकनीकों को स्वीकार किया जा सके। मास मीडिया का उपयोग बड़े पैमाने पर संचार के चैनल के रूप में किया जाता है। जिससे विस्तृत क्षेत्र में सूचना का प्रसार हो सके।

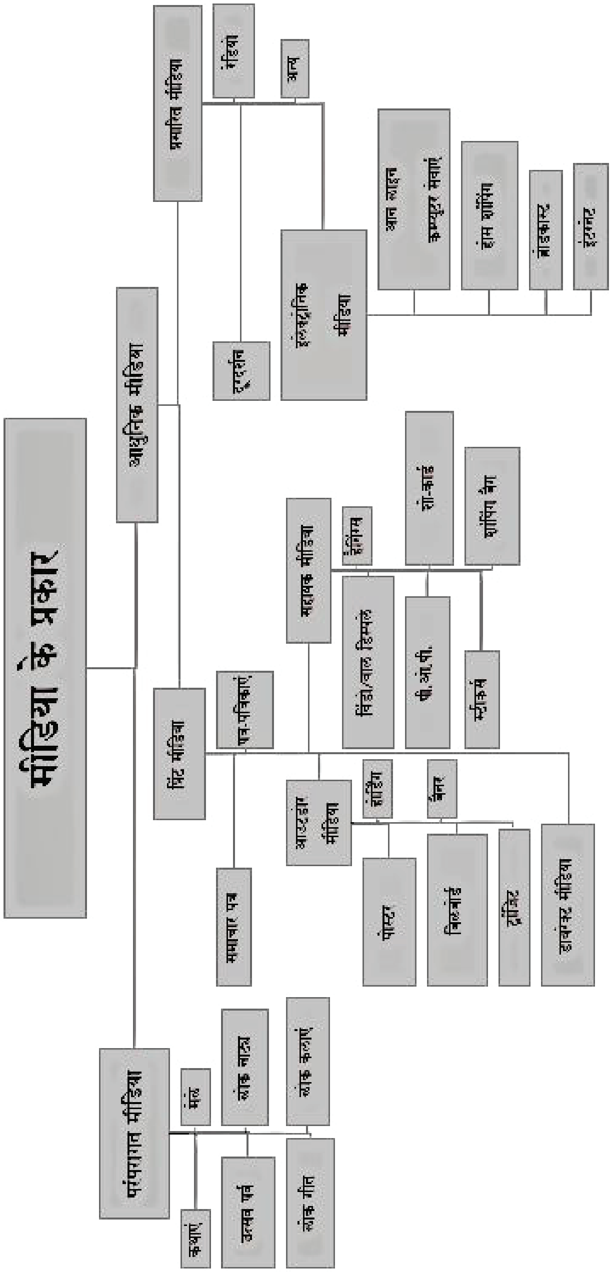
मीडिया के प्रकार
आधुनिक मीडिया
प्रसारित मीडिया
रेडियो
अन्य
दूरदर्शन
इलेक्ट्रानिक मीडिया
आन लाइन कम्प्यूटर सेवाएं
होम शॉपिंग
ब्रॉडकास्ट
इंटरनेट
प्रिंट मीडिया
पत्र-पत्रिकाएं
समाचार पत्र
सहायक मीडिया
हैंगिंग
शो-कार्ड
शॉपिंग बैग
विंडो/वाल डिस्प्ले
पी.ओ.पी.
स्टीकर्स
आउटडोर मीडिया
होर्डिंग
बैनर
पोस्टर
बिलबोर्ड
ट्रांजिट
डायरेक्ट मीडिया
परंपरागत मीडिया
मंच
लोक नाट्य
लोक कलाएं
कथाएं
उत्सव पर्व
लोक गीत

मीडिया और भाषा-

वर्तमान समय में मानव जीवन के प्रत्येक क्षण में मीडिया की सहभागिता बढ़ी है। सूचनाओं के बिना मानव अब अपने को अधूरा मानता है। मीडिया ने भी आम जनता को शिक्षित-संस्कारित करने के साथ ही ज्ञान सम्पन्न बनाने एवं मनोरंजन प्रदान करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता जताई थी। वर्तमान युग 'मीडिया का युग' है। अतः इसमें भाषा, प्रस्तुतीकरण, विषय-वस्तु और उनका चयन महत्त्वपूर्ण हो गये हैं।

इसमें से भाषा का महत्त्व सर्वाधिक है। भाषा के विषय में रामचंद्र वर्मा का कथन है कि- 'भाषा बहुत से ऐसे शब्दों से बनती है, जिनके कुछ अर्थ है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि- 'निरर्थक शब्दों (अथवा जिन शब्दों से सार्थक अर्थ ध्वनि न हो) का भाषा में कोई स्थान नहीं होता। भाषा में तीन पक्ष होते हैं- पहला 'शब्द' दूसरा 'अर्थ' और तीसरा 'वक्ता श्रोता का मन'। मानव अपने सामाजिक क्षेत्र में कुछ विचार, कार्यों, वस्तुओं आदि का सम्बन्ध कुछ विशिष्ट शब्दों से स्थापित करता है। जो भाषा द्वारा एक से दूसरे के बीच पहुंचता है[3]।

इसी सम्बन्ध में उन्होंने आगे कहा है कि- 'शब्द अर्थ का मूर्त सम्बन्ध यह है कि- शब्द द्वारा किसी पदार्थ एवं कर्म का बोध होता है जिससे वह ध्वनि संकेत सम्बद्ध हो गया है। शब्द स्वयं वह पदार्थ नहीं है, वह किसी की ओर संकेत करता है'[4]।

1. स्वतंत्रता पूर्व पत्रकारिता की भाषा-

भाषा की अनेकरूपता में मूलभाषा, परिष्कृत भाषा, विभाषा बोली, उपभाषा, विशिष्ट भाषा, कूटभाषा, कृत्रिम भाषा एवं मिश्रित भाषा आती है। आधुनिकता की विशिष्ट उपलब्धि 'पत्रकारिता' है। सामाजिक प्रगति एवं बौद्धिक विकास हेतु भारतीय पुनर्जागरण काल में राजा राममोहन राय ने पत्र-प्रकाशन प्रारंभ किया। जनता की परिस्थितियों का ब्यौरा सरकार को देने एवं जनता को शास्त्रों की विधि व्यवस्था से परिचित कराने हेतु जो पत्र-प्रकाशित किये गए थे। किन्तु शीघ्र ही उन्हें सरकारी दमन नीति का शिकार होना पड़ा।

यद्यपि भारतीय पत्रकारिता की जन्मभूमि 'बंगाल' है और हिन्दी पत्रकारिता का जन्म और विकास कलकत्ता में हुआ। यहीं प्रथम साप्ताहिक समाचार पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' का प्रकाशन हुआ। तत्कालीन सरकार से समाचार पत्र निकालने का लाइसेंस लेकर 'उदंत मार्तण्ड' पत्र 30 मई 1826 को प्रकाशित हुआ। हालांकि इसमें हिन्दी के साथ ही उर्दू-फारसी, संस्कृत, अंग्रेजी और ब्रजभाषा के भी शब्द थे।

इसके बाद हिन्दी पट्टी वाले राज्य उत्तर प्रदेश के बनारस जिले से सन् 1845

में **'बनारस अखबार'** निकला। सन् 1868 में हिन्दी साहित्य के विधाओं के जनक भारतेन्दु हरिश्चंद्र द्वारा **'कवि वचन सुधा'** पत्र के प्रकाशन से पत्रकारिता के नये युग का सुत्रपात हुआ। इस पत्रिका के द्वारा राष्ट्रीय भावजागरण एवं हिन्दी भाषा का विकास भी रहा। हिन्दी भाषा का स्वर्ण युग **'भारतेन्दु युग'** रहा। जब हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन की संख्या 350 हो गयी थी। इस काल में हिन्दी का शुद्ध साहित्य उपयोगी रूप एवं व्यवहारोपयोगी रूप भी निखरा था[5]।

19 वीं सदी के उत्तरार्ध में प्रकाशित पत्रों ने हिन्दी समाज की संस्कृति एवं राजनीतिक उन्नयन में सक्रिय योगदान दिया। सन् 1900-1920 तक का युग आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी और लोकमान्य तिलक से प्रभावित रहा। इस समय आचार्य महावीर प्रसाद ने एक ओर **'सरस्वती'** पत्रिका के माध्यम से साहित्य और भाषा को नया संस्कार एवं प्रौढ़ता दी। इस पत्रिका ने साहित्य, कला, संस्कृति, भाषा और धर्म के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण काम किया।

1920 के बाद भारतीय राजनीति की बागडोर महात्मा गांधी के हाथ में आ गयी। इन्होंने 'यंग इंडिया' 'नवजीवन' एवं 'हिन्दी नवजीवन' आदि पत्रों द्वारा समाजोद्धार, अछूतोद्धार, अस्पृश्यता विरोध, राष्ट्र भाषा जागरण, आदि को स्थान दिया। सन् 1930 में स्वतंत्रता के आंदोलन के दमन हेतु 'प्रेस ऑडियंस' लगाकर अधिकांश पत्रों का प्रकाशन बन्द कराया गया। तथापि काशी (उ० प्र०) से अनेक भूमिगत पत्र निकलते रहे। 'रणभेरी', 'शंखनाद', 'चिन्गारी', 'रणडंका', आदि पत्रों से स्वतंत्रता आन्दोलन गतिमान हुआ।

इसी समय साहित्यिक पत्रकारिता का उदय सूर्यकांत त्रिपाठी के पत्र 'निराला' से हुआ। इस समय पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', इलाचंद्र जोशी, अज्ञेय- आदि प्रतिष्ठित साहित्यकारों ने हिन्दी गद्य की भाषा-शैली का निर्माण किया।

स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात-हिन्दी पत्रकारिता जो एक लक्ष्य लेकर चली थी। वह पूरा हो चुका था। स्वतंत्रता संग्राम समाप्त हो चुका था। अब व्यवसायिकता ने पत्रकारिता को प्रभावित करना प्रारंभ कर दिया था। सन् 1974 तक हिन्दी पत्रों की संख्या 3200 हो चुकी थी। इस समय तक राजभाषा हिन्दी को सर्वाधिक उपयोगी बनाने में हिन्दी पत्र-पत्रिकाएं सफल भी हुई। हांलाकि अब तक मीडिया में दैनिक बोलचाल के शब्द, नवीन उपमाएं, नवीन शब्दों का निर्माण, जनभाषा रूप में होने लगा था। निश्चित ही इससे हिन्दी का परिष्कृत, संस्कृतनिष्ठ स्वरूप अपनी गुणवत्ता खोने लगा था।

अब समाचार पत्र-केवल सूचना संकलन, प्रसारण ही नही कर रहे थे। बल्कि पाठकों के सामने सरल, सहज और नवीन भाषायी आवरण में कुछ नया भी प्रस्तुत करने लगे थे।

मीडिया का स्वरूप प्रिंट मीडिया से आगे बढ़कर रेडियो-टीवी तक हो गया।

पत्र-पत्रिकाओं में अनेकों स्तम्भ निकलने लगे। समाचारों के साथ ही खेल-कूद, विज्ञान, कला, फिल्म बाजार, आदि में हिन्दी का विविध स्वरूप दिखने लगा। वर्तमान में हिन्दी की 17 बोलियां मिलकर हिन्दी का स्वरूप बनाती हैं। स्थानीय समाचार पत्रों में क्षेत्रीय भाषा-बोली के शब्द स्थानीय जनता को प्रभावित करने के लिए रखे जाते हैं। 'अमर उजाला' पत्र में व्रज भाषा तो 'राजस्थान पत्रिका' में मारवाड़ी और मेवाती शब्दों की बहुलता है।

इस प्रकार समाचार पत्रों, रेडियो, दूरदर्शन सभी के क्षेत्रीय संस्करणों में भाषायी विविधता देखने को मिलती है। वर्तमान समय में मीडिया में अंग्रेजी शब्दों का प्रचलन इतना अधिक बढ़ गया है कि इसमें हिन्दी शब्द छांटना भी श्रमसाधय हो गया है। अंग्रेजी शब्दों में-सिनेमा, बम, फोन, आपरेशन, गैस सिलिंडर, इन्चार्ज, वर्कशाप आदि। इसी तरह अरबी फारसी शब्दों की भी भरमार है-दर्ज, सुलूक, कब्जा, दहेज, तकादा, नामजद आदि नाम भरे पड़े हैं। तथापि इन पत्रों के सम्पादकीय स्तम्भ अभी भी भाषा की गुणवत्ता बनाए हैं। सम्पादकों की विषय वस्तु सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक सभी से सम्बद्ध होती है। इस तरह राष्ट्रीय समाचारपत्रों 'नवभारत टाइम्स', 'हिन्दुस्तान', 'जनसत्ता' की सम्पादकीय भाषा- परिमार्जित, वर्तनी शुद्ध एवं मानक होती है। वहीं क्षेत्रीय समाचार पत्रों की सम्पादकीय में इनका अभाव रहता है।

(क) मीडिया का धर्म-

पत्रकारिता सिर्फ सूचनाओं का संप्रेषण नहीं हैं। पत्रकारिता में संवेदनशील लेखन होना चाहिए। आज देश में जिस प्रकार से पत्रकारिता और राजनीति में विकृतियां उत्पन्न हो रही हैं, उनके मूल में विदेशी पूंजी निवेश है। इसलिए सशक्त समाज के लिए स्वतंत्र पत्रकारिता बहुत आवश्यक है। वर्तमान में पत्रकार परतंत्र हो गए हैं, जब तक पत्रकारों को लिखने की आजादी प्राप्त नहीं होगी तब तक हम सशक्त समाज का निर्माण नहीं कर सकते।

पत्रकारिता और राजनीति एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। इन्हें धर्म के रास्ते पर चलाना चाहिए। धर्म का तात्पर्य यह है कि वह समाज की पीड़ा को समझें। आज देश में लिखने वाले परतंत्र हो गए हैं। जब तक पत्रकारों को लिखने की आजादी नहीं होगी तब तक हम सशक्त समाज का निर्माण नहीं कर सकते। आज राजनीति और पूंजी में एक रिश्ता बन गया है। राजनीति और पूंजी के घालमेल के कारण आज समाज प्रभावित हो रहा है। पत्रकारों को ऐसा लेखन करना चाहिए जिससे समाज सही दिशा पा सके। मीडिया संस्थानों के मालिक निजी स्वार्थ देखते हैं। पत्रकारों के भले के लिए मालिक नहीं सोच रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद भी अब तक देश के प्रमुख समाचार पत्रों ने **'मजीठिया आयोग'** की सिफारिशें लागू

नहीं की हैं। मजीठिया से संबंधित कोई समाचार भी समाचार-पत्रों में भेजा जाए तो एक लाइन भी नहीं छपेगा। आज के मीडिया के लिए खबर के मुख्य आधार हैं- क्राइम, कॉमेडी, क्रिकेट, सिनेमा और सेलेब्रिटी। सामाजिक सरोकार आज पत्रकारिता में कहीं पीछे छूट गए हैं। जनता को मीडिया और राजनेताओं से सवाल करते रहना चाहिए क्योंकि सवालों से ही लोकतंत्र मजबूत होता है। निष्पक्ष होकर पत्रकार को अपनी कलम चलानी चाहिए। किसी पार्टी विशेष से जुड़कर लिखेंगे तो उस लेखन में वह धार नहीं होगी। किसी पूर्वाग्रह से ग्रस्त होकर लेखन करना भी ठीक नहीं। पत्रकारिता, राजनीति और देश आपस में एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। पत्रकारिता देशहित में होनी चाहिए।

महात्मा गांधी भी मानते थे कि स्वतंत्र पत्रकारिता लोकतंत्र का अनिवार्य अंग है। आज मीडिया और राजनीति में गहरा रिश्ता हो गया है, जिसे समझने की जरूरत है। आज शेयर बाजार, सट्टा और सर्वे कई गलत तस्वीरें समाज के सामने प्रस्तुत करते हैं, जिससे समाज प्रभावित होता है। देश तभी आगे बढ़ेगा जब लोगों में सामाजिक न्याय के लिए भूख पैदा होगी। पत्रकारिता का यह दायित्व है कि लोगों में सामाजिक चेतना की भूख पैदा करे।

मीडिया और पत्रकारिता में भिन्नता है लेकिन समाज को दोनों एक ही दिखाई देते हैं। अगर मीडिया प्रबंधन हो रहा है तो उसमें पत्रकारिता नहीं है। पत्रकारिता और पत्रकार समाज के महत्वपूर्ण अंग है। आजादी के समय भी हर पत्रकार एक स्वतंत्रता सेनानी की भूमिका में था। पत्रकार अच्छे से काम कर सके, सकारात्मक पत्रकारिता कर सके इसके लिए समाज को उसका साथ देना चाहिए। पत्रकारिता के मूल्यों में समय के साथ कमी आई है लेकिन यह सही नहीं है कि पत्रकारिता में सब बुरा ही बुरा है। पत्रकारिता एकदम भ्रष्ट हो गई है। पत्रकारिता में अब भी अच्छे लोग हैं। उनका साथ देने की जरूरत है। पत्रकारिता आज भी लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है और वह अपना धर्म आज भी निभा रही है। पत्रकारिता को सही मायने में एक विपक्ष की भूमिका निभानी चाहिए।

(ख) मीडिया और राष्ट्रवाद-

राष्ट्र हमेशा सर्वोपरि सर्वोत्तम होता है। राष्ट्र है तो जनता है, मीडिया है, सरकार है। राष्ट्र ही नहीं रहेगा, फिर क्या बचेगा? अतः भारतीय सरकार, जनता और मीडिया सभी को 'राष्ट्र' को केन्द्र में रखकर ही विचार और व्यवहार करना चाहिए। वास्तव में भारत में 19 वीं सदी के अन्त एवं 20 वीं सदी के प्रारम्भ में समाचार पत्र-पत्रिकाओं ने 'राष्ट्रवाद' की ही बात की थी। किन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति बाद औद्योगिक और व्यापारिक प्रतिस्पर्धा एवं धन कमाने के मिशन में लगी मीडिया

राष्ट्रवाद की बात छोड़कर पूंजीवाद तक केन्द्रित हो गयी। स्वतंत्रता संग्राम काल तक राष्ट्रवाद एक बीज तत्व के रूप में स्वतंत्रता सेनानियों के हृदय में विकसित हो रहा था। संचार के प्रमुख साधन उस समय राष्ट्रवाद के नाम पर जो विमर्श जनता के बीच लाते। वह तेजी से लोकप्रिय होता। जनआन्दोलन को ब्रिटिश शासन के विरूद्ध स्फूर्तिमान, जीवंत बनाए रखने के लिए राष्ट्रवाद अपनी प्रमुख भूमिका में था। स्वतंत्रता की इच्छा रखने वाले सभी नेतृत्व कर्ताओं ने अपनी पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन कर राष्ट्रवाद की अलख जगाए रखी। बंकिमचंद्र चटर्जी, लाला लाजपतराय, महात्मा गांधी, बाल गंगाधर तिलक, वीर सावरकर, सरदार पटेल सभी ने मीडिया का उपयोग राष्ट्र जनजागरण हेतु किया।

भारतीय राष्ट्रवाद के प्रचार-प्रसार का बखूबी काम स्वतंत्रता संग्राम के समय मीडिया ने किया था। स्वतंत्रता बाद उत्पन्न हुई स्थिति में राष्ट्रवाद के स्थान पर 'राष्ट्र निर्माण' की बात होने लगी। बदलती सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों में प्रिंट मीडिया के साथ रेडियो दूरदर्शन के आगमन ने राष्ट्र विकास, सांस्कृतिक एकता, समाज में परस्पर समन्वय, सदभाव को स्थान मिलने लगा[6]।

सन् 1990 के बाद इलैक्ट्रोनिक मीडिया ने सूचना के प्रसार को सर्वाधिक महत्व दिया। कम्प्यूटर, सोशल मीडिया में राष्ट्रवाद अब खेल प्रतिस्पर्धा जीतने, सैन्य शक्ति, परमाणु शक्ति सम्पन्नता, के रूप राष्ट्रवाद दिखाई पड़ा। अब सोशल मीडिया, इंटरनेट, ब्लागिंग, इंस्टाग्राम, आदि के आगमन ने न केवल सूचना जगत में क्रांति मचाई। बल्कि व्यक्तिवाद पर केन्द्रित मीडिया राष्ट्रवाद के भाव से वैचारिक दूरी बनाती दिखी। राष्ट्रवाद की पुरानी संकल्पनाएं टूटती गयी। किन्तु नयी संकल्पना उतनी मजबूत नहीं बन पायी। फलतः मीडिया के बदलते स्वरूप के साथ ही राष्ट्रवाद को प्रस्तुत करने का तौर तरीका भी बदलता गया। आजादी की लड़ाई में मीडिया की भूमिका राष्ट्रवादी रही जो बाद में आर्थिक कारणों एवं अन्य दूसरे कारणों से उतनी धारदार नहीं हो सकी। अब विमर्श के रास्ते पर चलती मीडिया राष्ट्रवाद को एक अलग ढंग से ही परिभाषित करती दिखती है।

'मीडिया में राष्ट्रवाद' की नई बहस 9 फरवरी 2016 को जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से प्रारंभ हुई। इस बहस के प्रमुख बिन्दु थे- भाषा, धर्म, अभिव्यक्ति की आजादी, असहमति का अधिकार, समानता का अधिकार, देशभक्त बनाम देशद्रोही आदि।

धीरे-धीरे राष्ट्रवाद का विमर्श मीडिया में तेजी से फैलता गया। और इसके दो ही प्रमुख बिन्दु रहे। पहला देशभक्त, दूसरा देशद्रोही। जहां देशभक्त वर्ग से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (दक्षिणपंथी) जुड़े। वहीं देशद्रोही वर्ग से वामपंथी विचारधारा के लोग जुड़ते गये। यानि जहां वामपंथी विचारक मानते हैं कि भारतीय संविधान ने 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' दी है और उसे दबाना या उस रोक-टोक

कदापि उचित नहीं है। वहीं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सहित दक्षिणपंथियों ने 'स्वतंत्रता और स्वच्छंदता' को अलग अलग परिभाषित किया है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि- राष्ट्रवाद ने समाज, समुदाय, नागरिकों को एकसूत्रता में बांधने का सफल प्रयास किया है।

(ग) मीडिया का विकास क्रम-

मानव प्रजाति ने जन्मकाल से अथवा सभ्यता के प्रारंभ से ही जनसंचार एवं आत्म सम्प्रेषण का प्रसार शुरू किया था। भाव भाषा से देह भाषा उसके बाद सम्भागीय संस्कृति के विकास के साथ ही भाषिक संवेदना का विकास होता गया। आज 16 हजार भाषाएं और अनेक सांस्कृतिक समूहों के साथ नयी-नयी सम्प्रेषण विधियां विकसित हो रही हैं। वर्तमान समय से लाखों वर्ष पूर्व आदिम से ही मानव ने कई अवाचिक भाषाओं का अनुप्रयोग किया है जैसे-नृत्य, नाट्य, गुहाचित्र, भित्तिचित्र, आदि। चिन्ह एवं प्रतीक प्रधान प्राचीन लिपियों में चित्रलिपि, चित्रात्मक, सूत्रात्मक, भावात्मक, ध्वन्यात्मक, रेखाक्षरात्मक लिपियां। कालक्रम में नयी लिपियों के आविष्कार के बाद इसे शब्दबद्ध करने हेतु ताड़पत्र, ताम्रपत्र, चमड़ा, वल्कल आदि को माध्यम बनाया गया।

इसके बाद व्यापक जनसमूह में वार्ता, सूचना आदि के संप्रेषण हेतु शिलालेख स्तम्भ तथा स्थापत्य का प्रयोग हुआ। फिर कबीलों का पर्यटन (जनसंपर्क) शुरू हुआ। कालक्रम के मेले ठेले, खेलकूद, आक्रमण, उत्सव, धर्मप्रचार, प्रशासन, शिक्षा संस्थानों का प्रारम्भ हुआ[7]।

विश्व के लेखन का प्रमाणिक प्रमाण मेसोपोटामिया के अक्काड में मिला। जिसे अक्कडियन भाषा कहा जाता है। भारत में तीसरी सदी में ईसा पूर्व (लगभग 321 ई॰ पू॰) में मिले लेखन प्रमाणों में चंद्रगुप्त मौर्य के समय द्वारा उन्हें भेजे गये राज्यवार क्षेत्रों की सूचनाएं मिलती हैं।

अशोक काल में शिलालेख, स्तंभ लेखन का प्रचलन बढ़ा। विश्वसंचार के प्रथम आविष्कार के कालावधि में यह मान्यता है कि जुलियस सीजर द्वारा ईसा पूर्व 60 में रोम में स्थापित 'एक्टा डियूना' या डायना' (दैनिक बुलेटिन) पहला प्राप्त समाचार पत्र है। इसे शहर में चौराहों की दीवारों पर चिपकाया जाता था। यहां से निकाले गये समाचार पत्रों में 'एक्टा सीनेटर्स' में रोमन सीनेट की घटनाएं तथा 'एक्टा पब्लिका' में जनता के समाचार होते थे[8]।

कुछ अन्य महत्वपूर्ण सूचनाएं-

1. कागज का आविष्कार 105 ए॰ डी॰ में हुआ।

2. 11 मई 868 में चीन की प्रथम पुस्तक 'हीरक सूत्र' का प्रकाशन हुआ।
3. 1456 में गुटेनबर्ग का छापाखाना खुला, जहां बाइबिल मुद्रित हुई।
4. 1476 में इंग्लैंड में प्रेस शुरू हुआ।
5. 1556 में गोवा में पुर्तगाली प्रेस बना।
6. 1676 में देवनागरी मुद्रण शुरू हुआ।
7. 1772 में गुजराती मुद्रण प्रारंभ हुआ।
8. 1778 में बंगला मुद्रण शुरू हुआ।[9]

15 से 17 वीं शताब्दी तक आधुनिक समाचार पत्र के प्रारंभिक रूप पर्चियों के रूप में मिलते हैं। इनमें युद्ध के समाचार, दुर्घटनाओं के ब्यौरे तथा राजदरबार के प्रसंग प्रकाशित होते थे।

पोस्ट, रिपोर्ट, जर्नल, मैगजीन, एडवरटाइज नाम से प्रकाशित समाचार पत्र– 15 वीं सदी न्यूज, 'डेली', 'टाइम्स' नाम से छपने लगे थे। ब्रिटेन में सन् 1551 में 'न्यूज आउट ऑफ केन्ट' 1575 में 'न्यूज' का प्रकाशन हुआ।

सन् 1609 में जर्मनी में आसबर्ग नगर से 'न्यूज जीटुंग' सन् 1611 में न्यूज फ्रांस, स्पेन, सन् 1620–21 में ब्रिटेन वीकली न्यूज निकाला गया।

सन् 1620 में एमस्टर्ड से 'डच न्यूज शीट्स' नियमित रूप से छपने वाला प्रथम समाचार पत्र था। इसी समय इंगलैण्ड से 'न्यूज फ्रांस, इटली, जर्मनी, स्पेन एंड फ्रांस' (1621) लंदन से डच न्यूज शीट्स' (1621), अमेरिका में सन् 1690 में प्रथम समाचार पत्र 'पब्लिक अकरेन्सेस' था। सन् 1665 में समाचार पत्र का नया रूप लेकर 'द लंदन गजट' प्रकाशित हुआ।

कालांतर में सन् 1702 में अंग्रेजी दैनिक 'कोरांट' न्यूयार्क गजट (1724) में आया। 17 वीं सदी के अंत तक जर्मनी में दैनिक पत्रों के प्रकाशन में वृद्धि हो गयी। इनमें 'वेस्टिव जीटुंग' (1798) प्रमुख रहे। इस समय के अन्य पत्रों में 'ईवनिंग पोस्ट' (1768), डेली एडवरटाइजर (अमेरिका 1784), द टाइमन (ब्रिटेन 1768)आदि। इसके साथ ही प्रमुख अंग्रेजी पत्रों में 'टाइटलर' (1709) 'लंदन डेली अडवाइजर' (1726) , मार्निंग क्रॉनिकल (1769), मार्निंग पोस्ट (1772) लंदन डेली यूनिवर्सल रजिस्टर (1784) जो बाद में 'टाइम्स' नाम से जाना गया। इसी बीच आब्जर्वर (1791) प्रकाशित हुआ। भारत में पत्रकारिता का प्राचीन स्वरूप ब्रिटिशों के प्रभाव में प्रसारित होना प्रारंभ हुआ। यहां 28 जनवरी, 1780 में हिक्की गजट (बंगाल गजट) का प्रकाशन हुआ। जिसे दो वर्ष में ही बंद कर दिया गया।

आधुनिक पत्रकारिता का स्पष्ट स्वरूप 18 वीं सदी के तीसरे दशक तक अमेरिका और यूरोप से कई मान्यता प्राप्त समाचार प्रकाशित होने लगे। जैसे ब्रिटेन से 1922 में 'गार्जियन', साप्ताहिक मैनचेस्टर और संडे टाइम्स। अमेरिका से 1933 में 'न्यूयार्क सन 1835 में न्ययार्क हेराल्ड, 1841 में न्यूयार्क ट्रिब्यून, 1843 में 'न्यूज

ऑफ द वर्ड' 1846 में डेली न्यूज, 1855 में डेली टेलीग्राफ, 1857 में डेली स्टेंडर्ड प्रकाशित होने लगे।

लगभग इसी समय अर्थात् 18 वीं सदी के दूसरे दशक तक भारत में भारतीय भाषाओं की पत्रकारिता का जन्म हुआ। इन क्षे्त्रों में 'दिग्दर्शन' (1818) जामे जहां, 'मुबंई समाचार' (गुजराती) आदि का ऐतिहासिक महत्व है।

बीसवीं सदी के विश्वयुद्ध से पूरे विश्व में समाचार पत्रों का महत्व एवं विकास दोनों ही बढ़ गया। क्योंकि इस समय वैश्विक स्तर पर एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के बारे में, वहां की सामजिक, आर्थिक, सामरिक स्थितियों के बारे में जानने के लिए उत्सुक हो रहे थे।

2. भारत में पत्रकारिता का प्रारंभ-

भारत में पुर्तगालियों ने सन् 1498 में पहला प्रिंटिंग प्रेस भारत में लाकर गोवा में स्थापित किया। फलतः 16 वीं सदी के अंत तक केरल के आस-पास मुद्रण का केन्द्र बन गया। यद्यपि भारत में सन् 1774 से समाचार पत्रों का औपचारिक प्रारंभ हुआ।

29 जनवरी, 1780 में जेम्स आगस्ट हिक्की ने 'बंगाल गजट' नामक साप्ताहिक पत्र का प्रारंभ किया। वास्तव में इसी समय से पत्रकारिता का औपचारिक आरंभ हुआ था। 'बंगाल गजट' तत्कालीन कलकत्ता में चल रही व्यापारिक वाणिज्यिक गतिविधियों का प्रमुख मंच बन गया। इंग्लैड से जैसे ही मालवाहक जहाज कलकत्ता पहुँचते, 'बंगाल गजट' सबंधित व्यापारिक वस्तुओं के विज्ञापन प्रकाशित करा देते थे। इसमें विशेषकर रोजगार, चोरी हो गयी वस्तुओं की सूचना, खोयी हुई वस्तुओं की सूचना के लिए स्तंभ जैसे वांडेड, स्टोलेन, लास्ट को काफी पसंद किया गया था। इसमें 'पोएट्स कार्नर' में पहले भारतीय जनजीवन पर आधारित कविताओं का प्रकाशन होता था। बाद में जब हिक्की से सत्ता से संघर्ष करना शुरू किया तो इसी स्तंभ में सत्ताधारियों के गलत कार्यों पर तीखे प्रहार होते थे। हिक्की ने सरकारी नीतियों की त्रुटियों और आलोचनाओं को अपने पत्र में प्रकाशित किया। हिक्की ने हेस्टिंग के शासन की निरंकुशता एवं अत्याचार का पर्दाफाश किया। न्यायपालिका पर तीखे प्रहार किये। जिसे हेस्टिंग ने भ्रष्ट किया था[10]।

भारत के पहले समाचार पत्र के प्रकाशक जेम्स आगस्टस हिक्की ने जिस साहस और निर्भीकता का परिचय दिया, वह पत्रकारिता जगत के लिए आदर्श था[11]।

'बंगाल गजट में प्रकाशित होने वाली सरकार विरोधी समाचारों के लिए हिक्की को गिरफ्तार कर लिया गया तथा अनेक अभियोग चलाये गये। प्रत्येक अभियोग पर 40 हजार रूपये की जमानत मांगी गयी थी। निःसंदेह यह रकम हिक्की के लिए

दे पाना कतई संभव नहीं थी। किन्तु जेल में रहते हुए भी वह अधिक आक्रामक रूप से सरकार पर उसकी नीतियों के विरूद्ध लिखते और समाचार पत्र प्रकाशित करते रहे। किन्तु तमाम अभियोगों के चलते हिक्की का प्रेस सरकार ने जब्त कर लिया। तथा इस प्रकार भारतीय पत्रकारिता के सशक्त माध्यम को संभवतः पहली बार दमित कर नष्ट करने का सफल प्रयास सरकारी तंत्र ने किया।

इसके बाद में धाार्मिक प्रचार विशेषकर ईसाई धर्म के प्रचार हेतु कलकत्ता में ईसाई पादरियों ने कुछ समाचार पत्रों का मुद्रण किया। इसके विरूद्ध प्रतिक्रिया हेतु कुछ समाज सुधारकों ने भी पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारंभ किया।

3. हिन्दी पत्रकारिता का उद्‌भव काल-

सन् 1800 के बाद में ब्रिटिश राज में पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली एवं ब्रिटिश विचारों से भारतीय प्रबुद्ध वर्ग प्रभावित होने लगा था। इसी समय प्रेस और मुद्रण की स्थापना से विचारों को नया फलक मिला। श्रीरामपुर (कलकत्ता) मिशनरियों ने सन् 1818 में एक मासिक पत्र 'दिग्दर्शन' तथा 1820 में 'गास्पल मैगजीन' नामक पत्र प्रकाशित किया। सन् 1835 में भी 'दिग्दर्शन' नामक गुजराती पत्र का प्रकाशन हुआ। 'समाचार दर्पण' भी इसी समय प्रकाशित हुआ था।

इन पत्रों की भाषा अंग्रेजी, बंगाली तथा गुजराती थी। जिसका मुख्य उद्‌देश्य केवल ईसाई धर्म की स्थापना और उसका प्रचार-प्रसार करना था। सन् 1819 में ही 'मुबंई समाचार' एवं फारसी भाषा में 'जाने जहनुमा' का प्रकाशन हुआ। निश्चित ही इन पत्रों के प्रकाशन एवं विचार संप्रेषण से भारतीय धर्म संस्कृति का ह्रास होता। इसलिए समाज सुधारक राजाराममोहन राय ने वैचारिक संघर्ष का सामना करने के लिए सन् 1820 में बंग्ला भाषा में 'सम्वाद कौमुदी' नामक पत्र का प्रकाशन कराया। साथ ही फारसी भाषा में 'मिरातुल अखबार' का प्रकाशन सन् 1821 में कराया। तथा शिवप्रसाद शर्मा नामक छद्‌म नाम से राजाराममोहन राय ने 'ब्रह्मानिकल मैगजीन' का प्रकाशन कराया।

इस प्रकार प्रेस की स्थापना और पत्रों के साप्ताहिक, मासिक प्रकाशन से विचारों का आदान-प्रदान होना प्रारंभ हो गया। इस समय अनेक समाज सुधारक विभिन्न समाजों की स्थापना कर रहे थे। ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, रामकृष्ण मिशन, आर्य समाज, थियोसोफिकल सोसायटी, राधास्वामी सतसंग, बहावी आंदोलन, अहमीदिया आंदोलन और दारूलउलुम जैसी संस्थाओं द्वारा प्रगतिवादी विचारों का संचार हुआ एवं स्वदेश प्रेम की भावना का उन्मेष हुआ।

इस प्रकार ब्रिटिश शासन के दबाव एवं प्रभाव के कारण भारतीय जनमानस में वैचारिक एवं कार्यगत अनेक परिवर्तन आने लगे। जिससे पत्रकारिता एवं साहित्य

सबसे अधिक प्रभावित हुआ। साहित्यकारों एवं पत्रकारों के विचारों में परिवर्तन तथा विषय वस्तु में व्यापकता के कारण उनकी दृष्टि यथार्थवादी हुई।

4. हिन्दी पत्रकारिता का जागरण काल–

रीतिकालीन दरबारी वृत्ति और रसिकता में कमी के साथ ही साहित्य और जीवन का यथार्थपरक संबंध जुड़ने लगा। दृश्य शिल्प में परिवर्तन आने लगा। इसी कारण राष्ट्रवादी विचारकों में मातृभाषा एवं मातृभूमि के प्रति प्रेम बढ़ने लगा। स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग की प्रवृत्ति बढ़ी।

साहित्यकारों, पत्रकारों ने देश की दुर्व्यवस्था को मिटाने के लिए जनसामान्य को उद्‌बोधित किया। फलतः भारत के विभिन्न स्थानों से अंग्रेजी, बंग्ला, हिन्दी, उर्दू और फारसी भाषा में समाचार पत्र प्रकाशित होने लगे।इसमें हिन्दी भाषा में पहला पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' सन् 1826 में कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। इसी तरह अन्य पत्रों में 'बंगदूत' (1829) कलकत्ता, मालवा अखबार (1848) मालवा, ग्वालियर गजट (1853) ग्वालियर, पयामे आजादी (1857) दिल्ली, जोधपुर गवर्नमेंट गजट (1864) जोधपुर, तथा ज्ञान प्रदायिनी पत्रिका (1866) लाहौर आदि।

इसी समय हिन्दी एक नये कलेवर में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की पत्रिका सन् 1873 में 'हरिश्चन्द्र चंद्रिका' से सामने आयी। अनेकानेक भाषाओं के संक्रमण से बोझिल हिन्दी को परिष्कृत रूप प्रदान करके साहित्य की विभिन्न विधाओं का सूत्रपात भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने किया। उन्होंने हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाएं कविता, कहानी, नाटक, संस्करण, रेखाचित्र, जीवनी, यात्रा साहित्य आदि में एक साथ लेखनी चलायी। इसी समय महर्षि दयानन्द की संस्था 'आर्य समाज' एक उसके अनेक पत्र पत्रिकाएं 'हिन्दी' को परिष्कृत एवं समृद्ध करती रही।

इस समय कुछ ऐसे भी समाचार पत्र प्रकाशित हो रहे थे। जिन्होंने भारतीयों को उनकी यथास्थितिवादी सोच से ऊपर उठाने का कार्य किया। इनमें प्रमुख थे–आर्यावृत्त (1878), आर्यमित्र (1890) आर्यपत्र (1895), आर्य भास्कर (1896) आर्य सेवक (1900) आर्यदर्पण (1906) आदि।

इस समय जहां 'इन्दु', 'सुदर्शन', 'प्रथा', 'मर्यादा', 'कर्मवीर', 'स्वेदेश' आदि हिन्दी भाषा के विकास में योगदान दे रहे थे। वहीं 'सरस्वती' तथा 'नागरी प्रचारिण ी' पत्रिकाएं हिन्दी को व्याकरण निष्ठ, संयमित सरल, स्पष्ट एवं प्रवाहपूर्ण बनाने का सफल प्रयास कर रही थी।

5. हिन्दी पत्रकारिता का क्रांतिकाल–

19 वीं सदी में भारत में औपनिवेशिक आधुनिकता अपने पैर पसार रही थी। इस

समय प्रकाशन और मुद्रण की व्यवस्था दो भागों में बंट गयी थी। एक भाग- औपनिवेशिक शासन का समर्थक था तो दूसरा उसका विरोधी। अर्थात् ब्रिटिश राज से मुक्ति एवं स्वतंत्रता प्राप्ति का समर्थक था। इस समय क्रांतिकारी, राष्ट्रवादी, स्वतंत्रता सेनानी, पत्रकार, साहित्यकार सभी संचार माध्यमों के साथ ही मुद्रित प्रकाशित सामग्री का भी बखूबी प्रयोग कर रहे थे।

पत्रकारिता के माध्यम से जनसाधारण को संदेश पहुँचाने में महात्मा गांधी पूर्णतया सफल रहे। 'सत्याग्रह', 'यंगमीडिया', 'नवजीवन', तथा 'हरिजन', पत्रों के माध्यम से जनता राष्ट्रीय नवजागरण में गांधी और उनके विचारों एवं कार्य व्यवहार से प्रकाशित होती रही।

इस समय की क्रांतिकारी पत्रकारिता में लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने 'केसरी', 'मराठा', अरविंद घोष ने 'वंदेमातरम', भूपेन्द्रनाथ दत्त ने 'युगांतर', 'ब्रह्मबंधक', आदि समाचार पत्रों का तीव्रगति से मुद्रण प्रकाशन प्रारंभ किया।

इन समाचार पत्रों द्वारा न केवल भारतीय जनता में जनजागृति फैलायी गयी। बल्कि अन्य देशों को भी ब्रिटिश शासन की कमजोरियों और त्रासदियों से परिचित कराया जाना प्रारंभ हो गया था।

स्वतंत्रता संग्राम के मुख्य आधार पत्रकार ही थे। जिनके राष्ट्रवादी लेख, तर्क, साहित्य, कविता, कहानी, गीतों में पूरे भारतीय जनमानस में राष्ट्रीयता की लहर दौड़ा दी थी। इनमें मुख्य रूप से रमाशंकर अवस्थी, अंबिका प्रसाद बाजपेयी, सत्यदेव विद्यालंकार, विजय सिंह, 'पथिक', गणेश शंकर विद्यार्थी, स्वामी श्रद्धानंद, कृष्णदत्त पालीवाल, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', प्रेमचंद आदि सैंकड़ों पत्रकार हिन्दी एवं हिन्दुस्तान की रक्षार्थ तपयज्ञ में आहुति देते रहे।

(क) स्वातंत्र्योत्तर पत्रकारिता-

जहां स्वतंत्रता पूर्व पत्रकारों के आहवान पर पूरा देश ब्रिटिशों के विरूद्ध एकजुट होकर स्वतंत्रता संग्राम में कदम से कदम मिलाकर चलने लगा। वहीं स्वतंत्रता बाद देश की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक स्थितियों में परिवर्तन दिखाई पड़ने लगा। स्वतंत्रता पश्चात् नए संविधान में 'मुक्त प्रेस' प्रावधान से पत्रकारिता के क्षेत्र में भी परिवर्तन हुआ। पंजीयन की सुविधा होने से बड़े शहरों के साथ ही कस्बों और ग्रामीण क्षेत्रों से भी नियमित तथा अनियमितकालीन, साप्ताहिक, मासिक तथा पाक्षिक, त्रैमासिक, लघु समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं प्रकाशित होने लगीं।

विभिन्न राजनीतिक दलों की बढ़ती सक्रियता का भी लाभ पत्रकारिता जगत को मिला। साहित्यिक पत्रकारिता राजनीतिक जगत से प्रेरित एवं अनूदित होने से सहकारिता के बल पर चलने लगी। गांधीवादी से लेकर लेनिन, मार्क्स, नक्सली,

दक्षिणपंथी, वामपंथी, प्रगतिवादी, जनवादी आदि विभिन्न समर्थकों की पत्रिकाएं देशभर में छा गयीं।

आजादी के 10–15 साल बीतते बीतते भारत सम्प्रदाय, जाति और वर्ग के दुष्चक्र में फंसकर दलगत राजनीति के जाल में फंसता जा रहा था। तमाम बुद्धिजीवी एवं इतिहासकार निष्पक्ष रूप से विचार न रखकर सम्मान, पद–प्रतिष्ठा एवं नाम प्राप्ति के लोभ में वास्तविकता से दूर नयी–नयी विचारधारा प्रस्तुत करते हुए भारत को भारतीयता से क्रमशः दूर करते जा रहे थे। भौतिक आकांक्षाओं की पूर्ति करते हुए राष्ट्रवादिता के मार्ग को छोड़कर पत्रकारिता अब अंग्रेजी भाषा व संस्कृति का पोषण करती हिन्दी स्वरूप में आ रही थी। पीत पत्रकारिता इसका एक उदाहरण है।

इस अवधि की प्रमुख पत्रिकाओं में– आजकल (दिल्ली) वसुधा (भोपाल) गगनांचल (दिल्ली) मधुमती (उदयपुर) साक्षात्कार भोपाल जैसी सरकारी स्तर की पत्रिकाएं।[12] साथ ही जातीय, दलित एवं महिला विषयों एवं विमर्शों को भी पत्रकारिता जगत में स्थान मिला।

वास्तव में स्वातन्त्रयोत्तर पत्रकारिता में सरकारी संस्थाएं, विश्वविद्यालय, व्यक्ति विशेष, बड़े प्रकाशक एवं पूंजीवादी प्रतिष्ठानों सभी ने मिलकर अपने–अपने स्तर से पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन किया।

कुछ पत्र–पत्रिकाएं स्वतंत्रता प्राप्ति बाद से वर्तमान समय तक अपना अस्तित्व ज्यों का त्यों बनाए हुए हैं। जैसे दैनिक जागरण, नई दुनिया, नवभारत टाइम्स, स्वतंत्र भारत, अमर उजाला, राजस्थान पत्रिका, दैनिक भास्कर, पंजाब केसरी, अमृत प्रभात, दैनिक ट्रिब्यून, जनसत्ता, आदि।

भारतीय प्रिंट मीडिया में 46 हजार समाचार पत्र प्रकाशित होते हैं। इनमें 5 हजार नियमित समाचार पत्र, 17 हजार साप्ताहिक पत्र, 13 हजार मासिक पत्र, 6 हजार पाक्षिक पत्र पत्रिकाएं तथा 3 हजार त्रैमासिक पत्र–पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं। यह समाचार पत्र 101 भाषाओं में प्रकाशित होते हैं। इनमें 19 हजार पत्र–पत्रिकाएं हिन्दी में, 7 हजार अंग्रेजी में, 3 हजार उर्दू भाषा में प्रमुख रूप से प्रकाशित होते हैं[13]।

स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात प्रिंट मीडिया यानि पत्रकारिता जगत का स्वरूप सर्वथा भिन्न रूप में सामने आने लगा। अब स्वतंत्रता प्राप्त करने का लक्ष्य समाप्त हो चुका था और बाकी लोग अपनी–अपनी तपस्या का फल प्राप्त करने हेतु तत्कालीन सत्ता एवं प्रशासन के अनुगामी बनने लगे। फलतः कलम एवं क्रांति के पुजारी पत्रकार अब सद्भाव और सद्विवेक के नाम पर 'स्वान्तः सुखाय', 'स्वामिनः सुखाय' का मार्ग अपनाना प्रारंभ कर दिया। क्योंकि ब्रिटिश राज में अंग्रेजी अखबार तथा वे समाचार पत्र जो सत्ता एवं प्रशासन के पक्ष में थे तथा जो भारतीय भाषाओं के समाचार पत्रों द्वारा किये जा रहे राष्ट्रीय आन्दोलन और भावनाओं उपनिवेशवाद का विरोध कर रहे थे। उन्हें सत्ता द्वारा तमाम तरह की सुविधाएं तथा आर्थिक लाभ मिल रहा था।

उनकी आर्थिक स्थिति, प्रबंधन, तथा सुविधाएं उत्तम श्रेणी की थी। जबकि ब्रिटिश प्रशासन की कमजोरियों को जनता के सामने रखने वाले राष्ट्रीय विचारधारा पोषित समाचार पत्रों को निरन्तर घाटा उठाना पड़ रहा था।

संभवतः इसी प्रकरण से सीख लेकर अब स्वतंत्रता प्राप्ति बाद में समाचार पत्र शासन एवं सत्ता के पक्षधर बनते चले गये। हांलाकि इस बदले हुए परिवेश में भौतिक, बौद्धिक एवं वैज्ञानिक चेतना को सांस्कृतिक आवरण सुसज्जित करके पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने का महनीय कार्य नव-निर्माण काल की पत्रकारिता ने किया। फलतः सन् 1947 से 1980 तक पत्रकारिता में शिक्षा, स्वास्थ्य, चिकित्सा, खेल, मनोविज्ञान, फिल्म, कृषि, उद्योग, व्यवसाय आदि स्तम्भों द्वारा पत्रकारिता का क्षेत्र व्यापक रूप में जनमानस को प्रभावित करने लगा।

(ख) भारत में आकाशवाणी-

19 वीं सदी से प्रारंभ हुई मीडिया की विकास यात्रा एक नवीन रेडियो तरंगों के आविष्कार के साथ अवतरित हुई तथा 20 वीं सदी के प्रारंभ से रेडियो एवं टेलीविजन के आविष्कार से जनसंचार का एक और मार्ग खुला।

ज्ञातव्य है कि मार्कोनी ने बेतार प्रसारण प्रविधि का विस्तार करते हुए रेडियो का आविष्कार किया। सन् 1920 में अमेरिका में एक परिपूर्ण केन्द्र का संचालन हुआ। 14 नवंबर, 1922 को बी॰ बी॰ सी॰ की स्थापना हुई।

भारत में रेडियो का प्रारंभ अगस्त 1921 को हुआ। 13 जुलाई, 1927 को इंडियन ब्रॉडकास्टिंग कम्पनी बनी। इसने 23 जुलाई, 1927 को बम्बई से पहला नियमित प्रसारण प्रारंभ किया। सरकारी सहायता के अभाव में यह कंपनी बंद हो गयी। 24 फरवरी 1930 को वित्त समिति द्वारा स्वीकृत होने पर 1 अप्रैल, 1930 को उद्योग एवं श्रम मंत्रालय के निर्माण में रेडियो सेवा आ गयी और इसका नाम हुआ- 'इंडियन ब्रॉडकास्टिंग सर्विस'। आर्थिक दबाव में यह भी बंद हो गयी। 5 मई, 1932 से रेडियो सेवा का प्रबंधन सरकारी नियंत्रण में आ गया।

10 सितम्बर, 1934 को 30 वार ट्रांसमीटर के साथ मैसूर में एक प्रसारण केन्द्र प्रारभ्भ हुआ। 8 जून, 1936 को इंडियन स्टेट ब्रॉडकास्टिंग कंपनी का नाम 'आल इंडिया रेडियो' हो गया। सन् 1949 में सूचना और प्रसारण विभाग बना और स्वतंत्रता प्राप्ति बाद यह मंत्रालय बना[14]।

देश विभाजन के समय देश में 6 प्रसारण केन्द्र 18 ट्रांसमीटर थे। इस समय 300 ट्रांसमीटर, 165 एम॰ एम॰ केन्द्र तथा 20 चैनल है। अब प्रसार भारती, स्काई रेडियो, उपग्रह इनसेट का विकास एवं आच्छाद 90 प्रतिशत तक पहुँच चुका है[15]।

स्वतंत्रता बाद सूचना प्रसारण मंत्री, सरदार वल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व में

आकाशवाणी द्वारा प्रसारित कार्यक्रमों की अवधि 60 हजार घंटे प्रति वर्ष हो गई। साथ ही क्षेत्रीय भाषाओं के भी कार्यक्रम प्रसारित होने लगे। सन् 1957 में रेडियो को आकाशवाणी का नाम मिला।

(ग) टेलीविजन प्रसारण–

वर्तमान समय की सर्वाधिक लोकप्रिय संचार व्यवस्था है– टेलीविजन। इसकी खोज जर्मन–वैज्ञानिक नियकोन ने चित्रप्रेषण वायरलेस डिस्क के रूप में सन् 1884 में की। सन् 1926 में जे. एल. बेयरर्ड ने 'रायल इंस्टीट्यूट' में प्रसारण की शुरूआत की[16]।

भारत में टीवी का आगमन 1958 में हुआ। 15 सितम्बर, 1959 को राष्ट्रपति डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद ने नयी दिल्ली में आकाशवाणी के नये विभाग के रूप में टेलीविजन प्रसारण का प्रारंभ किया। 15 अगस्त 1965 से देश में कार्यक्रमों का निर्माण प्रारंभ हो गया। 1 अप्रैल 1946 से दूरदर्शन स्वतंत्र रूप से सेटेलाइट से जुड़ गया। सन् 1982 से रंगीन टीवी प्रचलन में आया।

9 अगस्त 1984 को दूरदर्शन ने दिल्ली में डी॰ डी॰ मैट्रो स्थापित किया। राष्ट्रीय कार्यक्रम में प्रातःकालीन प्रसारण सेवा 23 फरवरी 1987 को तथा दोपहर प्रसारण सेवा 26 जनवरी, 1989 को शुरू हुई। सन् 1991 में खाड़ी युद्ध के सेटेलाइट चैनल प्रसारण बाद विदेशी चैनलों की प्रसारण संख्या बढ़ी। साथ ही दूरदर्शन के भी नए चैनल जैसे– डी॰ डी॰ स्पोटर्स, डी॰ डी॰ इंडिया, डी॰ डी॰ भारती, डी॰ डी॰ न्यूज, डी॰ डी॰ ज्ञानदर्शन का प्रसारण प्रारंभ हुआ। आज देश में 834 प्रसार केंद्र, 19 चैनल तथा 563 ट्रांसमीटर कार्यरत हैं।

(घ) भारत की प्राचीन जनसंचार व्यवस्था–

प्रकृति का वर्तमान अति व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक स्वरूप अपने–आप में अनेकानेक आश्चर्यों से भरा है। प्रकृति एवं उसके अनुपालन कर्ता सदैव इस दृश्य जगत को अदृश्य संकेतों के माध्यम से ही समझते रहे। शाब्दिक संचार से बहुत पहले मूकाभिव्यक्ति काल में भी मानव अपने अस्तित्व के साथ संसार से कदम–दर–कदम मिलाता हुआ गतिमान रहा है। मानव ही नहीं मानवेतर प्राणी भी विविध तरीकों से संचार करते रहे हैं। संचार माध्यमों में संकेतों, ध्वनियों, भाव–भंगिमाओं, चिह्नों, चित्रों आदि द्वारा सम्प्रेषण किया जा रहा है।

पौराणिक काल के महर्षि नारद को 'आदि पत्रकार' माना गया। समाचारों के सम्प्रेषण में वाक् कौशल का अद्भुद प्रयोग नारद की संचारक विशेषता रही है। इसी तरह द्वापर युग में 'संजय' द्वारा महाभारत के युद्ध का सटीक वर्णन धृतराष्ट्र को सुनाना वर्तमान इलेक्ट्रोनिक मीडिया का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण रहा।

पाणिनी व्याकरण में जनसंचार कर्मियों की छः श्रेणियां बताई गई हैं– प्रवर्तक, कर्ता, निग्रहार्थ, उदासार्थ, बसीठ और आक्रांतिका।

आज से 2200 वर्ष पूर्व चंद्रगुप्त मौर्य काल में सूचना सम्प्रेषण में गुप्तचरों की प्रमुख भूमिका रही। इसके पूर्व वेद, पुराण, शास्त्रों के मौखिक वाचन द्वारा जनसंचार होता रहा। समय के साथ जनसंचार माध्यमों में भी विकास दिखाई पड़ता है। कवि, लोकगायक, कथावाचक, साधु–संत आदि भी विविध कलाओं के साधक अलग–अलग तरीकों से राजा और प्रजा के बीच संचार संप्रेषण करते रहे। मुगल काल में समाचारों के आदान–प्रदान में तेजी आयी तथा समाचार सम्प्रेषण हेतु निश्चित पद भी बनाए गये। इस समय 'दीवान–अल–बरीद', 'बरीद–ए–मामलिक', जैसे उच्च पदाधिकारी सूचनाएं एकत्रित करते थे। तथा सूचनाएं पहुंचाने के लिए रियासतों में 'नायब' नियुक्त थे। 'वाकिया नवीरू', 'स्वानिह नवीरू', 'खुफिया नवीरू' और हइकारे' संचार व्यवस्था के आधार स्तम्भ थे। इसके साथ ही प्रशिक्षित कबूतर भी संचारक की बखूबी भूमिका निभाते थे। जयपुर के आमेर किले के दीवान–ए–खास में तीली से माचिस जलाने की आवाज की गूंज और गोलकुण्डा महल की आंतरिक संचार व्यवस्था वास्तुकला का वैज्ञानिक चमत्कार मानी जाती है[17]।

भारतीय समुदाय में समय–समय पर आयोजित होने वाले मेले, त्यौहार, बाजारों के द्वारा भी सूचनाएं आदान–प्रदान की जाती रहीं। साथ नदियों, तालाबों के घाट, चौपाल, धार्मिक स्थल आदि भी प्राचीनकाल में संचार के प्रमुख स्थल थे। गुरूकुलों में गुरू–शिष्य संवाद संसार के प्रेरणास्रोत थे।

लोकपरंपरा के संवाहक रूप में लोक की ही पारंपरिक विधियां रही हैं। जिन्हें लोकमान्य के रूप में देखा जा सकता है। लोक–जीवन इन माध्यमों से सांप्रदायिक सौहार्द, सामुदायिक संवाद और सामुदायिक–सह–शिक्षण प्राप्त करता है। लक्ष्य एवं उद्देश्य के अनुसार पारम्परिक लोक माध्यमों की तीन श्रेणियां हैं– 1. सूचनात्मक 2. शिक्षात्मक 3. अनुरंजनात्मक। भारत के पारंपरिक लोक माध्यमों के प्रचलित रूप हैं– 1. लोकगाथा 2. लोक नाट्य 3. लोकनृत्य 4. लोकगीत[18]।

समय–समय पर इन पारंपरिक लोक माध्यमों ने भी एक स्थान से दूसरे स्थान तक सूचनाएं, समाचार पहुंचाने में अपनी भूमिका का निर्वहन किया है। स्वतंत्रता संग्राम के समय ही कीरो की गाथाओं का नाट्य रूपान्तरण, लोकनृत्य एवं लोकगीत के माध्यमों से देश के कोने–कोने तक राष्ट्रीय जागरण किया गया था।

6. भारत एवं विश्व की प्रमुख संवाद समितियां–

विभिन्न क्षेत्रों से समाचारों का संकलन, प्रेषण और वितरण करने वाली समितियों एवं संगठनों को 'समाचार समितियां' कहा जाता है। समाचारों को ग्राहकों तक पहुँचाने की मुख्य कड़ी यह समाचार समितियां ही हैं। यद्यपि ये समितियां प्रतिदिन

सैंकड़ो, हजारों समाचार, समाचार पत्र कार्यालयों में भेजती हैं किन्तु उनमें से कुछ विशिष्ट समाचार ही संपादित होकर ग्राहक तक पहुँचते हैं। समाचार पत्रों के साथ ही मीडिया के अन्य साधन रेडियो, दूरदर्शन, जनसंपर्क विभाग आदि भी इन्हीं समितियों से समाचार लेते हैं।

7. समाचार समिति की परिभाषा-

इनसाइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटानिका के अनुसार-वह समिति जो समाचार पत्र, पत्रिकाएं, क्लब, संगठनों व निजी व्यक्तियों को तारों, पांडुलिपियों, प्रुफ, टेलीप्रिंटर्स, प्रतिलिपियों कभी टेलिफोन द्वारा प्रेषित करती है। यह स्वयं समाचार प्रकाशित नहीं करती बल्कि अपने उपभोक्ताओं को सूचनाएं प्रदान करती है।

ए मैनुअल ऑफ न्यूज एजेंसी रिपोर्ट का कहना है कि-समाचारों का प्रसार समाचार समितियों का प्राथमिक कार्य है।

(क) समाचार समिति का प्रारंभ-

सन् 1825 में आधुनिक समाचार एजेंसी का प्रादुर्भाव हुआ। इसी समय फांसीसी युवक चार्ल्स आवास ने फ्रांस में 'न्यूज ब्यूरो' की स्थापना की। चार्ल्स ने समाचार संकलन वितरण हेतु डाक के साथ ही अतिरिक्त संवाददाताओं की भी व्यवस्था की। सन् 1837 में जब 'तार प्रणाली' आरंभ हुई। तब चार्ल्स ने भी इसका भी उपयोग समाचार आदान-प्रदान में किया।

इसके बाद बनार्ड बोल्क ने सन् 1849 में बोल्फ एजेंसी की स्थापना की। बोल्फ, चार्ल्स का ही एक कर्मचारी था। इसके बाद जर्मन युवक जूलियस रायटर ने लंदन में 'रायटर' की स्थापना की। इसने डाक, तार एवं रेल का उपयोग समाचार संकलन व प्रेषण के लिए किया। सन् 1848 में ही न्यूयार्क के कुछ समाचार पत्रों ने 'हावर्ट न्यूज एसोसिएशन' की स्थापना की जो नौकाओं द्वारा समाचार प्रेषण का काम करती थी। सन् 1857 में 'नेशनल न्यूयार्क एसोसिएटेड प्रेस' की स्थापना हुई।

सन् 1865 में यूरोप की समाचार एजेंसियां आवास, रायटर और बोल्फ ने आपस में समझौता करके समाचार-संकलन, सम्पादन, प्रेषण एवं वितरण का कार्य अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रारंभ किया।

सन् 1860 के लगभग 'रायटर' ने भारत में कारोबार शुरू किया। सबसे पहले 'बाम्बे टाइम्स' ने डाक द्वारा 'रायटर' से समाचार लेना प्रारंभ किया। इसके बाद कलकत्ता में भारतीयों द्वारा संचालित पहला पत्र 'बंगाली' था। जिसने 'रायटर' की सेवा ली। लंदन का 'टाइम्स' समाचार पत्र अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं को भी अपने

समाचार में सम्मिलित करता था। इसने प्रारंभ में तो 'रायटर' की सेवा नहीं ली। किन्तु बाद में सेवा लेना प्रारंभ कर दिया।

(ख) ए॰ पी॰ एवं यू॰ पी॰ आई॰-

सन् 1845 में मैक्सिको के साथ युद्ध के समय न्यूयार्क के समाचार पत्रों ने युद्ध समाचार संकलन एवं वितरण सहकारिता के आधार पर प्रारंभ किया। जो अधिक समय नहीं चल सका। सन् 1893 में 'एसोसिएटेड प्रेस ऑफ अमेरिका' एवं बाद में 'यूनाईटेड प्रेस इंटरनेशनल' की स्थापना हुई। यह दोनों अमेरिका की प्रमुख संवाद समितियां है।

यूनेस्को द्वारा सन् 1952 में विश्वभर की समाचार समितियों की कार्यप्रणाली पर सर्वेक्षण हुआ। इसमें प्रमुख 6 समितियों को अन्तर्राष्ट्रीय समाचार समिति होने का श्रेय मिला।

1. ए॰ पी॰ (अमेरिका)
2. आई॰ एन॰ एस॰ (अमेरिका)
3. यू॰ पी॰ आई॰ (अमेरिका)
4. रायटर (ब्रिटेन)
5. ए॰ एफ॰ पी॰ (फ्रांस)
6. तास (रूस)[19]

इस समय 'रायटर', 'ए॰ पी॰', 'यू॰ पी॰ आई॰', 'ए॰ एफ॰ पी॰' विश्व की सबसे बड़ी चार समितियां माना जाता है।'रायटर', और 'यू॰ पी॰ आई॰', अपनी सेवा अंग्रेजी भाषा में और ए॰ एफ॰ पी॰ अपनी सेवा फ्रांसीसी भाषा तथा जर्मन, स्पेनिश, डच, स्वीडिश और अरबी भाषा में देता है।

8. साम्यवादी देशों की समितियां-

सोवियत संघ की 'तास', चीन की 'सिनहुआ', यूगोस्लाविया की 'ताजुग' और अन्य कम्युनिस्ट देशों की संवाद समितियां केवल अपने देशों के लिए समाचार उपलब्ध कराती हैं। इन देशों की संवाद समितियां स्वतंत्र नहीं है। अतः यह अन्य गैर-कम्युनिस्ट देशों के कुछ समाचार ले भले लेती हैं किन्तु अपने देश के समाचारों का प्रेक्षण नहीं करती।

(क) कियोडो संवाद समिति-

तमाम राजनीतिक, भौगोलिक और आर्थिक अव्यवस्था और झंझावातों के बाद भी

जापान ने अन्य देशों की तुलना में अभूतपूर्व प्रगति की। जापान की संवाद समिति 'कियोडो' एक बड़ी संवाद समिति है। विश्वभर में इसके संवाददाता हैं। यह प्रतिदिन जापानी भाषा में 3 लाख शब्द और अंग्रेजी में 2 लाख शब्दों को प्रसारित करती है।

(ख) विकासशील देशों की संवाद समितियां-

सन् 1945 में विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद मात्र 4 वर्षों में विकासशील देशों की 24 नई संवाद समितियां बनीं। हालांकि सभी देशों की संवाद समितियां आपस में स्वतंत्र रूप से समाचार संकलन एवं प्रेषण का कार्य स्वतंत्र रूप से करने में सक्षम नहीं है। क्योंकि जिस देश में तानाशाही है, वहां प्रेस और संवाद समितियों की स्वतंत्रता नहीं रहती है। पश्चिम एशिया, लैटिन अमेरिका और अफ्रीका सहित कई देशों में संवाद समितियों का कार्य सरकारी विज्ञप्तियों के प्रेषण एवं प्रसारण तक ही सीमित रहता है। संवाद समितियों का प्रचार-प्रसार उसकी आर्थिक एवं राजनीतिक स्वतंत्रता भी आवश्यक है। इसके साथ ही देश में पर्याप्त साक्षरता, आर्थिक संपन्नता आदि के अभाव में भी संवाद समिति का कार्य प्रभावित होता है। क्योंकि समाचार संकलन, प्रेषण, प्रसारण आदि में पर्याप्त धन की आवश्यकता होती है। ज्ञातव्य है कि विश्व के सम्पन्न एवं समृद्ध समाचार पत्रों में दो तिहाई अमेरिका और पश्चिम यूरोप में छपते हैं। एसोसिएटेड प्रेस मात्र समाचार संकलन, वितरण में 200 करोड़ रूपया सालाना खर्च करता है। वहीं एशिया और अफ्रीका सहित नव स्वतंत्र देशों की गतिविधियों, विकास, निर्माण, उत्थान-पतन आदि किसी में भी अमेरिका एवं पश्चिम यूरोप की संवाद समितियां रूचि नहीं दिखाती। यद्यपि इन देशों की दुरावस्था, भुखमरी आदि की खबरें और तस्वीरों में अवश्य ही उनकी रूचि रहती है।

(ग) समाचार संप्रेषण मे पूल व्यवस्था-

विकासशील देशों की संवाद समितियों की सूचना व्यवस्था को ठीक करने के लिए सन् 1976 में कोलंबों में एक शिखर सम्मेलन गुट-निरपेक्ष देशों का सम्पन्न हुआ। इसमें **NAHP (Non Aligned News Agencies Pool)** की स्थापना हुई। गुट निरपेक्ष देशों की संवाद समितियों का 'पूल' बनाकर समाचारों के आदान प्रदान की स्वतंत्र कल्पना को एक आधार प्रदान किया गया।

'पूल' की स्थापना का मुख्य उद्देश्य हर देश के समाचारों का आदान-प्रदान स्वतंत्र एवं बराबरी से करने की बात कही गयी। शीघ्र ही 'पूल' में भाग लेने वाले देशों की संख्या 90 से अधिक हो गयी। 'पूल' के माध्यम से समाचारों का वितरण 'प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया' **(P.T.I.)** करती है।

इसके द्वारा 1 लाख शब्दों का आदान-प्रदान प्रतिदिन किया जाता है। यद्यपि 'पूल' में भाग लेने वाले देशों के समाचार-पत्र और संवाद-समितियां सरकार के अध ीन हैं। वे स्वतंत्र नहीं है। ऊपर सरकारी नियंत्रण होने एवं सरकार द्वारा सेंसर होने के कारण 'पूल' द्वारा प्राप्त समाचारों को विशेष स्थान नहीं मिलता है।

9. भारत की प्रमुख संवाद समितियां-

उन्नसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक 'रायटर' का कार्यालय सन् 1878 मे बंबई में खुल गया। लेकिन इसके समाचार केवल ब्रिटिश दृष्टिकोण से ही संचालित थे। इनके समाचारों में केवल सरकारी मिशनरी के आला-अफसरों की ही रूचि भी रहती थी।

इस समय भारत में 'पायनियर' जो इलाहाबाद (उ॰ प्र॰) से प्रकाशित होता था। उसकी बड़ी धाक थी। इसके आगे अन्य अंग्रेजी पत्र 'स्टेटमैन', 'इंगलिश मैन', तथा 'इंडियन डेली न्यूज' भी मद्धिम पड़ते थे।

(क) एसोसिएटेड प्रेस ऑफ इंडिया-

इस समय तक अमेरिका में 'एसोसिएटेड प्रेस' संवाद समिति बन चुकी थी। उसी तरह सन् 1905 में केशवचंद्र राय ने 'एसोसिएटेड प्रेस ऑफ इंडिया' **(A.P.I.)** की स्थापना की[20]। इसे पहली भारतीय समाचार एजेंसी कहा जाता है। हांलाकि 1919 तक 'रायटर' ने इसका अधिग्रहण कर लिया। हांलाकि केशवचंद्र राय जब तक जीवित रहे। तब तक समाचारों में 'रायटर' और सरकार की ओर से 'ए॰ पी॰ आई॰' में हस्तक्षेप कम होता था। के॰ सी॰ राय की मृत्यु के बाद उषानाथ सेन समिति के महाप्रबंधक बने। बाद में एक अंग्रेज के उप महाप्रबंधक बनाकर महाप्रबंधक के सारे अधिकार दे दिए गये।

(ख) इंडियन न्यूज एजेंसी-

सन् 1915 में 'रायटर' द्वारा ए॰ पी॰ आई॰ के अधिग्रहण बाद जब केशवराय की उपेक्षा की गयी, तब इस समय उन्होंने 'इंडियन न्यूज एजेंसी' की स्थापना की। जो छोटे स्थानीय समाचार पत्रों को समाचार उपलब्ध कराती रही। यह न्यूज एजेंसी स्वतंत्रता प्राप्ति तक जारी रही। किन्तु इसके बाद यह बंद हो गयी।

(ग) फ्री प्रेस ऑफ इंडिया-

उन्नीसवीं सदी में राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम देश के कोने कोने में तेजी से पहुँच

रहा था। इसे सही मार्गदर्शन एवं इसके प्रभावकारी विस्तार के लिए उचित माध्यम समाचार पत्र ही थे। किन्तु ब्रिटिश साम्राज्यवादी समर्थक समाचार पत्रों से भारतीय पत्रकार चिंतित थे। अतः सन् 1927 में राष्ट्रवादी दृष्टिकोण से समाचार संकलन और वितरण हेतु पत्रकार एस॰ सदानंद ने 'फ्री प्रेस ऑफ इंडिया' की स्थापना की। राष्ट्रीय आंदोलन के समाचारों का प्रसारण इस समिति ने बखूबी किया। इस समाचार समिति की विश्वसनीयता से इसे भारत से बाहर अन्तर्राष्ट्रीय समाचार भी मिलने लगे। लेकिन तत्कालीन ब्रिटिश सरकार की दमनकारी नीति के कारण तथा 'रायटर' एवं 'ए॰ पी॰ आई॰' से कड़ी प्रतिस्पर्धा के कारण 1935 में ही 'फी प्रेस ऑफ इंडिया' बंद हो गयी।

(घ) यूनाईटेड प्रेस ऑफ इंडिया-

भारतीय पत्रकार, सम्पादक निरन्तर ब्रिटिश समर्थक समाचार समितियों के विरोध में अपने राष्ट्रवादी प्रयास करते रहे। इसी तरह 'फ्री प्रेस ऑफ इंडिया' के बंद हो जाने पर कलकत्ता सितंबर 1933 को विधुभूषण सेन गुप्ता ने 'यूनाईटेड प्रेस ऑफ इंडिया' (यू. पी. आई.) की स्थापना की। कलकत्ता एवं लाहौर दो स्थानों पर यू. पी. आई. के कार्यालय थे। इस समाचार समिति भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समाचार को एक कोने से दूसरे कोने तक प्रसारण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। ज्ञातव्य है कि स्वतंत्रता प्राप्ति तक बिना टेलीप्रिंटर सर्विस के भी 'यूनाईटेड प्रेस ऑफ इंडिया' ब्रिटिश साम्राज्यवादी एजेंसी ए॰ पी॰ आई॰ की प्रमुख प्रतिद्वन्दी बन चुकी थी। किन्तु तमाम आर्थिक संकटों के कारण सन् 1958 में यह समाचार समिति बंद हो गयी।

10. स्वतंत्र भारत की समाचार समितियां-

स्वतंत्रता बाद भारत सरकार ने नियम बनाया कि कोई भी विदेशी संवाद समिति भारत में अपने समाचार सीधे प्रसारित नहीं कर सकती। यह कार्य किसी भारतीय संवाद समिति के माध्यम से ही होगा। इसी कारण 'रायटर' के सर्वाधिकार भारतीय समाचार संकलन की एकाधिकारी संस्था ए॰ पी॰ आई॰ को सौंपना पड़ा। अब ए॰ पी॰ आई॰ का नाम **'प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया'** हो गया था। इसके साथ ही 'यूनाईटेड प्रेस ऑफ इंडिया' को भी प्रोत्साहन दिया गया। स्वतंत्र भारत में विदेशी समाचार समितियों द्वारा भारतीय स्थानीय समाचार पत्रों को सीधे समाचार भेजने पर भी प्रतिबंध लगाए गए।

स्वतंत्रता बाद लगभग 10-11 वर्षों तक भारत में दो बड़ी संवाद समितियां पी. टी. आई. एवं यू. पी. आई. रही। किन्तु सन् 1958 में यू. पी. आई. के बंद हो जाने के बाद पी. टी. आई. का सर्वाधिकार हो गया।

(क) प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया–

'एसोसिएटेड प्रेस ऑफ इंडिया' के स्थान पर स्वतंत्र भारत में 27 अगस्त, 1947 को सरदार वल्लभ भाई पटेल के प्रयत्नों से इसका गठन हुआ। 1 फरवरी, 1949 से पी. टी. आई. ने समाचार संकलन, प्रेषण का कार्य प्रारंभ किया। इस समिति ने भारत ही नहीं विदेशों में भी अपने संवाददाता नियुक्त किये। पी. टी. आई. अपने ग्राहकों को फीचर सर्विस अर्थात् प्रसंग और पृष्ठभूमि लेख जुटाती है। रायटर, ए. एफ. पी. तथा यू. पी. आई. (अमेरिका) से भी समाचारों के आदान-प्रदान का समझौता है। इसके साथ ही बी. टी. ए. (बुल्गारिया) एम. टी. आई. (हंगरी) पी. ए. पी. (पौलैंड), ए. डी. एम. (जर्मन डेमोकेडिट रिपब्लिक) और चेतक (चेकोस्लोवाकिया) से संबद्ध है। पी. टी. आई. की समाचार सेवा आधुनिक एवं कम्प्यूटरीकृत है। पी. टी. आई. ने फोटो स्कैन, न्यूज स्कैन द्वारा फीचर सेवा एवं डाटा इंडिया सेवा प्रारंभ किया।

(ख) 'यूनाईटेड प्रेस ऑफ इंडिया'–

सन् 1961 में कुछ समाचार पत्रों ने एक दूसरी संवाद समिति 'यूनाईटेड न्यूज ऑफ इंडिया' (यू. एन. आई.) की स्थापना की। इसकी स्थापना का उद्देश्य था– निष्पक्ष समाचार संकलन, प्रेषण। तथा एक ही समिति पर निर्भरता की समाप्ति।

इस समाचार समिति की बैठक 20 जनवरी, 1959 को पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री डॉ॰ बी॰ सी॰ राव के नेतृत्व में हुई। 10 नवंबर, 1959 को पंजीकृत हुई इस समिति ने 21 मार्च, 1961 से निरंतर कार्य करते हुए समाचार संसार को वृहत्तर बनाने में महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया।

विश्व की अनेक समाचार समितियों के साथ इसका समझौता है। तथा यह प्रमुख राष्ट्रीय स्तर की अंग्रेजी समाचार समिति भी है। यू॰ एन॰ आई॰ ने समाचार के साथ ही कुछ विशिष्ट सेवाओं– वाणिज्य सेवा, संदर्भ सेवा, कृषि सेवा तथा फोकस सेवा आदि भी प्रारंभ की।

देश विदेश में यू॰ एन॰ आई॰ के 100 से अधिक कार्यालय हैं जो 90 हजार किलोमीटर लंबी टेलीप्रिंटर लाइन से जुड़े हैं तथा 500 के लगभग समाचार इसकी सेवाएं लेते हैं। लगभग 15 हजार समितियों के साथ इसका समझौता है[21]।

(ग) हिन्दुस्थान समाचार

ज्ञातव्य है कि पहले समाचार समितियां अंग्रेजी भाषा में ही समाचार प्रेषण करती थीं। अतः समाचार पत्रों को अभी भाषा में समाचार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से

तथा ग्रामीण एवं क्षेत्रीय समाचारों को प्रकाश में लाने के उद्देश्य से दादा साहेब आप्टे ने सन् 1948 में 'हिन्दुस्थान समाचार' की स्थापना की। इस बहुभाषी समाचार समिति ने हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, पंजाबी, भाषा में समाचार भेजना प्रारंभ किया था[22]।

हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि को टेलीप्रिंटर पर स्थान दिलाने का श्रेय इसी एजेंसी को प्राप्त है। सन् 1954 से इस एजेंसी ने नागरी टेलीप्रिंटर का उपयोग शुरू किया। जनवरी, 1968 में समाचारों के लिए प्रसंग लेख सेवा शुरू की।

(घ) इंडियन न्यूज सर्विस–

'इंडियन एक्सप्रेस समाचार श्रृंखला' के मालिक श्री रामनाथ गोयनका ने 1959 में 'इंडियन न्यूज सर्विस' नामक कंपनी 40 लाख रूपये में शुरू की। देश भर में इसके कार्यालय खुले। सन् 1961 में इस **(I.N.S.)** समाचार एजेंसी ने काम करना शुरू किया। लेकिन उचित मार्गदर्शन के अभाव तथा कुप्रबंधन के कारण यह कुछ ही महीनों में बंद हो गयी[23]।

(ङ) समाचार भारती–

लाला फिरोजचंद, धर्मवीर गांधी तथा जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी के सहयोग से 2 अक्टूबर, 1966 को समाचार भारती की स्थापना हुई। इसने 1 जनवरी, 1967 से समाचार सेवा प्रारंभ की। विभिन्न प्रदेश के राजधानियों में इसके कार्यालय खुले। समाचार भारती ने हिन्दी, गुजराती, तमिल, मराठी में समाचार वितरण प्रारंभ किया। आकाशवाणी भी समाचार भारती से सेवा लेता रहा। यह बहुभाषी समिति 10 प्रमुख भाषाओं के 150 समाचार पत्रों का समाचार प्रदान करती थी। देश की प्रमुख राजधानी एवं नगरों में 'समाचार भारती' के केंद्र लगभग 30 हजार किलोमीटर लंबी टेलीप्रिंटर लाइन से जुड़े थे। भारत के अधिकांश समाचार पत्रों, रेडियों और टेलीविजन के समाचार बुलेटिनों में समाचार प्रसारित होते थे। इस समिति ने 'तास' एवं 'आई. पी. एस.' के साथ विदेशी समाचारों के लिए अनुबंध किया था। मई 1979 में 'समाचार भारती' ने साप्ताहिक समाचार पत्रों की आवश्यकता पूर्ति हेतु विशेष फीचर सेवा प्रारंभ की थी। इस समिति द्वारा एक वार्षिकी पत्रिका 'देश और दुनिया' भी प्रकाशित होती थी। तथापि आर्थिक सुदृढ़ता के अभाव में यह समाचार समिति भी बंद हो गयी[24]।

(च) समाचार–

जून 1975 में इंदिरा गांधी द्वारा आपातकाल लगाने की उद्घोषणा के साथ ही प्रेस पर भी सेंसर लगा दिया गया। लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ को बेड़ियों में बांध दिया

गया। फलतः देश की प्रमुख समाचार समितियों– पी. टी. आई., यू. एन. आई., हिन्दुस्थान समाचार तथा समाचार भारती का अस्तित्व समाप्त करके एक 'समाचार' समिति का गठन किया गया। इसमें हिन्दी और अंग्रेजी दो प्रभाग बनाए गए। इस मात्र एक समाचार समिति पर पूरी तरह सरकार का नियंत्रण था। जिसके द्वारा रेडियो एवं दूरदर्शन को समाचार भेजे जाते थे। पूरी तरह सरकारी नियंत्रण एवं सरकार द्वारा सेंसर किये समाचार ही जनता तक पहुँचते थे[25]।

'समाचार' की प्रबंध समिति ने 1 अप्रैल, 1976 से कार्य करना प्रारंभ किया। और सन् 1977 में इंदिरा गांधी सरकार की एवं सत्ता परिवर्तन के साथ ही 14 अप्रैल, 1978 को 'समाचार' को पुनः विघटित कर दिया गया। फलतः पी. टी. आई., यू. एन. आई., हिन्दुस्थान समाचार और समाचार भारती समाचार समितियों ने स्वतंत्र रूप से कार्य करना प्रारंभ कर दिया[26]।

(छ) एसोसिएटेड न्यूज फीचर–

सन् 1964 में 'एसोसिएटेड न्यूज फीचर' समिति की स्थापना जयपुर (राजस्थान) में की गयी। इसके बाद दिल्ली कलकत्ता, भोपाल, बंबई में भी इसके कार्यालय खुले। इस समिति ने हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में समाचार पत्रों को समाचार देना प्रारंभ किया। तथापि इसका भी कार्य बहुत जल्दी ही सीमित एवं समाप्त भी हो गया।

(ज) इंडियन न्यूज फीचर एलायंस (इम्फा)–

सन् 1959 में इंडियन न्यूज फीचर एलायंस (इम्फा) का प्रारंभ हुआ। यह समिति हिन्दी एवं अंग्रेजी में समाचार देती है। साथ ही विज्ञान, खेल–कूद, आदि में भी यह लेख प्रदान करती है। यह नियमित समाचार एवं फीचर सेवा देती है। यह समिति लघु एवं प्रादेशिक समाचार पत्रों, तथा पत्रिकाओं की विशेष रूप से सेवा करती है।

(झ) न्यूज फीचर ऑफ इंडिया–

इसका मुख्यालय बंबई में है। यह श्रमजीवी पत्रकारों की संस्था है। जो विशेष लेखों के साथ ही चित्र एवं मानचित्र भी प्रदान करती है।

(ञ) नेशनल न्यूज सर्विस (एन॰ एन॰ एस॰)–

इसकी स्थापना सन् 1992 में दिल्ली में ही की गयी है। (एन॰ एन॰ एस॰) यह विशेषकर व्यापार उद्योग से जुड़े समाचारों को देने वाली संवाद समिति है।

(ट) राष्ट्रीय संवाद समिति–

यह नेपाल की एकमात्र राष्ट्रीय संवाद समिति हैं। नेपाल में समाचार संकलन तथा वितरण का एकमात्र अधिकार 'राष्ट्रीय संवाद समिति' को ही प्राप्त है।

(ठ) इंडियन प्रेस एजेंसी (आई॰ पी॰ ए॰)–

इसका मुख्यालय दिल्ली में है। इसकी स्थापना 1957 में हुई। यह समिति समाचार पत्रों को न्यूज लैटर वितरित करती है। इस प्रकार यह समाचार पत्रों की विशेष संवाददाता है।

(ड) ईस्टर्न न्यूज एजेंसी (ई॰ एन॰ ए॰)–

इसका मुख्यालय कलकत्ता में है। यह एजेंसी भारत के पूर्वी भागों के क्षेत्रों का समाचार भिजवाती है। इसकी स्थापना 1960 में हुई।

(ढ) सत्य समाचार–

यह हिन्दी समाचार पत्रों को संवाद तथा अन्य प्रकाशनार्थ सामग्री जुटाने में मदद करती है। इसका मुख्यालय ग्वालियर में है।

(ण) पब्लिकेशंस सिंडिकेट (पी॰ एस॰)–

इसका मुख्यालय दिल्ली में है। यह विशेष लेख और फीचर प्रसारित करती है।

11. आपातकाल और मीडिया

26 जून की रात आपातकाल के आदेश पर राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद के दस्तखत के साथ देश में आपातकाल लागू हो गया। समाचार एजेंसी पी.टी.आइ. ने इसे जारी कर दिया। ऑल इंडिया रेडियो ने भी समाचार एजेंसी की कॉपी उठाई और पूरे देश को खबर सुना दी। इस समय पहली बार समाचार एजेंसी पी.टी.आइ–यू.एन. आइ. को चेताया गया कि बिना जानकारी इस तरह से खबरें जारी नहीं करनी हैं। समाचार एजेंसी तब सरकार की बात ना मानती तो एजेंसी के सामने बंद होने का खतरा मंडराने लगता। ऐसे में सत्तानुकूल हवा खुद–ब–खुद ही एजेंसी बनाने लगती

है क्योंकि एजेंसियों के भीतर इस बात को लेकर ज्यादा प्रतिस्पर्धा होती है कि कौन सरकार या सत्ता के ज्यादा करीब है। [27]

रामलीला मैदान में हुई 25 जून 1975 को जयप्रकाश नारायण की रैली की खबर देश में न पहुंचे। इसलिए दिल्ली के बहादुर शाह जफर मार्ग पर स्थित अखबारों के दफ्तरों की बिजली रात में ही काट दी गई। रात को ही इंदिरा गांधी के विशेष सहायक आर. के. धवन के कमरे में बैठ कर संजय गांधी के मार्गदर्शन में ओम मेहता उन लोगों की लिस्ट बना रहे थे जिन्हें गिरफ्तार किया जाना था।

उसी वक्त तय हो गया कि अब देश भर में फैले पीआइबी और आल इंडिया रेडियो ही खबरों को सेंसर करेंगे। यानी पीआइबी हर राज्य की राजधानी में खुद-ब-खुद खबरों को लेकर दिशा-निर्देश बताने वाला ग्राउंड जीरो बन गया। ऊपर केन्द्र सरकार का हुक्म था कि- हर बुलेटिन की शुरुआत प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने नाम से होनी चाहिए। यानी इंदिरा गांधी ने कहा है और अगर किसी दिन कहीं भी कुछ नहीं कहा तो इंदिरा गांधी ने दोहराया है कि या फिर इंदिरा गांधी के बीस सूत्री कार्यक्रम में कहा गया है कि........[28]

आपातकाल लगने के 72 घंटे के भीतर इंद्र कुमार गुजराल की जगह विद्याचरण शुक्ल केन्द्रीय सूचना प्रसारण बनते ही संपादकों को बुलाया। मुलगांवकर इसमें इंण्डियन एक्सप्रेस), जार्ज वर्गीज (हिन्दुस्तान टाइम्स, गिरिलाल जैन (स्टेट्समैन), निहालसिंह (स्टेटसमैन और विश्वनाथ पट्रियाटश पहुंचे। बैठक शुरू होते ही केन्द्रीय सूचना प्रसारण मंत्री ने कहा कि-सरकार संपादकों के कामकाज से खुश नहीं है। उन्हें अपने तरीके बदलने होंगे। इस पर एक संपादक बोलते हैं कि ऐसी तानाशाही स्वीकार करना उनके लिए असंभव है। इस पर मंत्री उत्तर देते हैं। हम देखेंगे कि आपके अखबार से कैसा बरताव किया जाए। गिरिलाल जैन बहस करने के लिए कहते हैं कि ऐसे प्रतिबंध तो अंग्रेजी शासन में भी नहीं लगाए गए थे। शुक्ल उन्हें बीच में ही काट कर कहते हैं, यह अंग्रेजी शासन नहीं है। यह राष्ट्रीय आपात स्थिति है।[29] इसके बाद संवाद भंग हो जाता है। उसके बाद अधिकतर नतमस्तक हुए। करीब सौ समाचार पत्रों को सरकारी विज्ञापन बंद कर झुकाया गया। तब भी स्टेट्समैन के सीआर ईरानी और एक्सप्रेस के रामनाथ गोयनका ने झुकने से इनकार कर दिया। सरकार ने इनके खिलाफ फरेबी चालें शुरू की। पीएमओ के अधिकारी ही सेंसर बोर्ड में तब्दील हो गए। प्रेस परिषद भंग कर दी गई।

संजय गांधी ने कहा कि- समाचार एजेंसी के कुल खर्च का 80 फीसदी रकम सरकारी खजाने से जाती है तो फिर सरकार के खिलाफ खबर को एजेंसियां क्यों जारी करती है? उस वक्त केन्द्र सरकार रेडियो की खबरों के लिये 20 से 22 लाख रुपये समाचार एजेंसी पी.टी.आई.-यू.एन.आई. को देती थी। बाकि समाचार पत्र जो एजेंसी की सेवा लेते वह तीन से पांच हजार से ज्यादा देते नहीं थे। यानी समाचार

एजेंसी तब सरकार की बात ना मानती तो एजेंसी के सामने बंद होने का खतरा मंडराने लगता। निर्देश था कि सुबह आठ बजे के पहले बुलेटिन में आपातकाल की जानकारी और उस पर नेता, मंत्री, सीएम की प्रतिक्रिया ही जायेगी।[30]

उन दिनों भारत में इलेक्ट्रानिक माडिया के नाम पर केवल आकाशवाणी और सरकारी दूरदर्शन का ही बोलबाला था, जिनसे वैसे भी इंदिरा सरकार को कोई खतरा नहीं था। अखबारों में जो कुछ भी छपना होता, संपादक की कलम से नहीं बल्कि सेंसर की कैंची से कट-छंट कर ही छपता था। इसलिए देश के जन-जीवन से विपक्ष की आवाज पूरी तरह से गायब हो गयी थी।

इस समय राजनीतिक गतिविधियां बिल्कुल बंद थीं। कोई जुलूस-प्रदर्शन नहीं। जनता की परेशानियों के लिए कोई जगह नहीं थी सिर्फ तानाशाही चल रही थी विरोध प्रदर्शन का तो सवाल ही नहीं उठता था क्योंकि जनता को जगाने वाले लेखक-कवि और फिल्म कलाकारों तक को नहीं छोड़ा गया।

विद्या-चरण शुक्ला सूचना प्रसारण मंत्री ने फिल्मकारों को सरकार की प्रशंसा में गीत लिखने-गाने पर मजबूर किया, ज्यादातर लोग झुक गए, लेकिन किशोर कुमार ने आदेश नहीं माना। उनके गाने रेडियो पर बजने बंद हो गए। उनके घर पर आयकर के छापे पड़े। अमृत नाहटा की फिल्म 'किस्सी कुर्सी का' की स्क्रिप्ट को सरकार विरोधी मान कर उसके सारे प्रिंट जला दिए गए। गुलजार की 'आंधी' पर भी पाबंदी लगाई गई।[31]

आपातकाल के दौरान एक ओर जहां सत्ता और सरकार की चापलूसी करने वाले पत्रकार थे, वहीं दूसरी ओर प्रेस की आजादी के लिए संघर्ष करने वाले पत्रकारों की भी कमी नहीं थी। वरिष्ठ पत्रकार कुलदीप नैयर, देवेंद्र स्वरूप, श्याम खोसला, सूर्यकांत बाली, के.आर. मलकानी जैसे पत्रकारों ने तो सरकार की जनता विरोधी नीतियों और आपातकाल के विरूद्ध बोलने के कारण जेल की यातनाएं भी भोगी। इसके विपरीत ऐसे पत्रकारों की भी कमी नहीं थी, जिन्होंने सेंसरशिप को स्वीकार किया और रोजी-रोटी के लिए नौकरी को प्राथमिकता दी। यही स्थिति साहित्यकारों के साथ भी थी।

आपातकाल की घोषणा के साथ ही पत्र-पत्रिकाओं पर सेंसरशिप लगा दी गई, किंतु तमाम प्रतिबंधों के बावजूद अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर पूरी तरह ग्रहण नहीं लग सका। पत्र-पत्रिकाओं पर सेंसर लगा तो भूमिगत बुलेटिनों ने कुछ हद तक इसकी क्षतिपूर्ति की। कुछ समाचार पत्रों ने विरोध स्वरुप अपने संपादकीय कॉलम खाली रखकर भी विरोध दर्ज किया। लेकिन उन्हें ऐसा करने की भी सख्त मनाही थी। इस समय प्रेस पर सेंसरशिप बेहद सख्त थी। सरकार, सत्ता प्रतिष्ठान या आपातस्थिति की आलोचना की भी अनुमति नहीं थी। सेंसरशिप के कड़े प्रतिबंधों और भय के वातावरण के कारण अनेक पत्र-पत्रिकाओं को अपने प्रकाशन बंद

करने पड़े। इनमें सेमिनार और ओपिनियन के नाम उल्लेखनीय हैं। आपातकाल के दौरान 3801 समाचार-पत्रों के डिक्लेरेशन जब्त कर लिए गए। 327 पत्रकारों को मीसा में बंद कर दिया गया। 290 अखबारों के विज्ञापन बंद कर दिए गए। विदेशी पत्रकारों को भी पीडित-प्रताडित किया गया। ब्रिटेन के **टाइम** और **गार्जियन** के समाचार-प्रतिनिधियों को भारत से निकाल दिया गया। **रायटर** सहित अन्य एजेंसियों के टेलेक्स और टेलीफोन काट दिए गए। आपातकाल के दौरान 51 पत्रकारों के अधिस्वीकरण रद्द कर दिए गए। इनमें 43 संवाददाता 2 कार्टूनिस्ट तथा 6 कैमरामैन थे। 7 विदेशी संवाददाताओं को भी देश से बाहर जाने को कहा गया।[32]

साप्ताहिक हिन्दुस्तान भी सेंसरशिप लागू होते ही सरकार की पक्षधर हो गई। चुनाव की घोषणा के बाद 6 फरवरी, 1977 के अंक में राजनीतिक शतरंज के पुराने खिलाड़ी और नए मोहरे, शीर्षक से प्रकाशित आलेख में कांग्रेस का पलड़ा भारी होना सुनिश्चित किया गया है।

संदर्भ सूची

1. इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका 1980।
2. Businessdictionary.com.
3. डॉ॰ अजय कुमार सिंह 'मीडिया की बदलती भाषा' लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद (उ॰ प्र॰) 2012, पृ॰ 20।
4. वही, पृ॰ 21।
5. वही, पृ॰ 114।
6. कुलदीप कुमार 'गांधी, टैगोर और राष्ट्रवाद', आउटलुक पत्रिका, 11 मार्च, 2019
7. प्रो॰ सूर्यप्रसाद दीक्षित-'जनपत्रकारिता, जनसंचार एवं जनसंपर्क' संजय प्रकाशन, नई दिल्ली 2016, पृ॰ 69।
8. वही, पृ॰ 70।
9. वही।
10. डॉ॰ संजीव भागवत 'भारत में संचार माध्यम' राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2010 पृ॰ 50-52।
11. वही, पृष्ठ 54।
12. प्रो॰ सूर्यप्रसाद दीक्षित 'जनपत्रकारिता जनसंचार एवं जनसंपर्क' संगम प्रकाशन, दिल्ली, पृ॰ 128, 2009।
13. Ammu Joseph 'Working, watching and waiting women and issues of access Employment and decesion making in India', Serut Labanon, 12-15 November, p. 3.
14. कैलाश शर्मा, रेडियो प्रसारण, नई दिल्ली प्रतिभा प्रतिष्ठान, 2004, पृष्ठ 15-18।

15. प्रो॰ सूर्यनारायण दीक्षित– 'जनपत्रकारिता जनसंचार एवं जनसंपर्क' संजय प्रकाशन, दिल्ली, 2016, पृष्ठ 74।
16. पी॰ के आर्य 'इलेक्ट्रॉनिक मीडिया' प्रतिभा प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2006, पृ॰ 85।
17. डॉ॰ संजीव भानावत–'भारत में संचार माध्यम' राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर–2010, पृ॰ 185।
18. वही, पृ॰ 210।
19. प्रो॰ रमेश जैन– 'हिन्दी पत्रकारिता : इतिहास एवं संरचना' आविष्कार पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर (राज) 2006, पृ॰ 188।
20. काशीनाथ – गोविन्दराव जोगलेकर 'संवाद समिति की पत्रकारिता' राधाकृष्ण प्रकाशन, 2003, 44 नई दिल्ली।
21. डॉ॰ सुशीला जोशी 'हिन्दी पत्रकारिता : विविध आयाम, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पृ॰ 140।
22. हिन्दी पत्रकारिता विविध आयाम, पृ॰ 702–703।
23. वही।
24. वही, पृ॰ 141।
25. राजेंद्र– 'संवाद और संवाददाता, हरियाणा अकादमी चंडीगढ़, 1983, पृ॰ 87।
26. वही।
27. लालकृष्ण आडवाणी 'मेरा देश मेरा जीवन' प्रभात प्रकाशन 2008, नई दिल्ली, पृ॰ 170–173।
28. एम. जी. देवी सहायम् 'जय प्रकाश की आखरी जेल'– आपातकाल का कुचक्र, वितस्ता प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013, पृ॰ 26–28।
29. डॉ॰ अरूण कुमार भगत 'आपातकालीन मीडिया' शोध प्रबंध 2006, पृ॰ 21–24।
30. एम. जी. देवीसहाय, वही – पृ॰ 22–24।
31. सागरिका घोष ' वही, पृ॰ 206–208।
32. पांचजन्य आपातकाल रजत जयंती विशेषांक जून 2006, पृ॰ 46–62।

तृतीय अध्याय

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं जनसंचार माध्यम

जनसंचार ऐसी संप्रेषण प्रक्रिया है। जिसमें सम्प्रेषक, संदेश, माध्यम, श्रोता, लक्ष्य, प्रभाव एवं फीडबैक के तत्व सम्मिलित हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एक स्वयंसेवी संगठन है तथा इसका स्वरुप एवं कार्यप्रक्रिया गैर-राजनीतिक है। वर्तमान समय में देश में एक स्पष्ट राष्ट्रीय दृष्टिकोण एवं हिन्दुत्वनिष्ठ वैचारिकी के कारण राष्ट्र विरोधी समूहों पर एक प्रभावी दबाव समूह के रूप में विद्यमान है। वर्तमान समय में हिन्दुस्तानी जनमाध्यमों में चल रही वैचारिकी तथा विषय बिन्दु में 'हिन्दुत्व' एवं 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' का संदर्भ प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में उपस्थित रहता है। वर्तमान समय में यदि हम जनसंचार माध्यमों की सूचना प्रक्रिया का अन्तर्वस्तु विश्लेषण करें तो यह स्पष्ट होता है कि, प्रत्येक जनमाध्यम समाचार एवं समाचार विश्लेषण में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का पक्ष किसी न किसी रूप में अवश्य सम्मिलित करते हैं। चाहे वह संदर्भ संघ के पक्ष में हो या विपक्ष में हो। इससे स्पष्ट है कि अन्य दृष्टि अथवा वैचारिकी समानान्तर रूप में उपस्थिति हो रही है। इस कारण वर्तमान में यह आवश्यक हो जाता है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तथा जनसंचार माध्यमों के अन्तः सम्बन्धों का मूल्यांकन किया जाए। वर्तमान में यदि हम जनमाध्यमों को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तथा हिन्दुत्व के संदर्भों की प्रस्तुति के आधार पर विश्लेषण करें, तो मुख्य रूप से चार प्रकार के वर्गीकरण जनमाध्यमों के प्राप्त होंगे-

(1) राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं इसके सहयोगी संगठनों द्वारा संचालित जनमाध्यम।
(2) राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं इसके सहयोगी संगठनों के समर्थक जनमाध्यम।
(3) राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं इसके सहयोगी संगठनों के प्रति तटस्थ जनमाध्यम।

(4) राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं उसके सहयोगी संगठनों तथा प्रति नकारात्मक दृष्टि वाले जनमाध्यम।

उपरोक्त अनुच्छेद से स्पष्ट है कि जनमाध्यमों की कार्यशैली पर **हिन्दुत्व एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ** का प्रभाव विद्यमान है। लेकिन वर्तमान में जो प्रभाव दिखाई दे रहा है उसका विकास अतीत में हुआ है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का दृष्टिकोण सूचना, संदेश, जनमाध्यम आदि के संदर्भ में क्या है? चूंकि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना एवं विकास में प्रथम दो सरसंघचालकों (डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार एवं श्रीगुरुजी) का अनन्यतम योगदान था। इस कारण उक्त दोनों प्रारम्भिक सरसंघचालकों के दृष्टिकोणों के आधार पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं जनमाध्यमों के सम्बन्धों का मूल्यांकन किया जा सकता है।

1. संघ संस्थापक-डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार एवं जनमाध्यम सम्बन्धी दृष्टिकोण:-

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक एवं आद्य सरसंघचालक
डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक, बुद्धिजीवी, संपादक, लेखक डॉ. साहब की दृष्टि जनमाध्यमों द्वारा जनता के बीच प्रेषित सूचना पर निरंतर रहती थी। इसे नीचे दिए गए उद्धहरणों द्वारा समझा जा सकता है।

(1) हिंसात्मक समाचारों के प्रकाशन के विरोधी :-

हिन्दू समाज में किसी के भी दोष अथवा अपराध देखकर डॉक्टर जी को क्रोध आ

जाता था, पर वह थोड़ी देर में ही शान्त हो जाते थे। किन्तु पारतंत्र्य अथवा हिन्दुओं पर अत्याचार की बातें सुनते ही उनका संयम का बांध टूट जाता था तथा क्रोधाग्नि भड़क उठती थी। वे इस बात का ध्यान अवश्य रखते थे कि ऐसे प्रसंग सहज ही उपस्थित न हों। नागपुर में 'सावधान' साप्ताहिक में सिंध और पंजाब में हिन्दुओं पर होने वाले अत्याचारों का सविस्तार एवं रोमाचंकारी वर्णन प्रकाशित होने लगा था। एक बार 'सावधान' के सम्पादक के अपने यहाँ आने पर डॉक्टर जी ने उससे कहा "मुझ जैसों से तो इन अत्याचारों का वर्णन पढ़ा भी नहीं जाता। आप लिख कैसे लेते हैं ? क्या आपका अन्तःकरण मर चुका है ?[1]

(2) डॉ. साहब एवं समाचार पत्र :-

डॉक्टर जी ने अपने खाली समय में जो कुछ वाचन किया। उसमें से समर्थ रामदास के 'दासबोध' तथा लोकमान्य तिलक के 'गीता रहस्य' का उनके विचारों पर भारी प्रभाव दिखायी देता था, समाचार पत्र वे ध्यानपूर्वक पढ़ते थे। संघ के प्रारम्भ के दिनों में वे सोने के पहले एक कापी में दैनिकी भी लिखा करते थे। इन लेखों में उनके द्वारा पढ़े हुए अथवा उन्हें सूझे हुए दोनों प्रकार के उत्तम विचारों का समावेश है समर्थ रामदास के 'दासबोध' के भी कुछ चुने हुए पद इस पुस्तिका में मिलते हैं। उनमें प्रमुखतया उन्हीं वचनों का अन्तभाव है जो संघटन के लिए आवश्यक है।[2]

(3) प्रकाशित समाचारों के प्रति सर्तकता :-

पूना आने के बाद जब डॉक्टर जी की वहाँ के जिला संघचालक श्री भाऊराव देशमुख से भेंट हुई तो डॉक्टर जी ने तुरन्त अपने पास से एक पुराना समाचार पत्र निकाला तथा उसमें लाल पेन्सिल से रेखांकित भाग उन्हें दिखाया। यह वर्ष प्रतिपदा के उत्सव पर श्री भाऊराव द्वारा दिये गये भाषण का एक अंश था। उसमें उन्होंने एक राजनीतिक संस्था पर छींटाकशी किया था। डॉक्टर जी ने राजगीरी में वह भाषण पढ़ा था तथा इस खटकने वाले अंश के नीचे पेन्सिल से चिह्न बना दिया था। उनकी ओर संकेत करके डाक्टर जी ने कहा "इस कथन की प्रक्रिया क्या होती है इसे ध्यान से देखिये"। स्वास्थ्य ठीक न होने पर भी उनकी दृष्टि चारों ओर रहती तथा वे प्रत्येक बात का बड़ा सूक्ष्म अवलोकन करते।[3]

(4) अध्यवसाय पर बल-

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने पन्द्रह वर्षों में लोगों की आंखों में समा सकने वाला

संगठन खड़ा करने में जो सफलता पायी। उसका मर्म समझाते हुए उन्होंने कहा "हमें जो सफलता मिली है वह स्वयंसेवकों की निष्ठा और अध्यवसाय के बल पर है, समाचार पत्रों के द्वारा यह कार्य नहीं हो सकता था। किसी भी तत्वज्ञान को यदि सिद्ध करना है तथा उसकी सत्यता लोगों को पढ़ानी है तो उसके लिये शक्ति का अधिष्ठान चाहिए। ध्यान रखिए कि यदि बल न रहा तो न्याय भी अप्रभावी सिद्ध होता है (**Justice without force is impotent**) उन्होंने कहा "संघ बाहर से होने वाले आक्रमणों से नहीं डरता। परन्तु अन्दर गड़बड़ नहीं होनी चाहिये। संघ का सभी काम प्रेम से होना चाहिए। आज अपने पास और कोई शक्ति नहीं है। हमारे पास तो केवल नैतिक शक्ति है और उसी के बल पर हम अपना कार्य कर रहे हैं।"[4]

(5) त्रुटिपूर्ण समाचारों का खण्डन :-

दिनांकः 17 मार्च 1940 को हिन्दू सभा की ओर से 'राम सेना' नाम से एक स्वयंसेवक दल नागपुर में प्रारम्भ हुआ। इस विषय में प्रकाशित पत्र में लिखा था कि "रामसेना महासभा की सेना होगी'। मण्डल के अध्यक्ष डॉ. मुंजे के द्वारा प्राप्त महासभा की सभी आज्ञाएं रामसेना को पालन करनी होगी।" इस पत्रक में इस बात की भी स्पष्टीकरण था कि पृथक दल बनाने की आवश्यकता क्यों पड़ी वह था कि "हिन्दुओं के सैनिक शिक्षण के द्रोणाचार्य पूज्य डॉ. हेडगेवार ने नागपुर में पक्षातित संगठन प्रारम्भ किया था।"

दिनांक 27 मार्च को 'महाराष्ट्र' में रामसेना के पदाधिकारियों की घोषणा की गयी। उनमें डॉ हेडगेवार का भी समावेश था। राजगिरि में जब डॉक्टर जी को इसकी सूचना मिली तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। क्योंकि संघ एवं रामसेना इन दो भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में काम करने वाले संघटनों में एक ही समय पदाधिकारी के रूप में रहना संगठन की दृष्टि से अहितकर था और फिर उनके स्वास्थ्य की वर्तमान अवस्था में तो यह सम्भव भी नहीं थी। इतना ही नहीं, उन्होंने अपनी यह असमर्थता स्पष्ट एवं असन्दिग्ध शब्दों में[5] 'रामसेना' के प्रर्वतकों को बार-बार विदित कर दी थी। फिर भी उनका नाम घसीटने की प्रवृत्ति उन्हें अच्छी नहीं लगी। अतः दिनांक **3 अप्रैल के 'महाराष्ट्र'** में उन्होंने एक छोटा-सा सम्पादकीय स्पष्टीकरण प्रसिद्ध करवाया। उसमें कहा गया था कि "नागपुर नगर हिन्दू सभा द्वारा निर्मित रामसेना को सफल बनाने के लिए जो अपील दिनांक 7 मार्च के 'महाराष्ट्र' में छपी है, उस सम्बन्ध में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के चालक डॉ. हेडगेवार 'महाराष्ट्र' अखबार के संपादक राजगिरि से सूचित करते हैं कि-उस पत्रक पर मेरा नाम मेरे बिना जानकारी तात अनुमति के छापा गया है।" डॉक्टर जी यह जानते थे कि इस स्पष्टीकरण के प्रकाशित होने पर डॉ. मुंजे जैसे आदरणीय व्यक्तियों को बुरा लगेगा तथा इस कारण

वे कुछ चिन्तित भी थे, किन्तु परतंत्र देश में राष्ट्रीय जागृति के उद्देश्य से निर्मित संगठन को युद्ध की विषम एवं नाजुक परिस्थिति में अक्षिप्त रखना आवश्यक था। कुछ बुराई सहन करके भी उन्होंने इस कर्तव्य का निर्वाह किया। कर्तव्य अनेक बार इसी प्रकार कठोर होता है।[6]

(6) जनमाध्यमों की अपेक्षा प्रत्यक्ष निमंत्रण :-

एक बैठक में एक स्वयंसेवक ने कहा कि विजयदशमी महोत्सव की निमंत्रण पत्रिकाओं की वितरण व्यवस्था पर चर्चा हो रही थी। उत्सव के 8-10 दिन पत्रिकाओं का वितरण हो जाना चाहिये। निमंत्रण पत्र बाँटने में काफी समय लगता है। किसी कम परिचित या अपरिचित व्यक्ति के यहाँ निमंत्रण पत्र देते समय उसके साथ इसी निमित्त परस्पर वार्तालाप करना ही पड़ता है। संघ कार्य विषयक जानकारी उसे देनी पड़ती है और वह उत्सव में अवश्य पधारे, इसका प्रयास किया जाता है। यह प्रयास कुछ मात्रा में सफल भी होता है। किन्तु इस प्रकार निमंत्रण पत्र के वितरण में प्रतिदिन केवल 4-6 सज्जनों के यहाँ जाना ही संभव हो पाता है। अधिकांश जनसमूह छूट जाता है।

इस पर डॉक्टर जी ने कहा, हाँ, इसी पद्धति में निमंत्रण पत्रों का वितरण होना चाहिये। इससे अपने समाज के सज्जनों से निकटता प्रस्थापित होती है और आगे चलकर उन्हें भी अपने कार्य से जोड़ा जा सकता है। इसके बजाय यदि हम निमंत्रण पत्र को समाचार पत्रों में प्रकाशित कर सार्वजनिक निमंत्रण देने की व्यवस्था करें, तो लोग हमारे कार्यक्रम में कम-अधिक मात्रा में आयेंगे ही, किन्तु प्रत्यक्ष सम्पर्क द्वारा अपना विचार घर-घर तक पहुँचाने और उसके द्वारा सम्पूर्ण समाज को संगठित करने का काम न ही हो पायेगा। हाँ, निमंत्रण-पत्रों का ठीक ढंग से वितरण करने के बाद यदि हम उसे समाचार-पत्रों में प्रकाशित करवायें, तो वह उपयोगी हो सकता है।[7]

(7) समाचार प्रकाशन की तुलना में 'शाखा' को प्राथमिकता :-

एक बार, बैठक में 'आईना' (दर्पण) और उसकी उपयोगिता की चर्चा निकल पड़ी। डॉक्टर जी भी उसमें सहभागी होते। इस पर डॉक्टर जी ने कहा, हम कैसे दिखाई देते हैं यह तो आईना हमें बताता है किन्तु हम दिखते कैसे हैं, इसकी बजाय हम कैसे है, यह बात क्या अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं? सिर पर बाल कैसे हैं, इसकी अपेक्षा सिर में निरपेक्ष देशभक्ति के विचारों पर ही हमें अधिक बल देना चाहिये ? शरीर पर धारण किये गये कपड़ों की इस्त्री ठीक है या नहीं, इसकी अपेक्षा, उस शरीर का हृष्ट-पुष्ट बलशाली होना अधिक महत्वपूर्ण है। डॉक्टर जी की बाते, स्वयंसेवक

बड़ी गम्भीरता से सुन रहे थे। उन्होंने आगे कहा इसी तरह समाचार-पत्रों में संघ का वृत्त प्रमुखता से प्रकाशित हो, इसकी बजाय हमें अपनी **'संघ शाखाओं'** को अधिक सुदृढ़ करने, स्वयंसेवकों की संख्या बढ़ाने, उनमें आत्मीय सम्बन्ध बढ़ाने, अनुशासन को जीवन का स्थायी भाव बनाने आदि बातों पर बल देना चाहिये। समाचार पत्रों में प्रसिद्धि की चाह या भूख तो तीव्रता से बढ़ती जाती है और तब हमारा ध्यान शाखा के विधायक कार्य की बजाय विचलित होकर हम भारी प्रसिद्धि के शिकार बनते हैं।[8]

(8) संघ हितार्थ भाषण प्रकाशन :-

नागपुर के विजयदशमी महोत्सव के अध्यक्षीय भाषण का वृत तैयार कर समाचार-पत्रों में प्रकाशनार्थ भेजा गया था। यह प्रकाशित हो ऐसा अनुरोध भी डॉक्टर जी ने सम्पादकों से किया था। भूतपूर्व राज्यपाल श्री तांबे और सर मोरोपत जोशी संघ के उत्सव में अध्यक्ष और प्रमुख अतिथि के नाते उपस्थित हुए थे। इस कारण समाचार-पत्रों में प्रकाशित उनके भाषणों का अच्छा परिणाम हुआ। संघ पर तथा सरकारी सेवाओं में कार्यरत स्वयंसेवकों पर किसी प्रकार की पाबन्दी लगाने का विचार करने वाले वरिष्ठ अधिकारियों को इन भाषणों के बाद, संघ पर कोई आरोप लगाने या आपत्ति उठाने का विचार कुछ काल के लिए त्यागने को विवश होना पड़ा। क्योंकि उक्त दोनों वक्ता महोदयों ने अपने भाषणों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कार्य की प्रशंसा ही की थी।[9]

(9) कार्य से पूर्व प्रचार नहीं :-

दिल्ली में एक समाचार पत्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से सम्बन्धित समाचार प्रकाशित हुआ था। इस समाचार में कहा गया था कि, श्री बाबासाहेब आप्टे और श्री बसंतराव ओक ये दोनों संघ प्रचारक इन दिनों संघ कार्य करने हेतु दिल्ली में आये हुए हैं और ये यहाँ संघ की शाखाएं खोलेंगे। भारत की राजधानी में संघ का कार्य प्रारम्भ होने जा रहा है, यह जानकर स्वयंसेवकों के मन में प्रसन्नता और समस्याओं के समाधान की भावना पैदा हुई। लेकिन डॉक्टर जी ने कहा, दिल्ली में अभी हाल ही में जैसे-तैसे संघ का कार्य प्रारम्भ होने जा रहा है। अतः ऐसे समय इस प्रकार समाचार-पत्र में ऐसा समाचार प्रकाशित होना ठीक नहीं हुआ।

संघ का कार्य वहां जड़ जमाये, इसके पूर्व ही ऐसे समाचार के प्रकाशन से चतुर और तीक्ष्ण बुद्धिवाले अंग्रेज शासकों का ध्यान भी उस ओर आकर्षित होगा। जो यह नहीं चाहते कि संघ कार्य बढ़े। ऐसे लोग भी हमारे काम में नाहक कठिनाईयाँ पैदा करने का प्रयास कर सकते हैं। कार्य बढ़ने के बाद सार्वजनिक कार्यक्रम का वृत्त भले ही वह संक्षेप में क्यों न हो, अगर प्रकाशित होता है, तो वह ठीक है और

उसके बाद में समाचार पत्र भी हमारे कार्य की उपेक्षा नहीं कर पायेंगे। हमारे कार्य की प्रसिद्धि और प्रचार केवल संघ शाखाओं के प्रभाव से होनी चाहिये। डॉक्टर जी के विचार स्वयंसेवकों के मन में पैठ कर रहे थे। डॉक्टर जी ने कहा, उक्त आशय का पत्र मैंने श्री बसंतराव के नाम भेजा है और भविष्य में, इस बारे में सावधानी बरतने की सूचना भी दी है।[10]

(10) संघ के कार्यक्रम एवं संचार माध्यम :-

डॉक्टर जी के यहां स्वयंसेवकों से अनौपचारिक वार्तालाप के समय पुणे के एक समाचार-पत्र में प्रकाशित समाचार का उल्लेख हुआ। पुणे में सम्पन्न स्वयंसेवकों के निजी कार्यक्रम से सम्बन्धित वह समाचार था। एक स्वयंसेवक ने कहा कि-संघ के कार्यक्रमों को यदि समाचार-पत्रों में प्रकाशित किया जाये तो संघ के विचार लोगों तक पहुँचना आसान होगा। इस पर अन्य स्वयंसेवक ने कहा, यदि यह पद्धति अपनायी गयी तो आगे चलकर स्वयंसेवक यह भी सोचने लगेंगे कि संघ के उत्सवों की निमंत्रण पत्रिकाएं घर-घर जाकर देने की अपेक्षा वर्तमान पत्रों में ही उसका प्रकाशन करना उचित होगा। फिर किसी स्वयंसेवक ने यह आशंका प्रकट की कि समाचार-पत्र संघ के कार्यक्रमों का वृत्त सही ढंग से प्रकाशित करेंगे, इसका क्या भरोसा? कुछ स्वयंसेवकों की राय में संघ के विचारों का प्रसार-प्रचार करने के लिये समाचार-पत्रों का उपयोग किया जाना चाहिए। डॉक्टर जी ने कहा, समाचार पत्रों में प्रसिद्धि के कारण संघ के कार्य में लाभ होने वाला हो, तो प्रसिद्धि करने में कोई आपत्ति नहीं है, किन्तु यदि प्रसिद्धि के चक्कर में संघ कार्य को क्षति पहुँचे तो उसे उचित नहीं माना जा सकता। यह विषय महत्त्व का है। [11]

(11) सम्पादन

डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार संघ विस्तार एवं कार्य प्रसार हेतु विश्वसनीय मित्रों एवं सहयोगियों का दायरा अधिकाधिक प्रभावी विस्तृत एवं विशाल करने के इच्छुक थे। इसी उद्देश्य से वे एक साथ अनेक प्रकार के कामों में अपने आपको व्यस्त रखते थे। उन दिनों मध्य प्रान्त में तिलकपंथी माने जाने वाले प्रायः सभी लोगों से डॉक्टर जी का घनिष्ठ परिचय हो चुका था। डॉ. मुन्जे, बैरिस्टर अभ्यंकर, डॉ. खरे, बैरिस्टर देशमुख, डॉ. परांजपे आदि अपने गणमान्य लोगों ने उन दिनों नागपुर में 'राष्ट्रीय मंडल' नाम से एक संस्था चलाई थी। इस संस्था के विचारों से पूर्णतः सहमत न होते हुए भी डॉक्टर जी उसे सब प्रकार से सहायता एवं सहयोग देते थे। उग्रपंथी विचारों को बढ़ावा देने के लिए अपने विशेष मित्रों की 'नागपुर नेशनल यूनियन' नामक एक स्वतंत्र संस्था डॉक्टर जी ने स्थापित की थी। 'संकल्प' नामक एक

हिन्दी साप्ताहिक, राष्ट्रीय उत्सव मंडल, भारत स्वयंसेवक मंडल, अनाथ विद्यार्थी गृह आदि बीसियों कार्यों में डॉक्टर जी उन दिनों व्यस्त थे। सन् 1924 के प्रारंभ में नागपुर से समाचार पत्र निकल रहे थे। इसमें मराठी अखबारों में 'महाराष्ट्र', हिन्दी में 'संकल्प' 'प्राणवीर', अंग्रेजी में 'हितवाद' आदि निकल रहे थे। बाद में नारायण राव वैद्य, ए. बी. कोल्हटकर, डॉ. हेडगेवार ने नए मराठी दैनिक 'स्वातंत्र्य' का प्रकाशन शुरु किया। कुछ ही समय में डॉ. हेडगेवार पूर्णतः 'स्वातंत्र्य' का संपादन करने लगे। सन् 1924 में 'स्वातंत्र्य' पत्र के संपादकीय में उन्होंने लिखा कि- इसका नाम 'स्वातंत्र्य' रखा गया है, जो इस बात का सूचक है कि अब समय आ गया है, जब आत्मनिर्भरता एवं स्वतंत्रता की भावना प्रबल रूप से स्थापित हो, जो पहले की भिक्षावृत्ति की नीति **(Policy of mendicancy)** के बिल्कुल विपरीत है।[12]

डॉ. हेडगेवार के संपादन में **'स्वातंत्र्य'** पत्र एक लोकप्रिय समाचार पत्र बन गया। सरकारी रिकार्ड के अनुसार इस पत्र की प्रसार संख्या 1200 थी। ज्ञातव्य है कि 'स्वातंत्र्य' को न तो किसी दल, और न ही किसी व्यक्ति का समर्थन था। यह पत्र सिर्फ प्रसार संख्या पर टिका था। इसे सरकारी विज्ञापन मिलता नहीं था। इसके साथ ही सरकार के भय से निजी विज्ञापन भी बंद हो गए। अंत में लगातार घाटे के बाद इसे जनवरी 1925 में बंद करना पड़ा।

इसके अलावा युवा छात्रों एवं नागरिकों से व्यक्तिशः मेल मुलाकातें करने की अपनी एक खास शैली के अनुसार वे अपने विचारों का प्रभाव क्षेत्र बढ़ाने में भी दिन-रात लगे ही रहते थे। वे हमेशा प्रवास पर जाते, देहातों में भी उनका सम्पर्क एवं प्रभाव था। कहा जा सकता है कि कांग्रेस के स्वाधीनता आन्दोलन में शामिल होकर वहाँ के लोग एवं उनकी कार्य पद्धति करीब से परखने और प्रचलित प्रथा को देखने के आग्रही थे।[13]

1937 ई. में जब महाराष्ट्र में संघ के विरोधियों ने अपनी लेखनी से जी भर के संघ पर कीचड़ उछाली। तब डॉक्टर जी ने श्री का. भा. लिमये को यही बताया कि "आपके यहाँ के समाचार-पत्रों में संघ के विरुद्ध उठा हुआ तूफान हम सबके लिये खूब विनोद का विषय बन गया है। हमारे मन पर इन बातों का कोई परिणाम नहीं होता।" आप इस विषय में निश्चित रहें। किन्तु आप इस बात की चिन्ता अवश्य कि इस प्रकार के आप प्रचार से आपके यहाँ के कार्य को किसी प्रकार का धक्का न लगने पावे। इस प्रकार की बातों से अपने कार्य की निश्चित वृद्धि होगी, इसमें कतई शंका नहीं है।[14]

(12) प्रसिद्धि पराङ्गमुखता :-

आलोचकों के विषय में नीति-सम्बन्धी डॉक्टर जी के विचार भी मिलते हैं। उन्होंने

इस प्रकार का एक पत्र पूना के संघचालक श्री विनायक राव आप्टे को तथा दूसरा महाराष्ट्र के प्रान्त संघचालक श्री का.भा. लिमये को लिखा था। संघ की विचारधारा पर आधारित एक मराठी साप्ताहिक प्रकाशित करने का विचार उन दिनों पूना में चल रहा था। पत्र के प्रकाशन की अनुमति देते हुए डॉक्टर जी ने लिखा था "इसमें कतई शंका नहीं कि इस पत्र के द्वारा सदैव अपनी ही विचारसरणी का प्रतिपादन होगा। किन्तु संघ पर विभिन्न लोगों द्वारा किये जाने वाले आरोप तथा उनके उत्तर-प्रत्युत्तर के झगड़े में आप बिलकुल न पड़े। आजकल आपके यहाँ के पत्रों में संघ पर अनेक प्रकार के झूठे आरोप पढ़ने को मिलते हैं। ये आरोप चाहे समाचार-पत्रों में हो अथवा सार्वजनिक सभाओं में, हमें उनका उत्तर न देते हुए उनकी ओर पूर्णतः तटस्थ रहना चाहिए।[15]

(13) समाचार पत्रों में संघ समाचार :-

1939 ई. में योजना बनायी गयी थी कि नागपुर में **'गुरूपूजन महोत्सव'** का समाचार विभिन्न प्रान्तों के प्रमुख पर्व में प्रकाशित हो। तदनुसार जिन पत्रों ने यह समाचार प्रकाशित किया है-उनमें उल्लेखनीय है 'ट्रिब्यून' (लाहौर), 'हिन्दू आउटलुक' (दिल्ली), 'लीडर' (प्रयाग), 'अमृत बाजार पत्रिका' एवं लोकमान्य (कलकत्ता), सण्डेटाइम्स (मद्रास), 'केसरी' 'त्रिकाल तथा नागरिक' (महाराष्ट्र)। डॉक्टर जी के विचारानुसार ही यह योजना की गयी थी प्रकाशन एवं प्रसिद्धि के सम्बन्ध में उनका दृष्टिकोण प्रारम्भ से ही निश्चित था। लोगों की मनोवृत्ति पर परिण ाम करने के लिए समाचार-पत्रों का थोड़ा-बहुत उपयोग अवश्य है किन्तु एक टिकाऊ एवं अनुशासनपूर्ण संगठन निर्माण करने में उनका कोई उपयोग एवं महत्व नहीं है। इसके लिए तो उन्हें स्वयंसेवकों को नित्य एकत्र कर खेलकूद, लाठी-काठी, संचलन, गीत, बौद्धिक और प्रार्थना द्वारा संस्कार करने वाले कार्यक्रम ही प्रभावी प्रतीत हुए, जो कुछ हुआ उसे तुरन्त छापने की ओर लोगों का झुकाव होने के कारण, हमने मना किया तो भी वे कुछ-न-कुछ छापेंगे, यह समझकर डॉक्टर जी ने निश्चय किया कि मनमाना तथा अवास्तविक एवं विकृत समाचार छपने से तो यही उचित रहेगा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ओर से 'अधिकृत' समाचार आवश्यकतानुसार भेजने की व्यवस्था की जाए। 1939 ई. में बहुत से प्रान्तों में संघ कार्य का विस्तार होने के कारण यह स्वाभाविक था कि इस वर्ष के गुरूपूजा उत्सव का वृत्त वहाँ के समाचार पत्रों में प्रकाशित हो। उनके व्यवहार में दुराग्रह एवं हठधर्मी नहीं थी, अपितु उसमें परिस्थिति का योग्य अनुमान लगाकर उसके अनुसार प्रभावबद्ध एवं हितकारी लचीलापन था।[16]

(14) जनमाध्यमों के कार्यक्रमों में भागीदारी :-

पूना के 'मिनर्वा चित्रपट गृह' में 17 जून की दोपहर में उद्घाटन समारोह हुआ। उस समय चित्रपट-निर्माता श्री दादासाहब तोरणे तथा दिग्दर्शक, कथा-लेखक आदि अन्य सज्जन भी उपस्थित थे। दिग्दर्शक ने प्रारम्भ में डॉक्टर जी का परिचय अत्यन्त ही नपे-तुले शब्दों में इस प्रकार दिया था "तीन सौ वर्ष पूर्व श्री रामदास स्वामी ने जो पाठ पढ़ाया था। वही पाठ पढ़ाने का काम आज डॉक्टर जी हेडगेवार महाराष्ट्र में ही नहीं, अखिल हिन्दुस्तान में कर रहे हैं। डॉक्टर जी यही प्रयत्न कर रहे हैं कि भगवा झण्डा राष्ट्रीय ध्वज के रूप में पुनः कैसे मान्यता प्राप्त करें। यह वास्तव में हमारा भाग्य है कि वे हमें आज उद्घाटन के लिए उपलब्ध हुए।"[17]

(15) आलोचना के प्रति उदार रूख :-

'वन्देमातरम्' समाचार पत्र ने 7 जून को डॉक्टर जी पर अहंकारी होने का आरोप करते हुए एक अत्यन्त कुत्सापूर्ण लेख लिखा। उसमें कहा गया था कि "डॉक्टर जी हेडगेवार को हम विनम्रतापूर्ण निवेदन करते हैं कि अहंकार का विष सर्प के विष से भी भयंकर होता है इसी अहंकार के कारण विनाश का ताजा इतिहास आँखों से ओझल मत कीजिए। निःसन्देह रा. स्व. संघ की स्थापना और विकास से आपने हिन्दू समाज पर उपकार किया है। पर शहगीरों के लिए बाँधे तालाब में यदि दाता स्वयं ही क्रूर जलचर छोड़ दे तो उसे क्या कहा जाए ? आप ऐसा ही कर रहे हैं और जानबूझकर कर रहे हैं। अतः कृपा करके बाज आइये। यदि आपने ऐसा किया तो कम-से-कम नाम मात्र को तो हिन्दू समाज का भावी इतिहासकार आपका उल्लेख कर सकेगा।"

कुछ लोगों ने डॉक्टर जी को यह लेख पढ़कर सुनाया। उस समय वे हँसते हुए बोले "मेरी भी यही इच्छा है मेरा नाम इतिहास में नहीं आया तो भी काम चलेगा, पर संघ पर इस प्रकार के प्रहार करने वालों का अवश्य भरपूर नामोल्लेख होना चाहिए।" चारों ओर इस प्रकार धूल उछाली जा रही थी। किन्तु डॉक्टर जी ने कभी उसका उत्तर देने का प्रयत्न नहीं किया। वे तो यही मानते थे कि निरन्तर बढ़ने वाला प्रत्यक्ष कार्य ही बिना कारण आघात करने वालों का सही उत्तर होता है। आघात करने वाले स्वकीय को निरूत्तर करने अथवा उसका उपहास करने से वह और भी चिढ़कर सदा के लिए दूर हो जाता है। डॉक्टर जी के संयमपूर्ण व्यवहार से स्थिति बदल जाती थी। उदाहरण ढूढ़ने के लिए दूर जाने की आवश्यकता नहीं। 'वन्देमातरम्' के जिन सम्पादक महोदय की दृष्टि में भावी इतिहासकार के लिए डॉक्टर जी का नामोल्लेख भी असहाय था।[18] उन्होंने ही डॉक्टर जी की मृत्यु के उपरान्त उसका गुणानुवाद करते हुए लेखों का संकलन करके पुस्तक रूप में

प्रकाशित कर मराठी पाठकों के लिए सुलभ किया। यह नहीं है कि डॉक्टर जी किसी टीकाकार की कटु आलोचना नहीं कर सकते थे, परन्तु वे 'अपने दाँत और अपने ही होंठ' के सिद्धान्तानुसार विवेकपूर्वक मौन ही रहते थे तथा परिणाम में उनकी शक्तिहितावह ही सिद्ध होती थी।[19]

(16) व्यक्तिगत लाभ के लिए प्रकाशन नहीं :-

महाराष्ट्र के एक व्याख्यानकार आचार्य श्रीराम गोसावी का एक पत्र आया। वे चाहते थे कि संघ में उनके द्वारा दिये गये भाषणों का संग्रह संघ के नाम से छापा जाए तथा डॉक्टर जी उसका प्रस्तावना लिखें। इस पत्र के उत्तर में वे लिखते हैं "आज तक निश्चित नीति के अनुसार आपकी पुस्तक को संघ का नाम देना सम्भव नहीं होगा। इस प्रकार आज तक मैं जिस नीति के अनुसार चल रहा हूँ। उसके अन्तर्गत आपकी पुस्तक की प्रस्तावना लिखने का कार्य भी मैं स्वीकार नहीं कर सकता।"

डॉक्टर जी ने विभिन्न कार्यकर्ताओं को लिखे गये पत्रों के अतिरिक्त अन्य कुछ भी स्वतंत्र रूप से नहीं लिखा है। यह नहीं है कि 'स्वातंत्र्य' दैनिक पत्र का संचालन और सम्पादन करने वाले डॉक्टर जी लेखन का थोड़ा-बहुत महत्व जानते नहीं थे। परन्तु लोगों के मनः पटल पर लिखने की कला हस्तगत करके सहस्वावधि गुणों को सहज ध्येयनिष्ठ बनाया जा सकता है। यह आत्मविश्वास अपने हृदय में लेकर उन्होंने लेखनी का बहुत कम उपयोग किया। इस सम्बन्ध में वे कभी-कभी कहते थे कि "सफेद को काला न करते हुए मेरी इच्छा तो हिन्दुओं का अभेद्य एवं अजेय संगठन निर्माण करने की है।" प्रत्यक्ष जीवन एवं चरित्र की छाप व्यवहार से ही तरुण मनों पर डालकर उसी में से अनुशासनपूर्ण लोक संग्रह किया जा सकता है।[20]

(17) व्यक्तिगत पत्र लेखन (अन्तर्वैयक्तिक संचार) :-

नागपुर से परावर्तित होकर डॉक्टर जी के पत्र नासिक आते थे। उन पत्रों में उनके स्वास्थ्य के सम्बन्ध में चिन्ता व्यक्त करने के साथ ही कार्य वृद्धि के भी समाचार रहते। नर शोला की बाड़ी के एक स्वयंसेवक ने लिखा था कि "आपके प्राण उदयोन्मुख हिन्दू राष्ट्र का नवचैतन्य है। अतः आप अधिक चिन्ता करें।" श्री गुरूजी को पंजाब के दौरे पर भेजने तथा संघ प्रारम्भ करने के लिए अधिक कार्यकर्ताओं की मांग करने वाले पत्र भी थे। सूरत और मद्रास में कार्य के प्रारम्भ का आनन्ददायक समाचार भी डॉक्टर जी को नासिक में ही मिला था। इंग्लैण्ड में शिक्षा के लिए गये स्वयंसेवकों की गुरुदक्षिणा के सम्बन्ध में हुआ पत्र-व्यवहार भी डॉक्टर जी को सूचित किया गया था। जबलपुर के पत्र में यह भी डॉक्टर जी से प्रार्थना की गयी थी कि वहाँ से निकलने वाले 'हिन्दुत्ववादी' एक नये मासिक पत्र को संघ में स्थान

दिया जाए तथा उसके लिए योग्य नाम भी सुझाया जाए।

अब ऐसी स्थिति हो गयी थी कि हिन्दुत्व एवं हिन्दू राष्ट्र सम्बन्धी प्रत्येक कार्य एवं आन्दोलन को डॉक्टर जी अपना आधार प्रतीत होते थे। हिन्दुस्तान की सेना के अधिकारियों ने भारतीयों की भर्ती के लिए नियुक्त समिति में भी डॉक्टर जी को साक्षी देने के लिए आमंत्रित किया था तथा उन्होंने पूछा था कि- वे दिनांक 3 जुलाई से 21 जुलाई के बीच कब शिमला (हिमाचल प्रदेश) आ सकेंगे। कुछ स्थानों के स्थानीय दल संघ में विलीन होने के भी समाचार मिल रहे थे। साथ ही कुछ देशी रियासतों में वहाँ की परिस्थिति में अलग नाम से संघ कार्य को प्रारम्भ करने की सूचना भी पत्रों से मिलती है। ग्वालियर (मध्य प्रदेश) में संघ का कार्य पहले-पहल 'राणोजी स्वयंसेवक संघ' नाम से शुरू हुआ। कलकत्ते में संघ की शाखा खुल ही गयी थी। वहाँ से डॉक्टर संतोष कुमार मुखर्जी ने डॉक्टर जी को लिखा कि "हम प्रगति करते जा रहे हैं तथा बंगाल में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का भविष्य उज्जवल दिखता है।"[21]

(18) संघ विरोधी पत्रकों के प्रति तटस्थता :-

1937 में डॉक्टर जी के काशी आगमन पर समाजवादी विद्यार्थियों द्वारा डॉक्टरा साहब के विरोघ में छपवाया गया एक पत्रक बाँटा गया। इस पत्रक की एक प्रति डॉक्टर साहब हाथ में भी दी गयी थी। डॉक्टर जी ने स्वयंसेवकों को यही बताया कि-इस प्रकार पत्रकों के प्रति दुर्लक्ष्य करना चाहिए। उनके तीन सप्ताह के निवास में व्याख्यानों और चर्चाओं में कहीं भूलकर भी इस पत्रक का नाम नहीं आया। यह बात विरोध करने वालों को अत्यन्त निराशाप्रद सिद्ध हुई। डॉक्टर जी के व्यवहार की कुशलता तथा विषय प्रतिपादन की सुसंगति एवं तर्कशुद्धता से पत्रक द्वारा उड़ाया सब गर्दे-गुबार न मालूम कब शान्त हो गया। पत्रक संघ की दृष्टि से 'अपकारक' के स्थान पर 'उपकारक' ही सिद्ध हुआ। इस विषय में डॉक्टर जी लिखते हैं कि-"संघ का तत्वज्ञान तथा विचारणीय सुनने के बाद लोगों को यही लगा कि पत्रक निकालने वालों ने भारी मूर्खता की। जिन लोगों का ध्यान साधारणतया संघ की ओर नहीं जाता। वे भी संघ विरोधी पत्रक के कारण संघ के सम्बन्ध में उत्सुकता लेकर अपने-आप संघ की ओर आकृष्ट होने लगे। इस पत्रक से हानि होने के स्थान पर हमारा लाभ हुआ।"[22]

(19) संवाद हो पर विवाद नहीं :-

डॉक्टर जी के संगठनशास्त्र का यह अत्यन्त अनुभवपूल सिद्धान्त था कि आलोचकों की ओर ध्यान न देने से अपना श्रम और समय तो बचता ही है, पर इस प्रकार

के कोलाहल से न डगमगाते हुए आगे बढ़ते जाने वाले हमारे आत्मविश्वास तथा धैर्य का जैसे-जैसे आलोचकों को अनुभव आता जाता है। वैसे-वैसे ही वे हतप्रभ होकर बैठते जाते हैं। डॉक्टर जी आलोचकों का कथन सुनते तो अवश्य थे तथा स्वयंसेवक उसका ठीक उत्तर दे सके। इसके लिए उनका बौद्धिक स्तर ऊंचा उठाने का प्रयत्न भी करते थे, किन्तु उनका यह निश्चित मत था कि अचूक उत्तर देने की तथा विरोधी का मुँह बन्द करने की क्षमता होने पर भी सार्वजनिक वाद-विवाद के चक्कर में पड़ने से कोई लाभ नहीं होता। जिन्हें इस संघर्षमय तथा अभिनिवेशपूर्ण समाज में कुछ प्रत्यक्ष निर्माण करना है उन्हें "टूटे बाद संवाद तो कृतिकारी" ("मिटे वाद, संवाद उत्तम वहीं हैं"), समर्थ की इस उक्ति को तो ध्यान में रखना ही चाहिए। किन्तु चारों ओर का यह अनुभव भी नहीं भूलना चाहिए कि अपनी भूल को मानकर वाद को समाप्त करने वाले बिरले ही मिलते हैं। आज तो यही अनुभव आता है कि "वादी तो नवले, न वादहि खले, होती खुले आंधले।" ("वादी नहि मानत कबहु बाद अन्त नहि होय। बाद करत नादी सभी पागल अन्धे होय।") डॉक्टर जी ने इसी अनुभव को ध्यान में रखकर वाद-विवाद में न पड़ने की नीति का ही दक्षतापूर्वक पालन किया था।[23]

(20) पत्र लेखन में सतर्कता :-

संयम और धैर्य डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार पत्र लेखन की विशेषताएँ थी। क्रांतिकारी जीवन में पग-पग पर जो सावधानी बरतनी पड़ी थी। उसके कारण सावधानी और सतर्कता डॉक्टर जी के स्वभाव का स्थायी भाव बन गयी थी। देशव्यापी संगठन खड़ा करने के लिये जो कुछ कहना सुनना हो, वह प्रत्यक्ष मिलकर ही ठीक रहता है। यह जानकर ही वे व्यवहार करते थे। स्वयंसेवक को पत्र कैसे लिखना चाहिए यह बताते हुए वे कहते हैं कि "अपने पत्र का स्वरुप ऐसा होना चाहिए कि यदि किसी ने गलती से भी चौराहे पर चिपका दिया तो उसके कारण हमारे मन में कोई भय या संकोच उत्पन्न न हो।" उनके पत्र इसी प्रकार के होते थे। इसी कारण एक बार एक सज्जन ने जब उन्हें धमकी दी कि "मैं अपने बीच के पत्र व्यवहार को प्रकाशित करता हूँ" तो उन्होंने तुरन्त स्वीकृति देते हुए सूचित किया कि "मुझे इसमें तनिक भी आपत्ति नहीं है, मात्र उसके कारण आपकी ही फजीहत होगी। अतः फिर से एक बार अच्छी तरह सोचकर निर्णय करे तो ठीक होगा।"[24]

(21) सद्कार्यों द्वारा समाचार पत्रों में प्रसिद्धि :-

लोक संग्रहित व्यक्तित्व का प्रभाव :-

दिनांक 15 दिसम्बर 1932 को मध्यप्रांत सरकार ने (उन दिनों विदर्भ के आठ जिले

मध्यप्रान्त में थे और राजधानी नागपुर थी) एक परिपत्र द्वारा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को राजनीतिक एवं साम्प्रदायिक संगठन बता कर सरकारी कर्मचारियों को उसमें भाग लेने से प्रतिबंधित कर दिया। कुछ दिनों बाद एक और परिपत्र निकाल कर सरकार ने स्थानीय स्वराज्य संस्थाओं की ओर से अपने कर्मचारियों पर इस प्रकार का प्रतिबन्ध लगाने के लिए भी दबाव डाला।

डॉक्टर जी ने इस कुचक्र का सामना अत्यन्त शान्त भाव से किया। उन्होंने प्रत्यक्ष संघ कार्य में वृद्धि कर सरकारी पत्रक के अहितकर परिणामों को निष्प्रभ कर दिया। उनकी दौड़-धूप इतनी बढ़ गयी थी कि चौबीस घण्टे भी शाखा कार्य के लिए कम पड़ने लगे। अपने सहयोगियों को विभिन्न प्रकार से प्रेरणा और प्रोत्साहन देते हुए उन्होंने कार्य वृद्धि के प्रयत्नों को चरम सीमा पर पहुँचा दिया।

'संघ' शाखा के उत्सवों में मध्यप्रान्त के भूतपूर्व गृहमंत्री सर मोरोपन्त जोशी, भूतपूर्व राज्यपाल मा. श्री चताबे जैसे राज्य मान्यता प्राप्त व्यक्ति चुन-चुन कर अध्यक्षता करने के लिए आमंत्रित किये गये। उन्होंने अपने भाषणों में स्पष्ट रूप से कहा कि- **राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ न तो राजनीतिक है और न साम्प्रदायिक।** इस प्रकार सरकार तत्कालीन सत्तासीन द्वारा जिन्हें महत्व प्रदान किया गया था। वे ही व्यक्ति राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रति सरकारी दृष्टिकोण का खण्डन करने लगे अर्थात् सरकार का मुँह ही स्वयं उसके विरुद्ध बोलने लगा।

दूसरी ओर डॉक्टर जी सरकारी परिपत्र के विरुद्ध जनमत जागृत करने में जुट गए। विविध समाचार-पत्रों में सरकार के इस कार्य की आलोचना की गई और आड़े हाथों लिया गया। जिला समितियों और नगर पालिकाओं द्वारा संघ के प्रति शासन की इस अन्यायमूलक नीति के विरुद्ध प्रस्ताव पारित होने लगे। जिनमें परिपत्र वापिस लेने की माँग की जाने लगी। मध्यप्रान्त विधान सभा के मार्च माह के अधिवेशन में इस पत्रक से सन्तप्त जनमत का प्रकटीकरण हुआ। भण्डारी के श्री बाबासाहब कोलते ने सरकारी परिपत्र के विरोध में एक कटौती प्रस्ताव (कटमोशन) प्रस्तुत किया। डॉक्टर जी के प्रति स्नेह और सम्मान होने के कारण परस्पर विरोधी विचार के व्यक्तियों ने भी डॉक्टर जी के कार्य अर्थात् संघकार्य का समर्थन करते हुए शासन का कड़ा विरोध किया। विरोधियों के प्रबल प्रहार से सरकार की स्थिति अत्यन्त दयनीय हो गई। श्री कोलते जी का प्रस्ताव स्वीकृत हो गये परिणामस्वरुप शासन की करारी हार हुई। इस घटना के उपरान्त मध्यप्रान्त के श्री ई. राघवेन्द्र शव मंत्रिमण्डल का पतन हो गया। संघ के विरुद्ध फैलाया गया यह जाल व्यर्थ हो गया। ऐसा था डॉ0 साहब का **लोक संग्रही व्यक्तित्व** का सर्वस्पर्शी प्रभाव।[25]

(22) विरोध का सामना शांति से :-

कुछ लोगों ने डॉक्टर जी से पूछा था कि- संघ कांग्रेस विरोधी है, ऐसी आम जनता

की धारणा बनी है। इसका उत्तर देते हुए डॉ0 साहब ने कहा- हम आपके इस साहस की सराहना करते हैं और स्पष्ट रूप में कहना चाहते हैं कि संघ न तो कभी कांग्रेस का विरोधी था, न हैं। हमें मालूम है कि कांग्रेस के कुछ कार्यकर्ता एवं कांग्रेस के मुखपत्र कहलाने वाले कतिपय अखबार सीधी गालियां देकर संघ का विरोध करते हैं और यह प्रचार भी करते रहते हैं कि लोगों को संघ में नहीं जाना चाहिए तथा अभिभावकों को अपने बच्चों को संघ में नहीं भेजना चाहिए। किन्तु हम आपको नम्रतापूर्वक बताना चाहते हैं कि इन लोगों के फैलाये कीचड़ में हमें उतरना नहीं है। हम नहीं मानते कि उपर्युक्त अखबार और कार्यकर्ता ही कांग्रेस हैं। इसीलिए यद्यपि उन्होंने इस तरह से हमारा विरोध करना प्रारम्भ किया है, हम बिल्कुल नहीं मानते कि कांग्रेस हमारा विरोध कर रही है। कांग्रेस ने हमारा और हमने कांग्रेस का विरोध किया होता तो आज अनेक स्थानों में संघ के प्रमुख कार्यकर्ता कांग्रेस में और कांग्रेस के प्रमुख कार्यकर्ता संघ में कार्य करते हुए कभी नहीं पाए जाते। तात्पर्य, हमारी राय में सार्वजनिक कार्य करने वाले लोग आपस में द्वेष या विरोध की भावना न रखते हुए अपने-अपने क्षेत्र में सात्विक हार्दिकता से कार्य करते जाएं इसी में आनन्द है। समझदार को अधिक क्या लिखें ?[26]

(ख) जनसंचार माध्यमों द्वारा डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार को श्रद्धांजलि :-

किसी व्यक्ति के जीवन की सार्थकता उसकी लंबी आयु में ना होकर उसके कर्तृत्व में होती है। 1925 से लेकर 1940 तक डॉ. साहब का जीवन संगठन को प्रभावी बनाने एवं वैचारिक अधिष्ठान को स्थापित करने में अनवरत लगा रहा। संघ कार्य और राष्ट्र हित के बीच उन्होंने जीवंत संबंध स्थापित किया था। वह अंतिम सांस तक सिद्धांतों एवं आदर्शों का पालन पूरी दृढ़ता से करते रहे। निरंतर बिना थके, बिना रूके संघ कार्य में लगे रहने का बुरा प्रभाव डॉ. साहब के स्वास्थ्य पर पड़ा। अंततः 21 जून 1940 को डॉ. साहब ने अपने पैत्रिक स्थान नागपुर (महाराष्ट्र) में अंतिम श्वांस ली। अंतिम समय तक उनके नेत्र, मानस और हृदय में राष्ट्र एवं राष्ट्रोत्थान के साधन संघ का ही चित्र था।

उनकी मृत्यु का समाचार विद्युत गति से सर्वत्र फैल गया। पूरे प्रांत एवं प्रांत के बाहर के लोग नागपुर आने लगे। दिन-भर हजारों स्त्री-पुरुष, आबाल वृद्ध उनके दर्शन करते रहे। 21 जून 1940 को भारी वर्षा के बावजूद लोगों का आना नहीं रुका।

सांय पांच बजे उनकी शवयात्रा निकली, जिसमें हजारों नर-नारी शामिल थे। **'हितवाद'** ने शवयात्रा पर टिप्पणी करते हुए लिखा था कि 'यह नागपुर की अब तक की सबसे प्रभावी शवयात्रा थी। 'हितवाद' ने अपने संपादकीय में लिखा था कि 'डा. हेडगेवार से अधिक कुशल संगठनकर्ता का देश में मिलना दुर्लभ होगा।'[27]

पूना से प्रकाशित **'मराठा'** समाचार पत्र ने उन्हें 'हिन्दू राष्ट्र का मसीहा' की संज्ञा दी। इसने लिखा कि हम 'नि:स्वार्थ' शब्द का प्रयोग करते है। डा. हेडगेवार का जीवन इसे वास्तविकता में परिवर्तित कर देता है। अपने तौर-तरीकों एवं नि:स्वार्थ जीवन के द्वारा वह मराठा संत-कवि नेता रामदास के समान थे।[28]

'महाराष्ट्र' ने अपने संपादकीय में उनकी तुलना लोकमान्य से की।[29]

'केसरी' पत्र ने उनके जीवन एवं कृतित्व के बारे में ये शब्द लिखे- 'विनम्रता' जो नेताओं में दुर्लभ होती है, उनमें कूट-कूट कर भरी हुई थी। राष्ट्र की सेवा के लिए उन्होंने परिवार एवं उज्जवल भविष्य का त्याग कर दिया। उनमें त्याग करने की असीम प्रवृत्ति थी। संघ रावलपिंडी से मद्रास, कराची से कलकत्ता तक फैल गया। यद्यपि हिन्दू राष्ट्र की तुलना में संघ का रूप बहुत छोटा है, फिर भी यह राष्ट्रीय एकता की रीढ़ है। इसके प्रभाव एवं शक्ति को देखकर ही गांधी जी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को भारत की सर्वोत्तम संगठित संस्था कहकर प्रशंसा की थी।[30]

इसी प्रकार दूसरे मराठी समाचार पत्र **'काल'** ने 'भारत की स्वतंत्रता के लिए उनके अनवरत प्रयास' को एक मिसाल बनाया।[31]

यहाँ तक कि **संघ के घोर आलोचक पत्र 'मातृभूमि'** की संपादक प्रमिला ओक ने संपादकीय में लिखा- 'उनके विचारों से भिन्नता तो हो सकती है, परन्तु उनके त्याग करने की क्षमता, अविचल दृढ़ निश्चय और दुर्लभ संगठन कौशल जैसे गुणों की प्रशंसा करने से हम बच नहीं सकते हैं। उन्होंने अपना समस्त जीवन समाज के लिए समर्पित कर दिया।[32]

2 (क) श्री गुरुजी और जनमाध्यम :-

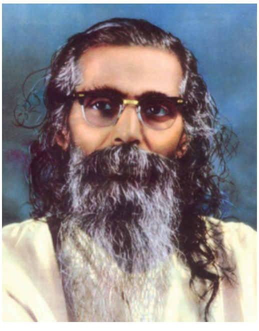

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक पूजनीय
श्री माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर उपाख्य 'गुरुजी'

डॉक्टर जी की मृत्यु के उपरान्त राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सर संघचालक का दायित्व माधवराव-सदाशिवराव गोलवलकर उपाख्य श्री (गुरूजी) के ऊपर आया। इन्होंने अपने काल में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को व्यापक आयाम दिया, जिसके कारण राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का विस्तार लगभग सम्पूर्ण भारत हुआ। डॉ. साहब के उपरान्त राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की कार्य प्रणाली वैचारिकी का विकास श्री गुरूजी के द्वारा किया गया। इसलिए यह सर्वथा उचित है कि श्री गुरूजी के भी विचारों को जनमाध्यमों के सन्दर्भ में प्रस्तुत किया जाए। क्योंकि श्री गुरूजी का काल इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि उस समय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपनी तरुणायी की ओर बढ़ रहा था।

(1) आदर्श एवं श्रेष्ठ समाचारों के प्रकाशन का समर्थन :-

श्रीगुरुजी ने समाज को दिशा देने वाले समाचार पत्रों का समर्थन किया। वह कहते थे समाचार-पत्र तो जन-जीवन का प्रतिबिंब मात्र है। समाज की सब बुराईयाँ समाचार पत्रों में शीघ्र ही प्रकट होती है। आज हम राजनीति को तथा जड़वाद को बहुत महत्त्व देते हैं। इन बातों ने हमारी सब शक्तियों को ग्रस लिया है। अर्थात् इसी का बढ़ा-चढ़ा प्रतिबिम्ब हम समाचार पत्रों में पाते हैं। खलबली मचाना, पाप एवं अपराध कथाओं की जुगाली करते रहना, इसी में हमारे समाचार पत्र गर्व का अनुभव करते हैं। इस वृत्ति में आमूलाग्र परिवर्तन आवश्यक है। राजनैतिक और आर्थिक पहलुओं को तथा उन क्षेत्रों में कार्य करने वाले व्यक्तियों को अत्यधिक महत्त्व देने की अपेक्षा तथा उन्हें आदर्श पुरुषों के रूप में चित्रित करने की अपेक्षा, यदि परमेश्वर की तथा मानवता की सेवा करने वाले व्यक्तियों को यदि अधिक महत्व देते हैं, तो पत्रकारों द्वारा देश की महान् सेवा होगी। इन ईश्वरभक्तों के पास या मानवता के सेवकों के पास कदाचित चमक-दमक नहीं होगी, परन्तु उनके जीवन निष्कलंक और शुद्ध रहते हैं। वे निःस्वार्थ भाव से अथक क्रियाशील रहते हैं। उनका अनुकरण होना चाहिए उनका अनुयायित्व बढ़ना चाहिए। मुझे ऐसा लगता है कि मासिक पत्रिकाएँ और अन्य नियतकालिक पत्रिकाएँ इस कार्य को भली-भाँति कर सकेगी। दैनिक समाचार पत्रों के लिए यह संभव नहीं दिखता है। [33]

(2) समाचारों की विश्वसनीयता पर प्रश्न चिन्ह :-

सत्ता के दबाव में किस प्रकार पत्रकारिता अपनी विश्वसनीयता खो बैठती है। इसे श्री गुरुजी ने बताया-समाचार-पत्रों के 'समाचार' में कभी-कभी मनुष्य को पागलपन का दौरा आता है और उस दौरान में वह क्या-क्या नहीं कर बैठता। गाँधी हत्याकाण्ड

के बाद संघ पर प्रतिबन्ध लगा करके संघ स्वयंसेवकों को कारागृह में डालकर शासनारूढ़ बड़े-बड़े लोगों ने इसी प्रकार के पागलपन के दौरान में क्या-क्या किया, यह अब छिपा नहीं है।

श्री गुरुजी बताते हैं कि एक समाचार पत्र ने उस समय छापा था कि- मैं व्यक्तिगत रूप से गाँधी हत्या के लिये जिम्मेदार हूँ। बाद में एक लम्बी दाढ़ी और बालों वाले व्यक्ति को पकड़ा गया है। इस समाचार को देखकर मैंने अपने मन में कहा होगा, होगा कोई? फिर सात-आठ फरवरी को मैंने समाचार पत्र में पढ़ा-यह कोई अन्य न होकर मैं ही हूँ। गाँधी हत्या में मेरा ही प्रत्यक्ष हाथ है।

यहीं पर यह बात पूरी नहीं हुई। उस समाचार में आगे यह कहा गया था कि-बम्बई में आरोपियों की शिनाख्त के लिए जो 'परेड' हुई। उसमें माफी के गवाह मदनलाल ने मुझे पहचान लिया और मुझे उस 'परेड' के लिए नागपुर कारागृह से हवाई जहाज द्वारा बम्बई ले जाया गया था।

वास्तव में मैं तो नागपुर के कारागृह में से कहीं भी नहीं गया था। अब आप इसे क्या कहेंगे ? समाचार पत्रों के समाचार कितने विश्वसनीय हो सकते हैं, यह आप ही निर्णय कर लें। [34]

संघ से संबंधित मनगढ़ंत समाचार पत्रों में छपे वृत्त समाचार पत्रों में ऐसे समाचार लोगों ने पढ़े कि-मेरा शरीर बहुत टूट चुका है और मुझे बड़ी भयंकर बीमारी हो गयी है। इस बीमारी से कोई बचता नहीं, अतः मेरे बचने की कोई आशा नहीं।

साथ ही यह भी कह डाला कि मेरे अनुयायियों में संघ का प्रधान बनने के लिए खींचातानी चल रही है। सर्वप्रथम स्थान कौन ग्रहण करेगा और अखाड़े में कौन-कौन उतरे हैं, इस बारे में कई नाम भी प्रसारित किये गये। इन कई नामों में एक नाम अटल बिहारी जी का भी है। खींचातानी में तो नहीं, परन्तु खींचातानी का समर्थन करने वालों में अटल जी को अवश्य बताया गया है।[35]

(3) पत्रकारिता द्वारा उत्तम विचार प्रसार-

"त्यागभूमि" साप्ताहिक के संपादकीय में उन्होंने लिखा था कि "अपने कठिनाइयों से भरे मार्ग पर साहसपूर्वक अग्रसर होने का आपने निश्चय किया है। इन कठिनाइयों को सफलतापूर्वक लांघकर ही आपको आगे बढ़ना है। साथ ही "त्यागभूमि" नाम के प्रति नित्य एक निष्ठ रहते हुए अपने समाज बांधवों के पवित्र हिन्दूभूमि के सत्पुत्रों के हृदयों तक पहुँचने वाले उत्तमोत्तम विचार एवं भावनाओं का आपको प्रचार-प्रसार करना है। आपकी अनवरत उद्यमशीलता, त्याग, कठोर परिश्रम और कार्य निष्ठा के कारण सफलता के बारे में आप निश्चिंत रहे। आपकी सफलता के लिए जगतजननी श्री माँ के अनुग्रह के लिए प्रार्थना करता हूँ। [36]

'प्रयाग विधि पत्रिका' के संदर्भ में उन्होंने कहा था कि- यह नित्य प्रगति करें-"प्रयाग में आपको 'विधि' पत्रिका के दो अंक दिये गये थे। यह ऐसा है कि जिसका आग्रहपूर्वक प्रचार करना आवश्यक है। विधि सम्बन्धी संज्ञाएँ इस पत्रिका द्वारा सुगमता से सब सम्बन्धित लोग सीखकर अंग्रेजी प्रयोगों की दासता से मुक्त हो सकेंगे। आजकल अंग्रेजी की पुनः प्रतिष्ठापना करने की परानुकरणशील दासवृत्ति बढ़ रही है और हिन्दी की अवगणना करने की चेष्टाएँ बल पकड़ रही है। इस दूषित वायुमण्डल को शुद्ध करने के लिए प्रबल प्रयत्न करने की आवश्यकता है। जीवन के सब क्षेत्रों में यह होना चाहिये और एक महत्वपूर्ण क्षेत्र में आपने यह 'पत्रिका' चलाकर अति उपयुक्त पग उठाया है। यह 'प्रयाग विधि पत्रिका' दिन-प्रतिदिन प्रगति करे, यही श्री भगवान से प्रार्थना है।[37]

(4) कार्य एवं पत्रों में लेखन के संदर्भ :-

'शब्द रंजन' के प्रथम अंक के लिए श्री ग. दि. माडगूलकर द्वारा श्री गुरूजी को उनके जीवन के कुछ विशेष प्रसंग लिखकर भेजने की विनती की थी। पत्रोत्तर में श्री गुरुजी जी लिखते हैं- "पत्र लेखन छोड़कर अन्य प्रकार के लेखन का मुझे बिलकुल अभ्यास नहीं है। आपका सूचित किया हुआ विषय अत्यन्त कठिन है, यह ध्यान में लेने पर मुझे नहीं लगता कि कुछ लिखते बनेगा । स्वतः के जीवन की ओर ध्यान न होने से अनेक स्मृतियाँ धुंधली हो गयी है। वर्तमान की बहुविध समस्यायें हल करने के प्रयत्नों में सब शक्ति बुद्धि एवं समय खर्च होता है। इससे उन धुंधली स्मृतियों को उजाला देने का काम दूर्भर हो गया है। अतएव मैं आपसे क्षमा मांगकर आपसे विनम्र बिनती करता हूँ कि मुझे इस संकट में न डालें।

अनेक श्रेष्ठ देशभक्तों की स्मृतियां जो स्वयं उन्होंने भेजी है, संग्रहित होने से 'शब्दरंजन' का प्रथमांक अत्यन्त लोकप्रिय एवं मार्गदर्शक सिद्ध होगा। इसमें कोई संदेह नहीं।"[38]

(5) प्रसिद्धि पराङ्गमुखता के आग्रही :-

संपादक, लेखक वचनेश त्रिपाठी ने एक चर्चा में बताया कि- श्रीगुरुजी कमरे से बाहर निकलकर चलने लगे। मैंने फोटो लेने की बात कही। श्रीगुरुजी एक क्षण के लिए स्तब्ध हो गए और मुझसे बोले, "फोटो किसलिए लेना चाहते हो?" मैंने कहा, "चिकित्सालय से बाहर आते हुए सीढ़ियों पर केवल एक फोटो लूँगा, फलैश का प्रयोग नहीं करूँगा।" श्री गुरुजी ने कहा, "किस लिए ? तुम्हें यदि 'हाँ' कर दूँ तो वे 'मराठा' वाले मुझपर कितने नाराज होंगे इसकी कल्पना है? उनका प्रतिनिधि मेरे

पास फोटोग्राफर लेकर आया था और उसे भी मैंने मनाकर दिया। अतः मेरे ऊपर कृपा करो और फोटो खींचने का आग्रह कर परेशान न करो।"

फोटो प्राप्ति की सम्भावना न देखकर भी मैंने एक बार और प्रयत्न करते हुए कहा, "केवल एक ही फोटो लूंगा।"

श्री गुरुजी ने कुछ नाराज होते हुए कहा, "अरे कैमरा निकट भी आ जाए तो मैं अस्वस्थ हो जाता हूँ। ये फोटो और नमस्कार ही मेरी अस्वस्थता के प्रमुख कारण हैं, यह मैं अनुभव करता हूँ।" श्री गुरुजी के इन शब्दों के कारण मुझे फोटो लेने का विचार त्याग देना पड़ा।[39]

(6) जनमाध्यमों में श्रीगुरुजी को श्रद्धांजलि-

देश की आजादी बाद श्रीगुरुजी ने बेहद चुनौतिपूर्ण स्थिति में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का मार्गदर्शन किया। श्रीगुरूजी संघ में 33 वर्षो के कार्यकाल में संघ को समाज के विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक स्तर पर विस्तारित करने का कार्य किया। 5 जून, 1973 को श्रीगुरूजी ने इस सांसारिक देह का त्याग कर दिया। इस पर विभिन्न जनमाध्यमों ने श्रीगुरुजी को श्रद्धांजलि दी।

डॉ. सैफुद्दीन जिलानी, पत्रकार ने कहा था कि- ईमानदारी के साथ मुझे लगता है कि-हिन्दू-मुस्लिम समस्या को सुलझाने के विषय में एकमात्र श्रीगुरुजी ही है जो यथोचित मार्गदर्शन कर सकते है। संघ इस देश के लिए बहुत बड़ा सहारा है। किन्तु अपने देश की दृष्टि से संघकार्य के महत्त्व का जिन्हें आंकलन नहीं हुआ। ऐसे लोग अज्ञानवश या जानबूझकर संघ विरोधी प्रचार किया करते है। सच्चाई तो यह है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मुसलमानों का शत्रु नहीं, अपितु मित्र है।[40]

श्री स. का. पाटील, कांग्रेस नेता ने कहा था कि गुरुजी मेरे जीवन में अनेक बार आए। उनका एक ध्येय के प्रति अर्पित जीवन था। उन्होंने स्वतंत्र और बलवान राष्ट्र, बलवान हिन्दू धर्म- इस ध्येय की पूर्ति के लिए ही सारा जीवन लगा दिया था। गुरुजी हिन्दू धर्म के अभिज्ञानी थे, पर अन्य धर्मों का द्वेष उनमें नहीं था।[41]

'नागपुर टाइम्स' ने श्रीगुरुजी को श्रद्धांजलि देते हुए कहा था कि- "श्रीगुरुजी लोगों को भारत की प्राचीन परंपरा से संबंध बनाने के लिए जागरूक करते रहे। इससे यही सिद्ध होता है कि वे संन्यासी के रूप में एक निष्ठावान कर्मयोगी थे। उनका विश्वास था कि जनमानस में इस सत्य के बीज के आरोपण से बढ़कर कोई कार्य नहीं है कि वे सभी मिलकर एक राष्ट्र है और उनका राष्ट्र निर्माणावस्था में नहीं है, बल्कि पहले से फल-फूल रहा है और सबसे बढ़कर यह कि यह भूमि, मात्र मिट्टी या धूल नहीं है, बल्कि यह उन सबकी पवित्र माता है।[42]

'इंडियन एक्सप्रेस' ने लिखा था- श्री गोलवलकर का संयमित व्यक्तिगत

जीवन, उन मूल्यों के प्रति उनकी गहरी आस्था जिसका, प्रतिनिधित्व हिन्दू समाज युगों-युगों से करता आया है। इन बातों के कारण भारत के सर्वाधिक अनुशासित संगठनों में से एक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विलक्षण नेता के रूप में उन्हें सबसे अलग और विशिष्ट स्थान प्राप्त हुआ।[43]

'ट्रिब्यून' ने लिखा- "श्रीगुरुजी को अपनी इमेज बनाने के लिए रेडियो, फिल्म या प्रेस की कोई आवश्यकता नहीं थी। वे आत्मप्रक्षेपण को अनावश्यक मानकर इसकी उपेक्षा करते थे और इसके बावजूद समाज में वह अपने योग्य प्रतिष्ठा का स्थान बना सके थे।[44]

टाइम्स आफ इंडिया- गाँधी जी की हत्या के उपरांत जो जनारोष उमड़ा, उसके परिणामस्वरूप संघ बिल्कुल अस्तव्यस्त हो गया था। अगर प्रतिबंध के शक्तिक्षय के कुछ वर्षों के बाद यह फिर से क्रियाशील हुआ तो यह केवल श्रीगुरुजी के संगठन की दुर्लभ क्षमताओं के कारण ही।

पचासोत्तरी दशक में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विकास में श्री गोलवलकर की कठोर और संयमयुक्त जीवन-पद्धति का योगदान किसी भी रूप में कम न था।[45]

हिन्दुस्तान टाइम्स के अनुसार श्री एम. एस. गोलवलकर का दिवंगत हो जाना राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक युग की समाप्ति का द्योतक है। सन् 1940 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ. हेडगेवार द्वारा सरसंघचालक के रूप में नियुक्त किए जाने के बाद श्री गोलवलकर ने संघ को एक सिद्धांत और संगठिन रूप प्रदान किया, जो तत्कालीन परिस्थितियों में एक सुगठित और जबरदस्त सांस्कृतिक निकाय के रूप में विकसित हुआ।[46]

मदरलैंड समाचार पत्र ने लिखा आज श्री गुरुजी नहीं रहे। लेकिन असंख्य लोगों के जीवन में जो ज्योति उन्होंने जगाई थी, वह इस भूमि पर जब भी अंधेरा छाता प्रतीत होता होगा, तब श्रीगुरुजी द्वारा जलाई ज्योति किरण देश को भिन्न भिन्न प्रकार से प्रकाशमान कर देगी। हम इस समय शोक मना रहे हैं, लेकिन आगे आने वाली पीढ़ियाँ इस बात से फूली नहीं समाएँगी कि इस भूमि पर उनके जैसा देवदूत भी कभी चला करता था। उनकी पवित्र स्मृति में हमारी विनम्र श्रद्धांजलि।[47]

हिन्दुस्तान के अनुसार राष्ट्रोत्कर्ष पर श्री गुरुजी की अनन्य भक्ति थी। अपने निजी आयुर्बल के साथ राष्ट्र के बल को भी वे उसमें सींचना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को अपना निमित्त बनाया और अथक परिश्रम, दूरदर्शी नेतृत्व एवं संगठन-कौशल्य से उसे विकसित कर देश की व्यापक बलवती शक्ति बना दिया। राजनीतिक स्तर पर जनसंघ का निर्माण भी श्रीगुरुजी की ही सूझ-बूझ का परिणाम है। देश की राजनीतिक पार्टियों में अनुशासन की दृष्टि से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ या जनसंघ के मुकाबले की शायद ही कोई पार्टी होगी।[48]

वीर अर्जुन के अनुसार आप केवल राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लाखों

स्वयंसेवकों के पथ प्रदर्शक, नेता और अदम्य साहसी सहयोगी ही नहीं थे, वरन् अन्य सभी मातृभूमि, पुण्यभूमि प्रेमियों और देशभक्तों के लिए भी एक महान् प्रेरणास्रोत थे। जिस प्रकार कभी आदि शंकराचार्य ने और फिर स्वामी दयानंद सरस्वती ने देश की महानतम सभ्यता और शंखनाद किया, ठीक वैसे ही आप जीवनपर्यंत देश को प्रगति और उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर ले जाने के लिए प्रयत्नशील रहे।[49]

नवभारत टाइम्स के अनुसार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक 'गुरुजी' सर्वप्रिय संबोधन से समादृत स्वर्गीय माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर के देहावसान से ऐसा प्रतीत होता है कि एक महान व्यक्तित्व हमारे बीच से उठ गया। विगत दो सौ वर्षों के अंतर्गत सामाजिक सांस्कृतिक, राजनीतिक दृष्टि से हमारे देश में ऐसे व्यक्तियों का उदय हुआ है जिनकी महनीयता का आभास पाने के लिए विराट शब्द जुड़ता है। गुरु गोलवलकर उन्हीं विराट व्यक्तियों में से एक थे।[50]

दिनमान के अनुसार माधवराव गोलवलकर में संगठन की अभूतपूर्व क्षमता थी। अपने सरल जीवन और चारित्रिक दृढ़ता के कारण उनके व्यक्तिगत जीवन की आलोचना करनेवाले बहुत ही कम लोग मिलेंगे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को कठिनतम परिस्थितियों में आगे ले जाने और उसे सामान्य शारीरिक क्षेत्र में आगे बढ़ाकर सांस्कृतिक और अन्य क्षेत्रों में फैलाने का श्रेय श्री गोलवलकर को है।[51]

अंग्रेजी साप्ताहिक **'ब्लिट्ज'** के अनुसार श्री गुरुजी ने हिन्दू-धर्मग्रंथों व संस्कृत के श्रेष्ठ ग्रंथों का व्यापक और बुद्धिमत्तापूर्वक अध्ययन किया था। वे बड़े विनम्र और मृदुभाषी व्यक्ति थे।[52]

युगधर्म (नागपुर) के अनुसार एक अति बुद्धिमान, कुशाग्र प्राध्यापक या वकील रहकर वे अपार धन प्राप्त कर सकते थे, प्रतिष्ठा अर्जित करके अपना नाम चमका सकते थे। हिन्दू धर्म की महत्ता को जन-जन तक पहुँचाने में सभी श्री शंकराचार्य पीठों के आचार्यों को देश भर में संपर्क हेतु उद्यत कराने का श्रेय भी उन्हीं को है। एक जागृति का मंत्र उन्होंने प्रत्येक के हृदय में फूँक दिया था। श्री गुरुजी के निधन से देश की एक प्रेरक शक्ति लुप्त हो गई है। देश एक बुद्धिमान व्यक्तित्व, कुशल संगठक, असाधारण दूरदर्शी विचारक को खो चुका है।[53]

साप्ताहिक **'केसरी'** कालीकट (केरल) के अनुसार श्री गुरुजी महायोगी और राष्ट्र के ऋषि थे। इतिहास के पृष्ठों में उनका स्थान विशिष्ट और जनक की श्रेणी में होगा। उनका जीवन सत्ता-संपादन के लिए नहीं, अपितु शासकों को सत्य की राह पर चलने का मार्गदर्शन करने के लिए था।[54]

दैनिक **'आर्यावर्त'** (पटना-बिहार) के अनुसार गोलवलकर जी में धैर्य, साहस और मानसिक संतुलन अपूर्व था। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर उनके जीवन काल में

कई संकट आए, पर वे कभी अधीर नहीं हुए और न कभी मानसिक संतुलन ही खोया। देश के बड़े से बड़े नेताओं ने उनके विरुद्ध निंदा के शब्द कहे, पर उन्होंने अपनी वाणी से कभी किसी की परोक्ष या एकांत में भी निंदा नहीं की।[55]

दैनिक **'दिनमणि'**, चैन्नै (तमिलनाडु)के अनुसार उन्होंने संघ के प्रमुख के नाते जो सेवा की, वह अद्वितीय है। ईश्वरभक्ति, राष्ट्र भक्ति, त्याग भावना, अनुशासन का भाव भरने तथा दुखियों का दुःख दूर करने तथा समाज के जागरूक प्रहरी के नाते कर्तव्य-दक्ष रहने का भाव जागृत करने का जो कार्य उन्होंने किया है, वह अतुलनीय है।[56]

दैनिक **'सन्मार्ग'**, (कोलकाता-पं. बंगाल) के अनुसार ओजस्वी वक्ता और तेजस्वी नेता के रूप में वे सदैव स्मरण किए जाएँगे। उनके उपदेश और कार्य प्रेरणा के स्रोत बने रहेंगे। उनकी वाणी अमर है। वस्तुतः उनकी मृत्यु से भारत ने एक महान नेता, उपदेष्टा और पथप्रदर्शक खो दिया है। हिन्दू-धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए उनकी सेवाओं की बहुत बड़ी आवश्यकता थी।[57]

दैनिक **'समाज'**, (कटक-ओडिशा) के अनुसार वे छत्रपति शिवाजी महाराज के समान वे एक उच्च कोटि के देशप्रेमी और संगठक थे। अभूतपूर्व संगठन-शक्ति होने के कारण शिवाजी के समान भारत को दृढ़, बलिष्ठ एवं शक्तिशाली बनाने का स्वप्न उन्होंने हमेशा अपने सामने रखा था और अपने अनुयायियों को एवं अन्यों को भी उसी स्वप्न को साकार बनाने के लिए उद्‌बोधन करते थे।[58]

साप्ताहिक **'आलोक'**, (गोहाटी-असम) के अनुसार ईश्वरप्रेरित श्री गुरुजी ने सांसारिक जाल में न फँसकर धन, यश, मान आदि का परित्याग कर भारतीय सभ्यता, संस्कृति का श्रेष्ठ आदर्श अपने जीवन में प्रत्यक्ष उतारा। आज श्री गुरुजी नहीं है, किन्तु हिन्दू-समाज जब तक जीवित रहेगा, तब तक दलित, पतित, आत्मविस्मृत हिन्दू के पथप्रदर्शक के रूप में वे सदैव श्रद्धापूर्वक स्मरण किए जाते रहेंगे।[59]

दैनिक **'प्रजावाणी'**, (बंगलौर-कर्नाटक) के अनुसार उनके द्वारा प्रतिपादित 'हिन्दू-राष्ट्र' जातिवाचक न था, देशवाचक था। उनकी धारणा थी कि भारत को अपनी मातृभूमि मानकर, उसकी संस्कृति, परंपराओं के प्रति श्रद्धा, गौरव रखनेवाले सभी भारतीय हिन्दू है।[60]

दैनिक **'जनसत्ता'**, (अहमदाबाद-गुजरात) के अनुसार पं. मालवीय तथा स्वामी विवेकानंद ने भारतीयत्व के विषय में जिस प्रकार के उपदेश दिए थे, उसी धरोहर की श्रृंखला को चालू रखनेवाले तथा स्वदेशी और भारतीयत्व के संबंध में देश के वर्तमान नेताओं में वे ही अकेले एक ज्योतिर्धर थे।[61]

साप्ताहिक **'आर्गनायजर'**, दिल्ली के अनुसार जब श्री गुरुजी हिन्दू-संगठन,

हिन्दू-राष्ट्र तथा हिन्दू-संस्कृति की बात करते, तब कुछ राजनीतिज्ञ उसे सांप्रदायिक समझने की भूल करते। वास्तव में वे उतने ही सांप्रदायिक थे, जितना विवेकानंद या अरविंद को कहा जा सकता है। वह अनुभूति के उच्च स्तर से ही बोला करते थे।[62]

साप्ताहिक **'पांचजन्य'**, दिल्ली के अनुसार परमपूजनीय श्री गुरुजी देवदूत की भांति भारतीय क्षितिज पर उस समय अवतरित हुए, जब स्वार्थ और मोहवश परानुकरण की प्रवृत्ति से हिन्दू-धर्म संस्कृति तथा समाज का ह्रास हो रहा था। उन्होंने निर्भयता से हिन्दू-राष्ट्र के सत्य को गुँजाया। राष्ट्रीयता की शुद्ध व्याख्या के अंतर्गत भारत के राष्ट्रीय जन को अपनी अस्मिता के साथ खड़े होने के लिए प्रेरित किया। हिन्दू शब्द, जो विदेशी कूटनीति के कारण सांप्रदायिक और जातीय माना जाने लगा था, उन्होंने उसे पुनः सच्चे राष्ट्रीय अर्थ में प्रतिष्ठापित किया।[63]

दैनिक **'पायनियर'**, (लखनऊ-उत्तर-प्रदेश) के अनुसार लाखों लोगों के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का ही सिद्धांत था कि आक्रमणों का सामना करने में समर्थ और शक्तिशाली राष्ट्र तब ही बन सकता है, जब राष्ट्र को एकसूत्रता में गूँथा जाए।[64]

मासिक **'कल्याण'** (गोरखपुर-उ. प्रं) के अनुसार श्री गुरुजी की मंगलमयी भावना से अनुप्रणित होकर हिन्दू-जीवन के सभी क्षेत्रों में उनके भगीरथ प्रयास से जिस नवजीवन का संचार हुआ है, उसी पर विश्व की आँखें टिकी हुई हैं। देश की प्रबुद्ध तरुण पीढ़ी श्री गुरूजी के आधयात्मिक आदर्श को दृढ़ता से अपनाकर उनके स्वप्नों को साकार करने के लिए निकल पड़े, यही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी। **'कल्याण'** तथा **'गीता प्रेस'** अपने इन परम स्वजन एवं आत्मीय के तिरोधान की शोक-बेला में संघ के साथ है।[65]

3. आपातकाल और संघ समर्थित जनमाध्यम :-

25 जून सन् 1975 की अर्धरात्रि में आपातकाल लागू होने पर देश भर में जनमाध्यमों की स्वतंत्रता पर प्रतिबन्ध लग गया था। संघ द्वारा संचालित तथा समर्थित पत्रों को भी आपातकालीन दमन का शिकार होना पड़ा। इतना ही नहीं कुछ प्रकाशन बन्द भी हुए तथा कुछ के संपादकों को जेल में डाल दिया गया। **ऐसे प्रतिकूल परिस्थितियों में भी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा संचालित और समर्थित समाचार पत्रों ने अपनी लेखनी जारी रखी।** इसी प्रकार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख पत्रों के साथ सरकार द्वारा आपातकाल में सरकार द्वारा किये गये व्यवहारों का उल्लेख अधोलिखित है :-

1. पांचजन्य (लखनऊ) :-

लखनऊ से प्रकाशित इस राष्ट्रवादी साप्ताहिक का संघर्ष अनोखा रहा है। इसका

प्रकाशन आपातकाल लगते ही सरकार ने बंद कर दिया। इसके सम्पादक मंडल के दो वरिष्ठ सदस्य यादवराव देशमुख और भानुप्रताप शुक्ला भूमिगत हो गये। मामला न्यायालय में ले जाया गया। वहाँ से पुनः प्रकाशन का आदेश मिल गया। पर **'पांचजन्य'** दुबारा प्रकाशित हो, इससे पूर्व ही मुख्यमंत्री ने अपने निर्देश द्वारा इसका पंजीकरण रद्द करवा दिया। फिर न्यायालय का दरवाजा खटखटाया गया और वहाँ अन्याय को पराजित होना पड़ा तथा भगवान् कृष्ण का **'पांचजन्य'** फिर गर्जना कर उठा।[66]

2. लोकवाणी (बंगलोर) :-

जब बड़े-बड़े दिग्गज समाचार-पत्र और सम्पादक **'गुलामी का जुआ'** कंधे पर रखने में गौरव का अनुभव कर रहे थे। तब कन्नड़ भाषा में बंगलोर से प्रकाशित एक पत्र था **'लोकवाणी'** जो प्रेस की स्वाधीनता की मशाल को साहस के साथ थामे हुए था। वह इन दिनों भी विपक्षी नेताओं के बयान छापता था। मई-जून 1976 में जब संविधान में संशोधनों के मामले संसद में आये, तो इस पत्र ने उनकी तीखी आलोचना की। उसे सरकार की बेईमानी बताया। मैसूर शिक्षक सम्मेलन में संविधान संशोधन पर बहस हुई। तब 'लोकवाणी' का शीर्षक सम्मेलन में संविधान संशोधन पर बहस हुई तब 'लोकवाणी' का शीर्षक था= **नये संविधान सशोधन, जनतंत्र की मौत की घंटी (9-11-76)** तथा उसके 2-7-76 के सम्पादकीय का शीर्षक था-**'शासन प्रेस सेंसरशिप और आपात् स्थिति हटाये'** प्रजावाणी ने भी ऐसा ही सम्पादकीय लिखा था।[67]

3. प्रजावाणी :-

प्रजावाणी का भी यही हाल था। वह बड़ी चतुराई से वह सब कह देती थी जो कहना था। उसके एक सम्पादकीय का शीर्षक था- **"आपातकाल जारी रहना ही चाहिए"** शीर्षक देखकर सरकारी अफसर भले ही भ्रम में रह रहे हों, पर जनता ने उसके मजाक का भरपूर आनन्द लिया। इसी प्रकार के अन्य सम्पादकीय भी उसने लिखे।[68]

4. अर्थ विकास :-

धारवाड़ (कर्नाटक) से प्रकाशित के. पी. जोशी के **'अर्थ-विकास'** नामक साप्ताहिक ने भी हथियार नहीं डाले। उसने भी अपने सम्पादकीय लेखों में आपातकाल तथा बीस सूत्रों की जमकर आलोचना की। संविधान- संशोधनों के

बेहूदेपन पर जोशी ने एक लेखमाला ही लिख डाली। इनके शीर्षक थे- **मौलिक कर्तव्यों के नाम पर नागरिक स्वतंत्रताओं की हत्या (25-7-76)**, **संविधान संशोधन गुलामी की डिक्शनरी (22-8-76), स्वतंत्रता का सूर्य** अस्त हो गया। **भारत का नाश कांग्रेस वालों में** तथा उन्होंने कर दिया **जिन्होंने कांग्रेस को वोट दिया (27-11-76)**।[69]

5. दिव्यवाणी (मंगलूर):-

सचमुच ही जब आपातकाल अपनी जवानी पर था, तब ऐसे लेख व ऐसे शीर्षक छापने के लिए शेरदिल की आवश्यकता होती थी। मंगलौर से एक पत्र निकलता है **'दिव्यवाणी'**। इस पत्र के सम्पादक राघवेन्द्र एमन्नागौरी भी तानाशाही की निर्भय होकर खिचाई करते थे। 27-12-76 के अंक में उन्होंने **'हम भारतीय'** कविता छापी। इसे सरकार विरोधी मानकर सेंसर ने भारतीय प्रिंटर्स पर जहाँ यह अखबार छपता था, ताला डलवा दिया। इसके अलावा राघवेन्द्र को 100 दिन के लिए डी. आई. आर. के अन्तर्गत जेल में डाल दिया गया। जेल से छूटने के बाद उन्होंने झुकने के स्थान पर फिर तीखे सम्पादकीय लिखे। उनमें से कुछ के शीर्षक थे- **'आपातस्थिति का पुलिस द्वारा दुरुपयोग'**, **'जब राष्ट्रवाद की हत्या कर दी गयी'**, **'नाजी जर्मनी का गुप्तषडयंत्र।'** परन्तु इसका परिणाम यह हुआ कि उन्हें मीसा के अन्तर्गत निरुद्ध कर बेलगाँव की जेल भेज दिया गया। वहाँ भी वे हस्तलिखित पत्रिका **'क्रान्ति'** सम्पादित कर अपनी लेखनी का उपयोग करते रहे। 25-1-77 को वे जेल से छूटे और **'दिव्यवाणी'** को दैनिक बना दिया। चुनाव के दिनों में स्वभावतः दिव्यवाणी पत्र जनता पार्टी का प्रभावी स्वर बन गया। अखबार का प्रसारण 1000 से बढ़कर 1200 हो गया। नागौरी का तीखा लेखन सत्ता के मद में अंधे बने कांग्रेसियों की नींद हराम किये थे। वे इसे सहन न कर सके। पुलिस और तस्कर भी उसके प्रहारों से बेचैन थे। जब उन पर खतरा मंडराने लगा तो एक वरिष्ठ पत्रकार ने नागौरी से कहा- क्या जल्दी स्वर्गलोक जाने की इच्छा है? क्या जिन्दा रहना नहीं चाहते? क्या समाज की काली ताकतों का मुकाबला करना संभव है? कुछ भी लिखने के पहले हजार बार सोचा करो। नागोरी का उत्तर था, मेरा क्या बिगाड़ सकते हैं? अधिक से अधिक हत्या ही तो कर सकते हैं। उन्हें अपने अरमान पूरे करने दो। कायर लोग अपनी मौत के पहले कई बार मरते हैं। मुझे तो एक बार ही बहादुर की मौत मरना है।[70]

6. जन्मभूमि, राष्ट्रवादी और केसरी (केरल) :-

3 और 4 जुलाई को कालीकट से प्रकाशित होने वाले दैनिक **'जन्मभूमि'** और

अर्नाकुलम् से प्रकाशित साप्ताहिक **'राष्ट्रवादी'** के कार्यालयों पर पुलिस ने धावा बोल दिया। दोनों का ही प्रकाशन बन्द करने के आदेश दिये गये तथा **'जन्मभूमि'** के सम्पादक और प्रकाशन को बंदी बना लिया गया। **'राष्ट्रवादी'** को छापने वाला प्रेस भी सील कर दिया गया। **'जन्मभूमि'** के सम्पादक व प्रकाशक के साथ तो पुलिस ने न केवल दुर्व्यवहार किया, वरन् उसके साथ क्रूरतापूर्वक मारपीट भी की।

कालीकट से ही प्रकाशित एक अन्य पत्र **'केसरी'** साप्ताहिक के कार्यालय पर भी धावा बोला गया। एक महीने तक तो अक्षरशः इस कार्यालय पर पुलिस का ही कब्जा रहा। तीन महीने के अन्तराल के पश्चात् ही **'केसरी'** प्रकाशित हो सका। तीनों ही समाचार-पत्रों को पुलिस न काफी क्षति पहुँचायी। इन कार्यालयों के टेलीफोन, टाइपराइटर, फोटो तथा फर्नीचर सभी को तोड़-फोड़ डाला।[71]

7. चुनावाणी (कुमरा-कर्नाटक) :-

'चुनावाणी' के सम्पादक नरसिंहम् गोविन्द संभोग एक प्रख्यात अधिवक्ता थे तथा उन्होंने भारत की स्वाधीनता की लड़ाई में भाग लिया था। उनके सबसे बड़े पुत्र भी वकील थे और उत्तर कैनरा जिले के संघचालक थे, वे मीसा में बन्द थे। दूसरे पुत्र प्राध्यापक थे उनकी भी सेवाएँ समाप्त कर दी गयी थी और मीसा के अन्तर्गत निरुद्ध थे पर इससे नरसिंहम् किंचित भी विचलित नहीं थे। उन्होंने अपनी बहू को माँ के पास भेज दिया और स्वयं अपने पत्र को **सत्य का प्रवक्ता** बनाये रहे। जो प्रेस में **'चुनावाणी'** को छापता था। उसके मालिक को भय हुआ कि कहीं प्रेस सील न कर दिया जाए पर उस स्थिति में भगवान चुनावाणी की सहायता को आ गये। प्रेस का मालिक धार्मिक वृत्ति का था। उसके इष्ट देव ने पुजारी के माध्यम से उसे आश्वस्त किया कि तुम चुनावाणी छापते रहो, कुछ नहीं बिगड़ेगा और इस प्रकार वह साप्ताहिक चलता रहा।[72]

8. क्वेस्ट (बम्बई) :-

बी. बी. जॉन, ए. बी. शाह और शीला सिंह के सम्पादकत्व में **'क्वेस्ट'** नाम की एक द्विमासिक **'विचार'**- पत्रिका बम्बई से प्रकाशित होती थी। यह पत्रिका भी अपने निष्पक्ष विचारोतेजक लेखों के लिए लोकप्रिय थी। सब प्रकार विचारकों को इसमें स्थान मिलता था।

इस **'विचार'** पत्रिका के मार्च-अप्रैल के अंक में सेंसरशिप पर एक सम्पादकीय प्रकाशित हुआ। यह पत्रिका का 100 वां अंक था। इस प्रकाशन पर **'क्वेस्ट'** को छापने वाले प्रेस मेसर्स इंग्लैण्ड प्रिंटर्स को महाराष्ट्र सरकार की ओर से- **'कारण बताओ'** सूचना-पत्र जारी किया गया कि **'क्वेस्ट'** के सौवें अंक में आपत्तिजनक

सामग्री छापने के अपराध में उनका प्रेस जब्त क्यों न किया जाए? बीस वर्ष से यह पत्रिका मेसर्स इंग्लैण्ड प्रिंटर्स ही छाप रहे थे। परन्तु सरकार का यह सूचना पत्र पाकर वे भयभीत हो गये तथा उन्होंने सरकार से क्षमा याचना कर अपना पिंड छुड़ाया तथा **'क्वेस्ट'** के सम्पादकों को सूचना दे दी कि- अब आगे से वे इस पत्रिका को छापने में असमर्थ हैं। सम्पादकों ने अन्य प्रेसों को भी टटोला, किन्तु सरकार के भय से कोई तैयार नहीं हुआ। इसलिए सम्पादकों को विवश होकर पत्रिका का प्रकाशन स्थगित करना पड़ा।[73]

9. सेमिनार (दिल्ली):-

रमेश थापर के सम्पादकत्व में दिल्ली से एक **'सेमिनार'** नामक मासिक पत्र प्रकाशित होता था। यह मासिक भारत के बुद्धिजीवी क्षेत्र में पर्याप्त लोकप्रिय था। देश की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक समस्याओं का गम्भीरता से चिन्तन करने वालों का वह एक प्रभावी मंच था। उस पर 16 जुलाई 1976 को प्रकाशन पूर्व सेंसर लगा दिया गया। **'सेमिनार'** ने प्रकाशनपूर्व सेंसर अस्वीकार किया और निषेध स्वरुप अपने प्रकाशन को विराम दे दिया। उसके संपादक ने कहा कि- इस प्रकार की सेंसरशिप स्वीकार करना पत्रकार धर्म के विरुद्ध है।

'सेमिनार' का प्रकाशन बंद करने की सूचना पाठकों को देते हुए सम्पादक रमेश थापर ने लिखा- पूछा जा सकता है कि अन्य समाचार पत्र जिस प्रकार का व्यवहार कर रहे हैं वैसा हम भी क्यों नहीं कर सके ? महात्मा गाँधी ने कहा था कि- यदि सम्पादक बिना परिणामों के भय के अपनी भावनाओं को व्यक्त नहीं कर सकता अथवा उन बातों को नहीं छाप सकता जिनको वह ठीक मानता है तो ऐसी हालत में समाचार पत्र का प्रकाशन बन्द कर देना ही उचित है।[74]

10. हिम्मत ने 'हिम्मत' न छोड़ा :-

महात्मा गाँधी के नाती राजमोहन गांधी के सम्पादकत्व में **'हिम्मते'** नामक साप्ताहिक पत्र बम्बई से प्रकाशित होता था। **'हिम्मत'** निर्भय होकर आपातकाल की आलोचना करता था। उसने प्रकाशन पूर्व आबन्धों को नहीं माना। वह सत्य का पक्ष लेता रहा। अन्त में उससे 20 हजार रुपये की प्रतिभूति माँगी गयी। छोटी-सी इस पत्रिका से इतनी बड़ी राशि जमानत के रूप में माँगना अन्याय था। वह जमानत जमा भी कर दी जाती तो उसके जब्त होने का पूरा खतरा था। इसलिए **'हिम्मत'** ने न्यायालय का दरवाजा खटखटाया। बम्बई उच्च न्यायालय ने उसे स्थगन आदेश दे दिया।[75]

11. अन्य पत्र-पत्रिकाएँ और संवाद समिति :-

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ताओं द्वारा अन्य क्षेत्रों में कार्य करने का प्रारम्भ वैसे देखे तो 1946 के अन्त से ही हो गया था। विभाजन की हवा बहने लगी थी। इस सन्दर्भ में अपना दृष्टिकोण समाज के सामने पहुँच सकने की त्वरित आवश्यकता ध्यान में लेकर पंजाब और दिल्ली के क्षेत्र में साप्ताहिक पत्रिकाएँ प्रारम्भ की गयी। संघ के नाम से ये पत्रिकाएँ प्रकाशित नहीं करनी थी, और गुरु-दक्षिणा से एकत्रित होने वाले राशि अन्य किसी भी कार्य के लिये खर्च न की जाए। इस पर गुरुजी का विशेष ध्यान था। इस कारण ऐसी पत्रिकाएँ निकालने का विचार निश्चित होने पर उसके लिये स्वयं रुप से धन एकत्रित कर **'भारत-प्रकाशन'** यह संस्था स्थापित की गयी।[76] चार लाख की निधि एकत्रित हुई, और अन्य सारी व्यवस्था पूरी होकर: **'आर्गनायजर'** इस अंग्रेजी साप्ताहिक पत्रिका का प्रथम अंक तीन जुलाई 1947 के दिन प्रकाशित हुआ। इसके एक माह पूर्व विभाजन का निर्णय घोषित किया जा चुका था। **'आर्गनायजर'** के अंक पूरे देश भर में पहुँचने लगे। 1948 के प्रारम्भ में संघ पर प्रतिबन्ध लगाये जाने पर गुरुजी की सरकार के साथ होने वाले वार्ता और वह विफल हो जाने पर लिया गया। सत्याग्रह का निर्णय इस संदर्भ में सारी अधिकृत खबरें **'आर्गनायजर'** के माध्यम से ही सर्वत्र स्वयंसेवकों तक पहुँच सकीं। अन्य समाचार पत्रों ने उन्हें उचित स्थान दिया, ऐसे कहा नहीं जा सकता।

धीरे-धीरे अन्य प्रान्तों में ऐसे ही दैनिक और साप्ताहिक पत्र-पत्रिकाएँ प्रारम्भ की गयीं। प्रतिबन्ध के काल में हिन्दी भाषा में **'पांचजन्य'** तो मराठी में **'राष्ट्रशक्ति'** ऐसे दो साप्ताहिक प्रारम्भ किये गये। **'पांचजन्य'** के प्रथम संपादक अटल बिहारी बाजपेयी तो 'राष्ट्रशक्ति' पत्र के लेखक चं. प. भिशीकर थे। ये दोनों ही संघ कुछ वर्ष के प्रचारक थे। अन्य भाषाओं में भी दैनिक, साप्ताहिक और मासिक पत्र-पत्रिकाएँ प्रारम्भ हुई। हिन्दी में दस दैनिक और नौ साप्ताहिक, मराठी में एक दैनिक, दो साप्ताहिक, और दो मासिक, गुजराती में दो साप्ताहिक, आसामी भाषा में एक साप्ताहिक और एक मासिक, कन्नड़ में एक साप्ताहिक और एक मासिक, सिंधी, उर्दू और मलयालम भाषाओं में प्रत्येक भाषा में एक साप्ताहिक ऐसी यह संख्या 1971 में थी। इसके बाद इसमें वृद्धि नहीं हुई, परन्तु सदस्यों की संख्या 1975 के आपातकाल के दिनों में बहुत बढ़ गयी।[77]

संदर्भ सूची

1. नाना पालकर, डॉ. हेडगेवार-चरित्र, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ (उ. प्र) पृ॰ 505।
2. वही, पृ॰ 496।

3. वही, पृ॰ 448।
4. वही।
5. वही, पृ॰ 442।
6. वही, पृ॰ 443।
7 बापूराव वन्हाड पाण्डेय, संघ कार्यपद्धति का विकास, भारती विचार साधन, मद्रास, नागपुर(महाराष्ट्र)।
8. वही।
9. वही, पृ॰ 88।
10. वही।
11. वही, पृ॰ 87।
12 भारतीय समाचार पत्रों पर रिपोर्ट, मध्यप्रांत और बरार, संख्या–3, वर्ष–1924, राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली।
13. चं. पं. भिशिकर, केशव : संघ निर्माता, सुरुचि प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ॰ 17।
14. ना. ह. पालकर, डॉ. हेडगेवार चरित, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ (उ.प्र.) पृ॰ 369।
15. वही, पृ॰ 368।
16. वही, पृ॰ 427।
17. वही, पृ॰ 411।
18. वही, पृ॰ 409।
19. वही, पृ॰ 410।
20. वही, पृ॰ 397।
21. वही, पृ॰ 420।
22. वही, पृ॰ 368।
23. वही, पृ॰ 369।
24. वही, पृ॰ 497।
25. वही, पृ॰ 498।
26. चं. पं. भिशिकर, केशव : संघ निर्माता, सुरूचि प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ॰ 62।
27. 'हितवाद' पत्र, 23 जून, 1940, पृ॰ 1।
28. द मराठा, 28 जून, 1940।
29. महाराष्ट्र 23 जून 1940।
30. केसरी, 25 जून, 1940।
31. काल, 24 जून, 1940।
32. मातृभूमि, 25 जून, 1940, पृ॰ 6।
33. भारतीय विचार साधना, नागपुर (महाराष्ट्र) पृ॰ 135।
34. वही, पृ॰ 136।
35. श्रीगुरुजी समग्र, खंड–2, सुरुचि प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ॰ 63।
36. वही, पृ॰ 34।
37. वही, पृ॰ 124।

38. 'शब्द रंजन' का प्रथम अंक 10/08/1962, पृ॰ 62।
39. वचनेश त्रिपाठी– भारतमाता की उपासना, नीलकंठ प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ॰ 44।
40. श्रीगुरुजी समग्र, खंड–12, सुरुचि प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष 2005, पृ॰ 41–42।
41. वही, पृ॰ 126।
42. वही, पृ॰ 161।
43. वही, पृ॰ 163।
44. वही।
45. वही।
46. वही।
47. वही।
48. वही, पृ॰ 165।
49. वही।
50. वही, पृ॰ 166।
51. वही, पृ॰ 167।
52. वही, पृ॰ 168।
53. वही।
54. वही, पृ॰ 169।
55. वही।
56. वही, पृ॰ 170।
57. वही।
58. वही।
59. वही।
60. वही।
61. वही, पृ॰ 172।
62. वही, पृ॰ 175।
63. वही, पृ॰ 176।
64. वही।
65. वही, पृ॰ 178।
66. प्र. ग. सहस्रबुद्धे एवं माणिक चंद वाजपेयी 'आपातकालीन संघर्ष गाथा।'।
67. वही।
68. वही।
69. वही, पृ॰ 519।
70. वही, पृ॰ 520।
71. वही, पृ॰ 522।
72. वही।
73. वही, पृ॰ 523।
74. वही।

75. वही।
76. डॉ. वि. रा. कन्दीकर 'तीन सरसंघचालक' स्नेहल प्रकाशन पृ॰ 498।
77. वही।

चतुर्थ अध्याय

हिन्दुस्थान समाचार का प्रारंभ

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक दादा साहब आप्टे राष्ट्रीय आंदोलन में अंग्रेजी समाचार पत्रों के अराष्ट्रीय प्रवृति से बहुत व्यथित थे। उनके मन में एक था कि- 'हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं में भारत भारतीयता तथा भारतीय संस्कृति के सूत्र विद्यमान है। जनता से संवाद का माध्यम हिन्दी तथा भारतीय भाषाएं ही हो सकती है। क्योकि भारतीय जनता की भाषा तो अंग्रेजी नहीं है। ये तो गुलामी की भाषा है। प्रांत की भाषा है। यह मैकाले की भाषा है। हमें भारतीय भाषाओं के संरक्षण और सवंर्धन के लिए भारतीय भाषाओं की संवाद समिति चाहिए।' श्री गुरूजी के मार्गदर्शन और बाला साहेब देवरस के आदेश से मुंबई में दिसंबर 1948 को मुंबई में दादा साहब आप्टे ने बहुभाषी संवाद समिति **हिन्दुस्थान समाचार** की स्थापना की। दादासाहेब बहुमुखी प्रतिभा से सपन्न थे। वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक पत्रकार लेखक, साहित्यकार, कुशल प्रबंधक, चित्रकार तथा वकील भी थे। उन्होंने बहुत से अलग समय में टेलीप्रिंटर द्वारा समाचारों का प्रेषण प्रारंभ किया। उनके बनाये हुए चित्र तथा छायाचित्र आज भी अपनी संजीवता के लिए जाने जाते हैं।

हिन्दुस्थान समाचार के दूसरे शिल्पकार हुए श्री बापूराव लेले। जिन्होंने अपने जीवन के 60 वर्ष मातृभूमि की निःस्वार्थ सेवा में व्यतीत किया। राष्ट्रवादी तथा सकारात्मक विचारों से ओत-प्रोत श्री लेले जी ने 1948 में हिन्दुस्थान समाचार बहुभाषी सहकारी संवाद समिति में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने जीवन पर्यन्त अनेक पत्रकारों को प्रेरणा प्रदान करके उन्हें विविध क्षेत्रों में स्थापित करने में अपनी विशेष भूमिका का निर्वहन किया।

बाबूराव का जीवन ही पत्रकारमय था। उनके घर में प्रवेश करते ही उनका ड्राइंग हॉल केवल समाचार पत्रों से कागजों से भरा हुआ मिलता था। समाचार-पत्रों के कतरन इधर-उधर रखे हुए रहते थे। बिखरे हुए इन समाचार पत्रों के बीच में

दो-तीन कुर्सिया, एक छोटा सा टेबुल आगंतुकों के लिए रहता था। पत्रकारिता ही उनके जीवन का लक्ष्य रहा। उनके रक्त में पत्रकारिता ही रची बसी थी। वे एक जन्मजात पत्रकार थे। उन्होंने हिन्दी मराठी में अपने अपने विचारों को रखा।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक, तृतीय सरसंघचालक माननीय बाला साहेब देवरस के सचिव, पूर्व अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख तथा हिन्दुस्थान समाचार बहुभाषी संवाद समिति के संरक्षक, माननीय श्रीकांत जोशी शंकर जोशी जी ने 1985 से मूर्छित पड़ी हिन्दुस्थान समाचार संवाद समिति का नवोत्थान करने का व्रत लिया तो पत्रकारिता जगत से बहुत से लोगों ने कहा कि यह असंभव कार्य है। लेकिन आपने कठिन परिश्रम, आत्मविश्वास तथा समन्वय की भावना से इसे संभव किया आज संपूर्ण देश में एकमात्र संवाद समिति है, जो एकमात्र संस्कृत में समाचार देती है।

हिन्दुस्थान समाचार की स्थापना

भारत से अंग्रेजों के चले जाने के बाद संचार माध्यम देश के राष्ट्रहितों और सांस्कृतिक परिवेश का अभिव्यक्त रूप बने, ऐसी सभी राष्ट्रवादियों की आकांक्षा थी। वीर सावरकर और सरदार पटेल आजादी के तुरंत बाद विदेशी संवाद समितियों के रंग-ढंग देखकर स्वदेशी संवाद समिति के महत्व के प्रति आग्रह करने लगे थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्री गुरूजी और श्री बालासाहब देवसरजी ने भी स्वदेशी संवाद समिति की महत्ता को रेखांकित किया था। अब दादा साहब आप्टे जी को भारतीय पत्रकारिता जगत में एक नये पथ का निर्माण करना था। उन्होंने भारतीय भाषाओं के समाचार पत्रों के लिए मूल मातृभाषा में ही समाचार स्रोतों को उपलब्ध कराने का संकल्प लेकर मुबंई में **'हिन्दुस्थान समाचार'** को कंपनी एक्ट के तहत अप्रैल 1948 को पंजीकृत करवाया। इस संवाद समिति ने देश के अखबारों को देश की भाषा में खबरें मुहैया करवाने का बीड़ा सफलतापूर्वक उठाया। इस प्रकार भारतीय पत्रकारिता में भारतीय भाषाओं की प्रथम संवाद समिति का जन्म हुआ।

23 अक्टूबर 1948 को मुबंई में **हिन्दुस्थान समाचार** प्रथम कार्यालय खोला गया। आप्टे जी मुख्य संपादक थे और उनके दो सहायक थे, श्री विष्णुपंत माईणकर और श्री शरदराव शिरोडकर। श्री गोविन्द बोर्ड के कार्यालय सहायक थे। दफ्तर में एक मेज, तीन कुर्सियां एक अंग्रेजी का टाइपराईटर और साइक्लोस्टाइल मशीन और एक साईकिल कुल मिलाकर यही पूंजी थी। परन्तु आप्टे जी के लिये तो अब हिन्दुस्थान समाचार ही सर्वस्व था[1]।

मुबंई में इस कार्य को आरंभ कर श्री आप्टे विभिन्न प्रांतों में घूम-घूम कर

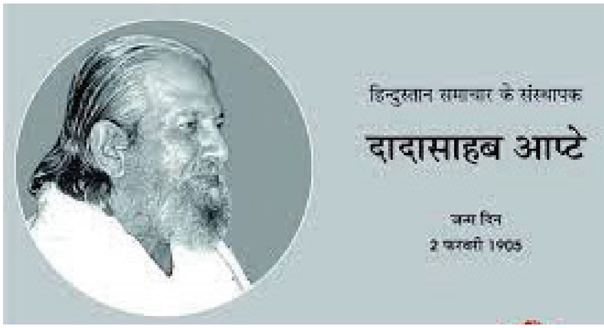

हिन्दुस्थान समाचार के संस्थापक दादा साहब आप्टे

साथी पत्रकारों को इस कार्य के लिये उत्साहित तथा संलग्न करने लगे। सर्वप्रथम मुबंई, नागपुर, दिल्ली और पटना के केन्द्र स्थापित हुए। छोटे-बड़े अनेक क्षेत्रों में समाजवादी और भारतीय भाषाओं के प्रेमी कार्यकर्ताओं ने समाचार संकलन में हिन्दुस्थान समाचार को सहायता पहुँचाई। आर्थिक दुरावस्था और भारतीय भाषाओं के संवाददाताओं के प्रति उदासीनता के बावजूद उस वायुमण्डल में शिक्षक, कर्मचारी और विद्यार्थियों आदि ने इस महती राष्ट्रीय आवश्यकता की पूर्ति में अपने धन तथा समय दोनों की शक्ति लगाई। 1953 तक लगभग सभी प्रांतों में समाचार संकलन का यह कार्य पहुँच चुका था। मुंबई, दिल्ली, कलकत्ता, पटना, बंगलौर, नागपुर, कानपुर और नेपाल की राजधानी काठमांडू में क्षेत्रीय कार्यालय स्थापित हो चुके थे[2]।

शिवराम शंकर उपाख्य दादा साहब आप्टे के शब्दों में **(संवाद समिति)** की स्थापना के प्रयासों के पीछे मुख्य उद्‌देश्य यही था कि-भारत के अधिकांश प्रांतों में सभी क्षेत्रीय समाचार पत्रों की ही भाषाओं में समाचारों का संकलन व वितरण किया जाये। सन् 1947 तक तो भारतीयों का मुख्य उद्‌देश्य स्वतंत्रता प्राप्त करना था। इस विचार को आकार देने में मुझे पांच वर्ष लगे और तब तक देश स्वतंत्र हो चुका था। उस समय मैंने अनुभव किया कि एक राष्ट्रीय संवाद समिति की आवश्यकता तो अब पहले से भी ज्यादा है। (ब्रिटिश शासन की समाप्ति के बाद) **रायटर** की भारत में रूचि समाप्त हो गई थी। स्वतंत्रता के बाद समग्र राष्ट्रीय धारा के साथ साथ जीवन के सभी, यथा शैक्षिक, मेडिकल, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक क्षेत्रों इत्यादि के लोक समाचारों का सावधानी से संग्रह करने और उन्हें एक आकार देने की आवश्यकता थी, ताकि राष्ट्रीय दायित्व की पूर्ति की जा सके। द्वितीय-ये प्रयास प्राचीन सनातन समाज की परंपरा एवं मूल्यों के अनरूप होने चाहिए। यह समाज लगभग बारह सौ सालों की गुलामी के बाद स्वतंत्र हुआ था। अत: उस समय मैंने निर्णय किया कि यद्यपि हमें अखबारों को उन्हीं की भाषा

में खबरें देनी होंगी, परन्तु हमारे एक प्रादेशिक कार्यालय से दूसरे प्रादेशिक कार्यालय के बीच समाचारों का आदान-प्रदान राष्ट्रीय भाषा हिन्दी में होना चाहिए[3]।

इस संबंध में हिन्दुस्थान समाचार बहुराज्यीय सहकारी संवाद समिति के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष रामशंकर अग्निहोत्री का कहना है-कि देश आजाद हो रहा था और देश की भाषाओं में संवाद का कोई माध्यम न था। देश में अनेक राष्ट्र भाषा प्रेमी व्यथित हुए थे।

बहुत सोचने के बाद उन्होंने बापूराव लेले जो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक थे उन्हें अपना पूर्णकालिक सहयोगी चुना। लेले जी के बारे में ऐसा कहा जाता है कि वही ऐसे व्यक्ति थे जो श्री आप्टे को संघ में लेकर आये थे और जब संघ का काम नजदीक से दादा साहेब आप्टे ने देखा तो वे उससे अलग न रह सके।

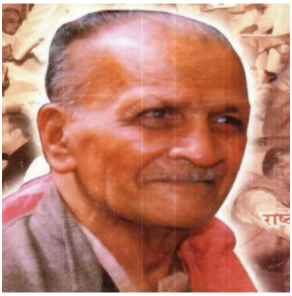

हिन्दुस्थान समाचार के तपस्वी पत्रकार साईकिल वाले पत्रकार
के नाम से विख्यात श्री बापूराव लेले

मुबंई के बोरीबंदर स्टेशन से थोड़ा पश्चिम में स्थित फोर्ट इलाके में घोगा स्ट्रीट के 29 नंबर के एक पुराने से मकान की पहली मंजिल में कार्यालय शुरू हुआ। आगे इस संवाद समिति के साथ बालेश्वर अग्रवाल का भी जुड़ना हुआ, जिसके बारे में प्रसिद्ध था कि यदि वह किसी भी कठिन से कठिन, असंभव जैसे काम में भी जुट जायें, तो उसे सफलता के साथ पूरा करने के बाद ही दम लेते थे। उनके हिन्दुस्थान समाचार में आ जाने के बाद इस संवाद समिति का कार्य बहुत तेजी के साथ देशभर में फैला।

'हिन्दुस्थान समाचार' के काम में आर्थिक लाभ तो कुछ था नहीं फिर भी बापूराव बारह-चौदह-सोलह घंटों तक काम करते थे। कर्मचारियों की कमी तो हमेशा ही रहती। परंतु बापूराव लेले और बालेश्वर अग्रवाल दोनों का कार्यबल और नियमितता इतनी जबरदस्त थी कि यह कमी किसी को नजर नहीं आती थी। बापूराव का खास वाहन होता-साईकिल। 'साईकल वाले पत्रकार' ऐसा उन्हें कई बार कहा

जाता। आवश्यक कार्य से जाने पर वापस आते ही पूरा ब्यौरा लेते क्योंकि विभिन्न राज्यों के केन्द्रों से समाचार पत्रों तक पूरा समाचार जल्द से जल्द जाना चाहिए यही एक आस होती थी[4]।

श्री बापूराव लेले ने अपनी कार्यकुशलता और कर्तव्यनिष्ठ व्यक्तित्व के कारण हिन्दुस्थान समाचार को एक नया आयाम दिया। श्री लेले का एक ही सिद्धांत था कि–जी जान से अपना काम करो और पीछे हट जाओ। इस संवाद समिति के पहले कार्यालय के बारे में और स्पष्ट उल्लेख भी आया है।

जब दादा साहेब ने हिन्दुस्थान का काम शुरू किया तब न्यूज एजेंसी एवं समाचार पत्रों से जुड़े बड़े–बड़े पत्रकारों को विश्वास ही नहीं होता था कि यह संवाद समिति भविष्य में देश की बड़ी न्यूज एजेंसी के रूप में अपना स्थान बना लेगी। ग्रामीण परिवेश तथा समसामयिक मुद्दों से जुड़े समाचार प्रमुखता से देने के कारण हिन्दुस्थान समाचार शीघ्र ही देश के अग्रगण्य समाचार पत्रों की आवश्यकता बन गई। जिस पर भी जब इस संवाद समिति ने हिन्दी और अंग्रेजी के बाद अन्य भारतीय भाषाओं में समाचार देना शुरू किया तो भाषाई समाचार पत्र–पत्रिकाओं के सामने हिन्दुस्थान समाचार के ग्राहक बनने के अलावा और कोई श्रेष्ठ विकल्प मौजूद ही नहीं होता था। इसे सभी भाषाई समाचार पत्रों ने हाथों हाथ लिया।

हिन्दुस्थान समाचार का विकास

नागपुर **'हिन्दुस्थान समाचार'** की मुबंई के बाद दूसरी शाखा थी। हिन्दुस्थान समाचार के संस्थापक दादा साहेब आप्टे ने यह उत्तरदायित्व बापू महाशब्दे को दिया। इस कार्य के लिए महाशब्दे से बढ़िया और कोई व्यक्ति तो हो नहीं सकता था। महाशब्दे को संवाद समिति का अनुभव तो नहीं था, लेकिन उन्होंने उस समय की यू॰ पी॰ आई॰ के जी॰ डी॰ करकरे से बातें समझीं और कार्य प्रारंभ हो गया। नागपुर से छपने वाले मराठी 'दैनिक तरूण, भारत और महाराष्ट्र' यह दो अखबार सबसे पहले हिन्दुस्थान समाचार के ग्राहक बने। बापू महाशब्दे के दूसरे अंतरंग सहयोगी थे–मधुपाणे।

नागपुर कार्यालय

प्रारंभिक वर्षों में बापू महाशब्दे और मधुपाणे इन दोनों के परिश्रम से ही नागपुर में **हिन्दुस्थान समाचार** अपने पैर जमा सका। बाद के सहयोगियों में घनश्याम सक्सेना, बी॰ टी॰ देशपांडे, और ठेंगडी जी के नाम गिनाये जा सकते हैं। कार्यालय में दूरमुद्रक नहीं था। आकाशवाणी को ग्राहक बनाने की योजना सिर नहीं चढ़ी।

हिन्दुस्थान समाचार नागपुर को अभी अपने पैर जमाने थे और संवाददाताओं का मजबूत तंत्र खड़ा करना था। परंतु कार्य रोमांचकारी था और सभी कार्यकर्ता समर्पण भाव से कार्य करते थे। किसी को भी तनख्वाह मिलने का तो प्रश्न ही नहीं था और जो एक-आध वेतन लेता भी था वह अत्यंत अल्प पत्र-पुष्प ही था। लेकिन कार्यालय में काम करने वाले सभी पत्रकार अखबार के दफ्तर में खबर पहुँचाने से लेकर संपादक तक का काम एक समान भाव से ही करते थे। बापू महाशब्दे और अन्य अधिकारियों द्वारा जो भातृत्व भाव उत्पन्न किया गया था उससे हिन्दुस्थान समाचार ने संकट के दिन सफलतापूर्वक पार किये। इतना काम करने के बाद हरि विजय होटल से मंगवाया हुआ चिवड़ा और चाय का एक कप ही सबसे बड़ा पुरस्कार होता था। बाद में अमरावती का हिन्दुस्थान 'अखबार समिति' का ग्राहक बना। परंतु उनकी शर्त थी कि आधी रात का नवीनतम समाचार टेलिफोन से प्रेषित किये जाएं। यह उत्तरदायित्व बापू महाशब्दे की पत्नी सुशीला महाशब्दे के कंधों पर आयी। हिन्दुस्थान समाचार का कार्यालय बापू के घर में ही था। वह बेचारी या तो आधी रात तक जागती रहती या फिर टेलिफोन की घंटी आधी रात को उसे जगा देती। परंतु उसने कभी शिकायत नहीं की। यह हिन्दुस्थान समाचार के नागपुर के प्रारंभिक वर्षों का वातावरण था[5]।

दिल्ली में भी हिन्दुस्थान समाचार का कार्यालय मुबंई के तुरंत बाद स्थापित किया गया, जिसके प्रमुख धर्मवीर गांधी थे। मुबंई और नागपुर की तरह ही दिल्ली कार्यालय की स्थिति भी अच्छी नहीं कही जा सकती थी।

बिहार कार्यालय

1948 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक वरिष्ठ कार्यकर्ता नन्दसहाय द्वारा पटना में हिन्दुस्थान समाचार के कार्यालय की नींव रखी गई। श्री सत्यरंजन सहाय को इस शाखा का प्रमुख बनाया गया और उसके सहायक के रूप में प्रो॰ रामसेवक को नियुक्त किया गया। प्रारंभिक दौर में कई कार्यकर्ताओं के आर्थिक एवं श्रमिक सहयोग से इस कार्यालय में कार्य निरंतर बना रहा।

बिहार कार्यालय में प्रारंभ के समय से हाथ में समाचार के बुलेटिन तैयार किये जाते थे और कार्यकर्ता साईकल पर आर्यावर्त, राष्ट्रवाणी, नवराष्ट्र, प्रदीप जैसे हिन्दी समाचार पत्रों के कार्यालय पहुँचाया करते थे। कई बार कार्यकर्ताओं के सामने ही उन समाचारों को रद्दी की टोकरी में डाल दिया जाता था। काफी परिश्रम के पश्चात ''आर्यावर्त'' में एक समाचार, हिन्दुस्थान समाचार डेटलाइन से प्रकाशित हुआ। 1951 में बालेश्वर अग्रवाल द्वारा पटना कार्यालय का कार्यभार सम्हाल लेने के बाद प्रबंध व्यवस्था में भी सुधार हुआ और संवाद समिति का कार्य भी बढ़ा। अल्पकाल में ही पटना में 'हिन्दुस्थान समाचार' ने अपनी पहचान बना ली।

कलकत्ता कार्यालय

1949 के अंत तक कोलकता में नारायण राव तर्टे हिन्दुस्थान समाचार का कार्य करने पहुँचे। नारायण राव तर्टे और उनके सहयोगियों के परिश्रम के कारण हिन्दुस्थान समाचार की कोलकाता शाखा जल्द ही पत्रकारिता जगत में जानी जाने लगी। हिन्दी, बंगाली और अंग्रेजी भाषा में समाचार पत्रों को समाचार बुलेटिन दिन में दो बार भेजना आरंभ हो गया। सभी समाचार पत्र हिन्दुस्थान समाचार की खबरें प्रकाशित करने लगे। कुछ ही दिनों में हिन्दुस्थान समाचार की कोलकाता शाखा ने प्रतिष्ठा अर्जित कर ली।

अन्य राज्यों में हिन्दुस्थान समाचार-

1954 तक लगभग सभी राज्यों के समाचार संकलन का कार्य प्रारंभ हो चुका था। मुबंई, दिल्ली, पटना, बंगलूर, नागपुर, कानपुर के साथ ही नेपाल की राजधानी काठमांडू में क्षेत्रीय कार्यालय स्थापित हो चुके थे[6]।

इस प्रकार एक वर्ष के भीतर ही मुबंई, नागपुर, दिल्ली, पटना और कोलकाता के हिन्दुस्थान समाचार के कार्यालयों में कार्य प्रारंभ हो गया। प्रारंभ में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने चार-पांच स्वयंसेवक हिन्दुस्थान समाचार को दिये थे, उन्होंने ही इसे सम्हाला और खड़ा किया।हिन्दी में समाचार प्रेषित करने की मशीन का निर्माण करने का श्रेय भी इसी संवाद समिति को जाता है।

देवनागरी दूरमुद्रक का विकास

इस समिति ने सबसे पहले विभिन्न राज्यों में क्षेत्रीय खबरों को संकलित करके राज्य स्तर पर वितरित करने की पहल की। परन्तु यह सब कार्य डाक द्वारा ही होता था क्योंकि हिन्दी के दूरमुद्रकों के बिना विभिन्न केंद्रों के बीच समाचारों का आदान-प्रदान संभव नहीं था। अतः राजर्षि पुरूषोत्तम दास टंडन के सुझाव पर तत्कालीन समाचार मंत्री रफी अहमद किदवई के प्रयासों से चार अंग्रेजी की 'क्रीड़ा' मशीनों को जबलपुर वर्कशाप में देवनागरी में बदला गया और इस समिति ने यह मशीनें ले ली और सबसे पहले सन् 1954 में दिल्ली, पटना के मध्य नागरी दूरमुद्रकों का प्रयोग समाचार प्रेषण के लिए किया गया। यह हिन्दी पत्रकारिता की अत्यन्त उल्लेखनीय प्रगति थी[7]।

इन मशीनों का सर्वप्रथम उद्घाटन पटना में राजर्षि पुरूषोत्तम दास टंडन ने एवं दिल्ली में श्री जगजीवन राम ने जून 1954 में किया। नागरी लिपि में समाचार प्रेषण के स्वदेशी युग का आरंभ भारतीय समाचार जगत की एक युगान्तकारी घटना थी।

देवनागरी में समाचार की उपलब्धता के साथ ही समाचार पत्र महानगरीय सीमा को लांघकर छोटे नगरों से भी प्रकाशित होने लगे।

अब तक हिन्दुस्थान समाचार ने ग्राम, तहसील और जिला केंद्रों तक पहुँचकर समाचार का व्याप करके राष्ट्रीय आवश्यकता की पूर्ति का महान कार्य किया है। सन् 1951 से बिहार ने और इसके बाद मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, पंजाब, राजस्थान सरकारों ने भी समाचार लेना प्रारंभ किया। सन् 1968 से आकाशवाणी में तथा केंद्र सरकार के द्वारा भी हिन्दुस्थान समाचार से समाचार लिये जाने लगे। सन् 1953 में 'नेपाल रेडियो' हिन्दुस्थान समाचार से समाचार लेने लगा। जब वहाँ 1963 में राष्ट्रीय समाचार समिति की स्थापना हुई तो हिन्दुस्थान समाचार नेपाल की राष्ट्रीय समिति को समाचार देने लगा[8]।

हिन्दुस्थान समाचार और सहकारिता-

इस संवाद समिति के साथ एक निर्णय यह जुड़ा हुआ है कि इसके संस्थापक दादा साहब आप्टे ने कंपनी एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत संस्था **'हिन्दुस्थान समाचार'** को अपने सामने ही इसे सहकारिता से जोड़ दिया। यह आज तक की संवाद समिति के इतिहास में बड़ी घटना मानी जाती है। वस्तुतः कोई मालिक अपना अधिकार नहीं छोड़ना चाहता, ऐसे में श्री आप्टे का निर्णय युगान्तकारी था। उन्होंने किसी व्यक्ति विशेष की संवाद समिति न बनाकर हिन्दुस्थान समाचार को सभी के लिए इससे जुड़ने का द्वार खोला। दादा साहेब आप्टे ने हिन्दुस्थान समाचार के पत्रकारों के समक्ष एक अभिनव सुझाव प्रस्तुत किया। इसके अनुसार हिन्दुस्थान समाचार को लिमिटेड कंपनी के बजाय सहकारिता समिति बना दिया जाये और इसके सभी पत्रकार और कर्मचारी समिति के अंशधारक बन जाएं। ताकि हिन्दुस्थान समाचार किसी एक व्यक्ति या कंपनी के स्वामित्व में न रहकर एक सहकारी समिति में परिवर्तित हो जाए। सभी पत्रकारों ने इसे सहर्ष स्वीकार किया और इस प्रकार 1 फरवरी 1957 में हिन्दुस्थान समाचार समिति का गठन हुआ और कंपनी की सभी संपत्तियां इस समिति में विलय कर दी गई।

ज्ञातव्य है कि- तत्कालीन प्रशासन सदैव इस समिति की विरोधी ही रही इसीलिए जो सहयोग या मानसिकता अन्य समाचार समितियों के प्रति केंद्र और राज्य सरकारों की रहती थी, वह सहयोगात्मक रवैया इसके साथ नहीं था। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री गुरूजी सरकार की इस दृष्टि से अत्यधिक क्षुब्ध थे, इस संबंध में उन्होंने एक पत्र दादा साहेब आप्टे को लिखा था। अपने पत्र में वह लिखते हैं कि "पी.टी.आई. से स्पर्धा न करने वाली किन्तु उसकी पूरक रहने वाली, जिस क्षेत्र में पी.टी.आई. का प्रवेश नहीं हुआ है, एवं अपेक्षित भी नहीं

है, उन क्षेत्रों में वृत संकलन करने वाली एवं इतने वर्ष की प्रतिकूल परिस्थितियों में रहकर भी प्रगति करने वाली विशुद्ध राष्ट्रीय वृत्तवितरण संस्था के नाते हिन्दुस्थान समाचार को न्यास सहायता प्राप्त हो। प्रादेशिक और केंद्रीय शासन में संकुचित मनोवृत्ति अपने पक्ष के प्रति अनुकुल रहने की अन्याय व पक्षपातपूर्ण प्रवृति सर्वथा हेय है[9]। अतः इस पत्र में लिखी बातों से सीधा स्पष्ट है कि– हिन्दुस्थान समाचार के पत्रकार अन्य संवाद समितियों की तुलना में कितनी अधिक मेहनत कर रहे थे, लेकिन बदले में जब उन्हें वह सहायता सरकार से कभी नहीं मिली, जिसका कि लाभ अन्य संवाद समितियां उठा रही थीं।

वस्तुतः सहकारिता के आधार पर एक समाचार एजेंसी का संचालन का यह अभिनव प्रयास भारत में ही नहीं विश्व में अकेला है[10]। हिन्दुस्थान समाचार का काम इसके तेजी से देश व विदेशों में फैला। 1964 के बाद इस संवाद समिति के विस्तार का कार्य दादा साहब आप्टे के स्थान पर बालेश्वर अग्रवाल देखने लगे। श्री आप्टे ने प्रत्यक्ष रूप से हिन्दुस्थान समाचार के काम से सन्यास ले लिया और वे मार्गदर्शक की भूमिका में आ गये। इसी समय एक अन्य केंद्र सरकार के सहयोग से समाचार समिति 'समाचार भारती' भी हिन्दुस्थान समाचार की तर्ज पर काम करने वाली समितियां। लेकिन सरकार से आर्थिक सहयोग मिलने के कारण इसकी वित्तीय स्थिति बहुत अच्छी थी। तब भी यह हिन्दुस्थान समाचार की बराबरी न कर सकीं। अपनी प्रतिद्वंदी संवाद समिति के आ जाने के बाद तत्कालीन महाप्रबंधक बालेश्वर अग्रवाल ने ग्राहक संस्था विस्तार की नई योजना बनाई और इसे अभियान रूप में चलाकर अपने नवीन ग्राहकों के विस्तार की आशातीत की सफलता प्राप्त की[11]।

इसके अलावा 1966 में हिन्दुस्थान समाचार ने अपनी वार्षिकी जो **'हिन्दुस्थान समाचार वार्षिकी'** के नाम से प्रकाशित होती थी को आरंभ किया। इस वार्षिकी को देशभर के लोगों ने हाथों हाथ लिया। खासकर विद्यार्थियों के लिए यह अत्यधिक उपयोगी सिद्ध हुई। इस वार्षिकी की सफलता के बारे में वरिष्ठ पत्रकार और वर्तमान अध्यक्ष नन्दकिशोर का लिखा समाचार कहते हैं कि–

'हिन्दुस्थान समाचार की वार्षिकी' मलयालम मनोरमा की वार्षिकी से पहले निकलना शुरू हो गई थी। इस वार्षिकी से पहले जितनी भी वार्षिकी आई वह अंग्रेजी भाषा में थी, लेकिन हिन्दी में इसे निकालने का प्रथम प्रयास था। इसने संवाद समिति को नये आयाम प्रदान किये।

हिन्दुस्थान समाचार की प्रगति यही है कि उसने हिन्दी भाषा में श्रेष्ठ लेख सेवा की कमी को देखते हुए इसे दूर करने के लिए अपनी आलेख सेवा भी शुरू की। 1968 में 'युगवार्ता' नाम से प्रसंग लेख सेवा आरंभ की गई। हिन्दी भाषा के समाचार पत्रों को प्रायः अंग्रेजी अखबारों में छपे लेखों का अनुवाद करना पड़ता था। हिन्दी में मौलिक स्तरीय लेखों का नितांत अभाव था। इसकी पूर्ति 'युगवार्ता' ने की[12]।

आपातकाल और हिन्दुस्थान समाचार

25 जून 1975 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरागांधी ने देश में आपातकाल घोषित किया। इस सेंसरशिप के समय देश में चार बड़ी एजेंसियां कार्यरत थीं- पीटीआई, हिन्दुस्थान समाचार, युएनआई और समाचार भारती। श्रीमती गांधी ने इन चारों समितियों को मिलाकर **'समाचार'** नाम की एक समिति गठित की। अब हिन्दुस्थान समाचार का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं रहा। सभी कर्मचारी समाचार नाम की न्यूज एजेंसी का हिस्सा बन गए, लेकिन आपातकाल की समाप्ति के बाद 1978 में बनी जनता सरकार ने एकीकृत संवाद एजेंसी को भंगकर सभी समितियों को स्वतंत्र कर दिया।

हिन्दुस्थान समाचार के तपस्वी पत्रकार-

हिन्दुस्थान समाचार का पुनः 14 अप्रैल 1978 से स्वतंत्र रूप से कार्य शुरू कर दिया गया। इस समय में भी संवाद समिति के ग्राहकों में कोई कमी नहीं आई, लेकिन देश की चार प्रमुख संवाद एजेंसियों में 'समाचार भारती' बंद हो गयी। इस समय भी देश की प्रमुख तीन एजेंसियों में **'हिन्दुस्थान समाचार'** बनी रही। इसका उपर्युक्त कारण भी है, वस्तुतः हिन्दुस्थान समाचार के पास देशभर के श्रेष्ठ पत्रकारों की **'अर्थ'** से ज्यादा-**'समर्पण'** को महत्व देने वाली टोली थी। इसी का प्रभाव था कि अभावों के बावजूद भी यह संवाद समिति देश में छाई रही। इस टोली के सदस्यों में बालेश्वर अग्रवाल, बापूराव लेले, ओम मेहता, जगन्नाथ शास्त्री, श्रीराम शंकर अग्निहोत्री, मनोहर डोंगरे, अनिल शर्मा, एपी केसरी, बसंतदेश पांडे, कनु भाई मेहता, अमरेन्द्र सिन्हा, अमलेन्दु कुन्डु, सोहनलाल मल्होत्रा, लोकपाल सेठी, सुरेन्द्र द्विवेदी, श्याम सुन्दर आचार्य, बनवारी बजाज, ओमप्रकाश पंडित, कैलाश गौड़, अपूत भाई पारिख, ओम प्रकाश कुंदरा, ज्ञानेन्द्र भारद्वाज, आनंद मोहन, सुरेंद्र बंसल, सुमिवल चौधरी जैसे के नाम उल्लेखनीय हैं।

स्थापना के समय से ही इस समिति को तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद, राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन पं गोविन्द बल्लभ पन्त और श्री रफी अहमद किदवई आदि का शुभाशीष प्राप्त हुआ। इसके साथ ही हिन्दुस्थान समाचार की प्रगति में सहयोग प्रदान किया। डॉ. हरेकृष्ण मेहताब, डॉ. रामसुभग सिंह, तख्तमल जैन, जयनारायण व्यास, हरिश्चंद्र माथुर, रंगनाथ रामचंद्र दिवाकर, घनश्याम सिंह गुप्त, सुरेंद्रनाथ घोष, जयसुखलाल हाथी, डॉ. सरोजिनी महिषी, कामाख्याप्रसाद त्रिपाठी, सिद्धेश्वर प्रसाद, बाबू गंगाशरण सिंह, बसंतदादा पाटिल, बसंतराव ओक, जानकी बल्लभ पटनायक, प्रभूति जन नेताओं ने इनके अतिरिक्त सर्वश्री सत्यकाम विद्यालंकार सत्येंद्र कुमार

गुप्त, श्रीनारायण चतुर्वेदी, अक्षय कुमार जैन, रतनलाल जोशी, रामगोपाल तिवारी, आदि साहित्यिक, पत्रकार विद्वानों ने भी हिन्दुस्थान समाचार बहुभाषी संवाद समिति में अपना योगदान दिया[13]।

विभिन्न समाजसेवी व पत्रकार हिन्दुस्थान समाचार सहकारी संवाद समिति के सदस्य रहे, इनमें कुछ उल्लेखनीय नाम हैं :- सुरेंद्र मोहन घोष, एडी मणि (हितवाद, नागपुर) अन्तगोपाल शेवडे (नागपुर टाइम्स), मायाराम सुरजन (नई दुनिया, रायपुर), कृष्णचंद्र अग्रवाल (विश्वामित्र कलकत्ता), डोरीलाल अग्रवाल (अमरउजाला, आगरा), मानक चौपड़ा (जनगण, जोधपुर), सुधाकर शास्त्री (लोकवाणी, जयपुर) भगवानदास अरोड़ा (गाण्डीव, वाराणसी), बोएन नायर (मातृभूमि, कालीकट), अमृतलाल जिन्दल, (वेजीटेरियन इंडिया, दिल्ली) मुकुन्दराव किर्लोस्कर।

इनके अतिरिक्त समिति के सदस्यों में सर्व श्री प्रकाशवीर शास्त्री, श्यामधर मिश्र, (संसद सदस्य) सेठ गोविन्ददास (संसद सदस्य), अनन्त प्रसाद शर्मा (संसद सदस्य). वेदप्रकाश कोहली, (दिल्ली), जगदीशचंद्र ऋषि (बिलासपुर), आनंद प्रकाश रहेजा दिल्ली, आ. मानिकलाल (मुंबई), जयकिशन भाई हरिवल्लभदास (अहमदाबाद) प्रफुल्लचंद्र बरूआ (सांसद सदस्य), रामनारायण चौधरी (दिल्ली) आदि प्रमुख हैं[14]।

भाषायी संवाद समिति के रूप में हिन्दुस्थान समाचार

डॉ. कृष्णकुमार बवेजा के अनुसार "स्वतंत्रता प्राप्ति के लगभग तुरंत बाद हिन्दुस्थान समाचार के नाम से पहली देवनागरी समाचार संस्था की स्थापना की गई"। भारत विभाजन को लेकर उस समय के समाचार-पत्र जिस प्रकार से विभाजन के समर्थन में वातावरण निर्माण कर रहे थे। उससे समाचार माध्यमों का ब्रिटिश प्रेम जगजाहिर हो रहा था। भारतीय जनमानस तक देशव्यापी गतिविधियों की सूचना पहुंचना लगभग मुश्किल ही था। समाचार समिति और अन्य समाचार स्रोत पर निहित स्वार्थियों का कब्जा था, उनका भारतीय जनता और उनकी समस्या से कोई सीधा वास्ता नहीं था। समाचार स्रोतों की इस कार्यशैली और उदासीनता से त्रासद स्थितियां व्याप्त थी। ऐसी परिस्थितियों से मुक्त कराने के लिए हिन्दुस्थान समाचार की अवधारणा विकसित होने लगी थी। अब एक ऐसी समाचार समिति की आवश्यकता थी, जो जनता से उन्हीं की भाषा में संवाद स्थापित कर सके और उनकी अभिव्यक्ति को भाषायी समाचार-पत्रों तक पहुंचाए। स्थितियां ऐसी थी कि समाचार स्रोतों के स्वरूप पर विदेशियता हावी थी। देशी भाषा के समाचार-पत्रों की अनूदित सामग्री से ही संतोष करना पड़ता था।

हिन्दुस्थान समाचार की स्थापना के पीछे यह भी उद्देश्य था कि स्वतंत्रता के

लिए किए जा रहे प्रयासों को जनता के बीच ले जाया जाये। हालांकि इसको मूर्तरूप दिये जाने तक देश आजाद हो जा चुका था। लेकिन अब समाचार समिति की आवश्यकता और अधिक महसूस की जा रही थी। आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक क्षेत्रों इत्यादि लोक समाचारों को एकत्रित करके एक स्वरूप देने की जरूरत थी।

दादा साहेब आप्टे के अनुसार– 'हम अंग्रेजी से घृणा नहीं करते लेकिन अपनी भाषा से ज्यादा लगाव रखते हैं। अतः उस समय निर्णय लिया गया कि यद्यपि हमें अखबारों को उन्हीं की भाषा में खबरें देनी होगी। परन्तु हमारे प्रादेशिक कार्यालयों में एक दूसरे के बीच समाचार का आदान प्रदान राष्ट्रीय भाषा हिन्दी में होना चाहिए।' हिन्दुस्थान समाचार की स्थापना में मूल में कई कारक विद्यमान थे। जिनमें समाचारों का भाषायी संकलन एवं वितरण मुख्य रूप से उल्लेखनीय है।

स्वतंत्रता के समय तक भारत में स्थापित सभी संवाद समितियाँ अंग्रेजी में ही समाचार प्रसारित करती थीं। अंग्रेजी राजभाषा थी। तार केवल अंग्रेजी में ही भेजे जा सकते थे। इस समय देवनागरी लिपि का दूरमुद्रक बनाने का सवाल ही नहीं था। देवनागरी लिपि में तार भेजने की सुविधा स्वतंत्रता के कुछ वर्ष बाद प्राप्त हुई जब 1954 में देवनागरी दूरमुद्रक उपलब्ध हुआ।

भारतीय भाषाओं में समाचार वितरण आरंभ करने का श्रेय **हिन्दुस्थान समाचार संवाद समिति** और उसके संस्थापक बैरिस्टर एस.एस. (दादा साहब) आप्टे को है। पहले तार द्वारा और बाद में दूरमुद्रक से समाचारों का प्रसारण और वितरण किया। दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, पटना, काठमांडू, नागपुर, लखनऊ और अन्य जगहों पर इसके कार्यालय खुले। इस समिति ने कई क्षेत्रों में नई पहल की। एक नई बात यह थी कि हिन्दी के अलावा मराठी और गुजराती में भी इस समिति ने देवनागरी दूरमुद्रक से समाचार भेजना शुरू किया।

1964 में हिन्दुस्थान समाचार ने अपने जीवन के पंद्रह साल पूरे कर लिए। अब तक इस संवाद समिति का शुमार भारत की प्रमुख संवाद समितियों में होने लगा था। लगभग सभी प्रांतों में समिति के कार्यालय खुल चुके थे। उत्तर प्रदेश में लखनऊ आगरा और इलाहाबाद, बिहार में पटना, पश्चिम बंगाल में कोलकाता, उड़ीसा में कटक, असम में शिलांग, पंजाब में जालंधर, राजस्थान में जयपुर, जम्मू कश्मीर में जम्मू, महाराष्ट्र में नागपुर, मध्यप्रदेश में भोपाल, गोवा में पणजी, केरल में तिरूवनंतपुरम, में हिंदुस्थान समाचार के शाखा कार्यालय कार्य कर रहे थे। दिल्ली में मुख्य कार्यालय था और मुंबई में स्थापना कार्यालय। इसके अतिरिक्त नेपाल में काठमांडू में प्रभावी कार्यालय काम कर रहा था। सिक्किम में गंगटोक में कार्यालय था। नेपाल की आकाशवाणी से हिन्दुस्थान समाचार के समाचार प्रसारित किएजाते थे। भारत सरकार के संचार मंत्रालय की ओर से दूर मुद्रित यंत्रों एवं सर्किट की

सुविधा जनवरी, 1964 में हुई। इसके फलस्वरूप जून से दिल्ली, जालंधर एवं चण्डीगढ़ का दूरमुद्रकों से संबंधित करने से पंजाब के पत्रों को समय पर समाचार देने में सफलता मिली। कोलकाता एवं पटना के बीच दूरमुद्रक लग जाने के बाद कोलकाता से जयपुर एवं जालंधर का सीधा संबंध हो गया। मराठी भाषा में नागरी दूरमुद्रकों के सफल प्रयोग की दृष्टि से मुबंई, नागपुर एवं पुणे को संबंधित करने का कार्य प्रारंभ हो गया।

भाषायी पत्रकारिता में हिंदी, मराठी के अलावा उर्दू, गुजराती, असमिया, बांग्ला, तमिल, तेलगू, मलयालम भाषाओं के अभिवर्धन में भी हिन्दुस्थान समाचार का श्रेष्ठतम योगदान रहा है। वस्तुत: आजादी के कई वर्षो बाद तक भी हिन्दुस्थान समाचार समिति के अलावा अन्य कोई सशक्त न्यूज एजेंसी नहीं थी जो क्षेत्रीय भाषाओं में निकलने वाले लघु और मध्यम स्तर के समाचार पत्रों की आवश्यकताओं को पूरा कर सके। बहुभाषी और बहुसंस्कृति वाले देश भारत की वाणी में मुखरित हो समाचार प्रेषित करने के कार्य में हिन्दुस्थान समाचार को पूर्ण सफलता प्राप्त हुई ऐसा कहा जा सकता है।

आपातकाल से पहले हिन्दुस्थान समाचार समिति से जुड़े वरिष्ठ पत्रकार मनमोहन शर्मा इसके भाषायी स्वरूप और विस्तार पर चर्चा करते हुए कहते हैं कि-सन् 1975 में आपातकाल लागू होने से पहले हिन्दुस्थान समाचार की दूरमुद्रक सेवा 21 केंद्रों में प्रारंभ हो गई थी। अन्य भारतीय भाषाओं में गुजराती, मराठी, उड़िया, असमिया को मिलाकर 14 क्षेत्रीय भाषाओं में समाचार वितरण शुरू हो गया। इस समाचार समिति ने अन्य भाषाओं की भाँति उर्दू में भी अपनी सेवा शुरू कर दी। उस समय 15 उर्दू के समाचार पत्र इसको सेवा लेते थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मार्गदर्शक बनकर कार्य करने वाले इस पत्र से मुस्लिम भी जुड़े। कई मुस्लिमों के संगठन भी इसकी सेवाएं लेते थे। जैसे **'जमायत ए इस्लामी'** का पत्र **'दावत'** और कुछ मुख्य संगठन के समाचार पत्र भी इसकी सेवाएं लेते थे। इसी प्रकार केरल में कम्युनिस्ट पार्टी की सरकार भी हिन्दुस्थान समाचार की सेवा लेती थी क्योंकि उन्हें समाचार मलयालम में हाथ से लिखकर दिया जाता था।

हिन्दुस्थान समाचार के भाषायी स्वरूप के साथ उसके विषय में डॉ. श्रीमती सुशीला जोशी ने अपनी हिन्दी पत्रकारिता विकास और आयाम में लिखा है कि- 'यह विभिन्न भाषाओं में समाचार एकत्रित करके राष्ट्रीय देवनागरी टेलीप्रिंटर के द्व ारा समाचार-पत्रों, रेडियो और टेलीविजन केंद्रों को समाचार प्रसारित करती थी। इस एजेंसी ने तास, अना और पाकिस्तानी, प्रेस इंटरनेशनल संस्थाओं से विदेशी समाचारों के आदान-प्रदान के लिए संपर्क कर रखा था। इसके अलावा यह समाचारों की विशिष्टता रही कि इसने सदैव प्रादेशिक समाचारों के संकलन की ओर विशेष ध्यान दिया। जैसे राजस्थान, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश तथा राजनीतिक समाचारों के अतिरिक्त

सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक आदि गतिविधियों से सम्बद्ध समाचारों को भी यह संकलन करके वितरित करती थी।

वास्तव में देखा जाए तो हिन्दुस्थान समाचार ही वह संवाद समिति है। जिसने देश के अनेक भाषायी लोगों के लिए सर्वप्रथम परस्पर संवाद के अवसर उपलब्ध कराए। जैसे कि–देश की पत्रकारिता में हिन्दी के श्रेष्ठ साहित्यकार और अपने समय के पत्रकार भारतेन्दु हरिश्चंद्र की दृष्टि से 'निज भाषा की उन्नति' के लिए कार्य करना चाहते थे। वहीं छोटे छोटे भाषायी समाचार पत्रों को सुगमता से समाचार उपलब्ध हो सकें। इसके लिए आधार बनाने का कार्य भी **'हिन्दुस्थान समाचार संवाद समिति'** ही करती थी।

सभी भारतीय भाषाओं का एक समान विकास और उन्हें साहित्य, पत्रकारिता और शब्दकोष की दृष्टि से निरंतर विकसित करने का ध्येय सदैव ही हिन्दुस्थान समाचार के सामने रहा। श्री आप्टे ने इसी भाव से प्रेरित होकर भारत में भारतीय भाषाओं की समिति को खड़ा करने का संकल्प लिया और इस संवाद समिति की नींव रख उसे मूर्त रूप प्रदान किया। वर्तमान में भी हिन्दुस्थान समाचार पत्रकारिता में निरंतर देश को बहुभाषाओं के संवर्धन के लिए कार्य कर रही है[15]।

देश में जब तत्कालीन केंद्र सरकार ने हिन्दुस्थान समाचार की भाषायी पत्रकारिता में एकाधिकार समाप्त करने के लिए सन 1966 में समाचार भारती के गठन करने में तत्कालीन समय के मूर्धन्य पत्रकार श्री धर्मवीर की मदद की और यह लाला फिरोजचंद्र की मदद से दस राज्यों की सरकार की मदद से शेयर खरीदकर इसे आर्थिक मदद उपलब्ध कराई गई थी। तब हिन्दुस्थान समाचार के प्रति शुभेच्छा नहीं रखने वाले कुछ विद्वानों को लगा था कि–अब तो हिन्दुस्थान समाचार के कठिनाई का दौर शुरू हो जाएगा, भविष्य में इसे अपने भाषायी स्वरूप को बनाए रखना मुश्किल होगा, लेकिन ठीक इसके विपरीत हुआ। सरकारी संरक्षण और सुदृढ़ वित्तीय स्थिति होने के बाद भी 'समाचार भारती' अपने जन्मकाल से ठीक बारह वर्ष बाद समाप्त हो गई, किन्तु हिन्दुस्थान समाचार का भाषायी स्वरूप बरकरार रहा और वह तेजी के साथ आगे बढ़ती रही।

हिन्दुस्थान समाचार का संघर्ष काल

सन् 1948 से 1970 तक हिन्दुस्थान समाचार समिति तमाम संघर्षों का सामना करते हुए आगे बढ़ती रही। सन् 1978 में आपातकाल समाप्ति के बाद एक भाषायी संवाद समिति 'समाचार भारती' दम तोड़ चुकी थी। इसके विषय में कहा जा सकता है कि "भारतीय भाषाओं का एक स्तंभ ढह गया। पीटीआई और यूएन आई तो मूलतः अंग्रेजी भाषा की संवाद समितियां हैं। उन्हीं में थोड़ा बहुत हिन्दी का पैबंद लगाकर

'भाषा' और 'वार्ता' की रचना की गई। परंतु इन दोनों संवाद समितियों की मूल कार्य संस्कृति अंग्रेजी में ही रहीं। भारतीय भाषाओं की पत्रकारिता को संबल प्रदान करने के लिए अब एक ही संवाद समिति थी-हिन्दुस्थान समाचार। परंतु धीरे-धीरे हिन्दुस्थान समाचार वित्तीय संकटों से घिरने लगा। सरकारी रुझान अंग्रेजी की संवाद समितियों को प्रश्रय लेने की ही थी और आज भी है। वहीं भारतीय भाषाओं की संवाद समिति अपने बलबूते पर लड़ रही थी. या तो उसे जनसहयोग था या उनका अपना आत्मबल। यह कहा जा सकता है कि-सरकार का रुझान भारतीय भाषाओं की संवाद समिति के मार्ग को अवरूद्ध करने का काम जरूर रहा है। 'हिन्दुस्थान समाचार' को खत्म करने की सरकारी कोशिशें तेज हो गई। इसके कारण अनेक थे। इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु सरकार ने जबर्दस्ती कांग्रेसी सांसद सुभाष यादव को 17 मार्च 1982 को 'हिन्दुस्थान समाचार' का प्रशासक नियुक्त कर दिया। सुभाष यादव लगभग एक साल प्रशासक के पद पर रहे और उन्होंने इन एक साल में ही 'हिन्दुस्थान समाचार' को अव्यवस्था के दलदल में फंसाकर उसे बंद करने का पूरा बंदोबस्त कर दिया[16]।

केन्द्र सरकार का विरोधी रूख-

कांग्रेस सरकार तो स्थापना काल से ही इस संवाद समिति के प्रति एकतरफा सोच रखती थी। इसमें कांग्रेस नेताओं को हमेशा 'हिन्दुस्थान समाचार' संघ के स्वयंसेवकों के द्वारा खड़ी किये जाने के कारण कभी पसंद नहीं आई। एक तरफ सरकार पी.टी. आई. यू. एन. आई. और समाचार भारती का पर्याप्त आर्थिक सहायता देती थी। वहीं 'हिन्दुस्थान समाचार' को वह न्यूज सेवाओं के नाम से। इन समाचार एजेंसियों की तुलना में दस प्रतिशत राशि भी मुहैया नहीं करानी थी। जबकि सरकार यह भली भाँति जानती थी कि 'हिन्दुस्थान समाचार' भारतीय भाषाओं के संवर्धन और विकास के लिए कार्य रही संवाद समिति है।

दूसरी तरफ अराष्ट्रवादी वर्ग के लोग नहीं चाहते थे कि हिन्दुस्थान समाचार का काम चले और आगे बढ़े। इसलिए इस एजेंसी को समाप्त करने की योजना बनाई जाने लगी। यहीं से हिन्दुस्थान समाचार का संघर्षकाल शुरू हो गया।

संवाद समिति को बंद कराने का षड़यंत्र-

हिन्दुस्थान समाचार धीरे-धीरे आर्थिक रूप से कमजोर पड़ने लगी। वहीं इस मौके का फायदा उठाते हुए भारत सरकार ने 'हिन्दुस्थान समाचार' प्रवर समिति को-**'कारण बताओ नोटिस'** जारी किया। फिर दिल्ली सहकारी समितियों के

रजिस्ट्रार ने 'हिन्दुस्थान समाचार' में प्रशासक की नियुक्ति कर दी। उसके बाद इस संस्था के साथ सरकार षड्यंत्रपूर्ण प्रयोग करने लगी। एक के बाद एक प्रशासक बदले जाते रहे और आखिरकार मार्च 1986 में इसे सहकारी समिति रजिस्ट्रार ने घाटे में चलने वाली संस्था बताकर इसे बंद करने का फरमान सुना दिया। इसके अलावा गोयनका समिति की सिफरिशों ने भी **'हिन्दुस्थान समाचार'** को डुबाने का काम किया। सरकार ने यह जो समिति बनाई, इसमें रामनाथ गोयनका अध्यक्ष बनाये गये। जो कि पी.टी.आई. और इंडियन एक्सप्रेस समूह के पहले ही अध्यक्ष थे। श्री गोयनका के बारे में कहा जाता है कि, वे भारतीय भाषाओं से कहीं ज्यादा अंग्रेजी को पसंद करते थे। इसके अलावा उनके जो सहयोगी थे वे श्री नरेन्द्र, श्री एम.एस. अग्रवाल तथा श्री रमेश चंद्र यह भी भाषाई दृष्टि से अंग्रेजी के अधिक करीब थे। वस्तुतः गोयनका समिति की सिफारिशें भारतीय भाषाओं के लिए किये जा रहे प्रयासों पर ग्रहण के समान था। जिसने पत्रकारिता के माध्यम से चले भाषायी अभियान को काले साये में घेर लिया, साथ ही साथ हिन्दुस्थान समाचार के बारे में सरकार की मंशा स्पष्ट हो गई थी। इस पूरे प्रकरण के संबंध में श्री के. एम. श्रीवास्तव कहते हैं-

गोयनका समिति की सिफारिशों ने 'हिन्दुस्थान समाचार' के लिए मृत्यु की घोषणा कर दी। 17 अगस्त 1985 सहकारी समितियों के रजिस्ट्रार ने हिन्दुस्थान समाचार के शेयर होल्डरों की बैठक बुलाई और नई प्रबंध समिति का गठन किया गया। नई गठित 15 सदस्यीय इस समिति में से 12 लोग अंशधारक नहीं थे। जबकि किसी भी सहकारी समिति द्वारा पंजीकृत संस्था के सदस्य बनने के लिए उसका शेयरहोल्डर होना आवश्यक है। समिति के अध्यक्ष का चुनाव भी असंवैधानिक तरीके से हुआ था। सरकार द्वारा इस प्रकार के उठाए जा रहे कदम से यह बात लगभग स्पष्ट हो गयी थी कि वह 'हिन्दुस्थान समाचार' को किसी भी प्रकार से बंद करना चाहती है[17]।

हिन्दुस्थान समाचार में धनाभाव

'हिन्दुस्थान समाचार' समिति के कार्य में केन्द्र सरकार ने राजनीति से प्रेरित होकर अपना हस्तक्षेप शुरू कर दिया। तब उसका प्रत्यक्ष प्रभाव इस बहुभाषी संवाद समिति के समाचार संकलन और प्रेषण के कार्य पर हुआ। देश भर में पत्रकारों का फैला सघन नेटवर्क जो न्यूज एजेंसी 'हिन्दुस्थान समाचार' की पहचान थी, इससे टूटकर पत्रकार अन्य समाचार पत्र-पत्रिकाओं और संवाद समितियों की सेवा में जाने लगे। जब अनुभवी पत्रकार 'हिन्दुस्थान समाचार' की सेवा से मुक्त होने लगे तो इसका बहुत गहरा प्रभाव समाचार संकलन पर हुआ। वहीं अनेक समाचार पत्रों ने एजेंसी

की इन बुरे हालातों का फायदा उठाना अपने आर्थिक हितों के लिए हितकर समझा। उस समय देश के हिन्दी भाषा सहित अन्य भारतीय भाषाओं के सैकड़ों अखबार थे जो हिन्दुस्थान समाचार के नियमित ग्राहक थे। हर महीने इनसे मिलने वाली राशि का आना धीरे-धीरे कम होने लगा। कई समाचार पत्रों पर एक एक साल का बकाया चढ़ गया। किन्तु हिन्दुस्थान समाचार के साथ जो राजनीतिक षड़यंत्र चल रहा था, उसके कारण इस संस्था का शीर्ष नेतृत्व समस्याओं में ही उलझा रहा। 1986 आते-आते समाचार प्रेषण का कार्य रूक गया। इस कारण उन सभी भाषाई समाचार पत्रों को कठिनाईयों का सामना करना पड़ा जो सिर्फ हिन्दुस्थान समाचार की न्यूज सेवा पर निर्भर थे। उधर आर्थिक संकट ने भी विकराल रूप धारण कर लिया।

"केंद्र की सरकार तो इसे बंद करने की ठान ही चुकी थी। 11 मई 1982 में को ऑपरेटिव एक्ट के तहत पंजीकृत इस समाचार समिति में केन्द्र सरकार ने अपना प्रशासनिक अधिकारी भी नियुक्त कर दिया, जिसके तीन वर्ष के कार्यकाल में इस संवाद समिति पर लाखों रुपए का कर्ज चढ़ा[18]। संसद में उठे एक प्रश्न के उत्तर में सरकार ने यह स्वीकार किया कि इसे 60 लाख रुपए का वित्तीय घाटा हुआ है। वास्तव में यह घाटा ही इस एजेंसी को ले डूबा।"

"केन्द्र सरकार को तो बहाना चाहिए था और उसे इस एजेंसी के घाटे में चलने का बहाना मिल गया। परिस्थिति का लाभ उठाते हुए सहकारी समिति की धारा 77 के तहत सहकारी समितियों के रजिस्ट्रार ने 'हिन्दुस्थान समाचार' को समाप्त करने की पूरी कोशिश की और कुछ सीमा तक अपनी योजना में सफल भी हो गये[19]।"

देशभर में **'हिन्दुस्थान समाचार'** से जुड़े पत्रकारों को अब वेतन मिलना बंद हो गया था। संस्था पर उनके कई-कई महीनों का वेतन चढ़ गया। परिस्थिति को देखते हुए ज्यादातर पत्रकारों ने यह आशा न करते हुए कि भविष्य में कभी उनका पैसा उन्हें मिलेगा, **'हिन्दुस्थान समाचार'** की नौकरी छोड़ दी। किन्तु कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्होंने सरकार के खिलाफ अपना पक्ष लेकर न्यायालय में जाने की ठानी। अब एक लंबी लड़ाई की शुरूआत होने वाली थी। जिसका अंत होना कुछ दिन, माह अथवा वर्षों में संभव नहीं था। न्यायालयीन लड़ाई लंबी चल पड़ी। वहीं बिगड़े हुए आर्थिक हालातों के चलते अनेकों पत्रकारों का हजारों और लाखों रुपए यहां डूब गए।

हिन्दुस्थान समाचार की कानूनी लड़ाई-

17 अगस्त 1985 को सरकारी समितियों के रजिस्ट्रार ने 'हिन्दुस्थान समाचार' अंशधारकों की बैठक बुलाकर नई प्रबंध समिति का गठन कर दिया। इस समिति में सदस्य निर्वाचित घोषित किए गए। लेकिन इसका अध्यक्ष सीताराम पांडेय को बनाया

गया जो समिति का अंशधारक ही नहीं था और बाकी जो 14 सदस्य चुने गए, उनमें से तीन को छोड़कर और कोई भी 'हिन्दुस्थान समाचार' का अंशधारक नहीं था। इस स्थिति को लेकर अंशधारकों और भारतीय भाषाओं के समर्थकों में बैचेनी का फैलना स्वाभाविक ही था। दिल्ली में भारतीय भाषाओं के प्रेमियों और हिन्दुस्थान समाचार के अंशधारकों की एक बैठक बुलाई गई। जिसमें इस संबंध में न्यायालय जाने का निर्णय लिया गया। सरकार जल्दी से जल्दी हिन्दुस्थान समाचार समिति को बंद कर देना चाहती थी। इसलिए अब एक ही रास्ता बचा था कि सरकार के इस गैर-कानूनी काम को न्यायालय में चुनौती दी जाए। इसका उत्तरदायित्व श्री चन्द्रमोहन भारद्वाज को दिया गया।

24 सितंबर 1993 को चन्द्रमोहन भारद्वाज ने दिल्ली उच्च न्यायालय में एक रिट याचिका दायर की। जिसमें यह कहा गया था कि सहकारी समिति के अंशधारकों को समिति के प्रबंध बोर्ड का चुनाव करवाकर समिति की सामान्य गतिविधियां जारी करने की आज्ञा दी जाए। याचिका के अनुसार रजिस्ट्रार ने समिति के जिस ढंग से प्रबंध बोर्ड का 17 अगस्त 1985 को चुनाव करवाया था। वह प्रबंध बोर्ड नॉन फंक्शनल हो गया है। इस याचिका पर दिल्ली उच्च न्यायालय ने सहकारी समितियों के पंजीयक को नोटिस ऑफ मोशन जारी किया[20]।

इस संबंध में **'हिन्दुस्थान समाचार'** की न्यायालयी लड़ाई लड़ने वाले श्री चन्द्र मोहन भारद्वाज का कहना है कि-"सरकार ने कानूनी अड़चनों से बचने के लिए 3 मई 1990 को 1986 में बनाई गई। समिति के प्रस्ताव को वापस ले लिया। जिसका यही अर्थ था कि सरकार ने माना कि समिति चल रही है। फिर मैंने 1991 को याचिका दिल्ली उच्च न्यायालय में दायर की। जिसमें कहा गया था कि न्यायालय द्वारा समिति के अंशधारकों को अपनी नई प्रबंध समिति चुनने की आज्ञा दी जाये इसके पीछे तर्क यह था कि जो समिति 17 अगस्त 1985 को गठित की गई थी अब वह कार्यविमुख हो चुकी हैं। मेरे तर्क को स्वीकार कर दिल्ली उच्च न्यायालय को सहकारी समिति पंजीयन रजिस्ट्रार को नोटिस जारी किया।

जब दिल्ली उच्च न्यायालय ने पंजीयन रजिस्ट्रार कार्यालय सहकारिता समिति को नोटिस जारी किया था तो उसके जवाब में जो तथ्य पंजीयक रजिस्ट्रार गीता सागर द्वारा प्रस्तुत किये गये वह अधिक चौकाने वाले थे।

1. 1993 में समिति के कुल सदस्यों की संख्या 47 है और 30 जून 1982 की ऑडिट रिपोर्ट के अनुसार शेयर होल्डरों की संख्या 153 थी।
2. समिति के अध्यक्ष सीताराम पांडे और अन्य सदस्यों से सम्पर्क की कोशिश की जा रही है, ताकि यह पता लगाया जा सके कि क्या समिति कार्य करने को स्थिति में है।

3. समिति के अध्यक्ष सीताराम पांडे किसी समिति में 2 करोड़ के गबन के आरोप में जेल में थे और जल्द ही जमानत पर छूटे हैं।
4. समिति के शेयरहोल्डर सारे देश में फैले हुए हैं। इसलिए उनसे संपर्क करना और चुनाव कराना संभव नहीं है।
5. विभाग द्वारा करायी गयी जाँच से स्पष्ट हो गया है कि प्रबंध समिति के चुनाव करवाने से भी कोई लाभ नहीं होने वाला है, अत: समिति को बंद करने के अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं है।

इस प्रकार सहकारी समितियों के रजिस्ट्रार द्वारा हिन्दुस्थान समाचार समिति को समाप्त करने की पूरी कोशिश शुरू कर दी। वह किसी भी प्रकार से समिति द्वारा किये जा रहे निवेदन पर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं समझ रही थी। हालांकि समाचार समिति के कार्यकर्ताओं द्वारा हिन्दुस्थान समाचार को पुनर्स्थापित करने के प्रयास लगातार तेज होने लगे थे।

चंद्र मोहन भारद्वाज अकेले ऐसे व्यक्ति थे जो इस संवाद समिति के बंद हो जाने के बाद इसके पक्ष में संघर्ष करते रहे। न्यायालय में को ऑपरेटिव पंजीयन कार्यालय में संघर्ष करते रहे।

श्री चंद्रमोहन भारद्वाज जब **'हिन्दुस्थान समाचार'** में बतौर कर्मचारी टाइपिस्ट नियुक्त किये गये थे। पालेकर समिति की सिफारिशों के लागू होने का लाभ श्री भारद्वाज को भी मिला और संवाद समिति में उनकी पदोन्नति हो गई। जब इस संवाद समिति पर सरकार का कहर टूटा और योजनाबद्ध तरीके से इसे बंद करने की तैयार की गई। तब इन्होंने हो सबसे पहले न्यायालय का दरवाजा खटखटाया। श्री भारद्वाज को विश्वास था कि देशभर की एकमात्र बहुभाषी संवाद समिति के साथ गलत हो रहा है। जिसका प्रतिकार किया जाए तो एक दिन अवश्य सत्य सभी के सामने आयेगा और निर्णय हिन्दुस्थान समाचार के पक्ष में हो होगा।

यह लड़ाई अब लंबी चलने वाली थी, यह जानकर जब उन्होंने संघर्ष करने की तैयारी की तब उनके साथ कोई नहीं था। घर का पैसा और अपना समय लगाकर चंद्रमोहन भारद्वाज 'हिन्दुस्थान समाचार' बहुभाषी संवाद समिति के पक्ष में रजिस्ट्रार को-ऑपरेटिव के निर्णय के खिलाफ न्यायालयीन लड़ाई लड़ने लगे। इस संबंध में श्री भारद्वाज का कहना है कि-'उन्होंने रजिस्टार के निर्णय को जब उच्च न्यायालय-दिल्ली में चैलेंज किया तो किसी का विश्वास नहीं था कि निर्णय संवाद समिति के पक्ष में आयेगा।' न्यायालय ने जब सरकारी समितियों के पंजीयक को 'नोटिस ऑफ मोशन' भेजा। तब लोगों को लगा कि अब कुछ हुआ। फिर भी **हिन्दुस्थान समाचार समिति** के लोगों को भरोसा नहीं हो पा रहा था कि हम यह लड़ाई जीत जायेंगे। इस संबंध में चंद्रमोहन भारद्वाज ने बताया कि-"मुझे विश्वास था कि जो

प्रकरण 'मैं' उच्च न्यायालय दिल्ली तक लेकर गया हूँ उसका फैसला हिन्दुस्थान समाचार के पक्ष में ही आयेगा"। इसका कारण यह भी था कि हमारे पास ऐसे बहुत से तथ्य और कागजात मौजूद है। जिनकी अनदेखी नहीं की जा सकती थी। यह संघर्ष निरंतर 8 वर्षो तक जारी रहा[21]।"

हिन्दुस्थान समाचार को मिली आशा की किरण-

दिसंबर 1997 में दिल्ली उच्च न्यायालय ने अपना निर्णय देते समय सहकारी संस्थाओं के दिल्ली राज्य पंजीयक को निर्देश दिया कि हिन्दुस्थान समाचार सरकारी संस्था का काम या तो फिर से शुरू किया जाए अथवा उसे सदा के लिये पूर्ण बंद कर दिया जाए। **(Court Either you revive it or desolve it completely)** इस निर्णय में दिल्ली सहकारिता पंजीयक की स्थिति बड़ी विचित्र सी बन गई थी।

अंतत: 2001 में रजिस्ट्रार पंजीयक द्वारा पत्र भेजा गया कि यदि **हिन्दुस्थान समाचार समिति** को प्रारंभ करना है तो इसे शुरू किया जा सकता है। पत्र मिलने के बाद **हिन्दुस्थान समाचार संवाद समिति** के पक्ष में संघर्ष कर रहे श्री चंद्रमोहन भारद्वाज को आशा की किरण नजर आयी। इसी समय वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख **श्री श्रीकांत जोशी** के संपर्क में आये।

हिन्दुस्थान समाचार संवाद समिति के उद्धारक श्रीकांत शंकरराव जोशी

श्री जोशी जी रा. स्व. संघ के तृतीय सरसंघचालक श्री बाला साहेब देवरस के निजी सहायक भी रह चुके थे और वे 'हिन्दुस्थान समाचार' की सभी पूर्व परिस्थितियों से भली-भाँति परिचित थे। श्री चंद्रमोहन भारद्वाज को श्री श्रीकांत जी का साथ मिला तो वर्षो से 'हिन्दुस्थान समाचार' के पक्ष में जारी संघर्ष का सुफल मिल गया। इस संवाद समिति को पुन: प्रारंभ करने की योजना बनाई जाने लगी। 'हिन्दुस्थान समाचार' से संबंधित न्यायालय का फैसला आने के बाद जितने पत्रकार

इससे जुड़े थे और जिनकी पूंजी एवं वेतन आदि इस समिति में फंस चुके थे। उनक पूंजी भी चंद्रमोहन भारद्वाज ने वापस करा दी[22]।

आश्चर्य की बात यह है कि भारतीय भाषा के समाचार देने वाली इस समिति की लंबी न्यायालीय लड़ाई का समाचार किसी भी अखबार में नहीं छपा। बस न्यायालय से सकारात्मक फैसला आने का समाचार **'जनसत्ता'** में रामबहादुर राय द्वारा छापा गया। **'द हिन्दू'** में भी इसकी खबर छपी[23]।

हिन्दुस्थान समाचार का नवोत्थान

हिन्दुस्थान समाचार की पुनर्प्रतिष्ठा का श्रेय प्रमुख रूप से दो लोगों को दिया जा सकता है। प्रथम श्री चन्द्रमोहन भारद्वाज जिन्होंने न्यायालयीन लड़ाई लड़ी और **हिन्दुस्थान समाचार** को कागजों में जीवित रखा। द्वितीय श्री श्रीकांत जोशी जो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक थे। वर्ष 2000 में जब चंद्र मोहन भारद्वाज से श्री श्रीकांत जोशी जी का संपर्क हुआ तो उन्होंने जाना कि इस संवाद समिति को पुनर्स्थापित किया जा सकता है। इस कालावधि में श्री जोशी रा. स्व. संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख थे। इसलिए उनका देशभर में कार्यकर्ताओं से संपर्क और निरंतर प्रवास होता था। हिन्दुस्थान समाचार की एक बार चर्चा शुरू हो जाने के बाद श्रीकांत जोशी ने इस संवाद समिति से जुड़े पूर्व पत्रकारों एवं अंशधारकों से मिलना शुरू किया। उनके ध्यान में आया कि सभी लोग मृतप्राय पड़ी इस भाषायी न्यूज एजेंसी को पुनः प्रारंभ होते हुए देखना चाहते हैं।

अपने देशभर में प्रवास के दौरान श्रीकांत जोशी ने यह भी जाना कि इस संवाद समिति को पुनः प्रारंभ करने में जो सबसे बड़ी कठिनाई है, वह है इस न्यूज एजेंसी के पूर्व में जुड़े निदेशक मंडल के सदस्यों को इकट्ठा करना। वहीं दूसरी कठिनाई नेतृत्व का अभाव है। यदि एक समूह बनाकर उचित नेतृत्व खड़ा किया जाए तो निश्चित ही यह संवाद समिति पुनः न केवल उठ खड़ी होगी बल्कि अन्य न्यूज एजेंसियों की तुलना में तेज गति से चल पड़ेगी।

इस संबंध में वर्तमान अखिल भारतीय मार्गदर्शक संरक्षक श्री लक्ष्मी नारायण भाला का कहना हैं कि वर्षो तक हमारे कार्यकर्ता पूरी मेहनत और ईमानदारी से लड़े। न्यायालय ने कहा कि–आप इस संस्था को पुनर्जीवित कर सकते हैं या इसको समाप्त करने का अधिकार भी आपके पास है। यह जानकर तमाम साधनों के अभाव में भी निर्णय लिया गया कि इस संस्था को पुनः खड़ा करना ही उचित है[24]।

किसी को यह विश्वास नहीं था कि मृत पड़ी यह बहुभाषी संवाद समिति एक दिन फिर देश की प्रमुख न्यूज एजेंसियों में अपना स्थान बना लेगी। निश्चित तौर पर इसे खड़ा करने का श्रेय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक श्री श्रीकांत

जोशी को जाता है। यह उनका ही संकल्प था जो आज संवाद समिति का पुनः अखिल भारतीय देश के सामने खड़ा है। एक-एक राज्य में चुन-चुन कर उन्होंने पत्रकारों को हिन्दुस्थान समाचार से जोड़ा और इसके कार्य को व्यापक गति प्रदान करने में सफलता प्राप्त की।

जब श्रीकांत जोशी जी ने देखा कि देश में लोग चाहते हैं कि यह समिति पुनः काम करे, तब उन्होंने इसके कार्य को अपने लिए भी महत्वपूर्ण मानकर करना शुरू किया प्रयासों को सफलता मिलने लगी और सन् 2002 में नई दिल्ली से इसकी हिन्दी एक मराठी समाचार सेवा का एक साथ कार्य प्रारंभ हुआ।

'हिन्दुस्थान समाचार' बहुराज्यीय भाषायी संवाद समिति की पुनर्जागरण के बारे में इसे पुनः शुरू करने वाले श्री श्रीकांत जोशी ने लिखा है कि "1997 के फरवरी की बात है। प्रचार प्रमुख के नाते दिल्ली में मेरा निवास शुरू ही हुआ था कि एक दिन श्री चन्द्र मोहन भारद्वाज जी से मेरा परिचय हुआ। उन्होंने मुझे बताया कि 'हिन्दुस्थान समाचार' फिर से शुरू हो इसलिए उन्होंने एक कर्मचारी के नाते दिल्ली सरकार के सहकारिता विभाग के सचिव तथा सहकारिता समितियों के रजिस्ट्रार और उनके द्वारा नियुक्त 'हिन्दुस्थान समाचार' को-ऑपरेटिव सोसायटी के प्रशासक अधिकारी के विरोध में एक मामला दाखिल किया है, कि क्यों 'हिन्दुस्थान समाचार' सहकारी समिति का काम फिर से शुरू किया जाए? इस मामले का निर्णय न्यायालय द्वारा किसी भी समय हो सकता है। यदि निर्णय कर्मचारी के पक्ष में होता है, जिसकी बहुत अधिक संभावना है, क्योंकि शासन द्वारा अवैध ढंग से अन्यायपूर्वक 'हिन्दुस्थान समाचार' के काम को बंद किया गया है, और यह बात सप्रमाण प्रस्तुत की गई है। ऐसी स्थिति में क्या हम फिर से 'हिन्दुस्थान समाचार' शुरू कर सकेंगे?[25] उस समय मैंने श्री चन्द्रमोहन जी से कहा कि-न्यायालय का निर्णय आने पर आप मुझसे दोबारा मिलें, तब तक मामले के सभी कागज पत्र मुझे पढ़ने के लिए दें। श्री भारद्वाज जी ने दो-तीन दिनों में ही आवश्यक दस्तावेजों की प्रतिलिपियां मुझे दे दीं। मैंने भी उस अवधि का सदुपयोग करते हुए देश भर के प्रवास के दौरान जहाँ जहां भी 'हिन्दुस्थान समाचार' के पुराने पत्रकार-कर्मचारियों से भेंट हुई, उनसे 'हिन्दुस्थान समाचार' के बारे में जानकारी प्राप्त करना शुरू कर दिया[26]।

श्रीकांत जोशी की बात को जानकर निश्चित ही यह कहा जा सकता है कि एक तरफ जहां चंद्रमोहन भारद्वाज ने एजेंसी के पक्ष में न्यायालय में लड़ाई जीती। वहीं दूसरी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य वरिष्ठ प्रचारक समिति के संरक्षक **श्रीकांत जोशी द्वारा वर्ष 2002** में इसका पुनरोत्थान किया गया। श्री जोशी ने देशभर में घूम-घूम कर इस निर्जीव पड़ी संवाद समिति को सक्रिय करने का बीड़ा उठाया और इसी वर्ष **नलवा गली, पहाड़गंज, दिल्ली** में पुनः संवाद समिति के नवीन कार्यालय का उद्घाटन हुआ। स्मारिका का

प्रकाशन और हिन्दी में वेबसाइट पर न्यूज अपलोड करने के साथ ही **'हिन्दुस्थान समाचार'** की समाचार सेवा प्रारंभ हो गयी।

देशभर में हिन्दुस्थान समिति के कार्यालय-

दिल्ली के बाद महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, बिहार, उत्तराखण्ड, राजस्थान, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल, गोवा, पंजाब, हरियाणा, तमिलनाडु, सिक्किम, हिमाचल प्रदेश, अंडमान निकोबार, आंध्रप्रदेश असम, अरुणाचल प्रदेश, उत्तरप्रदेश के राजधानी केन्द्रों सहित देशभर में सैकड़ों जिला कार्यालयों पर संवाद समिति के कार्यालय खोले गये। भारत के बाहर नेपाल, थाईलैण्ड, मॉरिशस आदि देशों में भी संवाद समिति के कार्यालय खुले।

उसी कालावधि में मुंबई के मराठी दैनिक 'तरुण भारत' के व्यवस्थापक के नाते कार्यरत श्री अरविंद वैशंपायन जी का भी दैनिक 'तरुण भारत' के काम से बार-बार दिल्ली आगमन होता रहता था। मूलतः मुंबई विद्यार्थी परिषद के एक कार्यकर्ता के नाते श्री वैशंपायन जी का शासन के मंत्रालय तथा अन्य विभागों से भी संपर्क रखने का अनुभव था। 'तरुण भारत' का काम करते समय उन्हें ऐसा लगा कि मराठी भाषा में एक समाचार समिति की आवश्यकता है। अतः उन्होंने भी इस विषय के बारे में अध्ययन करना शुरू किया। उसी समय 'हिन्दुस्थान समाचार' के बारे में उन्हें जानकारी प्राप्त हुई। उन्होंने भी सद्य परिस्थिति में 'हिन्दुस्थान समाचार न्यूज एजेंसी' की आवश्यकता के बारे में अपने विचार कुछ पत्रों द्वारा विविध स्तर के मीडिया से संबंधित लोगों, श्रीकांत जोशी और संघ के अन्य कार्यकताओं को भी भेजना शुरू किया था। इस कारण अनेक प्रकार से लोग इस विषय में सोचने लगे और पूछताछ भी करने लगे। अनेक पुराने पत्रकार, जो कभी हिन्दुस्थान समाचार में कार्यरत थे. वे भी बड़ी उत्सुकता से हिन्दुस्थान समाचार के पुनरारंभ का इंतजार करने लगे थे।

'हिन्दुस्थान समाचार' के पुनर्प्रतिष्ठा के संदर्भ में श्रीकांत जी ने कहा कि श्री वैशंपायन, श्री चन्द्रमोहन जी, श्री रमेश कदम तथा 'हिन्दुस्थान समाचार' के अन्य हितैषी लोगों ने एक बैठक कर यह तय किया कि 'हिन्दुस्थान समाचार' के सदस्यों के नाम व पते एकत्रित कर अंशधारकों की एक समग्र सूची बनाई जाए। देश भर के ऐसे पुराने अंशधारकों के नाम, पते तथा उनके अंशों की संख्या की जानकारी प्राप्त करने के लिए तीन महीने की समय सीमा भी निर्धारित की गई। इस कालावधि में कुछ 139 सदस्यों के बारे में सही जानकारी प्राप्त करने में उन्हें सफलता मिली। इसके बाद इनमें से कुछ अंशधारकों के हस्ताक्षर से पुनः एक आवेदन सहकारी समितियों के पंजीयक के पास भेजा गया। उसमें सहकारी पंजीयक से प्रार्थना की गई कि 'हिन्दुस्थान समाचार' सहकारी समिति के ये सभी अंशधारक सदस्य इस संस्था

के बंद पड़े कार्य को फिर से शुरू करना चाहते हैं। अत: आप अधिकृत रीति से सभी सदस्यों की एक सर्वसाधारण सभा **(General Body Meeting)** आयोजित करके संस्था के सचारू संचालन के लिए निदेशक मंडल का निर्वाचन करने में समिति की सहायता करें। समिति की सर्वसाधारण सभा में आप स्वयं उपस्थित रह कर अथवा अधिकृत प्रतिनिधि भेज कर उपरोक्त कार्य पूर्ण करें। ताकि इस तरह वैधानिक पद्धति से निर्वाचित निदेशक मंडल द्वारा समितिका कार्य शुरू हो सकेगा[27]।

सन् 2002 रा.स्व.संघ के वरिष्ठ प्रचारक श्रीकांत जोशी ने इसके पुनरोत्थान को जिम्मेदारी ली। देश भर में निर्जीव पड़ी समिति को जीवित करने का बीड़ा उठाया। समिति के विषय में यह मान लिया गया था कि यह अब समाप्त हो गई है। इसे दोबारा शुरू करना असंभव है। ऐसी स्थिति में श्रीकांत जोशी ने अपने संकल्प शक्ति से इसे प्रारंभ किया।

श्रीकांत जोशी के मार्गदर्शन में 14 अगस्त 2000 को हिन्दुस्थान समाचार सहकारी समिति के अंशधारकों की एक वार्षिक सर्वसाधारण सभा करने का निश्चित किया गया। यह सभा सांसद क्लब, नार्थ एवेन्यू नई दिल्ली में की गई। इस सभा में देश के राज्यों से 37 शेयरधारक शामिल हुए। वहीं कुछ शेयरहोल्डर्स ने इस मृतप्राय पड़ी बहुभाषी संवाद समिति हिन्दुस्थान समाचार के पुनर्जीवन के प्रति शुभकामना व्यक्त करते हुए बैठक में सम्मलित न होने पर अपना दु:ख प्रकट किया था। बैठक का सुफल यह रहा कि श्रीराम प्रसाद सिंह की अध्यक्षता में 9 सदस्यों का निदेशक मंडल चुना गया। 16 वर्षो बाद हिन्दुस्थान समाचार की यह बैठक उत्साह और आनन्द के वातावरण के बीच संपन्न हुई। इस सर्वसाधारण सभा बैठक की समाप्ति के तुरंत बाद नवनिर्वाचित निदेशक मंडल की बैठक हुई। जिसमें अध्यक्ष जी. आर. माधवराव, उपाध्यक्ष श्रीराम प्रसाद सिंह, सचिव डॉ. नंद किशोर त्रिखा और कोषाध्यक्ष के रूप में डॉ. रविन्द्र अग्रवाल को निर्वाचित किया गया।

इसके साथ ही सर्वश्री मनमोहन शर्मा, रामशंकर अग्निहोत्री, रमाशंकर बसन्त देशपांडे, सोहन मलहोत्रा, कुमार मोहन चलम व बनवारी बजाज सदस्य चुने गये। 19 अगस्त को दिल्ली सरकार के सहकारिता पंजीयक ने इस समिति को कानूनी तौर पर मान्यता दे दी।

16 अगस्त 2000 के दिन श्री राम जी प्रसाद सिंह, श्री नंद किशारी, श्री चंद्रमोहन जी और श्री रविन्द अग्रवाल तथा परामर्शदाता **(Consultant)** के नाते श्री. अरविंद वैशंपायन आदि प्रतिनिधि ऑपिलेट ट्रिब्यूनल के सम्मुख प्रस्तुत हुए। उन्होंने 14 अगस्त 2000 के दिन हुई हिन्दुस्थान समाचार समिति की सर्वसाधारण सभा का वृतांत तथा उसमें पारित प्रस्ताव की प्रतिलिपि के साथ नवनिर्वाचित निदेशक मंडल को हिन्दुस्थान समाचार समिति द्वारा अपना पूर्व का कार्य फिर से शुरू करने का अवसर प्रदान करने वाला अनुरोधयुक्त निवेदन प्रस्तुत किया। ऑपिलेट ट्रिब्यूनल

ने प्रतिनिधिमंडल का कथन अत्यंत शांति से सुनकर और लिखित निवेदन स्वीकार करके अपना निर्णय थोड़े ही दिनों में सूचित करने का आश्वासन भी दिया। कुछ ही दिनों बाद ट्रिब्यूनल ने पत्र द्वारा सूचित किया कि, नवनिर्वाचित निदेशक मंडल को हिन्दुस्थान समाचार का कार्य फिर से शुरू करने के लिए अनुमति दी जा सकती है। लेकिन निदेशक मंडल को एक हलफनामा सहकारिता विभाग को लिखकर देना होगा। ट्रिब्यूनल ने कुछ शर्तें सूचित की थी। इसका जवाब पत्र द्वारा देते समय निदेशक मंडल ने ट्रिब्यूनल की इस सूचना को सहर्ष स्वीकार करते हुए आवश्यक हलफनामा भी लिखकर भेज दिया। इस पत्र के बाद एक वर्ष से भी अधिक समय तक प्रत्यक्ष कार्य करने की दृष्टि से जगह प्राप्त करने, साधन जुटाने तथा योग्य पत्रकार कार्यकर्ता प्राप्त करने में समिति सक्रिय हो गई।

सबसे पहले हिन्दुस्थान समाचार समिति ने हिन्दी और मराठी समाचार सेवा को प्रारंभ किया। अंततः 24 अप्रैल 2002 के दिन दिल्ली में लुधियाना के राज्यसभा सदस्य श्री लाला लाजपत राय जी के 32, राजेन्द्र प्रसाद रोड स्थित सरकारी निवास से तथा मुम्बई में हाशिम बिल्डिंग, नरीमन रोड, हुतात्मा चौक स्थित भारतीय मजदूर संघ के कार्यालय के एक भाग में हिन्दी-मराठी संचार सेवा का शुभारंभ माननीय श्री दर्शनलाल जैन के करकमलों से संपन्न हुआ। इस तरह से हिन्दुस्थान समाचार सहकारी समिति का प्रतिदिन का संवाद संकलन व प्रेषण का कार्य प्रारंभ हो गया[28]।

हिन्दुस्थान समाचार का अखिल भारतीय स्वरूप-

'हिन्दुस्थान समाचार' बहुभाषी संवाद समिति का पुनः कार्य प्रारंभ होने के बाद जो सबसे बड़ी चुनौती थी वह थी अपनी खोई प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त करने की। इसके लिए जरूरी था कि पूर्व की भांति यह न्यूज एजेंसी अपने अखिल भारतीय स्वरूप को प्राप्त करे। इस दिशा में अब चर्चा और मंथन का दौर शुरू हो गया। इस नवोत्थान के समय श्री श्रीकांत जोशी ने भारत के प्रत्येक राज्य में प्रवास करते हुए संवाद समिति के लिए योग्य प्रतिनिधियों का चुनाव करना शुरू किया। वहाँ आधुनिक तकनीक आधारित कार्य के लिए नई वेबसाईट निर्माण का काम प्रारंभ हुआ। इसके बाद हिन्दुस्थान समाचार ने भाषायी पत्रकारिता में अपना प्रमुख योगदान देने के लिए हिन्दी और मराठी के बाद अन्य भारतीय भाषाओं गुजराती, असमिया, उड़िया, बांग्ला, नेपाली और कन्नड़ में अपनी समाचार सेवा प्रारंभ की। द्वितीय चरण में इस संवाद समिति ने सिंधी, तमिल, मलयालम, तेलगू और संस्कृत भाषा में समाचार देने का काम प्रारंभ किया।

इन भाषायी समाचार प्रेषण से हिन्दुस्थान समाचार को पुनः प्रतिष्ठा प्राप्त होना शुरू हो गई। इसके अलावा इस न्यूज एजेंसी का अखिल भारतीय स्वरूप भी

दिखने लगा। समिति के पहले संपादक बनाये गये श्री रविन्द्र अग्रवाल। इसके बाद डॉ. कुलदीप चंद्र अग्निहोत्री ने संपादन का कार्य देखना शुरू किया। श्री कुलदीप जी की अन्य प्रमुख भूमिकाएं भी इस संवाद समिति में महत्वपूर्ण रहीं। अनिरुद्ध शर्मा इसके सचिव के रूप में कार्य देखने लगे। वहाँ श्रीराम जोशी जो तरुण भारत (नागपुर) के वरिष्ठ पत्रकार थे। इनका हिन्दुस्थान समाचार में मुख्य कार्यकारी अधि कारी के आना हुआ। यहां यह बताना उचित होगा कि श्रीराम जोशी संवाद समिति के पुनर्जीवन के पश्चात बनी 'निदेशक मंडल' के बाद पुनः जो निदेशक मंडल चुना गया था उसके भी सदस्य थे। लेकिन इनके कार्य को देखते हुए तरूण भारत से आग्रह कर इन्हें दो वर्ष के लिए हिन्दुस्थान समाचार की सेवा में लिया गया। बाद में यहां इनका कार्यकाल बढ़ता रहा और श्री जोशी जी 2010 तक इस संवाद समिति में सीईओ के पद पर कार्यरत रहे। वस्तुतः 2007 से लेकर 2013 के बीच साढ़े 6 बर्ष के कार्यकाल में हिन्दुस्थान समाचार में अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त करने की दिशा में महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की।

इस संबंध में संवाद समिति के सचिव एवं सीईओ ने बताया है कि-जब **हिन्दुस्थान समाचार बहुभाषी संवाद समिति** न्यूज ऐजेंसी का काम फिर से शुरू हुआ। तब हमारे सामने एक नहीं अनेक चुनौतियां थी। सबसे बड़ा संकट समर्पित पत्रकारों के संगठन को बड़ा करने तथा पूंजी का था। लेकिन माननीय श्रीकांत जोशी जी के नेतृत्व और सभी के सामूहिक प्रयत्नों से हमने दोनों ही समस्याओं के समाधान में सफलता प्राप्त की। वर्तमान में ऐसी कौन सी संस्था या न्यूज ऐजेंसी है जिसके सामने चुनौती न हो। मीडिया चैनलों के बाद न्यूज मीडिया के आने से आज सभी संवाद समितियों के सामने अपने अस्तित्व को बनाए रखने का संकट खड़ा है। जिसमें क्षमता होगी वहीं आगे टिका रहेगा। हमारा प्रयास है कि हिन्दुस्थान समाचार भाषायी पत्रकारिता में अपने स्वर्णिम अतीत की तरह पुनः प्रतिष्ठा प्राप्त करे। आज जिस तरीके से इस संवाद समिति में कार्य चल रहा है उसे देखते हुए स्वर्णिम भविष्य का अंदाजा लगाया जा सकता है। हम आशान्वित है और यह विश्वास सहज ही किया जाना चाहिए कि देशभर में श्रेष्ठ पत्रकारों की टोली के साथ हिन्दुस्थान समाचार आने वाले कल में भी हर चुनौती का सामना करने में सक्षम है[29]।

इसके बावजूद भी यह कहना होगा कि अभी भी 'हिन्दुस्थान समाचार' के सामने अन्य संवाद समितियों के बीच अपने को श्रेष्ठतम सिद्ध करने की चुनौती बनी हुई है। विशेषकर हिन्दी भाषी क्षेत्र में पीटीआई, आईएएनएस और यूएनआई की तरह स्वयं को स्थापित करने में सफलता प्राप्त करने की चुनौती आज भी बरकरार है। फिर भी यह कहना उपयुक्त होगा कि जिन परिस्थितियों में यह संवाद समिति प्रारंभ हुई उसे देखते हुए आज 'हिन्दुस्थान समाचार' ने बहुत थोड़े समय में अत्यधिक प्रगति की है।

संवाद संकलन और प्रसारण शैली

'हिन्दुस्थान समाचार' बहुभाषी संवाद समिति ने आधुनिक दौर को देखते हुए अपने संवाद संकलन और प्रसारण शैली के तरीकों को अपनाया। 'हिन्दुस्थान समाचार' मीडिया जगत में अपनी पुनर्प्रतिष्ठा के लिए किस प्रकार संवाद संकलन का काम करेगा। इसकी एक झलक **जनवरी 2003 में प्रकाशित नवोत्थान अंक** से मिलती है। समाचार संकलन की दृष्टि से हिन्दुस्थान समाचार की विशेषता जिला व तहसील केन्द्रों पर उसके संवाददाता रहे हैं। 'हिन्दुस्थान समाचार' अपने इस पुराने आधार का पुनः उपयोग करेगा। इसके साथ ही दुनियाभर में फैले प्रवासी बंधुओं का सहयोग लिया जाएगा तथा विश्वभर में महत्वपूर्ण स्थानों पर संवाददाता नियुक्त किए जाएंगे, जिससे हिन्दुस्थान समाचार को एक **विश्व संवाद सेवा (Global News Agency)** के रूप में विकसित किया जा सके। इससे भारत के साथ-साथ अन्य देशों के सांस्कृतिक व मानवीय सम्बन्ध सुदृढ़ करने में मदद मिलेगी।

हिन्दुस्थान समाचार में कार्य विभाजन की दृष्टि से प्रारंभ में त्रि-स्तरीय व्यवस्था का निर्माण किया गया। इसके ऊपर इस व्यवस्था पर नजर रखने तथा बाहर से अपनी हर संभव सहायता उपलब्ध कराने के लिए हिन्दुस्थान की सहकारिता समिति है, जिसका शक्तियां अध्यक्ष और सचिव में निहित है। त्रि-स्तरीय इस व्यवस्था में सबसे आगे प्रधान सम्पादक की रखा जा सकता है। हिन्दुस्थान समाचार को नई यात्रा में पहले संपादक बने-वरिष्ठ पत्रकार श्री रविन्द्र अग्रवाल। प्रशासनिक अधिकारी के रूप में आशुतोष भटनागर आए। श्री भटनागर मूलरूप से पत्रकार थे और इस समय राष्ट्रवादी पत्रकारिता में संलग्न थे, श्री श्रीकांत जोशी उन्हें यहाँ कार्य करने के लिए ले-आप संस्था में वित्त की व्यवस्था एक महत्वपूर्ण कड़ी थी, इसके लिए श्री चन्द्रमोहन भारद्वाज कोलेखा अधिकारी के रूप में जिम्मेदारी दी गई।

इस व्यवस्था को हिन्दुस्थान समाचार के संदर्भ में शुरूआती दौर का प्रयोग भी माना जा सकता है। स्वयं जैसा कि चन्द्रमोहन भारद्वाज ने कहा-**हिन्दुस्थान समाचार** के शुरू होने जा रहे काम को लेकर सभी आश्वस्त नहीं थे कि यह कार्य फिर में विराट रूप ले लेगा। इसकी सफलता का सबसे अधिक भरोसा यदि किसी को था तो वह थे-माननीय श्रीकांत जोशी जी। देखा जाय तो उन्हीं के विश्वास पर सभी की आस्था थी। इस न्यूज एजेंसी को चलाने के लिए जो शुरूआती रचना बनी, वह एक व्यवस्था से ज्यादा प्रयोग अधिक था यह अलग बात है कि प्रारंभ में एक दम से न दिखने वाला यह प्रयोग अपनी सिद्धता के साथ पूरी तरह सफल हो गया क्योंकि इसके पीछे श्रीकांत जोशी जी का तप था[30]।

इस नये कालखण्ड में **'हिन्दुस्थान समाचार'** के सामने जो सबसे बड़ी आवश्यकता थी-वह थी इस संवाद समिति को चलाने के लिए धन की व्यवस्था का

होना। इसके लिए सर्वप्रथम स्मारिकाओं के प्रकाशन की योजना बनाई गई। इसकी जिम्मेदारी दी गई वरिष्ठ-स्तंभकार एवं अनेक पुस्तकें लिख चुके डॉ. कुलदीप चंद्र अग्निहोत्री को। उन्होंने अपने संपादक में प्रारंभिक स्मारिकाओं का प्रकाशन किया। इनके लिए एकत्र करने का काम संवाद समिति से जुड़े अन्य सदस्यों ने किया। वहीं राष्ट्रवादी पत्रकारिता कल्याण न्यास जो पत्रकारों के हित के लिए कार्यरत है, ने भी 'हिन्दुस्थान समाचार' को आर्थिक सहयोग देना शुरू किया। इसके कारण दिल्ली में समाचार संपादक, विशेष संवाददाता, संवाददाता, उप संवाददाता, डेक्स पर कार्य करने वाले संवाददाताओं के साथ अन्य स्थानीय पत्रकारों का निर्माण हुआ। यह सभी समाचार संकलन और प्रेषण का कार्य करने लगे। शुरुआत में दैनिक स्वदेश इंदौर, दैनिक स्वदेश ग्वालियर, मध्य स्वदेश गुना, स्वदेश झांसी में हिन्दीसमाचार सेवा और मराठी समाचार सेवा का प्रारंभ तरुण भारत नागपुर, मुंबई, शोलापुर में हुआ। इसके अलावा मध्यप्रदेश सरकार, छत्तीसगढ़, उत्तराखण्ड, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश इत्यादि राज्यों की सरकारों ने हिन्दुस्थान समाचार की न्यूज स्केन सेवा लेना प्रारंभ की। दिल्ली सहित पूरे देश में आगे जिन पत्रकारों ने इसका प्रमुखता से कार्य संभाला, उनमें प्रमुख नाम गिनाये जा सकते हैं- डॉ. नंद किशोर त्रिखा (दिल्ली), डॉ. रवीन्द्र अग्रवाल (दिल्ली), डॉ. कुलदीप चन्द्र अग्निहोत्री (दिल्ली), श्रीराम जोशी (दिल्ली), श्री आशुतोष भटनागर (दिल्ली), श्री अशोक चौरसिया (दिल्ली), श्रीमती विनया जोशी (दिल्ली), संजय दीक्षित (दिल्ली), डॉ॰ मनोज चतुर्वेदी (दिल्ली) श्री माधव राव घंगुड़े (मुंबई), श्री विवेक ओझे (मुंबई), श्री अंजनी कुमार झा (भोपाल), डॉ. मयंक चतुर्वेदी (भोपाल), श्री विवेक सक्सेना (रायपुर), श्री समन्वय नंदा (रायपुर), श्री संजय जेना (भुवनेश्वर), श्री रमाशंकर राय (गुवाहाटी), श्री विनोद पाण्डेय (अहमदाबाद), श्री राजेन्द्रपाल शर्मा (अण्डमान), श्री मंगल पाण्डेय (रांची), श्री शिवेन्द्र प्रसाद (पटना), श्री अमृत जोशी (हुबली), श्री दीपक टाटिया (जयपुर), श्री पंकज सोनी (जयपुर)[31]।

इन पत्रकारों के बाद धीरे-धीरे अन्य पत्रकार भी देश के अलग-अलग राज्यों में हिन्दुस्थान समाचार से जुड़ने लगे। इसके बाद हिन्दुस्थान समाचार संवाद समिति का अखिल भारतीय स्वरूप सभी के समक्ष प्रकट हुआ। संवाद समिति ने अपनी समाचार सेवा के साथ आलेख सेवा नवोत्थान लेख सेवा के नाम से शुरू की, जिसके प्रधान संपादक डॉ. कुलदीप चंद अग्निहोत्री हैं।

हिन्दुस्थान समाचार की वेबसाइट-

'हिन्दुस्थान समाचार' की संवाद संकलन और प्रेषण के लिए उपयोग में लायी गई वेबसाइट के बारे में स्वयं श्री श्रीकांत जोशी लिखते हैं कि- जब हिन्दुस्थान समाचार

के नवोत्थान की कल्पना साकार करने का विचार हुआ, तब उसके लिए नये तंत्रज्ञान अर्थात तकनीकी व प्रौद्योगिकी का उपयोग करना आवश्यक समझा गया है, इस मुद्दे पर समिति के सभी सदस्यों ने एक राय प्रकट की। नये युग की प्रौद्योगिकी यानि अंतरताना (इंटरनेट तथा वेबसाइट) का उपयोग समाचार संकलन व वितरण के लिए करने की आवश्यकता को ध्यान में लेकर उस दिशा में क्या-क्या करना चाहिए, इस पर भी चर्चा हुई। सर्वप्रथम हिन्दुस्थान समाचार की एक वेबसाइट होना आवश्यक है, ऐसा सभी ने माना। इस वेबसाइट के निर्माण की कहानी भी बहुत प्रेरक सिद्ध हुई। एक बार मुझे काम से पुणे जाना पड़ा।

स्टेशन पर मुझे लेने के लिए श्री गोविन्द सोवले नाम के एक साफ्टवेयर इंजीनियर अपनी गाड़ी लेकर आए थे। गाड़ी में बैठते ही मैंने उनसे परिचय प्राप्त कर लिया वे साफ्टवेयर इंजीनियर हैं और व्यवसाय भी करते हैं। यह जानकारी प्राप्त होते ही गाड़ी में ही मैंने **'हिन्दुस्थान समाचार' की संभावित वेबसाइट** के निर्माण के विषय में बातचीत करना शुरू कर दिया। उन्होंने पूछा, वेबसाइट किस नाम से बनानी है। मैंने कहा 'हिन्दुस्थान समाचार' नाम से निर्मित करनी है। उन्होंने पूछा कि 'हिन्दुस्थान समाचार' शुरू हो चुका है। मैंने कहा नहीं, लेकिन जब शुरू करना होगा तब उस नाम से एक वेबसाइट होना आवश्यक है[32]। तब उन्होंने कहा कि उसके लिए वेबसाइट के नाम का पंजीयन करना पड़ता है। मैंने पूछा वह कैसे होगा? तब उन्होंने मुझे पंजीयन कैसे होता है, इसकी पूरी जानकारी दी। उन्होंने पूछा किस नाम से पंजीयन करना है तो मैंने कहा 'हिन्दुस्थान समाचार' के नाम से। तब सोवले जी बोले ठीक है मैं देखता हूँ कि इस नाम से वेबसाइट उपलब्ध है या नहीं। पुनः तीन दिनों के बाद वे मुझे स्टेशन छोड़ने गाड़ी लेकर आए और बताया कि यह साइट तो खाली नहीं है। मैंने पूछा फिर क्या करना चाहिए? वे बोले किसी दूसरे के नाम से पंजीयन करना होगा, इसके लिए उसकी स्पैंलिग में बदल करके अथवा बीच में अन्य अक्षर, अंक, या रेखा डालकर भी करना संभव है। मैंने उन्हें कहा कि किसी भी तरह से 'हिन्दुस्थान समाचार' नाम की वेबसाइट हमें चाहिए। उन्होंने कहा आप जब दुबारा आएंगे, तब तक यदि यह साईट खाली हुई हो तो प्रयास किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि कुछ लोग बिना कारण ही किसी प्रसिद्ध नाम से साइट पंजीयन करके रखते हैं और अभी हिन्दुस्थान समाचार की जो साईट है उस में कुछ भी सामग्री **(Containts)** नहीं है। केवल किसी ने इसे अपने नाम से पंजीकृत करके रखा है।

पुनः 4 महीने के बाद फिर से मेरा पुणे जाना हुआ। मैंने श्री सोवले जी को बुला लिया और कहा कि 'हिन्दुस्थान समाचार' की साइट पंजीकृत करने का समय आ गया है। उन्होंने अपने कार्यालय जाकर संगणक (कम्प्यूटर) खोलकर देखा तो उस समय भी वह साईट खाली नहीं थी। दूसरे दिन भी वह शाम तक खाली नहीं

थी। उस दिन रात्रि भोजन के लिए उन्होंने मुझे अपने घर बुलाया था। घर जाते समय उन्होंने कहा कि घर जाकर 'हिन्दुस्थान समाचार' के लिए नाम में थोड़ा परिवर्तन कर साईट पंजीकृत करेंगे। इस पर 1500 रूपये खर्च आएगा। इंटरनेट पर ही आवश्यक प्रपत्र भरकर पंजीयन किया जा सकेगा। मैंने तब कहा अभी तो मेरे पास इतना पैसा नहीं है कि मैं तुरंत पंजीयन करा सकूँ। वे बोले इसकी चिंता छोड़िए आपको वेबसाईट खोलनी है, यह तो निश्चित है? मैंने कहा हाँ और पूछा लेकिन इंटरनेट पर पंजीयन करने के कितने दिनों बाद वह शुरू होगी? उन्होंने कहा 10-15 दिनों में ही शुरू जाएगी। यदि हम 15 डॉलर जमा कर देते हैं तो कुछ समय में यह काम हो सकता है। इस पर मैंने कहा कि हाल तो छोड़िए मेरे पास इतने रुपए भी नहीं। उस पर उन्होंने कहा कि कोई बात नहीं, मेरा डॉलर अकाउंट है और मैं ऑनलाइन यह कार्य पूर्ण कर सकता है। केवल आप मुझे अनुमति दीजिए। मैंने तुरंत वैसा करने के लिए कहा[33]।

घर जाने पर पहले भोजन व परिवारजनों से परिचय व गपशप हुई। बाद में उन्होंने अपना संगणक शुरू किया। उन्होंने कहा कि फिर एक बार 'हिन्दुस्थान समाचार' की साईट खोलकर देखता हूँ। यदि खाली हुई हो तो इसे ही हम पंजीकृत करेंगे। अन्यथा 'हिन्दुस्थान नव समाचार', 'हिन्दुस्थान ऊँ समाचार', इस तरह के किसी अन्य नाम से पंजीकृत करेंगे। ऐसा कहकर उन्होंने हिन्दुस्थान समाचार की साइट खोलने की कोशिश की, तभी ध्यान आया कि वह 'खाली' **(Vacant)** हुई है। उन्होंने उत्साहपूर्वक कहा श्रीकांत जी बड़े आनंद को बात है कि 'हिन्दुस्थान समाचार' की साईट खाली **(Vacant)** हुई है। मैंने पूछा ऐसा कैसे हुआ, उन्होंने कहा कि पंजीकृत साईट की समयावधि समाप्त हुई होगी और फिर से नवीनीकरण **(Renewal)** नहीं हुआ होगा। उन्होंने पूछा- बोलिए क्या करें, हम उसे पंजीकृत करें? मैंने कहा- हाँ जरूर करिए। यह तो ईश्वरीय कृपा ही कहनी होगी। 'हिन्दुस्थान समाचार' का पुनरारंभ होना चाहिए, इसका ईश्वरीय संकेत ही इस घटना से मुझे मिला। उन्होंने तुरंत अपने डॉलर खाते से 15 डॉलर ऑनलाईन जमा करके साईट का पंजीकरण कर दिया। इस तरह केवल 35-40 मिनटों में **'डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू-डॉट-हिन्दुस्थान-समाचार-डॉट-काम' (www.hindusthansamachar.com)** यह साईट निर्मित हो गई[34]। इस साइट के माध्यम से हिन्दुस्थान समाचार ने अपने समाचारों का प्रेषण कार्य प्रारंभ किया। हिन्दी, मराठी, गुजराती, उड़िया सहित धीरे-धीरे अन्य भारतीय भाषाओं में अलग से भाषायी वेबसाईट बनाकर इस संवाद समिति ने अपना समाचार प्रेषण का कार्य शुरू कर दिया। देश के हिन्दी सहित सैकड़ों समाचार पत्र हिन्दुस्थान समाचार के ग्राहक बने और इस समाचार वृत्त संस्था का संवाद संकलन और प्रसार का कार्य देशभर में तेजी से चलने लगा।

हिन्दुस्थान समाचार का प्रसार

हिन्दुस्थान समाचार की पुनर्प्रतिष्ठा के समय ही इसके मार्गदर्शक एवं संरक्षक श्रीकांत जोशी ने इसके भाषायी स्वरूप की नींव डाल दी थी। जैसा कि पूर्व में जिक्र किया गया है कि जब 24 अप्रैल को दिल्ली से इस समाचार एजेंसी का प्रारंभ किया था, उसी समय हिन्दी के साथ मराठी समाचार सेवा भी शुरू की गई। आगे जैसे-जैसे मीडिया में यह जानकारी फैली कि हिन्दुस्थान समाचार ने पुनः काम करना आरंभ कर दिया, पत्रकारों ने दिल्ली कार्यालय में संपर्क करना प्रारंभ कर दिया।

हिन्दी समाचार सेवा-

हिन्दी समाचार सेवा के प्रमुख श्री रविन्द्र अग्रवाल बनाये गये थे। सबसे पहले दैनिक स्वदेश ग्वालियर, मध्य स्वदेश गुना, सांधय वार्ता ग्वालियर, स्वदेश झांसी और स्वदेश इंदौर ने अपने यहां हिन्दुस्थान समाचार की हिन्दी न्यूज सेवा आरंभ की। इसके बाद देशभर के हिन्दी समाचार पत्र-पत्रिकाएं और न्यूज वेब पोर्टल हिन्दुस्थान समाचार से जुड़ने लगे।

नई दिल्ली-

जिनमें दिल्ली का वीर अर्जुन, समय जगत, पांचजन्य, पंजाब केसरी, परफेक्ट खबर, सच कहूँ, जन-जन जागरण, पूर्वांचल सूर्य आदि समाचार पत्र जुड़े।

मध्यप्रदेश-

मध्यप्रदेश में हिन्दुस्थान समाचार के दैनिक जागरण, सांध्य दैनिक शिखर वाणी, विनय उजाला, एकस्ल समाचार दैनिक व स्वदेश सतना, दैनिक स्वदेश भोपाल, दैनिक चेतता, रतलाम, सत्य गंगा सीधी, ग्वालियर हलचल, समय जगत भोपाल, सर्कुलेशन इंडिया भोपाल, दैनिक मतमतांतर बैतूल, राष्ट्रीय जनादेश बैतुल, आंचलिक जागरण विदिशा, नर्मदा चक्र विदिशा, प्रदेश टाइम्स भोपाल, स्वदेश खंडवा, त्रिलोकसार रतलाम, राष्ट्र भ्रमण छतरपुर, दैनिक स्वदेश ग्वालियर, सांध्य वार्ता, अशोकनगर की धड़कन, दैनिक निर्दलीय प्रदेश संवाददाता, रीजनल न्यूज, शुभ भारत छतरपुर, स्वतंत्र ऐलान रतलाम, दैनिक प्रसारण, रतलाम, बुंदेलखण्ड बुलेटिन छतरपुर, किसान सम्राट भोपाल, कीर्ति प्रभा भोपाल आदि मध्यप्रदेश में हिन्दुस्थान समाचार सेवा का उपयोग करने लगे।

बिहार–

बिहार में सनमार्ग, प्रत्युष, आज बिहार, प्रभात खबर, अतुल्य भारत, बेगू सराय, टाईम्स, कोशी दर्पण, तक्षशिला, सरजमीन, सांध्य प्रवक्ता, सांध्य प्रहरी, विकलांग मित्र, समय सुरभी, आदर्शा, बिहारी खबर, संघ प्रवाह, संस्कृति संवाद, लोक प्रसंग, पटना, परिक्रमा, बृजन, सिटी न्यूज, वातायन, संवाद दर्शन, "लेस लाईट, मितलांचल, भाषा भारती, स्टूडेंट्स वॉइज, जाग्रति टाईम्स, मिथिला आवाज, देश बंधु प्रातः कमल, तरुण मिश्र, अली मॉर्निंग, प्रत्यूष, नव बिहार, सन्मार्ग, नई बात, साप्ताहिक झंझट टाईम्स, दस्तक प्रभाग, प्रातः खबर, बिहार न्यूज़, आज, रांची एक्सप्रेस, डी न्यूज, नया इंडिया, कौमी तंजीम, जी न्यूज, समय जगत, अंग भारत, अमर उजाला, वीर अर्जुन इत्यादि समाचार पत्रों ने हिन्दुस्थान समाचार की सेवा अपने यहां आरंभ की।

राजस्थान–

राजस्थान में जलते दीप, दैनिक भोर, राजस्थान स्टेटमेंट, विनय पत्रिका, सांध्य ज्योति, दर्पण, करंट ज्वाला, निराला समाज, हवा महल टाइम्स, क्राईम ब्यूरो, छोटी काशी, जलते दीप, हुक्कमनामा, दैनिक आसपास, बढ़ता राजस्थन, प्रकाश कुंज, आदि अखबार इस एजेंसी से जुड़े।

उत्तरप्रदेश–

उत्तरप्रदेश में इलाहाबाद एक्सप्रेस, समय जगत, सर्वोदय भारत, सहज सत्ता, इलाहाबाद लाईव, पायोनीर हिन्दी, थ्री इंडिया, स्वतंत्र भारत, दैनिक स्वदेश झाँसी, लोकमत, यूनाईटेड भारत, गाण्डीव, कैनिविज टाइम्स, जनमोर्चा, सहज सत्ता, शांति मोर्चा,राहत टाईम्स, श्री टाईम्स, जनवार्ता, अमर भारती, संगम प्रवाह, न्याय प्रहरी, तरुण मित्र, ज्ञानशिखा टाईम्स, जन वार्ता, अमर भारती, लोकमित्र, दैनिक देवव्रत, लखनऊ लाईव, दीप शिखा टाइम्स, हिन्दी दैनिक, उत्तरप्रदेश जागरण, दैनिक आज व अन्य समाचार पत्र, हिन्दुस्थान समाचार को न्यूज सेवा लेने लगे।

झारखंड–

झारखंड में दैनिक आज, उत्कल मेल, झारखंड जागरण, अपना इंडिया, साप्ताहिक नई दुनिया, न्यू स्पात मेल, नई बात, राष्ट्रीय दृष्टिकोण वीकली, जाग्रति टाईम्स राष्ट्रीय सागर, राष्ट्रीय खबर, झारखंड वार्ता, दैनिक भारत, उर्दू दैनिक, कौमी तनजीव,

राष्ट्रीय एक्स्प्रेस, रांची एक्सप्रेस, बिहार ओब्जर्वर, उदित वाणी, इंडियन पंच, 4 सेवन डेज, झारखंड न्यूज लाइन, राष्ट्रीय नवीन मेल, अपनी रांची, संपूर्ण भारत, नव बिहार, चमकता आईना, द एवेन्यू मेल, दैनिक स्वेत पत्र आदि हिन्दुस्थान समाचार से जुड़े।

छत्तीसगढ़–

छत्तीसगढ़ में दैनिक मीडिया फैशन, दैनिक मूल मंत्र, दैनिक बस्तर इम्पैक्ट, दैनिक छत्तीसगढ़ झलक, जनाधार न्यूज, दैनंदिनी, नवराज्य शिखर, दैनिक नवशक्ति, दैनिक मुंबई लक्षद्वीप, दैनिक मुंबई तरुण भारत, दैनिक महानगरी, दैनिक रत्नगिरी एक्सप्रेस, दैनिक तरुण भारत, छत्तीसगढ़ वॉच, कर्णपुरी, जनकर्म, चिंतक, अंबिका वाणी, मिटाण, छत्तीसगढ़, नन्द गांव टाईम्स, प्रतिदिन राजधानी, स्वदेश, कलयुग का भारत, स्पात टाईम्स, कही अनकही, आज की जनधारा, रौद्रमुक्ति स्वर, तरुण छत्तीसगढ़ इत्यादि समाचार पत्र हिन्दुस्थान समाचार की सेवा लेने लगे।

जम्मू कश्मीर–

जम्मू कश्मीर में हिन्दुस्थान समाचार से सेवा लेने वाले जेके डेटलाईन, वेस्टलाईन, नव जम्मू, अर्ली न्यू पोस्ट, देहात संदेश आदि समाचार पत्रों ने सर्वप्रथम हिन्दुस्थान समाचार की न्यूज सेवा चालू की।

उत्तराखंड–

उत्तराखंड में सीमांत पहरी, हिमगिरी टाईम्स, वर्ल्ड वार्ता, भारतीय निर्देश, सनसनी मेल, अक्षत विचार, भारतीय स्टार समाचार, चरित्र समाचार, दून वेली टाईम्स, दाखिल खारिज गृह वार्ता, ग्रामीण समय, ग्रोबल स्टेट्स, घाटी की गूँज, हिमालय टाईम्स, ग्लोब टाईम्स, गृहबल एकता, हिमालय जागरण, हर पल की हमें खबर, मात्रिपद, इन साइड एक्सप्रेस, मसूरी गाईड, निष्पक्ष राष्ट्रीय सेवा, पब्लिक वॉयज, पर्वतीय बिगुल, राष्ट्र की लकीर, राष्ट्र जन, शिवालिक मेल, संकल्प, सर्व श्री, सच की रन भेरी, तिरंगा हिन्दुस्थान, स्वर्णिम उत्तराखंड, यूनिक टाईम्स, उत्तराखंड जयंती, मसूरी साप्ताहिक, उत्तराखंड आज, उत्तराखंड वसुन्धरा, विशाल हिमालय, बेजगार्ड, बृज सूची, आरती हंट, अनिकेत, स्वतंत्र टाईम्स, दैनिक जन लहर, उत्तरांचल क्रोनिकल, मंगल भूमि टाईम्स, बद्री विशाल, हिमपुत्र, गगरी, हलंत, देवभूमि, संदेश, देवभूमि समाचार, बिजनिस स्टैंडर्डस, वॉक, उत्तराखंड शक्ति, उत्तराखंड लाइव आदि समाचार पत्र इस संवाद समिति से जुड़े।

हिमाचल प्रदेश–

ग्राम परिवेश, सामाहिक, दैनिक आपका फैसला, गिरीराज जैसे समाचार पत्रों ने हिमाचल प्रदेश में सर्वप्रथम हिन्दुस्थान समाचार की सेवा लेना प्रारंभ किया।

पंजाब एवं हरियाणा–

पंजाब एवं हरियाणा में हिन्दुस्थान समाचार को हिन्दी का एक समाचार पत्र "उत्तम हिन्दु" जुड़ा हुआ है। इस प्रकार देखा जाए तो हिन्दीभाषी क्षेत्र में सैकड़ों की संख्या दैनिक और साप्ताहिक समाचार पत्र आज हिन्दुस्थान समाचार को समाचार सेवा नियमित ले रहे हैं।

हिन्दुस्थान समाचार की भाषायी सेवा–

हिन्दी के बाद भाषायी समाचार सेवा की यदि बात की जाए तो सर्वप्रथम मराठी के बाद गुजराती, उड़िया, असमिया, नेपाली और कन्नड़ भाषा की समाचार प्रेषण का कार्य शुरू हुआ। इसके बाद दूसरे चरण में तमिल, तेलगु, मलयालम, सिंधी, पंजाबी और संस्कृत समाचार सेवा हिन्दुस्थान समाचार ने प्रारंभ की।

मराठी समाचार सेवा–

मराठी भाषा का काम बसंत राव देशपाण्डे और विवेक के जिम्मे आया।शीघ्र ही इसका केंद्र दिल्ली के स्थान पर मुंबई बना दिया और 3 एबी. हाशिम बिल्डिंस 40 वीर नसीमन रोड पर कार्यालय खुला। दैनिक तरूण भारत नागपुर सबसे पहले मराठी सेवा का ग्राहक बना। इसके बाद देशोन्नति, मुंबई लक्ष्यद्वीप, मुंबई तरुण भारत, थाने ग्लोबल टाइम्स, तरुण भारत देवगिरी, विश्वरूप, रत्नागिरी टाइम्स, पुणे सांध्य महानगरी, तरुण भारत सोलापुर, नवशक्ति, उदय मराठवाड़ा आदि समाचार पत्र हिन्दुस्थान समाचार की मराठी सेवा लेने लगे।

गुजराती समाचार सेवा–

गुजराती समाचार सेवा के अंतर्गत हिन्दी के एक समाचार पत्र जनसंचार हिन्दी डेली सहित गुजराती के सूरत सामना, अकेला डेली, सांझा समाचार, अवध टाईम्स गुजरात टुडे, राज मित्र, जय हिन्द डेली, कुछ मित्र, लोक समर्थन, उदय, मधु बरभाया नव गुजरात टाईम्स, फूल छाव, साधना विकली, गुजरात वेर्स्टन टाईम्स, गुजरात समाचार,

संदेश संभव, न्यूलाईन सिद्ध समाचार, प्रथा काल क्राईम सेल्यूशन, नव गुजरात, निकिता शाह, हम लोग पटना, नया पढ़कर, विवाद डेली, पटनागर टुडे, निभव डेली, गज प्रणाम, जनसमय, गुजरात नीति, केशरी डेली, जनसत्ता संभव, गुजरात चित्रा, बिंदु डेली, दिव्या गुजरात, साधना विकली, इफेक्टिव मीडिया, आजकल, निधि प्रेस, डेली जय, युगेन्धना अवतरण, बंसेतु, समाचार, समन्वय समाचार, नेट राजकोट, बीकेन्यूजतपन,रखेवाल, मानव मित्र डेली, कैप्टल क्रांति, न्यूज प्वाइंट डेली, बुनियाद न्यूज, सूर्यकाल, तरुण दत्तानी, अल्प विराम, थासरदार वैभव, हिरालयंग लीडर, हिन्दी दैनी, बावड़ गुजराती, कादम्ब डेली, अकीला डेली, गुजराती पत्रिका, गुजराती मासिक, मजब मित्र, गुजरात प्रणाम, गुजरात होस्ट आदि समाचार पत्र हिन्दुस्थान समाचार से जुड़े।

उड़िया समाचार सेवा–

उडिया भाषा के अंतर्गत हिन्दुस्थान समाचार से एक के एक इस भाषा से निकलने वाले लगभग 90 प्रतिशत समाचार पत्र नियमित न्यूज सेवा लेने लगे। वर्तमान में भाषायी दृष्टि से यह संवाद समिति का श्रेष्ठतम् कार्य है। प्रमुख समाचार पत्रों में प्रजातंत्र, दिनालिपि, प्रायबेखयक, मात्रुभाषा, महाभारत, आस्कर उत्कल, आरंभा, आमरी कथा, प्रतिदिन, क्रांतिधारा, उत्कल समाज, नेबत्ती, अजीकली, ध्वनि प्रतिध्वनि, उड़िसा एक्सप्रेस, लोकनीति, उत्कल रिपोर्टर, हिराचल, स्वतंत्रभारत, न्यायपति, सुरूति, मातृभाषा, नक्षत्र ज्योति, ईश्वर, कालांतर, अनन्या, सेतू आरंभ, उत्कल मेल, सकल, दैनिक आशा, प्रामेया, भारत दर्शन, खुलाद्वार, ओड़िसा खबर, संवाद कलिका, ओड़िसा किरण, दर्शन, सहाना मेल, देशव्रत, ओडिया पुआ, जाग्रत ओडिसा, प्रसन्नता आदि समाचार पत्र हिन्दुस्थान समाचार से जुड़े है।

असमिया समाचार सेवा –

असमिया में दैनिक प्रतिवेदन, जन जीवन, अकेला, जन अधिकार, संवाद एडिनोर, अजीर असोम, संवाद लोहोरी आदि समाचार पत्र हिन्दुस्थान समाचार सेवा ले रहे है।

बांग्ला समाचार सेवा –

बांग्ला भाषायी समाचार सेवा लेने के लिए पश्चिम बंगाल में जागरण, दैनिक नवभारत प्रसंग, दैनिक जनकांथा, युवा शक्ति, राष्ट्रीय महानगर आदि समाचार पत्र हिन्दुस्थान समाचार से जुड़े हैं।

सिंधी–

सिंधी समाचार सेवा प्राय: उन लोगों को दी जा रही है जो सिंधी समाज के विभिन्न संगठनों में कार्यरत है। वस्तुत: यह सेवा अभी सिंधी भाषा की अभिवर्धन के लिए देवनागरिक लिपि में दी जा रही है।

संस्कृत समाचार सेवा –

संस्कृत समाचार सेवा का उद्देश्य भी भारत के सभी भाषाओं की जननी कहलाने वाली संस्कृत भाषा का उन्नयन और उसे जन–जन की भाषा बनाने के लिए प्रयास करता है। अभी विभिन्न अकादमी संस्थानों तथा विद्वानों के बीच संस्कृत समाचार सेवा संचालित की जा रही है।

नेपाली समाचार सेवा –

नेपाली में दैनिक समय, दैनिक मिरमेरीय, संगरीला टाईम्स, कंचनजंघा टाईम्स आदि समाचार पत्र हिन्दुस्थान समचार को समाचार सेवा से जुड़े हैं।

कन्नड़ समाचार सेवा –

कन्नड़ में लोक प्रभात, नवोदय, नगरवाणि, करावलि, मुंजाबु, पांडव, रायलुंर, वार्त, क्रिश्णतुंग, सिंधुर बिंब, सुभाशित, समर्थवाणि, आहार वार्ते, कन्नडम्मा हुन्ना, ताड़नुडि आदि समाचार पत्र हिन्दुस्थान समाचार से जड़े हैं।

तेलगू समाचार सेवा –

तेलगू समाचार भी आज हिन्दुस्थान समाचार के माध्यम से प्रसारित किये जा रहे हैं। इस तरह हिन्दी सहित अन्य 11 भारतीय भाषाओं में हिन्दुस्थान समाचार बहुराज्यीय संवाद समिति के द्वारा समाचार एकत्रीकरण एवं प्रेषण का कार्य किया जा रहा है। हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं की अपनी स्वतंत्र वेबसाईट है जिसके माध्यम से समाचार के प्रसार का कार्य किया जा रहा है।

भारतीय भाषाओं के वेबसाइट–

हिन्दुस्थान समाचार संवाद समिति में विभिन्न भाषाओं में समाचार लेने के लिए अलग–अलग वेबसाइट बनी है। जो इस प्रकार है–

आज हिन्दी समाचार के लिए	main.hindusthansamachar.com,
कन्नड के लिए	kannada.hindusthansamachar.com
गुजराती भाषा में समाचार	gj.hindusthansamachar.com,
बांग्ला में	abengali.hindusthansamachar.com,
मराठी न्यूज	mh.hindusthansamachar.com,
असमिया समाचार	somiya.hindusthansamachar.com,
पंजाबी समाचार	punjabi.hindusthansamachar.com,
तेलगु समाचार	telugu.hindusthansamachar.com,
नेपाली न्यूज	nepali.hindusthansamachar.com,
सिंधी में समाचार	sindhi.hindusthansamachar.com,
संस्कृत भाषा में	sanskrit.hindusthansamachar.com,

पर समाचार देखे जा सकते हैं।

हिन्दुस्थान समाचार-बीज से वृक्ष तक-

'हिन्दुस्थान समाचार' बहुभाषी संवाद समिति का निर्माण अतीत में एक विशेष उद्देश्य को लेकर किया गया था। इस संस्था के मूल में संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्रीगुरूजी की प्रेरणा थी। उनका उद्देश्य तत्कालीन समय में यही था कि भारत में भारतीयों के द्वारा भारतीयों के लिए उनकी भाषा में समाचार देने वाली समाचार समिति का निर्माण किया जाए। श्री दादा साहेब उपाख्य शिवराम शंकर आप्टे ने इस बात को समझा और विदेशी एजेंसी राईटर की अधीनस्थ एजेंसी में काम सीखकर स्वतंत्र हिन्दुस्थान समाचार बहुभाषी संवाद समिति खड़ी की।

जिस समय श्री आप्टे इस समाचार एजेंसी की नींव रख रहे थे उस समय देश में एक भी भारतीय बहुभाषी समाचार समिति मौजूद नहीं थी। तत्कालीन समय में देश से निकलने वाले हिन्दी, अंग्रेजी भाषाओं के अलावा अन्य भाषायी अखबार और पत्रिकाएं तेजी से हिन्दुस्थान समाचार से जुड़ने लगीं ।

18 जून 1954 में देश में पहले देवनागरी लिपि के टेलीप्रिंटर का निर्माण। इसे स्थापित करने का श्रेय भी 'हिन्दुस्थान समाचार' को जाता है। मध्यप्रदेश के जबलपुर टेलीग्राफ वर्कशॉप में निर्माण के बाद दिल्ली में जगजीवन राम और पटना में पुरूषोत्तम दास टंडन द्वारा इसका उद्घाटन किया गया।

श्री आप्टे ने 1958 में इस समाचार एजेंसी का पंजीयन को-ऑपरेटिव एक्ट के तहत कराया। एजेंसी को भारत के पहले राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद शर्मा, पंडित गोविन्द वल्लभ पंथ, डॉ. राममनोहर लोहिया, रफी अहमद किदवई, लोकनायक जयप्रकाश नारायण, संत प्रभूदत्त ब्रह्मचारी, पं. दीनदयाल उपाध्याय, लाल बहादुर

शास्त्री, यशवंत राव चौहाण, पं. कमलापति त्रिपाठी जैसे राजनेताओं एवं विद्वानों का सहयोग मिला। देशभर में आकाशवाणी से 'हिन्दुस्थान समाचार' से प्राप्त खबरें प्रसारित होने लगीं। हिन्दुस्थान समाचार से आगे सत्यकाम विद्यालंकार (धर्मयुग), सत्येन्द्र कुमार गुप्ता (आज), नारायण चतुर्वेदी (सरस्वती), अक्षत कुमार जैन (नवभारत टाईम्स), रतनलाल जोशी (दैनिक हिन्दुस्तान), रामगोपाल तिवारी, सुरेन्द्र मोहन घोष (पायनियर लखनऊ), एडी मणि (हितवाद नागपुर) कृष्णचंद्र अग्रवाल (विश्वामित्र कोलकाता), बाबूराव लेले, नारायण राव तर्टे, बसंतराव देशपांडे, बालेश्वर अग्रवाल, रामशंकर अग्निहोत्री, जैसे अनेक मूर्धन्य पत्रकार जुड़े।

हिन्दुस्थान समाचार द्वारा राष्ट्रीय दायित्व का निर्वहन-

समय-समय पर हिन्दुस्थान समाचार ने राष्ट्रीय समस्याओं के प्रति सत्ता और जनता को जागरूक किया। एक तरफ विकास की ओर बढ़ता भारत तो दूसरी ओर सन् 1962 की चीन की भारत पर आक्रमण करने की योजना। जब चीन के सैनिक भेष बदलकर सीमापार से देश की सीमाओं मे घुसने लगे। इसकी सबसे पहले खबर प्रकाशित करने का काम किया **'हिन्दुस्थान समाचार'** बहुभाषी संवाद समिति के एजेंसी के जाबांज पत्रकारों ने अपनी जान जोखिम में डालकर सीमापार और सीमावर्ती क्षेत्रों के समाचार और फोटोग्राफ प्रकाशित करने के लिए देश के विभिन्न अखबारों में भेजना शुरू किये। जो भारत सरकार कल तक यह मानने के लिए तैयार नहीं थी कि चीन से भारत को कोई खतरा है। अब 'हिन्दी-चीनी भाई, भाई' के नारे की असलियत खुलकर सामने आ चुकी थी। देर से सही, लेकिन समाचारों के परिणाम और देश के भविष्य को देखते हुए भारतीय सेना चीनियों से युद्ध करने के लिए तैयार होने लगी। उस समय सेना का मनोबल बढ़ाने का कार्य **'हिन्दुस्थान समाचार'** बहुभाषी न्यूज एजेंसी ने किया।

सन् 1965, पाकिस्तान की छद्‌म नीति कश्मीर के बहाने भारत को घेरने की रणनीति बनाते हुए देश पर आक्रमण...। उस समय 'हिन्दुस्थान समाचार' के पत्रकारों ने युद्ध रिपोर्टिंग कर जहाँ देश के लोगों को उत्साहित किया, वहीं सेना का मनोबल बढ़ाने के साथ पाकिस्तानियों की आगामी तैयारियों के बारे में पहले से पुख्ता जानकारी मुहैया कराई। जिसका लाभ सभी देशवासियों को हुआ। सन् 1971 में जब पाकिस्तान ने भारत से अपनी पूर्वी क्षेत्र जो बाद में स्वतंत्र बांग्लादेश के रूप में विश्व मानचित्र पर उभरा उसके बहाने भारत से एक बार फिर सामरिक लड़ाई लड़ी, लेकिन इस बार उसे मुंह की खानी पड़ी, इस समय भी देश की मीडिया में समाचार प्रेषण के स्तर पर **हिन्दुस्थान समाचार बहुभाषी संवाद समिति** ने अपने राष्ट्रीय दायित्व का निर्वहन किया।

जून 1975, देश की पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा देश में लगाए

गये आपातकाल के जरिये आमजन और अखबारों की स्वतंत्रता छीन लेने के वक्त **'हिन्दुस्थान समाचार'** का भी अन्य समाचार एजेंसियों की तरह हाल हुआ। इंदिरा सरकार ने एजेंसी को अपने हाथों में ले लिया। ऐसे वक्त में संवाद की स्वतंत्रता और रक्षा के लिए जिससे जैसे बन पड़ा, हिन्दुस्थान समाचार ने तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के थोपे गए आपातकाल का पुरजोर विरोध शुरू किया। श्रीमती इंदिरा गांधी सरकार के खिलाफ लिखने के कारण संवाद समिति के कई पत्रकारों को जेलों में डाल दिया गया, कुछ को अपनी लेखनी बंद करनी पड़ी। आपातकाल का विरोध और चहुंओर के दबाव के चलते श्रीमती इंदिरा गांधी झुकीं। उन्होंने आपातकाल को वापिस लेते हुए संसदीय चुनाव कराए जाने की घोषणा की। संसदीय चुनाव के इतिहास में श्रीमती इंदिरा गांधी की पार्टी कांग्रेस की ऐतिहासिक हार के बाद जब **'जनता सरकार'** बनी, तब तत्कालीन सूचना एवं प्रसारण मंत्री लालकृष्ण आडवाणी ने समाचार एजेंसियों को उनके पूर्ववत् स्वरूप में लौटा दिया। 'हिन्दुस्थान समाचार' के फिर एक बार विभिन्न अखबारों और पत्रिकाओं में बहुत बड़ी संख्या में समाचार प्रकाशित होने लगे।

इस समय हिन्दुस्थान समाचार को सरकार द्वारा 100 प्रतिशत अनुदान प्राप्त हुआ। किन्तु इसके बाद के वर्षों में यह अनुदान घटता गया। इस तरह 1978 में इसे 100 प्रतिशत, 1979 में 75 प्रतिशत, 1980 में 50 प्रतिशत तथा 1981 में मात्र 25 प्रतिशत सरकारी अनुदान मिला। 1982 में इस समिति को सरकारी अनुदान मिलना पूर्णतया बंद हो गया[35]।

इसी बीच देश से अलग होने के लिए पंजाब, हरियाणा में चरमपंथियों ने अपनी आवाज उठायी। आतंक के बूते देश विभाजित कर खालिस्तान का निर्माण उनकी योजना का हिस्सा था। बेगुनाहों की हत्या, दिल में मंडराता मौत का भय, 80 के दशक में आम बातें थी। ऐसे समय में 'हिन्दुस्थान समाचार' के पत्रकारों के बड़े मुस्तैदी के साथ समाचार प्रेषण का कार्य किया। समय पर पुख्ता समाचार प्राप्त होने से राज्य और केंद्र सरकार सचेत रहीं। आखिरकार भिण्डरांवालें की हत्या के साथ 1984 में यह आन्दोलन समाप्त हो गया।

इसके अलावा ग्रामीण, कृषि, विज्ञान, उद्योग, व्यापार, विकास, पर्यावरण, पर्यटन, खेल, महिला, ज्योतिष, फैशन, कला, संस्कृति, विदेश, राजनीति, साहित्य, धर्म, आधयात्म जैसे अनेक विषय हैं, जिन पर हिन्दुस्थान संवाद समिति अपनी शुरूआत के पहले दिन से निरंतर समाचार प्रसारित कर रही थी।

राष्ट्रीय अस्मिता ओर 'स्वत्व' की रक्षा–

जैसा कि कई बार देखा गया है कि अच्छे कार्य भी कई बार हिन्दी समाचार पत्र कई कारणों से बंद हो जाते हैं। ऐसा ही कुछ इस संवाद समिति के साथ होने जा रहा

था। **'हिन्दुस्थान समाचार'** के संघर्ष का दौर शुरू हो गया। केंद्र की सरकार ने इस एजेंसी को बंद करने की ठानी। मई 1982 में को-ऑपरेटिव एक्ट के तहत पंजीकृत इस समाचार समिति में सरकार ने अपना प्रशासनिक अधिकारी नियुक्त किया, जिसके तीन वर्ष के कार्यकाल में संवाद समिति पर लाखों रूपये का कर्ज चढ़ा।

देश भर में इसकी तीखी प्रतिक्रिया हुई। मार्च 1986 में को-ऑपरेटिव सोसायटी पंजीयन रजिस्टार ने इसे घाटे में चलने का बहाना कर बंद करने का फरमान सुनाया। इस आपात स्थिति में सोसायटी रजिस्टार के आदेश के खिलाफ हिन्दुस्थान समाचार संवाद समिति के अंशकालीन सदस्यों ने दिल्ली उच्च न्यायालय में अर्जी दायर की। वह इस मामले को लेकर उच्च न्यायालय तक गये। आखिरकार सत्य की जीत हुई। 1997 में 'हिन्दुस्थान समाचार' के पक्ष में उच्च न्यायालय ने फैसला सुनाया।

तमाम आर्थिक नुकसान के समय **'हिन्दुस्थान समाचार'** का काम अवरूद्ध हुआ, किन्तु रूका नहीं। क्योंकि समाचार एजेंसी के पत्रकारों ने हार नहीं मानी थी, उन्होंने अपने अपने स्तर पर देश के हित में पत्रकारिता करने का संकल्प जो लिया था। आगामी चार वर्षों तक पुनः एजेंसी को खड़ा करने की योजना बनाई गई। एक तरफ जहां चंद्रमोहन भारद्वाज ने एजेंसी के पक्ष में न्यायालय में लड़ाई जीती। वहीं दूसरी ओर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य, वरिष्ठ प्रचारक, समिति के संरक्षक श्रीकांत जोशी द्वारा वर्ष 2002 में इसका पुनर्रोत्थान किया गया। श्री जोशी ने देश में घूम-घूम कर इस निर्जीव पड़ी संवाद समिति को सक्रिय करने का बीड़ा उठाया। इसी वर्ष नलवा गली, पहाड़गंज, दिल्ली में पुनः संवाद समिति के नवीन कार्यालय का उद्घाटन हुआ।

स्मारिका का प्रकाशन और हिन्दी में वेबसाईट पर न्यूज अपलोड करने के साथ ही **'हिन्दुस्थान समाचार'** की सेवा प्रारंभ हो गई। दिल्ली के बाद महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, झारखंड, छत्तीसगढ़, बिहार, उत्तराखंड, राजस्थान, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल, गोवा, पंजाब, हरियाणा, तमिलनाडू, सिक्किम, हिमाचल प्रदेश, अंडमान निकोबार, आंध्रप्रदेश, असम, अरूणाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश के राजधानी केंद्रों सहित देशभर में सैकड़ों जिला कार्यालयों पर संवाद समिति के कार्यालय खोले गये। भारत के बाहर नेपाल, थाईलैण्ड, मॉरिशस आदि देशों में भी संवाद समिति के कार्यालय खुले।

जिसके परिणामस्वरूप एक के बाद एक **500 से ज्यादा अखबार पत्रिकाएं**, वेबपोर्टल संवाद समिति की फिर से सेवाएं लेने लगे। हिन्दी, मराठी, समाचार सेवा के बाद गुजराती, असमिया, सिंधी, नेपाली, उड़िया, तेलगू, बांग्ला, संस्कृत, पंजाबी, तमिल, मलयालम, उर्दू, सिंधी, कन्नड़ और भोटी भारतीय भाषाओं में समाचार सेवा का कार्य आरंभ हुआ। देश के हर राज्य में संवाद समिति की धाक जमने लगी।

आम चुनाव, राज्यों के विधानसभा चुनावों का विस्तृत कवरेज, **'हिन्दुस्थान**

समाचार' ने विभिन्न अखबारों तक त्वरित रूप से पहुँचाया। देश में आयीं विभिन्न-राजनीतिक एवं दैवीय आपदाएँ जैसे- आपाताकालीन परिस्थितियों भूकंप, सुनामी, आतंकवादी नक्सली वारदातों के समाचार एजेंसी से तत्काल प्रसारित हुए। देश के नेताओं जिनमें डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद, जवाहर लाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री, श्रीमती इंदिरा गांधी, राजीव गांधी आदि नेताओं के देहावसान पर उनके जीवन से संबंधित विस्तृत रिपोर्ट संवाद समिति द्वारा प्रेषित की गई। संसद और विधानसभा के बजट तथा अन्य सत्रों के समाचार प्रमुखता से देने में यह एजेंसी अग्रणी रही है। जम्मू कश्मीर में बाईन बोर्ड, अमरनाथ आंदोलन, सेतु समुद्रम परियोजना के विरोध में तमिलनाडु में शुरू हुए **'रामसेतु आंदोलन, बांग्लादेशी घुसपैठियों** पूर्वोत्तर सीमा पर धर्मान्तरण, आदि को लेकर शुरू किये गये जनजागरण से संबंधित कवरेज के अलावा देश के अन्य प्रमुख आंदोलन, राष्ट्रीय और प्रादेशिक महत्व के समाचार आज निरंतर **'हिन्दुस्थान समाचार संवाद समिति'** द्वारा प्रमुखता से प्रसारित किये जा रहे हैं।

आज समाचार एजेंसी की युवा पत्रकार टोली देशभर में अपने चतुर्थ स्तम्भ होने का अहसास आम जनता, ब्यूरोक्रेसी और राजनेताओं को कराने में पूरी तरह सक्षम है। देश व राज्यों के ज्वलंत मुद्दे 'हिन्दुस्थान समाचार' की प्राथमिकता में है।

वर्तमान में 'हिन्दुस्थान समाचार' बहुभाषी न्यूज एजेंसी नवोत्थान लेख सेवा, न्यूज स्कैन सेवा, किऑक्स सेवा, छायाचित्र सेवा का सफलता पूर्वक संचालन करने के साथ ही वार्षिक दैनन्दिनी राष्ट्रीय महत्व के विषयों पर विशेषांक और स्मारिकाओं का प्रकाशन कर रही है। संवाद समिति की वेबसाईट **www.hindusthansamachar.com** पर सदस्यता प्राप्त कर समाचार एवं अन्य सेवाएं प्राप्त की जा सकती हैं। आज इसके उज्जवल भविष्य को लेकर न केवल संवाद समिति के पत्रकार बल्कि देश के अनेक मीडिया जगत के जुड़े लोग आशान्वित है[36]।

संवाद समिति : हिन्दुस्थान समाचार

भारतीय भाषाओं का देश की पत्रकारिता में संवाद-स्थापित करने के लिए शिवराम शंकर उपाख्य दादा साहब आप्टे द्वारा हिन्दुस्थान समाचार बहुभाषी संवाद समिति की स्थापना की गई। जिस समय श्री आप्टे इस समाचार एजेंसी की नींव रख रहे थे। उस समय देश में एक भी भारतीय बहुभाषी समाचार समिति मौजूद नहीं थी। यही कारण रहा कि तात्कालीन समय में देश से निकलने वाले हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू एवं अन्य भारतीय भाषायी अखबार और पत्रिकाएँ तेजी से हिन्दुस्थान समाचार से जुड़ने लगीं। देश में सबसे पहले भारतीय भाषाओं का दूरमुद्रक (टेलीप्रिंटर) बनाने का श्रेय भी इस एजेंसी को है।

एजेंसी को भारत के पहले राष्ट्रपति डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद शर्मा, पंडित गोविन्द वल्लभ पंथ, डॉ॰ राममनोहर लोहिया, रफी अहमद किदवई, लोकनायक जयप्रकाश नारायण, संत प्रभुदत्त, ब्रह्मचारी, पं॰ दीनदयाल उपाध्याय, लाल बहादुर शास्त्री, यशवंत राव चौहाण, पं॰ कमलापति त्रिपाठी जैसे राजनेताओं एवं विद्वानों का सहयोग मिला और देशभर में आकाशवाणी से 'हिन्दुस्थान समाचार' से प्राप्त खबरें प्रसारित होने लगीं।

एकमात्र सहकारी समिति

हिन्दुस्थान समाचार बहुभाषी संवाद समिति पत्रकारिता क्षेत्र में विश्व की एकमेव सहकारी संवाद समिति है। इसका संचालन बहुराष्ट्रीय सहकारी समिति (रजि॰ नं॰ 1610/6-2-1957) द्वारा होता है।

भारतीय भाषा में समाचार-

हिन्दुस्थान समाचार संवाद समिति हिन्दी, मराठी, सिंधी, गुजराती, असमिया, नेपाली, संस्कृत, कन्नड़, तेलगू, तमिल, उड़िया, बांग्ला, मलयालम, पंजाबी भाषा में समाचार देती है। इसका उपयोग 500 से अधिक पत्र-पत्रिकाएं व विभिन्न प्रशासनिक कार्यालय कर रहे हैं।

हिन्दुस्थान समाचार के वेबसाइट-

हिन्दुस्थान समाचार की सभी सेवाओं को **www.hindusthansamachar.com** की वेबसाइट पर देखा जा सकता है।

इस समय सभी राज्यों की राजधानी समेत, जिला केंद्रों, एवं तहसील केन्द्रों में हिन्दुस्थान समाचार के कार्यालय हैं। इन केन्द्रों में प्रतिवर्ष विशेषांक, स्मारिका और वार्षिकी का भी प्रकाशन होता है।

नवोत्थान लेख सेवा

यह सेवा तत्कालीन महत्व के विषयों पर आधारित आलेख सेवा है। इस सेवा के अन्तर्गत प्रतिदिन जाने-माने विशेषज्ञों के लेख प्रसारित किए जाते हैं। इस सेवा की स्वतंत्र बेबसाइट **www.lekhseva.com** है। हिन्दुस्थान समाचार की सेवाएं लेने वाले अखबार और बेबसाइट ग्राहक इस सेवा का लाभ लेकर अपने संपादकीय पृष्ठों एवं समसामयिक विषयों पर आलेख प्रकाशित करते हैं। देशभर में इस समय

लगभग 500 से ज्यादा पत्र पत्रिकाएँ नियमित रूप से नवोत्थान लेख सेवा का उपयोग कर रहे हैं।

न्यूज स्कैन सेवा

इसके माध्यम से सेवाधारक के कम्प्यूटर स्क्रीन पर इंटरनेट के माध्यम से राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय, खेल, व्यापार, कला, विज्ञान, अपराध, क्षेत्रीय आदि विभिन्न प्रकार के समाचार निरन्तर प्रसारित होते हैं। सेवाधारक इन्हें आसानी से डाउनलोड कर सकते हैं। अभी यह सेवा देश के अनेक राज्यों में शासकीय एवं निजी संस्थानों में सफलतापूर्वक चल रही है।

किऑक्स सेवा

किसी भी संस्थान के उत्पादों और गतिविधियों की सभी जानकारियाँ एवं सदेशों को विज्ञापित करने अथवा आगे बढ़ाने का यह एक आकर्षक एवं प्रभावशाली माध्यम है। इसके माध्यम से संबंधित संस्था के विज्ञापन के साथ देश-दुनिया के समाचारों को भी देखा जा सकता है। इसमें होता यह है कि बड़ी स्क्रीन पर नीचे की पट्टी पर देश विदेश, क्षेत्रीय एवं अति महत्व के स्थानीय समाचार न्यूज फ्लैश पट्टी के अंतर्गत चलते रहते हैं और बीच के हिस्से में जहाँ यह कियोस्क लगाया जाता है, उस संबंधित कंपनी, व्यक्ति सरकार या संस्था के विज्ञापन उनकी उद्घोषणाओं का प्रसारण चल-चित्र के माध्यम से होता है।

छाया चित्र सेवा

बेबसाइट **www.hindusthansamachar.com** के जरिये अपने ग्राहकों को संवाद एजेंसी समाचारों के साथ रंगीन छायाचित्रों की सेवा भी प्रदान कर रही है। यह सेवा ई मेल से भी प्रदान की जाती है। हिन्दुस्थान समाचार के देशभर में संवाददाताओं द्वारा इंटरनेट के माध्यम से इस सेवा पर विभिन्न कार्यक्रमों, आयोजनों एवं देश में घटित होने वाली घटनाओं-दुर्घटनाओं के छायाचित्र अपलोड किये जाते हैं। जिन्हें हिन्दुस्थान समाचार के ग्राहकों द्वारा इस्तेमाल किया जाता है।

दैनन्दिनी का प्रकाशन

प्रतिवर्ष भारतीय नववर्ष (चैत्र प्रतिपदा) के अवसर पर हिन्दुस्थान समाचार द्वारा दैनन्दिनी का प्रकाशन किया जाता है। जिसमें भारतीय तिथि के साथ साथ अंग्रेजी

दिनाँक भी रहती है और विशेषकर यह 1 अप्रैल से 31 मार्च तक आर्थिक वर्ष होने के कारण यह बहुउपयोगी सिद्ध हुई है। क्योंकि इसे इसी प्रकार निर्मित किया जाता है जिससे कि दैनन्दिनी में भारतीय पंचांग के महत्वपूर्ण अंश का भी समावेश रहता है।

हिन्दुस्थान समाचार का तकनीकी विकास

हिन्दुस्थान समाचार संवाद समिति का कार्य जब श्री श्रीकांत जोशी के मार्गदर्शन और संरक्षण में पुनः प्रारंभ किया गया, तब तक तकनीकी स्तर पर व्यापक विकास विस्तार और परिवर्तन हो चुका था। बाजार में एक से बढ़कर एक नवीन तकनीक उपलब्ध थी और उसमें भी निरन्तर विस्तार के लिए शोध कार्य चल रहे थे। ऐसे में समाचार प्रेषण पत्र वैश्विक क्षितिज पर उन्हें उद्घाटित करने के लिए अंतर्ताना (इंटरनेट तथा वेबसाइट) का सर्वप्रथम उपयोग हिन्दुस्थान समाचार ने प्रारंभ करने का निर्णय लिया। इसके लिए श्री जोशी ने युगे की साफ्टवेयर कंपनी के मालिक गोविन्द सोवले, जो स्वयं साफ्टवेयर इंजीनियर भी थे। उनसे हिन्दुस्थान समाचार न्यूज एजेन्सी की वेबसाइट निर्माण की बात की। इस संस्था ने **www.hindusthansamachar.com** वेबसाइट का निर्माण किया। जिसमें प्रारंभ में श्रीदेव अक्षर का प्रयोग किया गया। वेबसाइट पर प्रयोग किये जाने वाले अक्षर हिन्दुस्थान समाचार ने विविधा साफ्टवेयर कंपनी से क्रय किये।

हिन्दुस्थान समाचार की वेबसाइट पर उपयोग में लाये जा रहे अक्षरों को सामान्यतः पढ़ने में कठिनाई होती थी, इसलिये बाद में समाचारों का प्रकाशन, प्रेषण एवं संग्रहण यूनिकोड अक्षर में किया जाने लगा। इसकी जिम्मेदारी तत्कालीन हिन्दुस्थान समाचार संवाद समिति बोर्ड में निदेशक श्री नरेन्द्र ऐबी ने ली। वे स्वयं अपनी साफ्टवेयर कंपनी चलाते थे। 2009 में उन्होंने **www.hindusthansamachar.net** नाम से इस संवाद समिति की वेबसाइट का निर्माण किया। इस नाम से छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दुस्थान समाचार के प्रमुख तथा तत्कालीन संवाद समिति में निर्देशक श्री विवेक सक्सेना ने पूर्व में ही पंजीकृत करा रखी थी। जिसे बाद में श्री नरेन्द्र एबी की कंपनी को हस्तांतरित कर दिया गया। यह नई वेबसाइट प्रारंभ में ठीक में कार्य करती रही लेकिन जैसे-जैसे इसका उपयोग बढ़ता गया इसकी गति धीमी होती गई। अंततः इस वेबसाइट को भी समाप्त कर कार्य की अधिकता को देखकर नई वेबसाइट बनाने का निर्णय लिया गया। संवाद समिति ने पुराने नाम **www.hindusthansamachar.com** से पुनः हिन्दुस्थान समाचार की वेबसाइट यूनिकोड में निर्माण कराने के लिए सितम्बर 2011 में इस कार्य को भारती वेब प्राईवेट लिमिटेड, नागपुर को दिया। उन्होंने हिन्दुस्थान समाचार की आवश्यकता के अनुसार भाषायी वेबसाइट्स बनाने के लिए देश भर के सभी ब्यूरो प्रमुखों को एक दिन के

लिए नागपुर बुलाया तथा उनके साथ बैठक की। बैठक में आए बिन्दुओं पर गहन विचार विमर्श करने के बाद कंपनी के हेड सॉफ्टवेयर इंजीनियर श्री राम एवं उनके सहयोगी श्री श्याम द्वारा हिन्दुस्थान समाचार की हिन्दी सहित अलग-अलग भाषाओं में समाचार हेतु नई वेबसाइट निर्माण की गई। इन्होंने एक काम और किया कि हिन्दी भाषा के अलग-अलग राज्यों की भी वेबसाइट निर्माण की यथा-

1. delhi.hindusthansamachar.com
2. mp.hindusthansamachar.com
3. up.hindusthansamachar.com
4. ranchi.hindusthansamachar.com इत्यादि।

इसके बाद भी सभी राज्यों के मध्य समाचारों के तालमेल के स्तर पर केन्द्रीय समिति ने कुछ कमियाँ महसूस की। वहीं राज्यों के केन्द्र प्रमुखों का यह मत बना कि एजेन्सी की अलग अलग राज्यों के नाम से वेबसाइट हो यह जरूरी नहीं, एक ही वेबसाइट पर्याप्त होगी। अंततः सभी हिन्दी राज्यों की वेबसाइट बन्द करते हुए एक ही वेबसाइट रखने का निर्णय किया गया। जून 2013 में इसे समायोजित कर दिया गया। अब **www.hindusthansamachar.com** नाम से एक वेबसाइट कार्य कर रही है।

समाचार प्रेषण के स्तर पर सभी राज्यों से समाचार को अखबार की आवश्यकतानुसार उसके बताए गये फोन्ट में ई-मेल के जरिये प्रेषण किया जा रहा है। अन्य भारतीय संवाद समितियों की वेबसाईट की तरह ही 'हिन्दुस्थान समाचार' की वेबसाईट पर किसी भी समाचार को बिना यूजर नेम और पासवर्ड के नहीं पढ़ा जा सकता है। 'हिन्दुस्थान समाचार' से प्राप्त अखबारों एवं अन्य संस्थाओं को एजेंसी ने यूजर नेम और पासवर्ड मुहैया कराए हैं, जिनका प्रयोग कर वे आवश्यकतानुसार समाचारों को यहाँ से प्राप्त करते हैं।

हिन्दुस्थान समाचार अभी पी॰ टी॰ आई॰, यू॰ एन॰ आई॰, यू॰ एन॰ एस॰, आर॰ एन॰ एस॰, आई॰ ए॰ एन॰ एस॰ जैसी एजेन्सियों की तरह न्यूज डाउनलोड का अपना साफ्टवेयर तैयार नहीं कर सकी है। फिलहाल उसका काम चल रहा है और उसके ग्राहक भी संतुष्ट है। लेकिन शीघ्र ही इस दिशा में प्रयास किये जाने की उम्मीद इस संवाद समिति के सचिव श्री अनिरूद्ध शर्मा जताते हैं। वे तो यहां तक कहते हैं कि, भविष्य में शीघ्र **हिन्दुस्थान समाचार न्यूज एजेंसी** इलेक्ट्रॉनिक न्यूज चैनलों के लिए भी इलेक्ट्रानिक फार्म में समाचार देती हुई नजर आयेगी[37]।

वस्तुतः हिन्दुस्थान समाचार का तकनीकी पक्ष आधुनिक संदर्भ में सक्षम है। निरन्तरता में यह एजेन्सी इस संबंध में बैठकें कर अपनी कमियों को दूर करती रहती है।

हिन्दुस्थान समाचार के प्रमुख नायक-

हिन्दुस्थान समाचार की नींव रखने से लेकर इसे मुख्य समाचार धारा से जोड़ने तक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अनेक महापुरुषों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है जिनके व्यक्तित्व-कृतित्व को सार-संक्षेप में यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है-

1. शिवराम शंकर आप्टे-

राष्ट्रवादी पत्रकारिता जगत की जिन अनेक पत्रकारों ने अपने योगदान से समृद्ध किया है- उनमें श्री शिवराम शंकर आप्टे का नाम बहुत महत्वपूर्ण है। **दादा साहेब** के नाम से पहचाने जाने वाले इस यशस्वी पत्रकार ने भारतीय भाषाओं को एक सूत्र में जोड़ने का काम किया। उन्होंने भारत में 'हिंदुस्थान समाचार' नामक एक समाचार एजेंसी की स्थापना की। यह समाचार एजेंसी एक बहुभाषी समाचार एजेंसी है, जो आज भी काम करते हुए भारतीय पत्रकारिता की सेवा कर रही है। (दादा) साहेब आप्टे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने एक कार्यकर्ता, अधिवक्ता, व्यवसायी, संगठनकर्ता, साहित्यकार, चित्रकार, इतिहासकार और पत्रकार की भूमिकाओं में काम किया।

गुजरात के बड़ोदरा में सन् 1905 में दादा साहेब आप्टे का जन्म हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा दीक्षा भी बड़ोदरा में हुई। दादा आप्टे ने बाद में मुंबई से एल. एल. बी की परीक्षा पास की और नगर के एक विद्यालय में संस्कृत के अध्यापक के रूप में काम किया। मुंबई-न्यायालय में जब आपने वकालत प्रारंभ की। तब आपकी मुलाकात उस समय के जाने माने विधिवेत्ता तथा भारतीय संस्कृति के विद्व ान बैरिस्टर कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी से हुई। श्री आप्टे को मुंशी का मार्गदर्शन मिला तो उनकी प्रतिभा की चार चाँद लग गए। वकालत करते समय वे मुंबई के एक बड़े 'लिथो प्रेस' के कारोबार के सहयोगी भी रहे। इन्हीं दिनों 1931 के अंत में उनका सम्पर्क राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से भी हुआ, वह उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण पड़ाव बना। उनका सम्पर्क संघ के तत्कालीन सरसंघचालक श्री माधवराव सदासिशवराव गोलवलकर से हुआ।

हिंदुस्थान समाचार एजेंसी की स्थापना-

लेखन और पत्रकारिता में उनकी गहरी रूचि थी। इसलिए वे राष्ट्रसेवा में पत्रकारिता के माध्यम से योगदान करना चाहते थे। इस दौरान उन्होंने पत्रकारिता की परंपराओं और कार्यपद्धति को सीखने के लिए यू.पी.आई. (यूनाइटेड प्रेस ऑफ इंडिया) में

काम किया। वहाँ अनुभव प्राप्त करने के बाद श्री आप्टे ने **हिंदुस्थान समाचार** नाम से भारतीय भाषाओं की संवाद समिति गठित की। एक दिसंबर, 1948 को 'हिंदुस्थान समाचार' का शुभारंभ हुआ। पाँच वर्ष के भीतर ही 'हिंदुस्थान समाचार' एक राष्ट्रीय समाचार एजेंसी बन गयी। यह एजेंसी, देवनागरी दूरमुद्रक (टेलीप्रिंटर) के माध्यम से देश के अंदर समाचारों का संकलन और प्रेषण करने लगी। तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद ने भारतीय भाषाओं की श्रीवृद्धि के लिए किए जा रहे इस प्रयास की सराहना की। भारतीय भाषाओं की समाचार एजेंसी स्थापित कर श्री आप्टे ने राष्ट्रीय एकता और सद्भावना पैदा करने का महत्वपूर्ण काम किया। इससे हिंदी सहित अनेक भारतीय भाषाओं की पत्रकारिता को संबल मिला। 'हिंदुस्थान समाचार' स्वतंत्र भारत की पहली स्वदेशी संस्था बनी।

पत्रकारिता में अभिनव प्रयोग-

आप्टे जी ने भारतीय पत्रकारिता में कई अभिनव प्रयोग किए। आपने पूर्वी जर्मनी की यात्रा की एवं लंदन स्थित कामनवेल्थ न्यूज एजेंसी से भी संपर्क स्थापित किया। जिसके चलते 'हिंदुस्तान समाचार' के एक पत्रकार श्री वसंतराव देशपाण्डेय पत्रकारिता के विशेष अध्ययन के लिए वहाँ गए और उन्हें कामनवेल्थ न्यूज एजेंसी द्वारा लंदन में रहने का अवसर प्राप्त हुआ। भारत सरकार द्वारा गठित प्रथम प्रेस आयोग ने 'हिंदुस्थान समाचार' के कार्यकलापों की समीक्षा की है। इसमें आयोग ने कहा है कि देश कि जो तीन प्रमुख समाचार एजेंसियाँ हैं, उनमें यह एक है।

पत्रकारिता के क्षेत्र में नया प्रयोग करते हुए 'हिंदुस्थान समाचार' को सहकारिता के सिद्धांत के आधार पर विकसित: किया। श्री आप्टे का मानना था कि इससे एजेंसी आत्मनिर्भर तो होगी ही लोकतात्रिक भी बनी रहेगी। यह प्रयोग निश्चत ही आत्मनिरता की ओर एक बड़ा कदम था। 1957 में समिति के कर्मचारियों की सहकारी समिति बनाकर प्रथम सहकारी संवाद समिति बना दी गई। इसके फलस्वरूप भारतीय भाषाओं की प्रगति में आस्था रखने वाले सर्वश्री घनश्याम गुप्त, आर. आर. दिवाकर, डॉ. हरेकृष्ण मेहताब, हरिश्चंद्र माथुर, डॉ. रामसुभग सिंह, डॉ. सरोजनी महिषी, डॉ. जयसुख लाल हाथी, गंगाशरण सिंह आदि का सहयोग प्राप्त हुआ।

आदर्श पत्रकारिता के नायक

दादा साहेब आप्टे का पूरा जीवन रचनात्मकता से भरा हुआ है। एक संस्था की स्थापना, उसका विकास और नए पत्रकारों का निर्माण करने की अपनी जिम्मेदारी

को उन्होंने बखूबी निभाया। वे पत्रकारिता में सच, साहस और तथ्यपरकता के पक्ष में थे। हिन्दुस्थान समाचार के आर्थिक विपन्नता के दौर में भी वस्तुनिष्ठता, तथ्यपरकता और सत्यनिष्ठा की कसौटी पर खरी उतर रही खबरों का प्रकाशन, प्रसारण उनका लक्ष्य था। आर्थिक दबावों के आगे न झुकते हुए सिद्धातों पर आधारित मूल्यों की पत्रकारिता का उन्होंने कीर्तिमान रचा।

एक पत्रकार के नाते आप्टे जी ने भारत का हर कोना देखा। इस मायने में वे एक यायावर पत्रकार थे। उनकी पूरी जीवन यात्रा में शब्दों के प्रति समर्थन का भाव दिखता है। वे हिंदी, मराठी, गुजराती, अंग्रेजी और संस्कृत भाषा पर अपना अधिकार रखते थे। विविध भारतीय भाषाओं के विद्वानों और पत्रकारों के बीच जाकर उन्होंने सामाजिक सरोकारों और राष्ट्रीय एकता के भावों को भाषा के माध्यम से स्थापित करने का प्रयास किया।

महाराष्ट्र के समान जीवन में लोकप्रिय और सम्मानित समर्थ गुरु रामदास के जीवन पर उन्होंने अंग्रेजी में शोध प्रबंध लिखकर उसके योगदान से विश्व मानवता को परिचित कराया। हिंदी के प्रख्यात कवि जयशंकर प्रसाद की चर्चित कृतिः 'कामायनी' का आप्टे जी ने मराठी में अनुवाद किया। एक पत्रकार के साथ-साथ वे कलाकार भी थे। सिद्धहस्त चित्रकार और छायाचित्रकार के नाते उन्होंने अपनी एक खास जगह बनाई और समाज में सम्मानित हुए। बाद के दिनों में लगभग 22 देशों की यात्रा कर उन्होंने भारतीय संस्कृति और सभ्यता के प्रचार का काम किया।

2. बापूराव लेले-

'हिन्दुस्थान समाचार' को जन-जन तक पहुँचाने में, तथा उसको दृढ़ता प्रदान करने में श्री **बापूराव लेले** का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। श्री नारायण बालकृष्ण (बापूराव) लेले का जन्म 29 फरवरी 1920 को जलगांव (महाराष्ट्र) में चित्तपावन काश्यप गोत्र में हुआ। बापूराव के जन्मस्थान जलगाँव में भी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा लगने लगी थी। शाखा में होने वाली प्रार्थना, खेल, बौद्धिक चर्चाओं में उनका मन लगता था। सन् 1934 में मैंट्रिक परीक्षा देने के समय में ही उनकी भेंट राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार से हुई और बापूराव ने तुरंत ही संघ के पूर्णकालीन प्रचारक के रूप में निकलने का फैसला कर लिया[38]।

सन् 1940 में बापूराव लेले संघ के पूर्णकालीन प्रचारक बने। संघ कार्यों के विस्तार के साथ ही बापूराव की रूचि समाचार पत्रों द्वारा अपने विचारों को जनता तक पहुँचाने में रही। इसलिए प्रारंभ में उन्होंने महाराष्ट्र के समाचार पत्रों के लिए उन्होंने गुजरात से लिखना प्रारंभ किया। पुणे के **'भारत'** दैनिक में, साबरमती के तट से **'स्तंभ'** तथा **'ज्ञानोदय'** पत्र के लिए **आर्थिक विषय पर** 'पैसा बोलता है' स्तंभ लिखने लगे[39]।

स्वतंत्रता प्राप्ति के समय सन् 1947 में बापू लेले बड़ौदा में प्रचारक बनकर आए। इस समय देश में अनेक राजनीतिक घटनाएँ जैसे- पंद्रह अगस्त का स्वतंत्रता दिवस, देश का बंटवारा, रियासतों का विलीनीकरण, गांधी हत्या जैसी घटनाएँ घटीं। ऐसे समय में बापूराव का संघ प्रचारक के रूप में कार्य अविस्मरणीय सिद्ध हुआ।

30 जनवरी सन् 1948 को महात्मा गांधी की हत्या होने पर संघ पर अघोषित प्रतिबंध लग गया। इसके बाद संघ का काल अत्यंत संघर्षपूर्ण और कसौटी भरा रहा। एक तरफ सरकार संघ के विरोध में लगातार अपप्रचार कर रही थी। दूसरी ओर बापूराव लेले जैसे संघ के अनेक कर्त्तव्यनिष्ठ, निष्काम कर्मयोगी प्रचारक स्वयंसेवक लोगों को सही जानकारी देने के लिए पत्रक **(बुलेटिन)** छापकर बांटने का कार्य करने लगे। जिससे गांधी हत्या विषय पर जनता को संघ के विषय में सही जानकारी दे सके। इन पत्रकों में बापूराव लेले सुंदर अक्षरों में लेखन एवं हस्ताक्षर करते।

संघ की प्रेरणा से सन् 1948 में भारतीय भाषाओं में पहली संवाद समिति **'हिन्दुस्थान समाचार'** की स्थापना हुई। 'हिन्दुस्थान समाचार' में **दादा साहब आप्टे**(जो संवाद समिति के संस्थापक थे।) ही बापुराव लेले को लाए थे। अपनी रूचि का कार्य पाकर बापूराव पूरी तरह 'हिन्दुस्थान समाचार' के कार्य में लीन हो गए थे।

बापूराव लेले ने 'हिन्दुस्थान समाचार' को संघकार्य का एक प्रभावी संपर्क साधन मानकर ही कार्य विस्तार किया। संघ पर पुनः कभी कोई संकट ना आए और संकट आए भी तो संघ अलग-थलग ना पड़ जाए, साथ ही देश की बदलती राजनीतिक परिस्थितियों के कारण संघ पर कोई बंधन ना लगे। इसीलिए बापूराव लेले ने संपर्क अभियान प्रारंभ किया[40]।

संघ विचारों की पक्की, तर्कसंगत बैठक, मधुर स्वभाव, मीठी वाणी का जन्मजात गुण, दूसरों के सुख-दुःख में समरस होने की और उन्हें मदद करने की सहज प्रवृत्ति, आत्मीयता से ओत-प्रोत अन्तःकरण और देवतुल्य सादगी। इन विशेषताओं के कारण राजधानी दिल्ली के सभी राजनीतिक गलियारों, पत्रकार जगत, मराठी लावलश्कर में तथा संघ परिवार में बापूराव थोड़े समय में ही 'अपना आदमी' बन गए।

महाराष्ट्र व विशेषतः मुंबई में और गुजरात में बापूराव के संपर्क सेतु एवं कार्य प्रसार के कारण ही इन स्थानों पर 'हिन्दुस्थान समाचार' का प्रारंभ आसानी से हो सका।

श्रीकांत शंकरराव जोशी-

'हिन्दुस्थान समाचार' की स्थापना एवं उसके विस्तार में दादा साहब आप्टे एवं 'साइकिल वाले पत्रकार' नाम से प्रख्यात श्री बापूराव लेले का महनीय योगदान रहा।

किन्तु देश में आपातकाल थोपने वाली इंदिरा सरकार एवं उसके बाद की सरकारों ने धीरे-धीरे कुचक्र रचकर भारतीय भाषाओं में समाचार देने वाली बहुभाषी संवाद समिति 'हिन्दुस्थान समाचार' को आर्थिक संकट के चक्रव्यूह में फंसाकर 'घाटे की संस्था' बताकर बंद कराने का फरमान सुना दिया।

तब सरकार के कुचक्र का सामना किया **'हिन्दुस्थान समाचार'** के कर्मयोगी निष्ठावान श्री चंद्रमोहन जी ने। उन्होंने लगभग 8 वर्षों तक लंबी कानूनी लड़ाई लड़कर **'हिन्दुस्थान समाचार'** को बचाया। किन्तु इसे पुनर्ररंभ करने के लिए एक सशक्त सहयोगी की आवश्यकता थी। अत: उन्होंने संघ के **अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख श्रीकांत जोशी जी** से सहायता ली।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक श्रीकांत शंकरराव जोशी का जन्म 21 दिसंबर 1936 को महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले में हुआ था। स्नातक शिक्षा के दौरान ही वह संघ के स्वयंसेवक बने तथा सन् 1960 में संघ के पूर्णकालीन प्रचारक बने। सर्वप्रथम उन्हें संघ कार्य हेतु नांदेड़ भेजा गया। उसके बाद असम के तेजपुर में विभाग प्रचारक बनकर उन्होंने 25 वर्ष तक वहाँ के संघ कार्य का विस्तार किया। असम राज्य में श्रीकांत जोशी ने विद्या भारती के सैंकड़ों विद्यालय खुलवाए तथा प्रमुख स्थानों पर संघ कार्यालयों का निर्माण कराया। इनकी पुस्तक-**'घुसपैठ : एक निःशब्द आक्रमण'** भी बहुत चर्चित हुई।

विभिन्न दायित्वों का निर्वहन करते हुए इन्होंने **अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख** का भी पद संभाला। इसी दौरान वर्ष 2001 में **'हिन्दुस्थान समाचार संवाद समिति'** जो कानूनी दांवपेंच तथा सरकारी षड़यंत्रों में उलझकर मृतप्राय: संस्था हो चुकी थी। उसे पुनर्जीवित करने का कार्य किया। इसके लिए श्रीकांत जोशी ने देशभर से संघ के चुने हुए पत्रकारिता से संबंधित पत्रकारों एवं संपादकों का जुटान किया। निष्काम कर्मयोगी तथा पत्रकारिता को आर्थिक लक्ष्य की मंजूषा ना मानकर एक मिशन मानने वाले तथा राष्ट्रवादी विचारधारा के गुणी पत्रकारों को 'हिन्दुस्थान समाचार' के श्रीकांत जोशी ने एकत्र किया। श्रीकांत जोशी के दृढ़ संकल्प के कारण ही कुछ ही समय में **'हिन्दुस्थान समाचार'** के कार्यालय देशभर के प्रमुख राज्यों में खुल गए। भारतीय भाषाओं में समाचार देने वाली सवांद समिति 'हिन्दुस्थान समाचार' एकमात्र विश्व की सर्वाधिक भाषाओं में समाचार देने वाली संस्था है।

'हिन्दुस्थान समाचार' के लिए श्रीकांत जोशी ने ही **'नवोत्थान'** शब्द का प्रयोग किया था[41]।

यद्यपि दिल्ली में 'हिन्दुस्थान समाचार' कार्य वर्ष 2002 से प्रारंभ हुआ। तथापि इसके पूर्व ही निधि संकल्प हेतु श्रीकांत जोशी जी ने **'राष्ट्रीय पत्रकारिता कल्याण न्यास'** बनाया। इसका उद्देश्य था कि 'हिन्दुस्थान समाचार के लिए एक सशक्त आर्थिक स्रोत हो, साथ ही व्यय करने हेतु मूल पूंजी करना, विविध कार्यकर्ताओं का

आयोजन करना, वार्षिक स्मारिका प्रकाशित करना, स्मारिका प्रकाशन हेतु विज्ञापन प्राप्त करना आदि। अनेक माध्यमों का सृजन कर उसका वित्तीय प्रबंधन करते हुए श्रीकांत जोशी ने इस पूंजी का प्रयोग दिल्ली तथा देशभर में 'हिन्दुस्थान समाचार' के कार्यालय खोलने में किया[42]।

इसके साथ ही **'हिन्दुस्थान समाचार'** द्वारा प्रेषित समाचारों को बैंकों और अस्पतालों में अधिक से अधिक दिखाना। साथ ही संगणन प्रबंधक की व्यवस्था करके संगठन शिक्षा का प्रचार एवं इसके द्वारा धन प्रबंध कर 'हिन्दुस्थान समाचार' को आर्थिक मदद देने की भी श्रीकांत जोशी ने ही व्यवस्था की[43]।

इस प्रकार राष्ट्रवादी पत्रकारिता की नींव दृढ़ करने वाले तथा देश को राष्ट्रहित के मार्ग पर ले जाने वाले पत्रकारों की पौध लगाने में हिन्दुस्थान समाचार संवाद समिति एवं **'हिन्दुस्थान समाचार'** के **पुनरूद्धारक माननीय श्रीकांत जोशी** का विशेष योगदान रहा।

सन्दर्भ सूची

1. डॉ॰ कुलदीप चंद अग्निहोत्री 'स्वर्ण महोत्सव स्मारिका', 1957-2007, प्रकाशन-हिन्दुस्थान समाचार, नई दिल्ली, पृ॰ 26, प्रकाशन वर्ष-2007।
2. सं॰ जी आर माधवराय, हिन्दुस्थान समाचार नवोत्थान अंक, पृ॰ 37।
3. डॉ॰ कुलदीप चंद अग्निहोत्री 'स्वर्ण महोत्सव स्मारिका', 1957-2007, प्रकाशन-हिन्दुस्थान समाचार, नई दिल्ली, पृ॰ 27, प्रकाशन वर्ष-2007।
4. सं॰ बसंत आप्टे, बापूराव लेले : व्यक्ति और कार्य, राष्ट्रीय पत्रकारिता कल्याण न्यास, नई दिल्ली- पृ॰ 54।
5. डॉ॰ कुलदीप चंद अग्निहोत्री 'स्वर्ण महोत्सव स्मारिका', 1957-2007, प्रकाशन-हिन्दुस्थान समाचार, नई दिल्ली, पृ॰ 28, प्रकाशन वर्ष-2007।
6. डॉ॰ कुलदीप चंद अग्निहोत्री 'स्वर्ण महोत्सव स्मारिका', 1957-2007, प्रकाशन-हिन्दुस्थान समाचार, नई दिल्ली, पृ॰ 60, प्रकाशन वर्ष-2007।
7. डॉ॰ सुशीला जोशी, हिन्दी पत्रकारिता : विकास और विविध आयाम, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पृ॰ 139।
8. नवोत्थान अंक- पृ॰ 39, प्रकाशन हिन्दुस्थान समाचार, नई दिल्ली।
9. श्री गुरू जी समग्र खंड-7, प्रकाशन डॉ॰ हेडगेवार स्मारक समिति, नागपुर, 2005, पृ॰ 323।
10. सं॰ मंगल पाण्डेय- राष्ट्रीय चुनौतियां और समाधान, प्रकाशन हिन्दुस्थान समाचार, रांची, झारखंड-2012, पृ॰ 35।
11. वही।
12. डॉ॰ कुलदीप चंद अग्निहोत्री 'स्वर्ण महोत्सव स्मारिका', 1957-2007, प्रकाशन-हिन्दुस्थान समाचार, नई दिल्ली, पृ॰ 32, प्रकाशन वर्ष-2007।

13. नवोत्थान अंक- पृ॰ 38, प्रकाशन हिन्दुस्थान समाचार, नई दिल्ली।
14. वही।
15. हिन्दुस्थान समाचार समिति के मार्गदर्शक एवं संरक्षक सदस्य- श्री लक्ष्मीनारायण लाला जी से प्राप्त जानकारी पर आधारित- 20 अगस्त, 2022।
16. चन्द्रमोहन भारद्वाज से बातचीत पर आधारित सूचना- 3 सितम्बर, 2022।
17. लेख श्रीकांत जोशी, स्वर्ण महोत्सव स्मारिका', 1957-2007, प्रकाशन- हिन्दुस्थान समाचार, नई दिल्ली, पृ॰ 34।
18. चन्द्रमोहन भारद्वाज से बातचीत पर आधारित अंश-10 सितम्बर, 2022।
19. वृत्तचित्र- 'हिन्दुस्थान समाचार की विकासयात्रा, वर्ष-2011।
20. नवोत्थान अंक- पृ॰ 40, प्रकाशन हिन्दुस्थान समाचार, नई दिल्ली।
21. चन्द्रमोहन भारद्वाज से बातचीत पर आधारित अंश-16 अगस्त, 2022।
22. वही।
23. चन्द्रमोहन भारद्वाज से बातचीत पर आधारित सूचना-17 अगस्त, 2022।
24. हिन्दुस्थान समाचार समिति के मार्गदर्शक एवं संरक्षक सदस्य- श्री लक्ष्मीनारायण भाला जी से प्राप्त जानकारी पर आधारित- 10 अगस्त, 2022।
25. लेख श्रीकांत जोशी, स्वर्ण महोत्सव स्मारिका', 1957-2007, प्रकाशन- हिन्दुस्थान समाचार, नई दिल्ली, पृ॰ 34।
26. वही।
27. लेख श्रीकांत जोशी, स्वर्ण महोत्सव स्मारिका', 1957-2007, प्रकाशन- हिन्दुस्थान समाचार, नई दिल्ली, पृ॰ 35।
28. हिन्दुस्थान समाचार के कार्यकारी फीचर संपादक प्रो॰ मनोज चतुर्वेदी से बातचीत पर आधारित- 4-सितम्बर, 2022।
29. सचिव हिन्दुस्थान समाचार- अनिरूद्ध शर्मा से बातचीत पर आधारित- 20 अगस्त, 2022।
30. चन्द्रमोहन भारद्वाज से बातचीत पर आधारित सूचना-12 सितम्बर, 2022।
31. दैनंदिनी- वि॰ सं॰- 2064, प्रकाशन हिन्दुस्थान समाचार 2007।
32. लेख श्रीकांत जोशी, स्वर्ण महोत्सव स्मारिका', 1957-2007, पृ॰ 37-38, प्रकाशन- हिन्दुस्थान समाचार, नई दिल्ली।
33. वही।
34. वही।
35. चन्द्रमोहन भारद्वाज से बातचीत पर आधारित सूचना-9 सितम्बर, 2022।
36. समाचार संपादक- श्रीराम जोशी, हिन्दुस्थान समाचार से पफोन वार्ता पर आधारित'- 3 सितम्बर, 2022।
37. सचिव हिन्दुस्थान समाचार- अनिरूद्ध शर्मा से बातचीत पर आधारित- 30 अगस्त, 2022।
38. बसंत आपटे 'बापूराव लेले : व्यक्ति और कार्य, राष्ट्रीय पत्रकारिता, कल्याण, न्यास दिल्ली, 2004, पृष्ठ 17।

39. वही, पृष्ठ 28।
40. वही, पृष्ठ 52।
41. श्रीकांत शंकरराव जोशी : कृतार्थ जीवन, राष्ट्रीय पत्रकारिता कल्याण न्यास, हिन्दुस्थान समाचार, नई दिल्ली, 2013, पृष्ठ 138।
42. वही, पृष्ठ 138।
43. वही।

पंचम अध्याय

विश्व संवाद केन्द्र

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने समाज में सकारात्मक सूचना संप्रेषण हेतु मीडिया की आवश्यकता पूर्ति हेतु **'हिन्दुस्थान समाचार'** तथा **'विश्व संवाद केन्द्र'** की स्थापना की। इसका उद्देश्य विमर्श स्थापित करना, समाज में चल रहे विमर्श का ध्यान रखना, समाज में संघ के बारे में फैली भ्रांतियों को दूर करना, हिन्दुत्व, राष्ट्रीय विचारों, सकरात्मकता व रचनात्मक कार्यों का प्रचार-प्रसार करना।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का संपर्क एवं प्रचार विभाग इन वाक्यों पर आधारित है- "We are not news agency, we are 'Views' creater." "Do not abuse the media, rather use the media"

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में प्रारंभ से ही आवश्यकतानुसार बौद्धिक, शैक्षिक, शारीरिक और व्यवस्था विभाग चल रहे थे। सन् 1989-90 में सेवा विभाग और सन् 1994 में संपर्क एवं प्रचार विभाग प्रारंभ हुए। देश की स्वतंत्रता समय से ही हिन्दुस्थान न्यूज ऐंजेंसी, आर्गनाईजर, पांचजन्य पत्र प्रारंभ हो चुके थे। सन् 1990 के आसपास प्रांतों की जागरण पत्रिकाओं तथा मीडिया से वार्ता प्रारंभ हुई।

संघ के प्रचार विभाग आगामी 15-20 वर्षों में निरंतर कार्य करने हेतु विमर्शो की भी स्थापना होती है। इसमें व्यक्ति निर्माण में प्रचार विभाग की भूमिका अर्थात् दृष्टिकोण, अर्थात् मीडिया का कितना उपयोग करना है। समाज जागरण, समाज परिवर्तन के कार्य में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचार विभाग की भूमिका आदि तय होती है।

1. विश्व संवाद केन्द्र की स्थापना

विश्व संवाद केन्द्र प्रसार माध्यमों कार्य करने वाले विभिन्न केन्द्रों की एक श्रृंखला

है। विश्व संवाद केन्द्र का उद्देश्य प्रसार माध्यमों की दुनिया में बदलते वैश्विक परिवेश को पहचान कर राष्ट्रवादी तथा राष्ट्रीय विचारों को अग्रक्रम में रखना है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा सकारात्मक सूचनाओं के सम्प्रेषण तथा जनमाध्यमों से सूचनाओं की प्राप्ति हेतु **'विश्व संवाद केन्द्र'** की स्थापना की गयी। सन् 1991 में 'श्री राम जन्मभूमि आंदोलन के समय तत्कालीन तेजी से बदलते सामाजिक राजनीतिक परिवेश के घटनाक्रम की सही तथा निष्पक्ष सूचना जन-जन तक पहुँचाने के लिए अयोध्या(उ. प्र.) में 'विश्व संवाद केन्द्र' की स्थापना की गयी। किन्तु सन् 1992 में यह केन्द्र लखनऊ (उ. प्र.) में आ गया।

डी. 2 पार्क रोड, विधायक निवास पर पूर्व विधायक विपिन चंद्र तिवारी के संरक्षण में तथा क्षेत्र प्रचारक (उ. प्र.) श्री अधीश कुमार जी के नेतृत्व में अपनी स्थापना वर्ष से विश्व संवाद केन्द्र का कार्य सुचारू रूप से प्रारंभ हुआ। जो मात्र 13-14 वर्षों में ही देश के संपूर्ण प्रांतों में विस्तारित हो गया। इस समय देश के सभी प्रांतों में विश्व संवाद केन्द्र कार्य कर रहे हैं। विश्व संवाद केन्द्र अपने स्थापना काल से ही समाज में हिन्दुत्व, सकारात्मक समाचारों का सम्प्रेषण, संपादक के नाम-पत्र लेखन, स्तंभ लेखन, सोशल मीडिया इन विभिन्न आयामों के साथ ही त्रैमासिक शोधपरक पत्रिका का प्रकाशन अब तक करता आ रहा है[1]।

विश्व संवाद केन्द्र वास्तव में जनमाध्यम या मीडिया सेन्टर के रूप में कार्यरत है। विश्व संवाद केन्द्र की प्रस्तावित गतिविधियां इस प्रकार रहीं।

1. पुस्तकालय संचालन
2. संगोष्ठी आयोजन
3. बाल पुस्तकालय का संचालन
4. सूचना पत्रिकाओं का प्रकाशन,
5. मल्टीमीडिया, कम्प्यूटर आधारित इंटरनेट व्यवस्था द्वारा सूचना संप्रेषण।
6. पत्र लेखन
7. समाचार संग्रहण
8. स्थानीय सूचना संग्रह एवं संप्रेषण
9. साइबर न्यूज एजेंसी- 'संवाद भारती डॉट कॉम' के लिए सूचना संप्रेषण
10. नियमित फीचर/सूचनाओं का, स्थानीय पत्रों के संप्रेषण
11. जनमाध्यमों से संपर्क
12. समाचार पत्रों, पत्रिकाओं का संग्रह
13. अन्य विश्व संवाद केन्द्रों से सूचनाओं का आदान-प्रदान
14. पत्रकार वार्ता का आयोजन

इसके साथ ही कुछ मुख्य कार्यों का भी नियमित संपादन विश्व संवाद केन्द्रों से होता रहता है। जिनमें प्रमुख अंग है-

1. राष्ट्रीय महत्त्व के विषय, मुद्दे तथा विभिन्न घटनाओं की तथ्यात्मक सही जानकारी समाज तक पहुँचाना।
2. देश के कोने-कोने में घटित होने वाली विविध घटनाओं का राष्ट्रीय दृष्टिकोण से विश्लेषण करते हुए मीडिया के माध्यम से समाज तक सफलता पूर्वक पहुँचाना।
3. हिन्दुत्व से संबंधित समाज में व्याप्त दुराग्रहों/भ्रमों को समय-समय पर स्पष्टीकरण करते हुए इस वैचारिक आंदोलन के विविध पहलुओं को समाज तक पहुँचाने के लिए प्रसार माध्यम से संपर्क व्यवस्था बनाना।
4. देश में असामाजिक तत्व समय-समय पर राष्ट्र, राष्ट्रीय महत्त्व के मुद्दों, यहाँ की सभ्यता-संस्कृति पर असत्य, अर्धसत्य या भ्रमित करने वाली जानकारियाँ प्रस्तुत करते हैं। ऐसे विषयों पर राष्ट्रीय जागरण के आंदोलन, अभियानों की सही जानकारी समाज तक पहुँचाने की आवश्यकता की पूर्ति विश्व संवाद केन्द्र ही करता है।
5. प्राय: स्थानीय समाचारों में भी महत्त्वपूर्ण समाचार प्रकाशित होते हैं। किन्तु इन समाचारों की सूचना व्यापक समाज/समूह तक नहीं जा पाती। ऐसे में विश्व संवाद केन्द्र द्वारा स्थानीय माध्यम में प्रसारित/प्रकाशित समाचारों एवं विषयों का चयन कर उन्हें विभिन्न भाषाओं विशेषकर हिन्दी/अंग्रेजी में अनुवादित करा कर देशभर के विश्व संवाद केन्द्रों पर भेजा जाता है। इसी प्रकार देशभर के विश्व संवाद केन्द्रों द्वारा अपने प्रांत में आये समाचार एवं विषयों में से चयनित जानकारी अपनी स्थानीय भाषा में अनुवादित कराकर वहाँ के मीडिया को प्रकाशनार्थ भेजा जाता है[2]।
6. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रेरणा से समाज जीवन के विभिन्न अंगों में कार्य करने वाले करीब 50 से अधिक संगठन हैं। इनमें से कुछ संगठनों के पास प्रसार माध्यमों का संपर्क करने की स्वतंत्र व्यवस्था या स्वयं का प्रसार विभाग है। किन्तु देश भर के 43 प्रांतों में विश्व संवाद केन्द्रों द्वारा संघ के सभी आनुषांगिक संगठनों को प्रसार माध्यमों से जोड़ा जाता है। इस प्रयोजन हेतु पत्रकार वार्ता आयोजित कराकर संगठनों के कार्य व्यवहार की सही जानकारी की जाती है।
7. पत्रकारिता के विषय में समाज को जागृत एवं सक्रिय करते हुए माध्यमों से जागृत समाज की दखल बढ़ने के साथ ही प्रसार माध्यमों से चलने वाली बहस को उचित दिशा देने का प्रयास है।
8. विश्व संवाद केन्द्र द्वारा प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रानिक मीडिया तथा न्यू मीडिया इन तीनों माध्यमों से कार्य किया जाता है।
9. प्रतिवर्ष विळव के आदि पत्रकार, **देवर्षि नारद जी जयंती** को विश्व संवाद

केन्द्र **'पत्रकार दिवस'** के रूप में मनाया जाता है तथा पत्रकारों के लिए संगोष्ठी, पत्रकार प्रशिक्षण, पत्रकार मिलन, पत्रकार सम्मान आदि गतिविधियों द्वारा प्रसार माध्यम क्षेत्र में संस्कृति परक मूल्यवर्धित कार्य किया जाता है[3]।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सभी आनुषांगिक संगठनों की स्थापना का एक निश्चित उद्देश्य रहा है। यद्यपि सभी संगठनों का एक मात्र मुख्य उद्देश्य, राष्ट्रहित, समाजहित कारक कार्यों का ही संपादन करना रहा है। संघ के आनुषांगिक संगठन राष्ट्र के गौरवशाली अतीत का स्मरण करते हुए आगामी 20-30 वर्षों के कार्य पद्धति की सूची बनाते हुए वर्तमान समय में उत्कृष्ट कार्य योजना बनाकर निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति का लक्ष्य निर्धारित करते हैं। इसी क्रम में विश्व संवाद केन्द्रों के भी निश्चित उद्देश्य हैं। जो इस प्रकार हैं-

1. समाज राष्ट्र एवं विश्व कल्याण हेतु विराट लक्ष्य प्राप्ति के लिए समाज की इकाई व्यक्ति का विकास करना।
2. राष्ट्रीय घटनाएं तथा संबंधित वृत्त स्थानीय प्रसार माध्यमों तक पहुँचाना तथा स्थानिक महत्त्वपूर्ण घटनाओं का विवरण देश भर के विश्व संवाद केन्द्रों के माध्यम से विविध प्रांतों में पहुँचाना।
3. प्रसार माध्यम तथा इनके प्रतिनिधियों को विश्व संवाद केन्द्र के कार्यक्रमों में सम्मिलित करके विश्व संवाद केन्द्र तथा अन्य संबंधित संस्थाओं की जानकारी उपलब्ध कराना।
4. महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय घटनाओं पर उचित विचार मंथन के माध्यम से सही जानकारी तथा वृत्त उपलब्ध कराना।
5. देश का गौरव बढ़ाने वाली तथा सकारात्मक सूचनाओं, संबंधित घटनाओं को अधिकाधिक लोगों तक पहुँचाकर राष्ट्र का मनोबल बढ़ाने का प्रयास करना।
6. पत्रकारों के लिए उपयुक्त साहित्य प्रकाशित एवं प्रसारित करना तथा मार्गदर्शन पर प्रशिक्षण सत्रों का आयोजन करना[4]।

विश्व संवाद केन्द्रों की अपेक्षित कार्य सूची भी है। जिनके माध्यम से परिष्कृत घटना संबंधी सूचनाओं का सम्प्रेषण किया जाता है। इनमें सम्मिलित है-

1. क्षेत्र के सभी मीडिया कर्मियों के नाम, पते, दूरभाष, चलभाष तथा ईमेल की सूची संकलन करना।
2. क्षेत्र में सोशल मीडिया में सक्रिय, हिन्दुत्व/राष्ट्रवादी समर्थक कार्यकर्ताओं/संबंधित व्यक्तियों के दूरभाष, चलभाष तथा इमेल की सूची संकलन करना।
3. क्षेत्र के ब्लॉगर्स के नाम, पते, दूरभाष, चलभाष तथा इमेल का पता सूची बनाना।

4. क्षेत्र में रहने वाले 'स्तंभ लेखकों' के नाम पते, दूरभाष, चलभाष तथा ईमेल पता संकलन करना।
5. अन्य संवाद केन्द्र से आये महत्वपूर्ण समाचार तथा उपलब्ध समाचारों को अंतरजाल (इंटरनेट) के माध्यम से अपने प्रभाव क्षेत्र के छोटे एवं मझोले समाचार पत्रों को वेबपोर्टलस को भेजना।
6. पत्रकारिता प्राप्त या प्रशिक्षण ले रहे विद्यार्थियों से नियमित संपर्क कर उनके साथ बैठकें आयोजित करना।
7. उनके प्रभाव क्षेत्र के सोशल मीडिया में सक्रिय लोगों के लिए कार्यक्रम/बैठकें/प्रशिक्षण/कार्यशालाएं आयोजित करना।

इस प्रकार संवंद केन्द्र का एक प्रमुख कार्य मीडिया प्रोफाइल बनाना है। जिसमें '**In One Click**' में प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, डिजिटल मीडिया, वेब मीडिया की पूरी प्रोफाइल/ इनमें काम कर रहे महिला और पुरुष पत्रकारों का सम्पूर्ण विवरण दर्ज हो[5]।

विश्व संवाद केन्द्र सभी प्रचार माध्यमों से भली-भांति जुड़कर ठीक प्रकार से सूचनाओं का आदान-प्रदान कर सके। इसके लिए भी विश्व संवाद केन्द्र में आवश्यक संरचना पर ध्यान दिया गया।

1. प्रत्येक प्रांत के विळव संवाद केन्द्र में कम से कम दो कम्प्यूटर रहे, जिनकी औपरेटिंग सिस्टम विंडोज 7 या इससे ऊपर की रहे। इनकी **RAM** न्यूनतम 4 **G.B.** हो साथ ही कम्प्यूटर में एंटी वायरस सॉफ्टवेयर आवश्यक रहे।
2. कम्प्यूटर में क्षेत्र के सभी पत्रकारों, स्तंभलेखकों, ब्लॉगर्स आदि की नवीनतम सूची हो। कम्प्यूटर का नियमित 'बैक-अप' होता रहे।
3. इन्टरनेट का सही कनैक्शन रहे। उसे सभी कम्प्यूटर में पहुँचाने की व्यवस्था रहे। सभी कम्प्यूटर **LAN** द्वारा आपस में जुड़े हों।
4. सभी विश्व संवाद केन्द्रों पर ठीक अवस्था में एक प्रिंटर भी हो।
5. कम्प्यूटर में कम्पोजिंग के लिए, फोटो एडिटिंग के लिए तथा स्थानीय भाषा में लिखने एवं समाचारों के अनुवाद के लिए आवश्यक सॉफ्टवेयर उपलब्ध रहे।
6. सभी विश्व संवाद केन्द्रों पर **Voice Recorder** तथा **Video Recorder** भी रहना आवश्यक है[6]।

विश्व संवाद केन्द्रों में सुचारु रूप से गतिविधियों को संचालित कराने हेतु एक निश्चित कार्य पद्धति होनी चाहिए। इनमें प्रमुख है-

1. विश्व संवाद केन्द्रों के संचालन हेतु एक ट्रस्ट या सोसायटी हो। साथ ही इस ट्रस्ट को चलाने वाला एक न्यासी मंडल हो।

2. विश्व संवाद केन्द्र के दैनंदिन संचालन हेतु एक प्रबंधक मंडल या संचालन मंडल बने जो संवाद केन्द्र की दैनंदिन गतिविधियों को सही गति एवं दिशा प्रदान करे।
3. इस प्रबंधन एवं संचालन टोली की नियमित/साप्ताहिक बैठकें होती रहें। जिसके द्वारा विश्व संवाद केन्द्र के विकास हेतु महत्त्वपूर्ण निर्णय लिया जा सके।
4. संवाद केन्द्र का नियमित ऑडिट होता रहे तथा सभी आवश्यक तथा सरकारी औपचारिकताएं भी पूरी होती रहें।[7]

2. विश्व संवाद केन्द्र की आर्थिक व्यवस्था– किसी भी संस्था के विकास के लिए धन आवश्यक है। धन संकलन सरकार द्वारा प्रदत्त सहायता राशि के रूप में अथवा स्वयं संस्था के सदस्यों द्वारा बनाए गए विभिन्न आर्थिक स्त्रोतों द्वारा हो सकते हैं।

संवाद केन्द्र स्वयंपूर्ण रहे ऐसी कल्पना है। साथ ही अपने वार्षिक खर्च की आवश्यक राशि, बजट बनाकर विश्व संवाद केन्द्र स्वतः खड़ी करता है। इस संदर्भ में कुछ प्रयास महत्त्वपूर्ण हैं, जो विश्व संवाद केन्द्र की आर्थिक व्यवस्था में सुधार कर सकते हैं–

1. विश्व संवाद केन्द्र से 'संवादमित्र' बनाया जाए और इन संवादमित्रों से 1000, 2000 या 5000 रुपये की राशि सदस्य/वार्षिक सदस्य/आजीवन सदस्य रूप में ली जा सकती है।
2. राष्ट्र हितकारी तथा समाज कल्याणकारक सकारात्मक सूचनाओं को जनता तक पहुँचाने के लिए उपरोक्त राशि बहुत ज्यादा नहीं है।
3. वर्ष में एक-दो विशेषांक प्रकाशित कर उसमें स्थान, क्षेत्र, जिला, प्रांत तथा राज्य स्तरीय विज्ञापन मंगाकर आर्थिक सुदृढ़ीकरण किया जा सकता है।
4. प्रसार माध्यम से जुड़े विषयों पर 'डायरेक्टरी' प्रकाशित करके तथा राष्ट्रहित में पुस्तकें प्रकाशित करके भी अर्थव्यवस्था की जा सकती है[8]।

विश्व संवाद केन्द्र की स्थापना के बाद उसके राज्यवार विस्तार एवं इस केन्द्र द्वारा आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रमों, गतिविधियों के संचालन में समय-समय पर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के विभिन्न प्रचारकों एवं कार्यकर्ताओं ने अपना महनीय सहयोग दिया।

संघ को समाज तक लाने में पत्रकारिता, संवाद मार्ग पर जिन्होंने अपना अमूल्य सहयोग दिया। उनमें माननीय अधीश जी, डॉ. मनमोहन वैद्य, अरुण कुमार एवं सुनील अंबेकर प्रमुख हैं। यहाँ संघ के **अखिल भारतीय प्रांत प्रचार प्रमुखों** का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है–

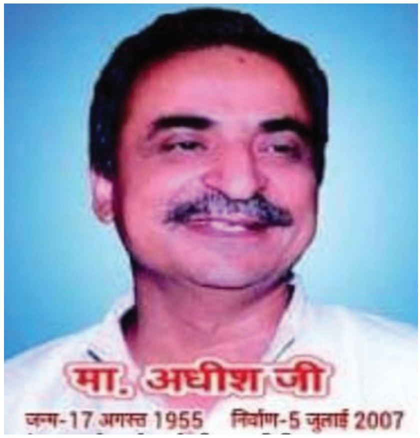

माननीय अधीश जी प्रथम विश्व संवाद केन्द्र के प्रेरक एवं मार्गदर्शक

(क) माननीय अधीश जी-

'तन समर्पित, मन समर्पित और यह जीवन समर्पित'। इस पंक्ति को पूरी तरह से चरितार्थ करने वाले थे माननीय अधीश जी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कर्मयोगी अधीश जी का जन्म 17 अगस्त 1953 को आगरा (उ. प्र.) में हुआ। बाल्यावस्था में संयोगवश राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के करीब जाने का अवसर मिलने के बाद वह उससे कभी अलग नहीं हो सके। कानून की शिक्षा प्राप्त कर सन् 1973 में उन्होंने अपना जीवन संघ को समर्पित कर दिया।

सन् 1975 में आपातकाल के दौरान राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने भीषण अत्याचार किया। जिसके भागी अधीश जी भी बने। इस अवधि में वह जेल में बंद किए गए और उन पर भी शारीरिक-मानसिक अत्याचार हुआ। आपातकाल के बाद उन्हें सन् 1981 में संघ कार्य हेतु मेरठ भेजा गया। मेरठ महानगर, सहारनपुर जिला, विभाग, मेरठ प्रांत बौद्धिक प्रमुख, प्रचार प्रमुख आदि दायित्वों के बाद उन्हें 1996 में लखनऊ भेजकर उत्तर प्रदेश का प्रचार प्रमुख बनाया गया[9]।

प्रचार प्रमुख के दायित्व के समय अधीश जी ने 'विश्व संवाद केन्द्रों की स्थापना और उसके विकास में अनेक आयाम जोड़े। उन्हें 'विश्व संवाद केन्द्र' योजना को मूर्त रूप देने वाला कहा जाता है।

ज्ञातव्य है कि आपातकाल में अधीश जी लोकतंत्र की रक्षा हेतु 'लोक संघर्ष' पत्रिका का प्रकाशन करते रहे। उन्होंने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, भारत तिब्बत

सहयोग मंच, प्रचार विभाग, प्रकाशन आदि का मार्गदर्शन किया। इन्होंने राष्ट्रीय महत्त्व के कई विषयों पर लेखनी चलायी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जीवनव्रती प्रचारक के रूप में कार्य करते हुए उनकी निर्भीक पत्रकारिता भी चलती रही। इसका वृहद प्रकटीकरण हुआ विश्व संवाद केन्द्रों की स्थापना एवं विकास रूप में। जहाँ से मीडिया जगत में राष्ट्रवादी धारा के पत्रकारों की एक पूरी श्रृंखला विकसित हुई।

अधीश जी के लेखन में भाषा के संस्कार, तथ्यों की शुद्धता, सूक्ष्म विश्लेषण, प्रवाहपूर्ण प्रस्तुतिकरण और विषयों का वैभिय पाठकों पर अपना गहरा प्रभाव छोड़ता था। उन्होंने स्वयं के प्रयासों से अच्छी सामग्री, देश-विदेश के महत्त्वपूर्ण समाचार एवं जाने माने स्तंभकारों के लेख साप्ताहिक रूप से प्रकाशित करना आरंभ किया था।

(ख) डॉ. मनमोहन वैद्य-

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक डॉ. मनमोहन वैद्य, नागपुर (महाराष्ट्र) के रहने वाले हैं। उन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय से रेडियो रसायन विज्ञान (परमाणु रसायन विज्ञान का हिस्सा) में अपना शोध कार्य पूर्ण किया। उसके बाद उसी संकाय में कुछ वर्षो के लिए संकाय सदस्य रूप में रहे।

मराठी, हिन्दी, गुजराती एवं अंग्रेजी भाषा में प्रवीण डॉ. मनमोहन वैद्य ने यू.एस. ए, केन्या, गुमाना, त्रिनिदाद, टोबैको, सूरीनाम, जमैका, बारबाडोस, फिजी, न्यूजीलैंड, आस्ट्रेलिया जैसे कई देशों की यात्रा कर वहाँ की साहित्य-संस्कृति एवं इतिहास का अध्ययन किया। एक जिज्ञासु पाठक, स्तंभकार, वाकपटु वक्ता, डॉ. मनमोहन वैद्य गंभीर अधयेता हैं[10]।

बाल्यावस्था से ही यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बाल स्वयंसेवक रहे। इनके पिता श्री माधव गोविंद वैद्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ कार्यकर्ता, लेखक, विचारक तथा जाने माने पत्रकार थे। माधवगोविंद वैद्य संघ, जनसंघ, पत्रकारिता, महाराष्ट्र विधान परिषद सदस्य, संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख, संघ के प्रवक्ता और स्वयंसेवक बने।

पिता की प्रेरणा फलस्वरुप बाद में बाल स्वयंसेवक मनमोहन वैद्य पूर्णकालिक प्रचारक बने तथा अपना जीवन माँ भारती के चरणों में समर्पित कर दिया। उन्होंने स्थानीय शाखा स्तर, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर अनेक पदों और दायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वहन किया है। गुजरात में डॉ. मनमोहन वैद्य ने 10 वर्ष तक प्रांत प्रचारक पद पर दायित्व निर्वहन किया[11]। सन् 1993 -94 में यह यू. एस. ए. में प्रचारक रूप में थे। वर्तमान समय में डॉ. मनमोहन वैद्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय संयुक्त महासचिव पद पर हैं। इसके पूर्व डॉ. मनमोहन वैद्य अखिल भारतीय प्रभारी जनसंपर्क एवं मीडिया रहे[12]।

(ग) अरुण कुमार-

बाल्यवस्था से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बाल स्वयंसेवक अरुण कुमार दिल्ली के रहवासी हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त कर यह दिल्ली में संघ के प्रचारक हुए। यह पहले दिल्ली में संघ के जिला प्रचारक बने। फिर इन्होंने विभाग प्रचारक का दायित्व निभाया। तत्पश्चात अरुण कुमार हरियाणा के प्रांत प्रचारक रहे। बाद में संघ के केन्द्रीय पदाधिकारी बने। जम्मू कश्मीर आतंकवाद के कारण बिगड़े माहौल में भी प्रांत प्रचारक के रूप में दायित्व निर्वहन करते हुए इन्होंने जम्मू-कश्मीर में संघ विचार-विस्तार किया।

'जम्मू-कश्मीर अध्ययन केन्द्र' श्री अरुण कुमार की ही परिकल्पना है। वर्ष 2004 में जम्मू-कश्मीर में तत्कालीन मुख्यमंत्री गुलाम नबी आजाद द्वारा बाबा अमरनाथ श्राइन बोर्ड भंग कर उसका नियंत्रण अपने हाथ में लेने पर श्री अरुण कुमार के ही नेतृत्व में गुलाम नबी की सरकार के विरुद्ध एक बड़ा जन आंदोलन किया गया। फलतः सरकार को अपना फैसला बदलना पड़ा और श्राइन बोर्ड फिर से बहाल हो गया। इस सफलता में अरुण कुमार की ही सक्षम सांगठनिक क्षमता थी।

वर्ष 2011 में अरूण कुमार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के राष्ट्रीय सहसंपर्क प्रमख बने। वर्ष 2018 में यह अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख बने। इसी वर्ष में अरुण कुमार संघ के सह सरकार्यवाह बने[13]।

जम्मू-कश्मीर में वहाँ के अनुभवों के आधार पर अरुण कुमार के ही प्रयासों से **'जम्मू कश्मीर अध्ययन केन्द्र'** का प्रारंभ हुआ। इसका केन्द्र दिल्ली में है तथा इसका नाम **'जम्मू-कश्मीर-लद्दाख केन्द्र'** हो गया है।

अभी हाल के वर्षों में ही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जम्मू-कश्मीर से धारा 370 हटा दी है। किन्तु धारा 370 और धारा 35 ए के बारे में जनता को समझाने के लिए उनके बीच सरल भाषा में पर्चे, पोस्टर, संगोष्ठी आदि द्वारा विभिन्न पहलुओं को लाने का कार्य अरुण कुमार ने ही किया।

वर्तमान समय में संघ और भारतीय जनता पार्टी के बीच समन्वय कराने की महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी अरुण कुमार को मिली है। भाजपा (पूर्व में जनसंघ) राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की आनुषंगिक इकाई है। अतः देश और समाज से जुड़े सवालों तथा उस पर संघ का वैचारिक दृष्टिकोण, भारतीय जनता पार्टी तक पहुँचाना तथा भारतीय जनता पार्टी की कार्य योजना, कार्यप्रणाली से संघ प्रमुख को अवगत कराना ही समन्वयकर्ता का कार्य है।

(घ) सुनील अंबेकर

सुनील अंबेकर का जन्म नागपुर (महाराष्ट्र) में 26 दिसंबर 1967 को हुआ। इन्होंने

जीव विज्ञान के कोशिका विज्ञान में विशेषज्ञता परास्नातक की उपाधि प्राप्त की। विद्यार्थी जीवन से ही इनका अखिल भारतीय विद्यालय परिषद से लगाव रहा है।

इन्होंने सचिव रूप में बांग्लादेशी घुसपैठ के खिलाफ तथा हाल ही में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के आयोजन सचिव तथा भ्रष्टाचार विरोधी युवा सलाहकार सदस्य रूप में भ्रष्टाचार विरोधी आन्दोलन किया। साथ ही सुनील अंबेकर ने 'सोचो भारत' के माध्यम से राष्ट्रीय संस्थानों के छात्रों हेतु प्रेरणादायी भूमिका निभाई[14]।

भारतीय राष्ट्रवाद और छात्र राजनीति के गहन अध्येता सुनील अंबेकर अत्यंत सरल स्वभाव होने के साथ ही देशसेवा में पूर्णरूप से समर्पित होने के लिए ही अविवाहित हैं। राष्ट्रीय संगठन मंत्री के दायित्व निर्वहन करते हुए सुनील अंबेकर ने विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं शिक्षण संस्थानों के अध्यापकों, विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों से निरंतर संवाद स्थापित किया है। इन्होंने शिक्षा क्षेत्र में सुधार, समावेशिता, क्षेत्रों के राष्ट्रभाव जगाने की सकारात्मक पहल की है।

अपनी विदेश यात्रा के दौरान अमेरिका, रुस, चीन, भोपाल, सिंगापुर आदि देशों में प्रवास के दौरान इन्होंने वहाँ के समाज जीवन का निकटता से अध्ययन किया है[15]।

वर्ष 2018 तक विश्व संवाद केन्द्र एक स्वायत्तशासी निकाय था। फिर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचार विकास की बैठक में यह निश्चित हुआ कि अब प्रचार विभाग के आयाम बढ़ गये हैं। इसलिए यह निर्णय लिया गया कि प्रत्येक प्रांत में विश्व संवाद केन्द्र ही संघ का प्रचार कार्यालय होगा। इस प्रकार प्रचार विभाग के आठ आयामों के सभी कार्य एवं व्यवस्थाएँ विश्व संवाद केन्द्रों के अन्तर्गत होंगी।

अन्य सभी आठ आयामों का कार्यालय भी विश्व संवाद केन्द्र होगा। इस केन्द्र द्वारा संचालित होने वाले आयाम हैं-

1. जागरण पत्रिका
2. साहित्य
3. पत्र-पत्रिकाएँ
4. सोशल मीडिया
5. कटेंट
6. स्तंभ मीडिया
7. मीडिया संवाद
8. फिल्म आयाम

इन सभी आयामों हेतु समुचित व्यवस्था, देखरेख हेतु विश्व संवाद केन्द्र एक निश्चित कार्यालय बन गया। ज्ञातव्य है कि इसके पूर्व विश्व संवाद केन्द्र केवल सूचना आदान-प्रदान यानि सम्प्रेषण का कार्य करता था।

किन्तु अब यह एक विधिवत, बहुआयामी, आधुनिकता से परिपूर्ण कार्यालय रूप में परिणित हो गया है।

3. विश्व संवाद केन्द्र के प्रमुख आयामों का परिचय-

विश्व संवाद केन्द्र द्वारा समाज में सामाजिक, सांस्कृतिक राजनीतिक आर्थिक क्षेत्रों की विभिन्न गतिविधियो के बारे में जागरूकता कार्यक्रम चलाए जाते हैं। संवाद केन्द्र द्वारा चलाए जा रहे प्रमुख आयाम इस प्रकार है।

(1) जागरण पत्रिकाएँ

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जागरण-पत्र एवं पत्रिका :-

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा हिन्दुस्तान के विभिन्न प्रांतों से जागरण पत्र एवं पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जाता है। इन पत्र एवं पत्रिकाओं के प्रसार क्षेत्र के अन्तर्गत वे ग्रामीण क्षेत्र में आते हैं। जहाँ व्यवसायिक दृष्टि से संचालित समाचार-पत्र एवं पत्रिकाओं का प्रसार नहीं है। इस प्रकार स्पष्ट है कि जागरण-पत्र एवं पत्रिकाएँ उन गाँवों में प्रसारित की जाती है, जहाँ अभी-भी राष्ट्रीय अथवा क्षेत्रीय पत्र-पत्रिकाओं का प्रसार नहीं हो सका है। वर्तमान में........टाइम्स ऑफ इंडिया, हिन्दुस्तान, दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण आज जैसे अन्य दैनिक समाचार पत्रों के अतिरिक्त इण्डिया टुडे, आउट लुक, जागरण उदय, सहेली जैसी अन्य पत्रिकाओं का प्रसार सिर्फ मुख्यत: नगरों तक ही सीमित है। जबकि देश की सकल आबादी का लगभग 70 भाग आज भी गाँवों में निवास करता है। परन्तु उक्त प्रकार के समाचार-पत्र एवं पत्रिकाओं के प्रसार से रिक्त हुआ है। इस प्रकार की सूचना रिक्त ग्रामीण समुदाय में सूचना एवं राष्ट्रवादी चेतना के विकास के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा जागरण-पत्र-पत्रिकाओं का संचालन किया जाता है। इनमें से कुछ प्रान्तों के जागरण पत्रों एवं पत्रिकाओं की प्रसार संख्या लाखों में है। इसका प्रमुख उदाहरण राजस्थान से प्रकाशित 'पाथेयकण' है। इसी तरह अन्य भी है।

जागरण पत्र-पत्रिकाओं को अन्तर वस्तु विश्लेषण करने से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि समस्त जागरण पत्र-पत्रिकाओं में राष्ट्रीय गौरव, ग्रामीण समुदाय, कृषि, वानिकी, पशु-पालन, गोसम्मेलन, हिन्दुत्व महापुरुषों का जीवन वृत्त, शुक्ल वाक्य प्रमुख संस्मरण श्रेष्ठ, महिला चरित्र, बोध कथा, नैतिक शिक्षा, आयुर्वेद, स्वदेशी के साथ-साथ विज्ञान एवं अभियांत्रिकी से जुड़े प्रमुख समाचार प्रकाशित होते हैं। इन जागरण पत्रों की यह विशेषता है कि इसमें राजनीतिक सूचनाएँ प्राय: स्थान नहीं पाती हैं। परन्तु राष्ट्रीय घटना चक्र के अनुरूप इनकी आवश्यकता वहीं के अल्पमात्रा में राजनीतिक सूचनाओं का प्रकाशन किया जाता है। इस तरह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रकृति के अनुरूप जागरण पत्रों की प्रकृति भी गैर-राजनीतिक है।

जागरण पत्रों के प्रकाशन की अवधि पाक्षिक एवं मासिक कोटियों में विभक्त है। इस प्रकार जागरण पत्रिका सामन्य रूप से पाक्षिक, मासिक, अवधि में प्रकाशित होती है। पत्रिकाओं के आवरण पृष्ठ दो रंगो में अथवा बहुरंगीय होते हैं। इनके अलावा इनके मध्य में कार्टून, चित्र आदि भी प्रकाशित किए जाते हैं। इनमें विज्ञापनों का प्रकाशन तो किया जाता है। परन्तु विज्ञापनों की संख्या बहुत ही सीमित होती है।

जागरण पत्रों की पृष्ठ संख्या न्यूनतम चार एवं अधिकतम आठ के मध्य होती है। जबकि जागरण-पत्रिकाओं की पृष्ठ संख्या सोलह से चालीस पृष्ठों के मध्य होती है। लगभग सभी जागरण पत्र-पत्रिकाओं द्वारा वर्ष में एक अथवा दो विशेषांकों का प्रकाशन किया जाता है। इन विशेषांकों की संख्या सौ या उससे अधिक भी हो जाती है। इन पत्र-पत्रिकाओं का वितरण डाक द्वारा किया जाता है। जागरण पत्र-पत्रिकाएँ पर वितरित होती है। इस प्रकार जागरण पत्रों की प्रसार प्रक्रिया एवं विषय वस्तु ग्रामीण आवश्यकता के अनुरूप होती हे। प्रमुख जागरण पत्र-पत्रिकाओं का विवरण इस प्रकार है।

विश्व संवाद केन्द्रों से प्रकाशित होने वाली प्रमुख **'पाक्षिक'** जागरण पत्र-पत्रिकाएँ :-

सारणी संख्या-1

क्रमांक	जागरण पत्र-पत्रिका का नाम एवं भाषा	प्रकाळान अवधि	प्रांत
1.	पथ संकेत, हिन्दी	पाक्षिक	अवध
2.	वृत्तान्तम्, मलयालम	पाक्षिक	केरल
3.	पुंगव, कन्नड़	पाक्षिक	कर्नाटक
4.	चेतना प्रवाह, हिन्दी	पाक्षिक	काशी
5.	संक्रांतिकाल, हिन्दी	पाक्षिक	दिल्ली
6.	दिशा बोध, हिन्दी	पाक्षिक	बिहार (उत्तर)
7.	संघ संदेश, हिन्दी	पाक्षिक	बिहार (मध्य)
8.	राम संदेश, बंग्ला	पाक्षिक	बिहार (दक्षिण)
9.	राष्ट्रदेव, हिन्दी	पाक्षिक	ब्रज
10.	सांस्कृतिक वार्ता-पत्र, मराठी	पाक्षिक	महाराष्ट्र
11.	पाथेय कण, हिन्दी	पाक्षिक	राजस्थान
12.	ध्येय मार्ग, हिन्दी	पाक्षिक	गोरक्ष

मासिक जागरण पत्र-पत्रिकाएँ

सारणी संख्या-2

क्रमांक	जागरण पत्र-पत्रिका का नाम एवं भाषा	प्रकाळान अवधि	प्रांत
1.	सांस्कृतिक संवाद, असमिया	मासिक	असम (उत्तर)
2.	सांस्कृतिक प्रेरणा, बंग्ला	मासिक	असम (दक्षिण)
3.	विचार भारती, मैतेई	मासिक	असम (दक्षिण)
4.	हिन्दू नगारा, तेलुगु	मासिक	आंध्र (पूर्व)
5.	मातृ अर्चना, तेलुगु	मासिक	आंध्र (पश्चिम)
6.	सांस्कृतिक जागरण, उड़िया	मासिक	उत्कल
7.	विचार भारती, गुजराती	मासिक	गुजरात
8.	शाश्वत राष्ट्र बोध, हिन्दी	मासिक	छत्तीसगढ़
9.	त्रिकुटा ललकार, हिन्दी	मासिक	जम्मू
10.	नमदु, संघ संधि, तमिल	मासिक	तमिलनाडु
11.	रवानी, पंजाबी	मासिक	पंजाब
12.	जागरण, बंगाली	मासिक	प. बंगाल
13.	शाश्वत हिन्दू गर्जना, हिन्दी	मासिक	महाकौशल
14.	हिन्दी गर्जना, हिन्दी	मासिक	म. भारत
15.	विदर्भ हुंकार, मराठी+हिन्दी	मासिक	विदर्भ
16.	संघ मार्ग, हिन्दी	मासिक	नई दिल्ली
17.	मातृ वन्दना, हिन्दी	मासिक	हिमाचल

इस प्रकार सारणी संख्या 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विभिन्न प्रान्तों से पाक्षिक पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जाता है। जिनके नाम और प्रकाशन अलग-अलग है। इनमें से ब्रज एवं मेरठ प्रांत के जागरण-पत्र का नाम (राष्ट्रदेव) एक है परन्तु प्रकाशन व्यवस्था अलग-अलग है।

2. साहित्य

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ समर्थित साहित्य या प्रकाशन करने वाले कुछ प्रकाशन समूह ऐसे हैं जो उच्च कोटि का साहित्य प्रकाशित करते हैं। उनमें प्रमुख प्रकाशन संस्थान हैं-

1. सुरुचि प्रकाशन-देशबन्धु गुप्ता मार्ग, झंडेवालान, नई दिल्ली- 55
2. लोकहित प्रकाशन संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ-4 (उ.प्र.)
3. राष्ट्रोत्थान साहित्य, केशव शिल्प, केम्पगौड़ा नगर, बंगलौर-19
4. भारतीय विचार साधना
   (क) डॉ. हेडगेवार भवन, महाल, नागपुर-44002
   (ख) मोती बाग-309, शनिवार पेठ, पुणे-411030
   (ग) मंगलदास बाड़ी, डॉ. भडकम्कर मार्ग, नाज सिनेमा परिसर-मुबंई
5. ज्ञान गंगा प्रकाशन, भारती भवन, जयपुर-001
6. अर्चना प्रकाशन, एच. आई. जी., 18 शिवाजी नगर-भोपाल
7. साधना पुस्तक प्रकाशन, रामनिवास बलिया काका मार्ग, कांकरिया अहमदाबाद-28
8. सातवलेकर स्वाधयाय- पो. किलापारड़ी, बलसाड, गुजरात-125
9. साहित्य निकेतन- 3-4/852, बरकतपुरा, हैदराबाद-27
10. स्वस्ति श्री प्रकाशन- 44/9, नवसहयाद्री सोसायटी, पुणे-52
11. जागृति प्रकाशन- एफ. 109, सेक्टर-27, नोएडा (उ.प्र.) 01
12. सूर्य भारती प्रकाशन, 2596, नई सड़क-दिल्ली-06

इन संस्थानों द्वारा प्रकाशित पुस्तकें बालकों और युवाओं के चरित्र निर्माण में सहायक होती हैं। यहाँ से प्रकाशित पुस्तकें भारतीय संस्कृति और नागरिक समाज के मूल्यों को बनाए रखने के आदर्शों को बढ़ावा देती हैं।

इस आयाम के अन्तर्गत समाज एवं राष्ट्रहित में सहायक साहित्य प्रकाशित करा कर साहित्य मेले में उसका वितरण प्रबंधन होता है।

3. पत्र-पत्रिकाएँ

विश्व संवाद केन्द्रों द्वारा स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय महत्त्व के मुद्दों को प्रकाशित कराने हेतु पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन होता है।

यद्यपि संघ के संस्थापक डॉ. हेडगेवार प्रचार एवं जनसंचार को महत्त्व देने के स्थान पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं एवं प्रचारकों द्वारा मौखिक संदेश रूपी अनौपचारिक संचार को ही प्राथमिकता देते थे। अपने विचारों को जनता के बीच ले जाने के लिए व्यवस्थित प्रचार माध्यम पर चर्चा के पश्चात् संघ ने ऐसे ट्रस्टों की स्थापना की सहमति दी। जो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विचारों को जनता के बीच ले जाने वाले पत्र-पत्रिकाओं को प्रकाशित कर सकते थे।

(क) आर्गनाइजर पत्रिका

सन् 1946 में पंजाब और दिल्ली क्षेत्र के स्वयंसेवकों के प्रयास से 'भारत प्रकाशन ट्रस्ट' द्वारा 3 जुलाई 1947 को अंग्रेजी भाषा में साप्ताहिक पत्र 'आर्गनाइजर' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ।

राष्ट्रहित कारक विचार से पोषित 'आर्गनाइजर' के शुरुआती मुद्दे में भारत विभाजन विरोध ही था। संघ प्रचारकों ने 'आर्गनाईजर' में तत्कालीन सामाजिक एवं नीतिगत मुद्दों की संघ के दृष्टिकोण संबंधी विस्तृत श्रृंखला लिखी। सन् 1952 में 'आर्गनाइजर' ने संघवाद और अलग प्रांतीय सरकारों का विरोध किया। इसने राज्यों के भाषायी पुनर्गठन का विरोध किया।[16] 'आर्गनाइजर' के हिन्दू कोड बिल का भी विरोध किया क्योंकि संघ समेत हिन्दू संगठनों का मानना था कि यह बिल हिन्दू धर्म में हस्तक्षेप है।

1. 'आर्गनाइजर' में सन् 1990 में आरक्षण के मंडल आयोग की निंदा की। साथ ही बहुराष्ट्रीय कंपनियों, विश्वबैंक से ऋण, आर्थिक उदारीकरण की भी निंदा की।[17]
2. 'आर्गनाईजर' भारत का एक मात्र ऐसा पत्र था। जिसने एन.सी.इ.आर.टी. की पाठ्यपुस्तकों में पढ़ाए जा रहे हिन्दू धर्म, हिन्दू राष्ट्र एवं पौराणिक, ऐतिहासिक कथाओं और पत्रों को गलत ढंग से प्रस्तुतिकरण की कड़े शब्दों में निंदा की।
3. इस पत्र ने भारत के सीमावर्ती राज्यों पर फैल रहे धर्मान्तरण के विषय पर भी चिंता व्यक्त की।[18]

(ख) राष्ट्रधर्म पत्रिका

31 अगस्त 1947 को राष्ट्रधर्म पत्रिका का प्रथम संस्करण प्रकाशित हुआ था। यह पत्रिका हिन्दी जगत की श्रेष्ठ, विश्वसनीय एवं राष्ट्रवादी पत्रिका रही है। स्वतंत्रता प्राप्ति के मात्र 15 दिनों में छप कर आयी। यह पत्रिका स्वतंत्र भारत की प्रथम राष्ट्रवादी विचारों पर आधारित पत्रिका थी।

एकात्म मानव दर्शन के प्रणेता और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के युवा प्रचारक, शीर्ष विचारक, पं. दीनदयाल उपाध्याय इस पत्रिका के निदेशक तथा देश के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी इसके प्रधान सम्पादक रहे।

इस पत्रिका का उद्देश्य राष्ट्रसेवा में रत रहने वाले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रति लोगों के दुराग्रह दूर कर लोगों में राष्ट्र के प्रति उनके धर्म को बताना तथा लोगों को राष्ट्र के प्रति उन्हें जागरुक करना था। इस पत्रिका की प्रस्तावना में ही लेखक और कवि अटल बिहारी वाजपेयी ने अपनी कविता **'हिन्दू तन-मन, हिन्दू**

जीवन, राग-राग हिन्दू' प्रकाशित कर इस पत्रिका का मार्ग सुनिश्चित कर दिया था। 'विश्वकल्याण' की बात तभी सार्थक हो सकती है जब राष्ट्रीय धर्म का सम्मान, जागरण एवं नागरिकों में इसका अवगाहन हो। यह पत्रिका लोगों में भारतीय धर्म, संस्कृति, सभ्यता के प्रति जागरुकता पैदा करने के लिए प्रारंभ की गई।

(ग) पांचजन्य पत्र-

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक पं. दीनदयाल उपाध्याय की परिकल्पना का मूर्तरुप है- पांचजन्य पत्र। भारतीय राष्ट्रीय विचारधारा का प्रणयन करने वाला यह हिन्दी भाषी साप्ताहिक समाचार पत्र है। पं. दीनदयाल उपाध्याय को परिकल्पना में अटल बिहारी वाजपेयी और के. आर. मलकानी के सम्पादकत्व में 14 जनवरी 1948 को 'पांचजन्य' का प्रथम अंक प्रकाशित हुआ था। पं. दीनदयाल उपाध्याय ने 'पांचजन्य' के प्रारम्भिक काल में प्रूफ रीडर, कम्पोजिस्ट, मुद्रक, समाचार पत्रों के बंडल बाँधकर उन्हें समाज में वितरित करने तक का कार्य किया था। पं. दीनदयाल उपाध्याय के मार्गदर्शन में पांचजन्य के अनेक संपादकों की निर्मिति हुई।

'पांचजन्य' स्वाधीनता आंदोलन के प्रेरक आदर्शों राष्ट्रीय लक्ष्यों का स्मरण दिलाते रहने के संकल्प का उद्घोष था। इस पत्र में राष्ट्र चिंतन तंत्र का अखंड प्रवाह रहा है जो राष्ट्र भक्ति के उच्च चरित्रों द्वारा माँ भारती के चरणों में पांचजन्य द्वारा कठिन ध्येय यात्रा का पाथेय रहा। सत्ता द्वारा अनेक बार विपरीत प्रहारों को झेलकर भी पांचजन्य की गूँज चहुँओर गूँजती रही।

गांधी हत्या बाद नेहरुवादी राजनीति ने पांचजन्य के संपादक, प्रकाशक, मुद्रक सभी को जेल में बंद कर दिया। सन् 1962 में भारत पर चीन के हमले पर नेहरु की विदेश नीति की आलोचना 'पांचजन्य' में प्रकाशित हुई। जिससे इस पत्र को सत्ता की ओर से धमकी भरा पत्र दिया गया।

इसी तरह सन् 1972 में भारतीय सेनाओं की विजय को शिमला समझौते की मेज पर गंवा देने पर 'पांचजन्य' में जब इंदिरा सरकार की आलोचना छापी गयी तो इंदिरा सरकार ने आक्रोश में आकर 'पांचजन्य' के सम्पादकों एवं प्रकाशकों को लम्बे समय तक कानूनी कार्यवाही में फंसा दिया।

इसके बाद सन् 1975 में आपातकाल के दौरान भी 'पांचजन्य' का स्वर मौन करने का पूरा प्रयास सरकारी तौर पर किया गया। ज्ञातव्य है कि 'पांचजन्य' अत्यंत सीमित साधनों द्वारा भी राष्ट्रीय प्रश्नों को सदैव उठाता रहा है। असम, पूर्वोत्तर भारत सहित कश्मीर समस्या के बारे में राष्ट्रीयता का प्रहरी यह पत्र सदैव सत्ता पक्ष को सतर्क करता रहा। किन्तु अफसोस कि अपने पूर्वाग्रह के कारण इसके स्वरों को जानबूझकर अनदेखा किया गया। साथ ही सत्तापक्ष द्वारा राष्ट्रवादी राष्ट्रीय

स्वयंसेवक संघ को जान बूझकर राष्ट्र विरोधी बताने एवं उसकी छवि जनता के बीच नकारात्मक बनाने का प्रयास किया।

'पांचजन्य' में स्वाधीनता दिवस, गणतंत्र दिवस, विजयादशमी, दीपावली तथा वर्ष प्रतिपदा पर विशेषांक प्रकाशित होते हैं। इसके साथ ही 'पांचजन्य-पत्र' के विद्वान संपादकों के मार्गदर्शन में अनेक विशेषांक प्रकाशित हुए जो राष्ट्रीय स्तर के विषयों में प्रमुख रहे। तिलक सिंह परमार के संपादन में समाज अंक, राष्ट्रीय एकता अंक, केरल अंक, तिब्बत अंक, और जनसंघ अंक प्रकाशित हुए। यादवराव देशमुख के मार्गदर्शन में 'हिमालय बचाओ अंक', 'युद्ध अंक', 'कश्मीर अंक', 'भारत नेपाल मैत्री अंक' निकाला गया।

प्रखर विद्वान देवेन्द्र स्वरुप ने 'भारतीयकरण विशेषांक', 'गांधी जन्म शताब्दी विशेषांक', 'बंगाल विशेषांक', 'बंग्लादेश मुक्ति विशेषांक', 'दरिद्रनारायण विशेषांक', आदि का आयोजन किया। भानु प्रताप शुक्ल ने 'क्रांति कथा अंक', 'वीर वनवासी अंक' निकाला। राष्ट्र के सजग प्रहरी रुप में वर्तमान समय की दूषित पत्रकारिता से आज भी 'पांचजन्य' में पूर्णतया सुरक्षित है और राष्ट्रवाद की अलख जगाए है।

देश के विभिन्न प्रांतों द्वारा निकलने वाले साप्ताहिक पत्रों का विवरण

सारणी संख्या 3

क्रमांक	साप्ताहिक पत्रों के नाम	भाषा	राज्यों के नाम
1.	आलोक	असमिया	गुवाहाटी
2.	आर्गनाइजर	अंग्रेजी	नई दिल्ली
3.	राष्ट्रदीप	उड़िया	कटक
4.	विक्रम	कन्नड़	बंगलौर
5.	साधना	गुजराती	कर्णावती
6.	विजयभारतम्	तमिल	तमिलनाडु
7.	जागृति	तेलगु	हैदराबाद
8.	स्वास्तिका	बंगाली	पश्चिमी बंगाल
9.	केसरी	मलयालम	केरल
10.	विवेक	मराठी	मुबंई
11.	वीरवाणी	मराठी	कर्नाटक
12.	गोमंत शक्ति	मराठी	गोवा
13.	पाँचजन्य	हिन्दी	नई दिल्ली

प्रमुख मासिक पत्रिकाओं के नाम

सारणी संख्या 4

क्रमांक	मासिक पत्रिका के नाम	भाषा	राज्यों के नाम
1.	असिमा	अंग्रेजी	बंगलोर
2.	उत्थान	कन्नड़	बंगलोर
3.	हिन्दुराष्ट्र	तेलगू	विजयवाड़ा
4.	एकता	मराठी	पुणे
5.	संभाषण संदेश	संस्कृत	बंगलोर
6.	संस्कृत भारती	संस्कृत	राजस्थान
7.	राष्ट्र धर्म	हिन्दी	लखनऊ (उ.प्र.)

4. सोशल मीडिया

वर्तमान समय में पूरी दुनिया को एक दूसरे से जोड़े रखने में अपरम्परागत मीडिया रूप में 'सोशल मीडिया' का एक विशाल नेटवर्क है। जहाँ मिनटों में एक सूचना हजारों, लाखों लोगों तक पहुँच जाती है। सामाजिक मुद्दों के लिए जागरुकता पैदा करने में तथा ऑनलाइन तेजी से सूचना हंस्तातरित करने में समाचार माध्यम के नये रूप में सोशल मीडिया की आवश्यकता और महत्त्व तेजी से बढ़ा है।

इसी महत्त्व को समझते हुए सकारात्मक समाचारों के प्रसार हेतु राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने डिजिटल मीडिया का प्रयोग आरंभ किया।

संघ का प्रयास है कि डिजिटल प्लेटफार्म पर संघ के विषयों को वैचारिक एवं तथ्यात्मक रूप से सही रूप में रखा जाए। फलत: संघ के वरिष्ठ पदाधिकारी अपनी बैठकों, विभाग से संबंधित कार्यो और संगठन की विचारधारा से जुड़े विचारों को सोशल मीडिया पर प्रस्तुत कर रहे है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का मानना है कि इस डिजिटल मीडिया युग में पहले की अपेक्षा समाचार सम्प्रेषण में बहुत तेजी आयी है। यह सकारात्मक समाचारों के लिए जहाँ यह अच्छा कदम माना जा सकता है। वहीं नकारात्मक अथवा गलत समाचारों के फैलने से होने वाले नुकसान का आंकलन एवं उसकी भरपाई करना बहुत कठिन है।

सन् 1997 में दुनिया का सबसे पहला सोशल मीडिया प्लेटफार्म प्रारंभ हुआ। इसे एंड्र्यू वेनरिच ने 'सिक्सडिग्री' नाम से प्रारंभ किया। ज्ञातव्य है कि 125 मीलियन डॉलर में खरीदे जाने से पूर्व इस साइट पर 10 लाख उपयोगकर्ता थे।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पिछले वर्षों से सोशल मीडिया पर ब्लॉग और पॉडक्रास्ट जैसे विभिन्न स्रोतों से प्रासंगिक सामग्री वितरित करता है। इसी कड़ी में भारतीय भाषाओं में लोगों से जुड़ने के लिए संघ ने घरेलू सोशल मीडिया 'कू' एप पर अपना खाता खोला है। इसका उपयोग करने वालों की संख्या 70 लाख हो चुकी है।

5. कटेंट

किसी भी माध्यम से सूचना प्राप्त करने के रूप, चाहे वह लिखित, फोटो, वाचिक या दृश्य रूप में हो, उसे कटेंट (सामग्री) कहा जाता है। व्यवसाय, सोशल मीडिया उद्देश्यों जैसे-ब्रांड पहचान, विचार नेतृत्व, दर्शकों की व्यस्तता, और लीड जनरेशन को प्राप्त करने में कटेंट की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। लोगों को अपनी बात सुनाने के लिए आमंत्रित एवं आकर्षित करने हेतु कटेंट का चयन किया जाता है। इससे सामग्री की गुणवत्ता बनी रहती है। इसमें रचनात्मकता एवं तकनीकी कौशल दोनों सम्मिलित रहते हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा 'आर. एस. एस. और मीडिया' के बीच सांमजस्य बैठाने के उद्देश्य हेतु 'संघ परिचय वर्ग' का आयोजन किया जाता है। ज्ञातव्य है कि, अपनी स्थापना काल से ही मीडिया से दूर रहने के कारण ही निरंतर देश हित, राष्ट्रहित में लगे रहने पर भी संघ हमेशा दुराग्रह का शिकार रहा है। यद्यपि प्रचार की अपेक्षा समाज और देश का कल्याण करने वाले स्वयंसेवकों एवं कर्मियों को अपेक्षाकृत दृढ़भूमि प्राप्त होती है।

सन् 1975-85 तक मीडिया ध्यान आकर्षित करने वाले व्यक्तियों और नेताओं के अपने निष्कर्षों के आधार पर प्रसिद्ध पत्रिका 'इंडिया टुडे' ने 'वे कहाँ है? शीर्षक से लेख निकाला। इसमें यह निष्कर्ष निकाला गया कि, मीडिया प्रचार बिना समाज एवं देश कल्याण हेतु जमीन पर काम करने वाले लोगों और संगठनों ने लोगों और समग्र समाज के मन में अपनी स्थिति को मजबूत किया है।[19] जबकि दिन-रात मीडिया प्रचार के लिए तरसने वालों ने ज़मीन खोदी या एक बड़ा नुकसान उठाया है। वास्तव में मात्र मीडिया में छपास की इच्छा रखने वाले लोग जनता और समाज का वास्तविक हित कभी नहीं कर सकते।

अब समाज के हर वर्ग तक संघ के बारे में सही तथ्यात्मक तथा वैचारिक तौर पर सही सूचना प्रेषण हेतु राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ डिजिटल मीडिया कर्मियों, सोशल मीडिया के प्रभावी लेखकों, ब्लॉगर्स, वीडियो मेकर्स और यूटयूब मेकर्स, से मिलकर मीडिया में संघ विषयक समाचारों, जानकारियों के लिए उपयुक्त **कटेंट** (सामग्री) दे रहा है।

इसमें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्थापना, उसकी आवश्यकता, उद्देश्य, कार्य

पद्धति, योजना आदि विषयक सामग्री उपलब्ध करायी जाती है। जिसके आधार पर ब्लॉग, इंस्टाग्राम, ट्विटर, फेसबुक आदि सोशल मीडिया के विभिन्न भागों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बारे में लोगों को सही जानकारी प्राप्त हो सके।

6. स्तंभ आयाम

यह विचारपरक लेखन का प्रमुख रूप है। इसमें लेखक अपने रूचि और कौशल के अनुरुप समाचार पत्रों-पत्रिकाओं में स्तंभ **(Column)** लिखते हैं। किसी भी घटना पर साहित्यिक रूप से विश्लेषणपरक व्याख्या एक स्तंभ के अंदर लिखी जाती है। विश्व संवाद केन्द्र जो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का आधिकारिक मीडिया केन्द्र है। वह प्रतिदिन स्तंभ लेखकों द्वारा समेकित घटनाओं का विश्लेषण, सामाजिक नेताओं और विचारकों के साक्षात्कार, विभिन्न विष्यों पर लेख प्रस्तुतिकरण हेतु मार्गदर्शन प्रदान करता है।

ज्ञातव्य है कि पिछले दस वर्षों में ही संघ विचारधारा के स्तंभ लेखकों **ने 'द टाइम्स ऑफ इंडिया', 'द इंडियन एक्सप्रैस', 'हिन्दुस्तान टाइम्स'** जैसे शीर्ष अखबारों में 640 से अधिक लेख लिखे, जो प्रकाशित भी हुए।[20]

पिछले 10 वर्षों में ही संघ के स्तंभ लेखकराममाधव ने 101 लेख, इंडियन एक्सप्रेस के लिए लिखे। वैंकटैया नायडू ने प्रमुख अखबारों में 68 लेख लिखे, डॉ. राकेश सिन्हा ने 31 लेख तथा पूर्व केंद्रीय मंत्री रविशंकर प्रसाद ने 22 लेख लिखें।[21] हालांकि विपक्ष द्वारा इसे संपादकों का डर बताता है लेकिन यह भी सत्य है कि अब संघ के विषय या संघ प्रचारकों द्वारा देश की बड़ी जिम्मेदारी कैसे निभाई जा रही है। इस पर आम जनता पहले की अपेक्षा और अधिक जानने के लिए उत्सुक है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े भारतीय पत्रकार एवं स्तंभकार बलबीर पुंज ने समय-समय पर राष्ट्रीय मुद्दों पर निष्पक्ष रूप से चर्चा की है और प्रमुख घटनाओं जैसे 'गुजरात हिंसा' और 'रोहित वेमूला की आत्महत्या' सहित विभिन्न विषयों के पीछे छिपे राजनीतिक चेष्टाओं को विभिन्न राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में बेबाकी से उभारा है। साथ ही मूर्ति भंजकों का काला सच सामने लाने में इनकी लेखनी तत्पर रही।

इसी प्रकार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक अन्य स्तंभकार दीनानाथ मिश्र जो संघ के स्वयंसेवक थे, उन्होंने भी सन् 1971 से 1974 तक 'पांचजन्य' पत्र में संपादक रूप में कार्य किया। उन्होंने अपनी लेखनी अपनी अंतिम सांस तक राष्ट्रवादी दृष्टिकोण से चलायी।

वरिष्ठ साहित्यकार, इतिहासकार, दार्शनिक संघ विचारक, प्रो. देवेन्द्र स्वरुप संघ पत्र-पत्रिकाओं के वरिष्ठ स्तंभकार रूप में थे। 'पांचजन्य' 'मंथन' तथा 'नवभारत टाइम्स' में यह राष्ट्रवादी पत्रकारिता के लिए जाने गए।

प्रो. देवेन्द्र स्वरुप सांस्कृतिक प्रवाह लिए राष्ट्रीय निमित्त रहे है। इनके लेखन द्वारा ही यह सिद्ध हो जाता है कि राष्ट्रीयता की संघ धारा में बौद्धिक विमर्श करने वाले विद्वानों की विचारधारा कभी सत्ता प्रेमी या सत्ता पक्ष से भयभीत नहीं रही।

7. मीडिया संवाद

विश्व संवाद केन्द्र के विभिन्न आयामों में प्रमुख आयाम है–मीडिया संवाद। मानव के विचारों, आस्थाओं और मूल्यों को जनता के सामने प्रस्तुत करने का काम पत्रकारिता है। यह जनता से सीधे संवाद का माध्यम है। पौराणिक युग में महर्षि नारद एक कुशल पत्रकार की भांति ही देवलोक और मृत्युलोक के बीच संवाद संप्रेषण का कार्य करते रहे। पत्रकारिता सामाजिक संवाद का सफल रूप है और इसमें मर्यादाएँ अपेक्षित है। मर्यादा का अभाव, तथ्यहीन वैचारिकी के साथ स्थापित सामाजिक संवाद पत्रकारिता के स्वरुप और आधार को खोखला करते है। यह भी ध्यान रखना आवश्यक होता है कि 'मीडिया-संवाद कहीं 'सामाजिक संवाद व्यापार' ना बन जाए।

इन सभी का ध्यान रखकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने एक प्रमुख आयाम 'मीडिया संवाद' को बनाया है। जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि मीडिया को किस प्रकार समाज से संवाद स्थापित करना है।

इसी क्रम में वर्ष 2019 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत ने नई दिल्ली में 30 से अधिक देशों के पत्रकारों से संवाद किया।[22] संघ रचनात्मक संवाद द्वारा समाज में फैली संघ के प्रति गलत धारणाओं का समाधान करता है।

भारत के हिंदू समाज, साहित्य, संस्कृति, इतिहास यहाँ की जीवन पद्धति के बारे में सही तथ्यपरक चित्र समाज के समक्ष रखना चाहिए। क्योंकि देश विदेश में भारत के बारे में अज्ञानता के कारण अथवा जानबूझकर भ्रांतियाँ फैलाने का काम तेजी से और पिछले कई दशकों से चल रहा है। इसलिए त्रुटिपूर्ण वैचारिक विमर्श को हटाकर भारत बोध के सही विमर्श को आगे तक ले जाने हेतु संघ प्रयासरत है।[23]

8. फिल्म आयाम–

भारतीय सिनेमा का प्रारंभ सांस्कृतिक मूल्यों की स्थापना से हुआ था। 'नाट्यशास्त्र' के प्रणेता भरतमुनि ने 'अभिनय ग्रंथ' को पाँचवां वेद कहा। किन्तु समय के साथ-साथ बदलाव के नाम पर फिल्मों में नैतिकता का पतन होता गया। पौराणिक कथाओं और पात्रों से प्रारंभ हुई भारतीय फिल्मों से भारतीय मूल्यों का निरंतर ह्रास होता गया और विदेशी फिल्मों की नकल से मात्र देह-प्रदर्शन, भौंडापन, प्रेम के नाम

पर अश्लीलता, शराब, जुआ, तस्करी, बलात्कार, हिसां आदि उत्तेजक तत्व ही शेष रह गए। जिसका सर्वाधिक बुरा प्रभाव युवा पीढ़ी पर पड़ा और वे अनजाने-अनचाहे ही घर, परिवार, खानदान और समाज के नियमों का तेजी से उल्लंघन करने लगे।

अतः इस विकट स्थिति को देखकर ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भारतीय फिल्मों (हिन्दी तथा हिन्दीतर) में भारत और भारतीयता लाने का पुनः प्रयास आरंभ किया है। फिल्म क्षेत्र में राष्ट्र, राष्ट्रीयता और भारत के गौरवशाली अतीत परंपरा के पुनः स्मरण हेतु संघ ने 'भारतीय चित्र साधना' नामक संस्था बनायी है।

भारतीय चित्र साधना के विषय में बताते हुए इसके सचिव राकेश मित्तल ने 'आज तक चैनल' को बताया कि 'हम चाहते हैं कि फिर से पारिवारिक सामाजिक, राष्ट्रीयता के भाव से परिपूर्ण फिल्मों का दौर लौटे। इसके लिए फिल्म निर्माण क्षेत्र से जुड़े लोगों, खासकर युवाओं को प्रेरित करने के लिए 'फिल्म फेस्टिवल' आयोजित' किए जा रहे है।[24]

वह आगे कहते है कि- 'भारतीय मिथोलॉजी में फिल्मों की कहानियों के प्रचुर भंडार हैं। ऐसे में विदेशों से फिल्मों के आइडिया चुराने की कोई जरुरत नहीं है। ऐसी विभिन्न सूचनाओं के लिए तथा इन सूचनाओं को युवा अभिनेताओं एवं निर्देशकों को बताने के लिए ही **'भारतीय चित्र साधना'** का आरंभ किया गया है।

मीडिया संस्थानों विश्वविद्यालयों, कालेजों में पढ़ने वाले छात्र मोबाइल से भी शार्ट फिल्में बनाकर भेज सकते हैं। भारतीय चित्र साधना का मूल उद्देश्य है कम खर्च में फिल्म बनाने वाले युवाओं को भारतीय मूल्यों से जुड़ी लघु फिल्में बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

भारतीय चित्र साधना के अध्यक्ष प्रो. वृजकिशोर कुठियाला कहते है कि- यह एक गैर सरकारी संगठन है, जो फिल्म निर्माण के क्षेत्र में युवाओं को प्रशिक्षित व प्रोत्साहित करने का कार्य करता है। चित्र साधना का उद्देश्य- भारतीय कला संस्कृति व मूल्यों पर आधारित फिल्म सामग्री को बड़ी मात्रा में तैयार करवाना एवं अधिक से अधिक नागरिकों तक पहुँचाने का है।

'भारतीय चित्र साधना' यह नाम आज से 7 वर्ष पूर्व जून 2016 में अस्तित्व में आया। इसके बैनर के अन्तर्गत प्रत्येक दो वर्ष में चित्र भारती नेशनल शार्ट फिल्म फेस्टिवल' का आयोजन होता है। पहला फिल्म फेस्टिवल इंदौर (म. प्र.) में वर्ष 2016 में हुआ। दूसरा दिल्ली में वर्ष 2018 में औरत तीसरा फिल्म फेस्टिवल 2020 में अहमदाबाद (गुजरात) में हुआ है। फिर 2022 मे भोपाल में फिल्म फेस्टिवल का आयोजन हुआ।

'भारतीय चित्र साधना' में फिल्म जगत से कई बड़ी हस्तियाँ जुड़ चुकी हैं। सुभाष घई, मधुर भंडारकर, हंसराज हंस, रवि किशन, हेमामालिनी जैसे अनेक हस्तियाँ इससे जुड़ी है।

पहले यह मानकर फिल्में बनाई जाती थीं कि - जो फिल्मों में दिखाया जा रहा है, जनता भी उसे पसंद करती है। इस प्रकार भारत का दर्शन भी फिल्मों से जुड़ा हुआ पूरी दूनिया में दिखता था। किन्तु इससे धीरे धीरे भारतीय सिनेमा में 'भारतीयता' अथवा भारतीय संस्कृति का प्रमाण एवं प्रमाणत्व समाप्त होने लगा। भारतीय फिल्मों में प्रदर्शित नारीवाद पूरी तरह से भोगवाद का पर्याय बन गया। फिल्मों में गिरता नैतिक स्तर वास्तव में एक गंभीर समस्या है। क्योंकि चाहे, अनचाहे फिल्मों का स्पष्ट प्रभाव भारतीय जनता पर सर्वाधिक है। सुबह से रात तक हमारे आचार-विचार, रहन-सहन, मंनोरंजन सभी पर फिल्मों का प्रभाव है। यह परोसी गयी नकारात्मकता एक प्रकार से **'अप्रत्यक्ष आतंकवाद'** ही है और इसका समाधान करने के लिए ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने 'भारतीय चित्र साधना' को स्थापित किया।

भारतीय चित्र साधना के संस्थापक एवं इससे जुड़े लोगों का यह मानना है कि- 'इस देश में सिनेमा विचारों को व्यक्त करने का बहुत बड़ा माध्यम है। इसलिए देश को जो कुछ चाहिए, इस देश की संस्कृति से जो पैदा होता है, इस देश का जो मूल विचार है, इस देश की सांस्कृतिक एवं भाषाई बहुलता आदि को सिनेमा में लाना ही 'भारतीय चित्र साधना का उद्देश्य है।

भारतीय चित्र साधना के संस्थापक अध्यक्ष आलोक कुमार कहते है कि- 'भारतीय चित्र साधना', भारतीयों फिल्मों में भारतीय साहित्य-संस्कृति यानि भारतीयता को लेकर काम कर रहा है। यह पूरे देश की तमाम संस्कृतियों, भाषा-बोलियों को जोड़ने वाला मंच है।

इस तरह अब विश्व संवाद केन्द्रों में उपरोक्त आठ आयामों की देख-रेख, एवं इसका मार्गदर्शन होगा। विश्व संवाद केन्द्र द्वारा संचालित होने वाले आठ आयाम है- जागरण पत्रिका, साहित्य, पत्र-पत्रिकाएँ, सोशल मीडिया, कंटेट, स्तंभ आयाम, मीडिया संवाद तथा फिल्म आयाम।

अब देश के सभी प्रांतों में स्थापित विश्व संवाद केन्द्र अपनी बड़ी भूमिका के साथ दायित्व निर्वहन कर रहे है। इन आठ आयामों द्वारा निश्चय ही निकट भविष्य में देश की वैचारिकी में बदलाव देखने को मिलेगा। 'राष्ट्र प्रथम' की राह पर देश चलने को उत्सुक, तत्पर है।

वर्तमान समय में देशभर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की कार्य योजना अनुसार 'विश्व संवाद केन्द्र' कार्यरत हैं। इनका विवरण इस प्रकार है-

सारणी संख्या-5

क्रम संख्या	विश्व संवाद केन्द्रों का विवरण (प्रांतशः)	
1.	विश्व संवाद केन्द्र	अहमदाबाद (गुजरात)
2.	विश्व संवाद केन्द्र	आगरा (उ. प्र.)
3.	विश्व संवाद केन्द्र	इंदौर (म. प्र.)
4.	विश्व संवाद केन्द्र	उदयपुर (राजस्थान)
5.	विश्व संवाद केन्द्र	कोलकाता (पं बंगाल)
6.	विश्व संवाद केन्द्र	कानपुर (उ. प्र.)
7.	विश्व संवाद केन्द्र	कोच्चि (केरल)
8.	विश्व संवाद केन्द्र	गोरखपुर (उ. प्र.)
9.	विश्व संवाद केन्द्र	गुवाहाटी (असम)
10.	विश्व संवाद केन्द्र	चेन्नई
11.	विश्व संवाद केन्द्र	चंडीगढ़ (पंजाब)
12.	विश्व संवाद केन्द्र	जबलपुर (म. प्र.)
13.	विश्व संवाद केन्द्र	जयपुर (राजस्थान)
14.	विश्व संवाद केन्द्र	देहरादून (उत्तराखंड)
15.	विश्व संवाद केन्द्र	नागपुर (महाराष्ट्र)
16.	विश्व संवाद केन्द्र	नई दिल्ली
17.	विश्व संवाद केन्द्र	नई दिल्ली
18.	विश्व संवाद केन्द्र	पटना (बिहार)
19.	विश्व संवाद केन्द्र	पुणे (महाराष्ट्र)
20.	विश्व संवाद केन्द्र	बंग्लोर (कर्नाटक)
21.	विश्व संवाद केन्द्र	भुवनेश्वर (ओड़िशा)
22.	विश्व संवाद केन्द्र	भोपाल (म. प्र.)
23.	विश्व संवाद केन्द्र	मुबंई (महाराष्ट्र)
24.	विश्व संवाद केन्द्र	मेरठ (उ.प्र.)
25.	विश्व संवाद केन्द्र	राजपुर
26.	विश्व संवाद केन्द्र	लद्दाख
27.	विश्व संवाद केन्द्र	वाराणसी (उ. प्र.)
28.	विश्व संवाद केन्द्र	हैदराबाद

29.	विश्व संवाद केन्द्र	रांची (झारखंड)
30.	विश्व संवाद केन्द्र	मालवा(म. प्र.)
31.	विश्व संवाद केन्द्र	जोधपुर (राजस्थान)
32.	विश्व संवाद केन्द्र	उदयपुर (राजस्थान)
33.	विश्व संवाद केन्द्र	लखनऊ (उ. प्र.)
34.	विश्व संवाद केन्द्र	अयोध्या (उ. प्र.)
35.	विश्व संवाद केन्द्र	आगरा (उ. प्र.)
36.	विश्व संवाद केन्द्र	हरियाणा

संदर्भ सूची

1. श्री राजेन्द्र सक्सेना, क्षेत्र प्रचार प्रमुख (पूर्वी उ. प्र.) से 20 अप्रैल 2023 को वार्तालाप पर आधारित।
2. विश्व संवाद केन्द्र, एक परिचय महाकोशल, जबलपुर, पृ॰ 8।
3. विश्व संवाद केन्द्र, एक परिचय महाकोशल, जबलपुर, पृ॰ 10।
4. विश्व संवाद केन्द्र : एक परिचय, विश्व संवाद केन्द्र, महाकौशल, जबलपुर से प्राप्त जानकारी के आधार पर सूचना।
5. प्रांत प्रचार प्रमुख– हिमाचल प्रदेश, श्री महीधर प्रसाद जी से बातचीत पर प्राप्त सूचना, 4 मई गुरुवार 2023।
6. संघ कार्यालय, नाभा 103, शिमला (हि. प्र.) से प्राप्त सूचना आधार, 15 मई बुध वार 2023।
7. श्री राजेन्द्र सक्सेना, (क्षेत्र प्रचार प्रमुख, पूर्वी (उ. प्र.) से वाराणसी में 22 अप्रैल 2023 को वार्तालाप आधारित सूचना।
8. विश्व संवाद केन्द्र, एक परिचय, महाकोशल, जबलपुर, पृ॰ 23।
9. श्री राजेन्द्र सक्सेना– 'क्षेत्र प्रचार प्रमुख, पूर्वी (उ. प्र.) वाराणसी से बातचीत पर आधारित सूचना।
10. द इंडियन एक्सप्रेस 'मनमोहन वैद्य' 10 जून, 2018,
11. प्रज्ञा तिवारी– 'हिन्दू राष्ट्र भारत में जीवन के तरीके के लिए खड़ा है'– मनमोहन वैद्य, टकसाल, 14 अगस्त 2016।
12. मनमोहन वैद्य, मुकुंद सी आर ने नए आर एस एस सह सरकार्यवाह नियुक्त किए, हिन्दुस्तान टाइम्स– 11 मार्च 2018।
13. महीधर प्रसाद, प्रांत प्रचार प्रमुख, (हिमाचल प्रदेश) से 2 जून– शुक्रवार 2023 से प्राप्त सूचना के आधार पर।
14. www.abvp.org.
15. सुनील अंबेकर, 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ', प्रभात प्रकाशन, दिल्ली 2021, फ्लैप।

16. जैफेलॉट 'धर्म जाति और राजनीति' आर्गनाइजर, 29 दिसम्बर 1952, पृ॰ 3।
17. वही।
18. वही।
19. पांचजन्य– 'आर एस एस के खिलाफ नापाक राजनीतिक एजेंडा' 25 अप्रैल 2023।
20. Mid Day RSS & BJP लेखक स्तंभकार के रूप में 3 अप्रैल 2023।
21. वही।
22. आजतक, 'आर एस एस प्रमुख ने किया पत्रकारों से संवाद' 24 सितंबर 2019।
23. अमर उजाला, 'शताब्दी वर्ष से पहले सात आयामों को परिपूर्ण करेगा संघ', 26 मार्च 2022।
24. आज तक– हिन्दी नयूज, 30 जुलाई, 2019।

षष्ठ अध्याय

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर उपलब्ध साहित्य

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना काल से लेकर मात्र पंद्रह वर्षों के भीतर ही समाज पर इसका व्यापक प्रभाव पड़ने लगा था। यद्यपि इसका सकारात्मक/नकारात्मक प्रभाव दोनों तरह से था। लेकिन यह निश्चित है कि उस समय के प्रबुद्ध साहित्यकारों के मनोमस्तिष्क को झंझोड़ना शुरु कर दिया दिया था। अत: साहित्यकारों में इस संगठन के प्रति विचारोतेजना जागृत हो गयी। फलत: इन साहित्यकारों/बुद्धिजीवियों में संघ के विभिन्न आयामों पर अपनी लेखनी चलानी प्रारंभ की। जहाँ कुछ बुद्धिजीवी लेखकों ने संघ से जुड़े होने के कारण अथवा संघ से प्रभावित होने के कारण संघ के बारे में उसके उद्देश्य, क्रियाकलाप तथा प्रभाव पर सकारात्मक लेखन किया।

वहीं अधिकांश बुद्धिजीवी तत्कालीन संघ विरोधी सत्ता से प्रभावित होकर संघ के बारे में लंबे समय तक भ्रमात्मक और नकारात्मक लेखन करते रहे। किन्तु सत्य यह है कि स्वतंत्रता पूर्व एवं स्वतंत्रता पश्चात् संघ पर समय समय पर सत्ता द्वारा प्रतिबंध लगाने पर भी समाज पर संघ का व्यापक प्रभाव पड़ रहा था। जिसके कारण बुद्धिजीवी लेखक, विचारक संघ के समर्थन अथवा विरोध में लेखनी चलाते रहे।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से संबंधित तथा संघ को केन्द्र में रखकर लिखी गयी कुछ प्रमुख पुस्तकों के संदर्भित विचारों का सार अधेलिखित है–

1. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ समर्थित लेखन–

ज्ञातव्य है कि संघ स्थापना काल से ही इसके संस्थापक डॉ. केशव बलिराम

हेडगेवार 'प्रसिद्धि पराङ्गमुख' रहे। वह अपने कार्यों से समाज में स्थान बनाने के पक्षधर थे। इसी कारण वह प्रचार एवं मीडिया से दूर रहते थे। किंतु स्वतंत्रता बाद जब संघ के स्वयंसेवकों ने यह महसूस किया कि समाज में इस संगठन द्वारा किए जाने वाले वृहत्तर कार्यों को भी नगण्य मानकर उसके विपरीत भ्रमात्मक तथ्यों का प्रचार किया जा रहा है। तब उन्होंने संघ के बारे में समाज में सकारात्मक तथ्य प्रसार हेतु 'प्रचार' को अपनाया। हिन्दुस्थान समाचार की स्थापना, पांचजन्य, स्वदेश, आर्गनाइजर आदि संघ के मीडिया की आवश्यकता पूर्ति में एक-एक सोपान बने।

यद्यपि संघ से संबंधित सामग्री प्रायः 10-20 पन्नों की पुस्तिका रूप में छपकर पाठकों के सम्मुख आती रही। क्योंकि पत्रिकाएँ, पुस्तिकाएँ आदि छापने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पास आवश्यक आर्थिक साधन उपलब्ध नहीं थे। इसी समय कुछ प्रमुख बुद्धिजीवियों ने समाज में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ संबंधित सही तथ्यों को लेखनी द्वारा समाज लाने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से संबंधित उपलब्ध समर्थित साहित्य जिसमें संघ से संबंधित आवश्यक तथ्यों का उल्लेख किया गया है। वह इस प्रकार है-

(1) संघ : बीज से वृक्ष तक-

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बारे में ठीक तरह से जानने-समझने में लेखक एवं इतिहासविद श्री देवेन्द्र स्वरूप की पुस्तक **'संघः बीज से वृक्ष तक'** काफी महत्वपूर्ण है।

वास्तव में संघ के संस्थापक डॉ. हेडगेवार ने अपने जीवन को साधना की भट्टी में झोंककर एक दहकता हुआ अंगारा बनाया। और उस अंगारे के संपर्क में आकर जिन बाल या किशोर के अंतःकरण संघ की शैशवावस्था में प्रज्जवलित हुए। वे ही विगत कई वर्षों से भारत के सार्वजनिक जीवन में आदर्शवाद के ज्योतिपुंज बनकर खड़े हुए हैं।

श्री बालासाहब देवरस, माधवराव मूले, भाउराव देवरस, यादवराव देशमुख, एकनाथ रानाडे आदि ये कुछ नाम है। जो किशोरावस्था में इस साधनापथ पर अग्रसर हुए और उपेक्षा, अपप्रचार, दमन और उत्पीड़न के समस्त झंझावतों के बीच भी अपने आदर्शवाद के उच्च धरातल से एक इंच नीचे नहीं उतरे।

उपरोक्त अनुच्छेद के आलोक में ही श्री देवेन्द्र स्वरूप की पुस्तक जो 33 लेखों का एक संकलन है। उसे ठीक प्रकार से समझा जा सकता है। प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली वर्ष 2006 में प्रकाशित यह पुस्तक संघ की स्थापना की आवश्यकता, महत्त्व लक्ष्य, इस संगठन का प्रेरणा स्रोत, इसकी कार्यपद्धति के वैशिष्टय को बखूबी सामने रखती है।

स्वामी विवेकानन्द से लेकर डॉ. हेडगेवार तक सभी मनीषियों की दृष्टि केवल राजनीतिक स्वतंत्रता पर ही केन्द्रित नहीं थी। अपितु उस स्वतंत्रता को प्राप्त करने वाले व्यक्तियों की जीवन रचना और चरित्र निर्माण पर भी गड़ी थी। और वे ऐसे संगठनात्मक प्रक्रिया का आविष्कार करना चाहते थे, जिसके द्वारा मनुष्य के शारीरिक विकास के साथ-साथ उसके बौद्धिक, आत्मिक एवं चारित्रिक विकास की भी व्यवस्था हो सके[1]।

इसी प्रकार डॉ. साहब की जब सन् 1920-22 में स्वतंत्रता संग्राम के असहयोग आंदोलन में भाग लेने के दौरान जेल में थे। तो वहाँ उनकी चर्चा का विषय यही था कि-"प्रथम विश्व युद्ध में पराजित जर्मनी अपनी पराजय का बदला लेने से द्वितीय विश्वयुद्ध की स्थिति पैदा करेगा और यह स्थिति अगले 20 वर्ष पश्चात् अर्थात् सन् 1940 तक के लगभग आ सकती है। वह समय भारत की स्वतंत्रता के लिए सफल प्रयत्न का होगा।

अतः डॉ. साहब की इच्छा थी कि उस अवसर का लाभ उठाने के लिए अभी से ऐसे देशव्यापी अभेद्य संगठन की रचना की जानी चाहिए जो अब तक के क्रांतिकारी आंदोलन के समस्त दुर्बलताओं से मुक्त हो और ऐसा अनुकूल अवसर उपस्थित होने पर ब्रिटिश शासन तंत्र पर बिजली की तरह झपटकर उसे एक ही प्रहार से धराशायी कर सके[2]।

यहाँ यह स्पष्ट है कि सन् 1920-22 में ही डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए किस प्रकार चिंतित थे। हालांकि ब्रिटिश शासन से मुक्ति के लिए वे एक सशक्त संगठन निर्माण का स्वप्न देख रहे थे। हालांकि डॉ. साहब के इस विचार का समर्थन उन्हें अपने आस-पास के परिचितों से नहीं मिल सका था। तब डॉ. जी के निकट सहयोगी एवं विशवस्त मित्र श्री अप्पा जी जोशी ने उनसे कहा कि- "डाक्टर जी, यदि आप अपने विचार पर अटल है तो अन्यों के सहयोग की चिंता न करते हुए अकेले ही अपने कल्पना का संगठन प्रारंभ कर दीजिए। कार्य की गति बढ़ने पर अन्य लोग भी धीरे-धीरे साथ आ जाएंगे[3]।

अप्पा जी जोशी के मंतव्यानुसार ही विजयादशमी सन् 1925 को डॉ. जी ने **'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ'** का सूत्रपात किया। इसका उल्लेख देवेन्द्र स्वरूप ने भी अपना लेख 'काश! वह मिलन हो पाता' में किया है, जो 'संघ : बीज से वृक्ष तक' पुस्तक में संचालित है। अक्सर यह कहा जाता है कि, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मुस्लिम विरोधी है या इसका उद्देश्य भारत से मुस्लिमों को बाहर करना है। इसका भी उत्तर देवेन्द्र स्वरूप ने अपने लेख में देते हुए लिखा है कि- 'संघ का मूल उद्देश्य मुसलमानों से टक्कर लेने वाली एक सशस्त्र हिन्दू सेना खड़ी करना नहीं है[4]।

संघ का राष्ट्रीयकरण-

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सदैव 'भारतीयकरण' और राष्ट्रीयकरण की चर्चा करता है। इसे लेकर समय-समय पर संघ को विपक्षी दल, नेता आदि उसे घेरते ही रहते हैं। संघ के राष्ट्रीयकरण पर प्रश्न उठाते हुए तमाम राजनीतिज्ञ इस बात का उल्लेख करते रहते है कि- भारत विविधता का देश है। यहाँ विविध संस्कृति और मत पंथों को मानने वाले रहते हैं। ऐसे में संघ किस राष्ट्रीयता की बात करता है? क्या संघ की विचारों से साम्य ना रखने वाले 'अराष्ट्रीय' कहे जाने चाहिए? भारत में रहने वाले अनेक धर्मो के लोगों की पूजा-पद्धतियों में भी अंतर है। तो संघ किस प्रकार के भारतीयकरण या राष्ट्रीयकरण की बात करता है।

इन तमाम आरोपों और जिज्ञासाओं का स्पष्टीकरण राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर उपाख्य श्रीगुरुजी ने एक साक्षात्कार में किया है। इसमें वह कहते हैं कि-'विश्व में हिन्दू ही एक ऐसा समाज है, जो सब प्रकार की उपासना पद्धतियों का सम्मान करता है। अत: हिन्दू समाज ने अपने भीतर एवं बाहर समाज को उपासना की पूर्ण स्वतंत्रता दे दी है, आगे भी देगा। केरल के ईसाई शरणार्थी के रूप में आए, वहाँ के हिन्दू राजा ने उन्हें शरण दी, बसने के लिए सब प्रकार की सुविधएँ दी। किन्तु क्या उन पर धर्म परिवर्तन की शर्त लगायी? सातवीं-आठवीं शताब्दी में अपने मातृभूमि ईरान पर इस्लामी आक्रमण से आक्रांत पारसी बंधु 'स्वधर्म रक्षार्थ' हेतु स्वदेश त्यागकर भारत की शरण में आए[5]। यह सत्य है कि- भारत में आए किसी भी शरणार्थी को धर्म-परिवर्तन के लिए यहाँ के निवासी हिन्दू समाज ने कभी नहीं कहा।

'यहाँ के मुसलमान भी हिन्दुओं के ही वंशज हैं।'

भारतीय मुसलमानों की चर्चा करते हुए श्रीगुरुजी ने उन्हें हिन्दुओं का ही वंशज बताया। इसका भी स्पष्टीकरण करते हुए उन्होंने कहा कि- 'भारतीय मुसलमानों के पूर्वज हिन्दू ही थे। दरअसल बीच के कालखंड में भारत में आए मुगल आक्रमणकारियों द्वारा पकड़े जाने पर प्राणरक्षा हेतु अथवा किसी स्वार्थपूर्ति या धेखे में आकर अपना हिन्दूधर्म छोड़कर वे 'मुस्लिम' बने। किन्तु उनमें रक्त तो हिन्दुओं का ही था। वह धर्म तो बदल सकते थे किन्तु पूर्वज नहीं[6]।

सत्य तो यही है कि भारत में रहने वाला मुसलमान यहाँ की भूमि में पैदा होकर, यहाँ का अन्न खाकर, यहाँ के संसाधनों का प्रयोग तो अधिकारपूर्वक करता है किन्तु उसकी पूरी श्रद्धा देश के बाहर रहती है। वह भारत के महापुरूषों के स्थान पर अरब-ईरान के महापुरूषों पर अपनी श्रद्धा-आस्था रखता है। इसी की चर्चा में

श्रीगुरुजी कहते है-'भारतीय मुसलमान अरबी इतिहास के नामों को अपनाकर, ईरान के ऐतिहासिक पुरूष रूस्तम-सोहराब को अपनाने में संकोच नहीं करते। तुर्किस्तान के महापुरूषों के नाम पर तो श्रद्धा रखते हैं। किन्तु अपने भारतीय पूर्वजों-जैसे-राम, कृष्ण, चंद्रगुप्त, समुद्रगुप्त और विक्रमादित्य आदि के नामों के प्रति घृणा रखे[7]। यह उचित नहीं।

यह सत्य ही है कि, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपनी स्थापना काल से ही भारतीयों के मन में राष्ट्र के प्रति निष्ठा, राष्ट्र के स्थायी स्वरूप का साक्षात्कार, राष्ट्र के लिए निःस्वार्थ भाव से संमर्पण की भावना जगाने का ही प्रयास कर रहा है। राष्ट्रीकरण का अर्थ- राष्ट्रीय भावना के संचार की प्रक्रिया। राष्ट्रीय भावना का जन्म होता है मातृभूमि एवं उसकी ऐतिहासिक परंपरा के प्रति पूर्ण समर्पण एवं अव्यभिचारी निष्ठा में से। 'आसेतु हिमाचल' फैली हुई भारतभूमि के कण-कण के प्रति अनन्य भक्ति के जागरण को ही 'भारतीयकरण' अर्थात् 'राष्ट्रीयकरण' कहा जा सकता है।

राष्ट्रीयकरण का एकमेव आधर है-एकनिष्ठ भारतभक्ति। और यही सच्चा भारतीयकरण है[8]।

संघ पर पत्रकारिता की विकृतदृष्टि-

चूंकि संघ के संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने कांग्रेस की रीति-नीति से असंतुष्ट होकर ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ नामक एक राष्ट्रवादी संगठन की स्थापना की थी। और शीघ्र ही यह संगठन देश के युवा-तरूण वर्ग में उनके शारीरिक-मानसिक बौद्धिक विकास के मार्ग को प्रशस्त करने लगा था। अतः यह संगठन ब्रिटिशों के निगाह में खटकने लगा। स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात् भी संघ के स्वयंसेवकों के उत्तम कार्यों को नकारते हुए गांधी हत्या घटना प्रकरण के छद्म आरोप इन पर लगाए गए। संघ को मुस्लिम विरोधी, गांधी हत्या का आरोपी, साम्प्रदायिक आदि-आदि कहा गया। संघ के विरोध में जनमानस को भड़काने में सत्ता पक्ष ने पत्रकारिता का बखूबी प्रयोग किया।

फलतः संघ के प्रति आधी-अधूरी और भ्रमित जानकारी का भंडार जनता के बीच उलटने में पत्रकारों और तथाकथित बुद्धिजीवियों, छद्म धर्मनिरपेक्षियों सत्तासीनों ने प्रमुख भूमिका निभाई। पत्रकारिता किस प्रकार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विरोध में विकृत दृष्टि प्रसार कर रही थी। इसके अनेक उदाहरणों में से एक यह उल्लेखित है- "अनेक नगरों से प्रकाशित होने वाले अंग्रेजी दैनिक समाचार पत्र 'इंडियन एक्सप्रेस' के 13 मार्च 1998 के अंक में पहले पन्ने पर छपा यह समाचार-'संघ के कट्टरपंथियों द्वारा श्री शेषाद्री की पदावनति[9]।

ज्ञातव्य है कि संघ के सरसंघचालक, सरकार्यवाह एवं सहसरसंघचालक तथा सहसरकार्यवाह पहले से ही निष्काम कर्मयोगी रहते हैं। उनमें पदलालसा होती ही नहीं। तथापि किसी श्रेष्ठ पदप्राप्ति बाद स्वयं को शारीरिक-मानसिक किसी भी प्रकार अनुपयुक्त अथवा स्वास्थ्यगत कारणों से वह स्वेच्छा से पदत्याग कर देशसेवा के व्रत को पूरा करने में लग जाते हैं, संघ में स्वेच्छा से पद त्यागने के अनेक उदाहरण हैं। किन्तु 'इंडियन एक्सप्रेस' पत्र में श्री शेषाद्री जी द्वारा 'सरकार्यवाह पद त्याग कर सहसरकार्यवाह' पद स्वीकरण को उनके आत्मत्याग, ध्येय निष्ठा का उदाहरण नहीं बताया गया।

इसी तरह सन् 1988 में प्रो. राजेन्द्र सिंह उपाख्य श्री रज्जू भैया द्वारा भी सरकार्यवाह से हटकर सहसरकार्यवाह पद ग्रहण कर कार्य करने की खबर को भी 'संघ में सत्ता-संघर्ष' रूप में जनता के समक्ष प्रस्तुत किया। 'इंडियन एक्सप्रेस' के संवाददाता प्रदीप कुमार मैत्र ने इसके बाद भी मोहन भागवत को सरकार्यवाह नियुक्त होने पर 'संघ में महाराष्ट्रियों के वर्चस्व वापसी' के रूप में प्रचारित किया[10]।

इसी प्रकार संघ विरोधी मीडिया ने हर जगह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को दुष्प्रचारित ही किया। लेखक देवेन्द्र स्वरूप ने वर्ष 2000 में वामपंथी मीडिया मस्तिष्क की चर्चा करते हुए लिखा है कि- 'यह मस्तिष्क हर जगह संघ के प्रतीक स्वरूप-त्रिशूल, बाबरी ढांचा, लाठी, खाकी, नेकर व काली टोपी को चित्रित करता है। वह शाखा तंत्र के 'वाह्य स्वरूप' को अपने कुप्रचार के लिए सर्वाधिक उपयोगी समझकर संघ के **'रचनात्मक-प्रस्फुटन'** को अनदेखा कर अपना पूरा प्रचार ऐसे ही वाह्य प्रतीकों पर केन्द्रित कर रहा है। इन्हें उभारकर वह 'अल्पसंख्यकों विशेषकर मुस्लिमों के मन में भय पैदा कर रहा है।

मीडिया ने संघ की 'नारी विरोधी', 'युवा विरोधी', 'अल्पसंख्यक विशेषकर मुस्लिम विरोधी', छवि को आरोपित करने की चेष्टा ही की है। वह लगातार संघ पर कभी 'संस्कृति गिद्ध' कभी 'छिपा एजेंडा' जैसे मुहावरे चिपका रहा है[11]। समय के साथ मीडिया ने हिन्दुत्व विरोधी प्रचार द्वारा मुस्लिम-ईसाई पत्रकारों को भी जोड़ लिया।

अन्य लेखों में देवेन्द्र स्वरूप ने अपनी पुस्तक में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के राष्ट्रसेवी महापुरूषों की चर्चा की है। इनके प्रमुख लेखों में 'रज्जू भैया : शरीर नहीं, मूर्तिमय आदर्शवाद', 'राष्ट्र ही भाउराव का सर्वस्व था', बसंतराव ओक : एक विराट व्यक्तित्व, 'ऋषितुल्य यादव राव जोशी', 'एक निष्काम कर्मयोगी : श्री लक्ष्मणराव भिड़े' 'मोरपंत पिंगले- असामान्य योजन महान् संगठक, 'महात्मा चमनलाल', आदि लेखों द्वारा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अगणित नींव के पत्थरों को याद किया है।

संघ का इतिहास कैसे बने-

'नमन है नींव के इन पत्थरों को', लेख में लेखक देवेन्द्र स्वरूप इस बात पर चिंता व्यक्त करते हैं कि- आज राष्ट्र जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में संघ भूमि से उपजे विशालतम संगठन खड़े है। संसार का विशालतम कर्म आंदोलन 'संघ' रूप में प्रस्फुटित होता है। सवाल है कि इस विशाल वटवृक्ष की नींव से तिरोहित हुए कितने लोगों का नाम किसी को पता है? संघ की स्थापना से कई दशक बाद यदि संघ का इतिहास लिखा जाए तो उन अनाम-स्वयंसेवकों के जीवनवृत उस समय की स्थिति की जानकारी बिना संघ का इतिहास कैसे बनेगा? क्योंकि संघ की नींव के पत्थर रूप में स्थापित हो चुके स्वयंसेवकों के ही मस्तिष्क में भरी है- संघ के इतिहास की कच्ची सामग्री[12]।

निश्चित ही इस पुस्तक- 'संघ बीज से वृक्ष तक' में संघ के बारे में मूलभूत व्यापक एवं सुदृढ़ जानकारी पाठकों को प्राप्त होती है।

2. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं दृष्टिकोण-

श्री नरेन्द्र ठाकुर ने **'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' का एक दृष्टिकोण'** पुस्तक का संपादन किया है। इसके संपादक ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का विस्तार से परिचय देते हुए संघ पर प्रतिबंध की सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों का विवरण दिया है। इस पुस्तक को लिखने की आवश्यकता पर बात करते हुए नरेन्द्र ठाकुर ने लिखा है कि- 'संघ के विरोधियों ने संघ के खिलाफ अनेक बार **झूठा** प्रचार अभियान चलाया था। इसके बावजूद संघ का समाज में व्यवहार देखकर वह निष्प्रभावी साबित हुआ और संघ का समाज में स्वागत, स्वीकार्यता एवं समर्थन लगातार बढ़ता ही गया है। ऐसे कुछ विषयों के बारे में संघ की अधिकृत भूमिका की जानकारी परिशिष्ट रूप में देने का प्रयास किया है[13]।

इस पुस्तक में 'आर. एस. एस. एक परिचय' परिशिष्ट में संघ के बारे में अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख डॉ. मनमोहन वैद्य से संघ के बारे में प्रश्नोत्तर किया गया है। जैसे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ क्या है? इसका उद्देश्य क्या हे? संघ केवल हिन्दुओं के ही संगठन की बात क्यों करता है आदि।

उपरोक्त प्रश्न प्रायः लोगों के मन में उठते हैं। इसका उत्तर इस पुस्तक में दिया गया है कि- 'भारत को विश्व का सर्वश्रेष्ठ देश बनाना है। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में देश सर्वश्रेष्ठ हो, आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी ओर सम्पन्न हो, भारत एक देशमात्र नहीं है। यह एक विचार है, एक चिंतन है[14]। संघ केवल 'हिन्दू' शब्द का प्रयोग करता है। इसका भी स्पष्टीरण भी नरेन्द्र ठाकुर की इस पुस्तक में है कि-संघ में

'हिन्दू' शब्द प्रयोग वास्तव में 'हिन्दू' एक जीवन दृष्टि है। एक **View of life** है और एक **Way of life** है। इसी अर्थ में संघ 'हिन्दू' शब्द का प्रयोग करता है।

अभी हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय ने भी एक महत्वपूर्ण निर्णय में कहा है कि- **'Hinduism is not a religion but a way of life.'**[15]

भारत में हिन्दू राष्ट्र की अवधरणा भी पश्चिम से पूर्णतया भिन्न है। यहाँ राष्ट्र की कल्पना राज्य आधरित नहीं, बल्कि सांस्कृतिक है। सदियों के चिंतन आधर पर यहाँ एक जीवन दृष्टि **(View of life)** विकसित हुई है।

भारत के जीवन दृष्टि का आधार आध्यात्मिक है। इसके अतिरिक्त इस पुस्तक में 'संघ और महात्मा गांधी' के अन्तर्गत संघ के प्रति महात्मा गांधी के विचारों को गांधी पर केन्द्रित 'संपूर्ण गांधी वांग्मय' खण्ड 89 के आधर पर पाठकों के समक्ष रखा गया है। जिसमें महात्मा गांधी ने भी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को सुसंगठित, अनुशासित संस्था बताया था[16]।

प्रारंभ से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ नारी को 'मातृशक्ति' माना गया है। वर्ष 2008 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रतिनिधि सभा में नारी की गरिमा को लेकर एक प्रस्ताव पारित किया। जिसमें नारी के कर्त्तव्यों और अधिकारों के साथ-साथ ही समाज का नारी के प्रति कैसा दृष्टिकोण हो। इस पर भी विचार किया।

संघ के प्रति दुराग्रह फैलाने वाले प्राय: संघ को ईसाई एवं मुस्लिम विरोधी बताने का ही प्रयास करते रहे हैं। इसी संदर्भ में पत्रकार सैफुद्दीन जिलानी ने श्री गुरुजी से 30 जनवरी 1971 को कलकत्ता में लंबी बातचीत की थी। उसका उल्लेख भी इस पुस्तक में किया गया है।

'उर्दू भाषा और मुसलमान' पर चर्चा करते हुए श्रीगुरुजी ने स्पष्ट किया था, कि- 'उर्दू मुसलमानों की भाषा नहीं है। यह मुगलों के समय तक एक संकर भाषा के रूप में उत्पन्न हुई। इस्लाम के साथ उसका रत्ती भर संबंध नहीं है। इस्लाम का पवित्र ग्रंथ 'कुरान' उर्दू में नहीं अरबी भाषा में है। इस तरह मुसलमानों की धर्म भाषा अरबी ही होगी[17]।

इसी तरह मुसलमान जो अपना 'राष्ट्र पुरूष 'रूस्तम' को बताते हैं। उस पर भी श्रीगुरुजी ने कहा कि- रूस्तम का उदय इस्लाम के उदय से भी पूर्व हुआ था। तो वह उनका राष्ट्र पुरूष कैसे हो सकता है[18]?

इसी प्रकार ईसाइयत पर भी संघ का दृष्टिकोण संबंधी अध्याय में बताया गया है कि- प्रारंभ में जब ईस्ट इंडिया कंपनी के शासक भारत आए। तब उन्होंने ईसाई धर्म प्रचार संबंधी गतिविधियों में कोई रूचि नहीं दिखाई थी। किन्तु सन् 1781 के बाद भारत में धार्मिक सहिष्णुता का वातावरण प्रचार किया गया। तथा सन् 1813 में 'चार्टड-एक्ट' की नई धारा डाली गयी। इसके अन्तर्गत सभी मत-विश्वासों के मिशनरियों को भारत में प्रवेश की अनुमति मिल गयी। इसी कारण भारत के मतांतरण

को बल मिला[19]। वास्तव में ईसाई और हिन्दुओं के बीच तनाव का कारण ईसाइयों द्वारा हिन्दुओं का मतातंरण किया जाना है। आज भारत में जो ईसाई हैं वे मतातंरित ही ईसाई है। अधिकांश मतांतरण धमकी, लोभ, आर्थिक सहायता, अज्ञान, धोखाधड़ी, आतंकवाद तथा उत्पीड़न के कारण ही हुआ है। जबकि गांधी जी भी मतांतरण के विरूद्ध लिखते हैं कि- 'मतांतरण आजकल के अन्य अनेक धंधें जैसा ही एक धंधा बन गया है[20]।

ज्ञातव्य है कि अनेक वर्षो से भारत में इस्लाम ओर ईसाई में मतातंरण हेतु विदेशों से प्रति व्यक्ति खर्च भेजा जाता है। नेहरू के समय ही नागालैंड में चल रहे धर्मांतरण पर उन्होंने कहा था कि-'नागा हिल्स में जो खुला विद्रोह चल रहा है उसके पीछे ईसाई मिशनरी के षडयंत्र ही काम कर रहे हैं'।

वर्तमान समय में वर्ष 2023 के मई माह से मणिपुर में भारी हिंसा का तनावग्रस्त माहौल है। पूर्वोत्तर के नागालैंड में 6.47 प्रतिशत, मिजोरम में 94.43 प्रतिशत, तथा मेघालय में 86.14 प्रतिशत जनजाति बहुल क्षेत्र ईसाई बहुल हो चुके है[21]।

वास्तव में पूर्वोत्तर के राज्यों में सक्रिय सशस्त्र अलगाववादी समूह भारत का एक और विभाजन ईसाईयत के नाम पर करना चाहते हैं। भारत के परिवारवादी प्रधनमंत्री ने भी कहा था कि- 'पूर्वोत्तर का शासन ईसाईयत के सिद्धांत पर आधारित होगा[22]। इससे अलगाववादियों का दुस्साहस और भी बढ़ गया।

इसके साथ ही भारतीय एवं राष्ट्रवादी लोग पूर्वोत्तर राज्यों में सेवाकार्य न करें। इसकी भी साजिश रची गयी। फलतः पूर्वोत्तर राज्यों के ईसाई बहुल क्षेत्रों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं वनवासी कल्याण आश्रम के पदाधिकारियों की हत्या तक कर दी गयी[23]।

यहाँ यह ध्यान देने योग्य बात है कि-ईसाई बहुल हो चुके राज्यों जैसे मणिपुर, मिजोरम, नागालैंड आदि में जहाँ आज मात्र 150 साल पहले ईसाई धर्म पहुँचा था। वे अब ईसाई आबादी बहुल राज्य बन चुके हैं। क्योंकि इन राज्यों में कांग्रेस की सरकारों ने समय-समय पर ईसाई धर्म को मानने वालों को वहाँ सत्ता प्राप्ति के लिए सहयोग दिया। लेकिन इन्हीं स्थानों पर हिन्दू धर्म मानने वालों को सेवा-सहयोग देने से वंचित करने, उनका उत्पीड़न करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

नागालैंड में ईसाई धर्म के बढ़ते प्रभाव को स्वयं प्रधनमंत्री नेहरू ने भी स्वीकार किया था कि- 'नागा हिल्स में जो खुला विद्रोह चल रहा है, उसके पीछे ईसाई मिशनरी के षडयंत्र ही काम कर रहे हैं। नागालैंड के ईसाई धर्म समर्थक भारतीय सेनाओं के विरूद्ध हथियारों का प्रयोग कर रहे हैं[24]।

तथापि केवल अपनी कुर्सी रक्षा की पद लालसा में लगे रहे लंबे समय तक सत्तासीनों ने, न केवल धर्म विशेषों का अनावश्यक तुष्टिकरण किया। बल्कि भारत में कई और विभाजन का भी रास्ता बना दिया। जबकि इसी का विरोध करने वाले

संघ को ईसाई और मुस्लिम विरोधी छवि के बारे में द्वितीय सरसंघचालक श्रीगुरुजी ने स्पष्ट किया था कि– 'जो अहिंदू यहाँ रहते है, उनका एक राष्ट्रधर्म (राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य) है, एक समाजधर्म (समाज के प्रति धर्म) एक कुलधर्म (पुरखों के प्रति कर्त्तव्य) एक व्यक्तिधर्म (व्यक्ति के प्रति कर्त्तव्य) है। व्यक्ति धर्म के नाते आध्यात्मिक संतुष्टि के लिए वह किसी भी धर्म को अपना सकता है। किन्तु फिर भी उसे अपने राष्ट्र के प्रति भक्ति और प्रेम रखना ही चीहिए। अतः नरेन्द्र ठाकुर की पुस्तक **राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विचार एवं कार्यनीति** को पाठकों के समक्ष विभिन्न बिन्दुओं को स्पष्ट रूप से रखती है।

3. कृतिरूप संघ दर्शन–

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना से वर्तमान समय तक की वृहद यात्रा का वर्णन **'कृतिरूप संघ दर्शन'** हो. वे. शेषाद्री द्वारा लिखा गया। जिसका नवीन संस्करण वर्ष 2018 में संघ के सरसंघचालक मोहनराव भागवत एवं सरकार्यवाह भैया जी जोशी ने किया। इस पुस्तक में वर्णन है कि संघ किन विषय परिस्थितियों का सामना करता हुआ आगे बढ़ा और आज भी किन परिस्थितियों में समाज सेवा कर रहा है। यह पुस्तक 'कृतिरूप संघ दर्शन' छह भागों में विभाजित है। इसमें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की संगठनात्मक जानकारी, समाज जीवन के भिन्न क्षेत्रों में संघ कार्यो का वर्णन है।

4. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की पहली अग्नि परीक्षा–

संघ का परिचय कराती एक अन्य पुस्तक है 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ'। ज्ञातव्य है कि स्वतंत्रता पश्चात् राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सेवारथ को रोकने में गांधी हत्या प्रकरण और उसके झूठे आरोप जो संघ पर लगाए गए, उसकी प्रमुख भूमिका रही है। इसी घटना से उत्पन्न संघ की संघर्षगाथा की पूरी सामग्री संघ के श्रीवझे ने सन् 1950 में ही संकलित कर लिया था। उस समय इस घटना से संबंधित प्रमुख समाचार पत्रों की खबरें, जाँच रिपोर्टो आदि का विस्तृत संकलन कर इस पांडुलिपी के प्रकाशन की योजना रही। किन्तु तत्कालीन गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल द्वारा श्रीगुरुजी से कहकर पुस्तक प्रकाशन रूकवा दिया गया।

अंततः 45 वर्षो बाद सन् 1993 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जो विश्व का सबसे बड़ा स्वयंसेवी संगठन है, इस संगठन के बारे में अधिकाधिक सही जानकारी देने के लेखक विजय कुमार की पुस्तक 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ : क्या, क्यों, कैसे? वर्ष 2020 में प्रभात प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित की गयी। इस पुस्तक में संघ के बारे में जानने वाले के लिए प्राथमिक जानकारी दी गयी है। इसमें सिद्धांत की बातों के स्थान पर व्यवहारिक बातें अधिक है।

इस पुस्तक के लेखक संघ के वरिष्ठ प्रचारक श्री विजय कुमार आठ वर्षो तक 'राष्ट्रधर्म' पत्रिका के सहायक संपादक रहे, इसके साथ ही उनके विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में राष्ट्रवादी विचारधरा के लेख प्रकाशित होते रहे हैं। इस पुस्तक में उन तथ्यों और घटनाओं को भी लिया गया है जो जनता के बीच अल्पज्ञात हैं या जिन्हें जानबूझकर परिदृश्य से बाहर रखा गया।

पुस्तक का प्रथम अध्याय 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' का परिचय देता है। इसके द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ अध्याय में संघ का विचार और संघ द्वारा किए गए उन कार्यों का उल्लेख है। जिन्हें प्रमुख समाचार पत्रों में भी स्थान नहीं दिया गया। साथ ही इन अध्यायों में संघ विचार परिवार के संगठनों के कार्यो का वर्णन है। संघ के बारे में जो भ्रमात्मक समाचार या झूठ जनमानस में अंग्रेजी मीडिया और सत्तावादी मीडिया फैलाता रहता है। जैसे- 'संघ मराठी ब्राह्मणों का संगठन है' यह 'महिला और आरक्षण विरोधी' है। यह 'जाति और वर्ण व्यवस्था का समर्थक' है। 'पुरातन पंथी संगठन देश पर हिन्दी और संस्कृत थोपना' चाहता है। यह 'मुसलमानों और ईसाइयों का विरोधी' है।

इन सभी प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक के अध्याय 'कुछ अटपटे प्रश्न' में अत्यंत सुलझे हुए सरल शब्दों में दिया गया है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सहबौद्धिक कौशल किशोर के निर्देश पर माणिक चंद वाजपेयी के नेतृत्व में यह पुस्तक प्रकाशित की गयी। गांधी हत्या बाद 4 फरवरी 1948 को नेहरू ने संघ पर प्रतिबंध लगाकर संघ पर चतुर्दिक सामूहिक प्रहार किए। संघ के स्वयंसेवकों का भयंकर उत्पीड़न हुआ, संघ कार्यालय तोड़े गए, स्वयंसेवकों को जेल में भरकर उनकी सभी गतिविधियों पर रोक लगा दी गयी। इस पुस्तक 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की पहली अग्नि परीक्षा' में संघ के इस संघर्ष गाथा और उसके निष्कलंक बाहर आने की पूरी यात्रा का वर्णन किया गया है।

5. भारतवर्ष की सर्वांग स्वतंत्रता-

पत्रकार एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक नरेन्द्र सहगल की यह पुस्तक **'भारतवर्ष की सर्वांग स्वतंत्रता'** संघ के 'अखंड भारत' की परिकल्पना को प्रस्तुत करती है। इस पुस्तक में लेखक नरेन्द्र सहगल लिखते है कि-परमवैभव के लिए सर्वांग स्वतंत्रता अखंड भारत भारतीयों के लिए भूमि का टुकड़ा ना होकर एक चैतन्यमयी देवी भारतमाता है। भारत की खंडित स्वतंत्रता जो भारत के विभाजन के आधर पर प्राप्त हुई है। उसे संघ स्वीकार नहीं करता। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तथा सभी ऐसे भारतीय जो भारत को मात्र भूमि का टुकड़ा ना मानकर इसे चैतन्यमयी 'भारतमाता' अर्थात् 'देवी' की उपाधि देते हैं। उन्हें 'अखंड भारत' ही स्वीकार होगा,

'खंडित भारत' नहीं। वैसे भी जब तक भारत का भूगोल, संविधन, शिक्षा प्रणाली, आर्थिक नीति, संस्कृति, समाज रचना, विदेशी विचारधरा से प्रभावित एवं उसके द्व ारा नियंत्रित तथा पश्चिम के अंधनुकरण पर आश्रित रहेगी तब तक भारत की पूर्ण स्वतंत्रता पर प्रश्न चिन्ह लगता रहेगा।

6. ज्योति जला निज प्राण की–

माणिकचंद्र बाजपेयी और श्रीधर पराड़कर की पुस्तक– **'ज्योति जला निज प्राण की'** सन् 1999 को सुरूचि प्रकाशन, नई दिल्ली ने प्रकाशित किया था। देश विभाजन के मूल्य पर मिली स्वतंत्रता के साथ देश को मिला था अभूतपूर्व विस्थापन और क्रूरतम नरसंहार का इतिहास।

इस पुस्तक में लेखक माणिकचंद्र वाजपेयी तथा श्रीधर पराड़कर ने बताया है कि जब–जब भारतमाता को अपनी ज्योति को जलाए रखने के लिए वीरों को प्राणरूपी तेल की आवश्यकता पड़ी। तब–तब इस देश के अनेकों बलिदानियों ने माँ भारती की सेवा में निज प्राणों की आहुति देकर राष्ट्ररक्षा, धर्मरक्षा और संस्कृति रक्षा के लिए अपना प्राणोत्सर्ग किया। देश विभाजन त्रासदी के समय किस प्रकार संघ के स्वयंसेवकों ने शरणार्थियों की रक्षा की। इसका रोमांचक एवं सजीव वर्णन इस पुस्तक में वर्णित है।

यद्यपि देश–विभाजन विषय पर कई पुस्तकें लिखी गयी है। लेकिन इस पुस्तक में देश भर के 4000 विभाजन की त्रासदी झेलने वाले भुक्तभोगियों और उनके साक्षात्कारों का दस्तावेज बनाया गया है। इस पुस्तक में शौर्य, साहस, पराक्रम बलिदान के असंख्य प्रसंग है।

(ख) राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और पूर्वाग्रहित नकारात्मक लेखन–

ज्ञातव्य है कि स्वतंत्रता पूर्व में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपनी सकारात्मक राष्ट्रसेवा कार्यों द्वारा आम जनमानस में अपनी विशिष्ट पहचान बनाता जा रहा था। देश विभाजन और स्वतंत्रता प्राप्ति बाद देश की उथल–पुथल हो चुकी सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, सामरिक अव्यवस्था को भी यथासंभव सहायता देने तथा लाखों हिन्दू शरणार्थियों की सुरक्षा, उनके खान–पान, चिकित्सा सहायता पहुँचाने में संघ के स्वयंसेवकों की बड़ी भूमिका रही। तथापि केन्द्रीय सत्ता द्वारा बढ़ती संघशक्ति से घबराहट स्वाभाविक थी। इसी समय महात्मा गांधी की हत्या हुई। जिसने पूरे जनमानस को झकझोर दिया। इस हत्या का आरोपी नाथूराम गोडसे कई वर्ष पूर्व संघ की शाखाओं में भी गया था और कांग्रेस में भी। जाहिर है उस समय की युवा

पीढ़ी प्रमुख संगठनों से प्रभावित थी। अत: उसके संपर्क में भी जाती रही। किन्तु इस बात का लाभ उठाकर तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरू ने संघ को निशाने पर लेकर उसे समूचा नष्ट करने का विचार कर लिया। नेहरू को प्रसन्न करने तथा सत्ता से लाभ पाने की आशा में उस समय का बुद्धिजीवी, लेखक एवं पत्रकार समूह पूरी तरह संघ विरोध में कागज रंगने लगा। हालांकि उस समय भी कुछ लोगों ने संघ कार्यों को जनता में लाने का प्रयास किया। किन्तु उसे प्रशासन द्वारा पूरी तरह दबा दिया गया। लंबे समय तक संघ के प्रति नकारात्मक/भ्रमात्मक मनगढ़ंत कथानक प्रस्तुत किये जाते रहे। समय-समय पर सत्तासीनों ने संघ विरोधी लेखकों को बड़े-बड़े पुरस्कारों से सम्मानित भी किया। कुछ प्रमुख पुस्तकों में किस प्रकार संघ विरोध की प्रबल पृष्ठभूमि रही। इसका सार संक्षेप यहाँ प्रस्तुत है।

1. राष्ट्रीय स्वयंसेवकसंघ-बच्चा पकड़ने वाले का गिरोह

देश में कौमी एकता स्थापित करने का प्रयास करती साम्प्रदायिकता विरोधी समीति-नई दिल्ली ने भी 'राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ' पर अपना दृष्टिकोण रखते हुए 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ- बच्चा पकड़ने वाले का गिरोह' पुस्तक सन् 1975 में प्रकाशित की थी। संघ का परिचय इस पुस्तक में इस प्रकार घृणात्मक रूप में दिया है-

'भारत में बच्चे पकड़ने वालों का एक गिरोह है। जिसकी उम्र एक आदमी की उम्र के बराबर हो चुकी है। नाम कभी कभी अंधे का भी नैनसुख हो जाता है और शायद इसलिए एक गिरोह ने छांटकर अपने लिए एक सुंदर सा नाम रख लिया- 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ'। बरसों तक इस नाम से लोगों को चकमा दिया और नाम से ही नहीं काम से भी लोगों पर यह झांसा चलता रहा। सुबह तड़के ही गली-मुहल्लों में घरों पर चढ़ती हुई उम्र के बच्चों की आवाजें पड़ती, जो बच्चे घर से निकल जाते। उन्हें मैदान में ले जाकर खेल और परेड करायी जाती[25]।

पुस्तक में उपरोक्त इस अनुच्छेद में संघ के प्रति उपेक्षा, अपमान, घृणा भाव स्पष्ट होता है। हालांकि इस पुस्तक में अपनी घृणावमन करने वाले ने भी यह माना है कि, संघ सुबह ही बच्चों को जगाकर उन्हें शारीरिक व्यायाम कराता है। बहरहाल लेखक ने सिवाय संघ के नाम 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' के इस संगठन में कुछ भी अच्छा न देखा, ना ही माना।

इसमें आगे कहा गया है कि, संघ ने कल्पना पर आधारित युद्ध की तैयारी करायी जाती है। इस विषय में लिखा है कि- 'काल्पनिक युद्ध की तैयारी में परेड, कवायद, लाठी, बरछा, बल्लम आदि हथियार चलाने की सीख दी जाती है। जिससे लाइसेंस के बखेड़े ना हों। शिवाजी, प्रताप और युद्ध के दीवानों का इतिहास बड़े रोचक मंझे हुए लहजे में बखाने जाते है। खेलकूद, कबड्डी, खो-खो आदि कार्यक्रम

'शाखा' की ट्रेनिंग में मौजूद है। जिससे उस काल्पनिक युद्ध की तैयारी में जिस्म को फौलाद बनाना है।

इस पुस्तक में बार-बार भारत पर **काल्पनिक आक्रमण** और **'काल्पनिक युद्ध'** की बात की गयी है। यानि इससे साफ है कि भारत में युद्ध की स्थिति कभी नहीं रही। इससे 1947-48 में भारत पाक युद्ध, 1962 में भारत पर चीन का हमला, 1965 में पुनः पाकिस्तान द्वारा भारत पर आक्रमण, 1971 में पुनः पाकिस्तान द्वारा भारत पर आक्रमण, सब एक सिरे से ही खारिज हो जाते हैं।

इस प्रकार इस पुस्तक की लेखिका का मानना है कि, जब युद्ध की स्थिति ही नहीं है तो किसी व्यक्ति को प्रातःकाल उठने की भी आवश्यकता नहीं है और ना ही किसी प्रकार के आत्मरक्षात्मक तरीके सीखने की, ना ही अपने गौरवशाली अतीत को याद करने की। भारत के गौरव छत्रपति शिवाजी महाराज एवं महाराणा प्रताप को 'युद्ध के दीवाने' कहकर उनका सर्वथा अपमान किया है।

इसी पुस्तक में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर अंग्रेजों की कृपा दृष्टि होना बताया गया है। इस पर लिखा है कि- 'अंग्रेज सरकार की कृपा सरकार को पर्याप्त मिलती रही'[26]। जबकि ज्ञातव्य है कि मात्र 9 वर्ष की आयु में ही 'संघ संस्थापक डॉ. केशव ने ब्रिटिश महारानी विक्टोरिया के साठवें जन्म दिवस पर बाँटी गई मिठाई फेंककर अंग्रेजों का विरोध को दर्शाया। 11 वर्ष की आयु में निर्भीकता पूर्वक 'वंदेमातरतम्' का गान और 14 वर्ष की आयु में नागपुर के पास सीतावर्ड़ी किले पर टंगे यूनियन जैक को उतारने के लिए 3 किलोमीटर सुरंग खोद डाली थी।

यही नहीं, दशहरे के मौके पर नागपुर के निकट रामपाइली में युवाओं के बीच केशवराव ने जो ओजस्वी भाषण देकर 'परतंत्रता' को पाप बताया था। उसके कारण केवल केशवराव को न केवल ब्रिटिश सरकार ने गिरफ्तार कर लिया। बल्कि जिलाधिकारी द्वारा सार्वजनिक स्थानों पर तरुण केशवराव के भाषणों पर प्रतिबंध लगा दिया था। 16 वर्ष की आयु में बालक केशव ने अपने स्कूल के मुख्य अध्यापक एवं शिक्षा विभाग के अंग्रेज निरीक्षक के सामने अपने साथियों के साथ 'वंदेमातरम्' गीत गाया। जबकि उस समय ब्रिटिश सरकार ने अपने प्रति विरोध का दबाने के लिए 'रिसले-सर्कुलर' नामक सूचना पत्रक जारी कर 'वंदेमातरम्' पर प्रतिबंध लगा दिया था। सन् 1915 में तिलक की प्रेरणा से नागपुर में ब्रिटिश गुलामी का प्रबल विरोध किया था। इस समय ब्रिटिश सरकार ने धारा 144 लगाकर, सभा, जुलूस, भाषणों पर प्रतिबंध लगाकर डॉ. केशवराव को जेल भेज दिया था।

सन् 1920 में भी डॉ. हेडगेवार ने करोल एवं भरतवाड़ा की सभाओं में ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध भाषण दिया था। भड़काऊ भाषण देने, अंग्रेजी सरकार का विरोध करने और ब्रिटिश सरकार के प्रति घृणा फैलाने के आरोप में ब्रिटिश सरकार ने डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार को 19 अगस्त 1921 को 1 वर्ष के लिए जेल भेज

दिया था। 21 जुलाई 1930 को डॉ. हेडगेवार ने ब्रिटिश सरकार द्वारा 'जंगल कानून के विरोध में किसानों के पक्ष में धरना प्रदर्शन किया। फलत: डॉ. हेडगेवार को धारा 117 के तहत छह माह के सश्रम कारावास तथा धारा 379 के तहत 3 माह के सश्रम कारावास की सजा दी गयी।

इसके साथ ही संघ की स्थापना के मात्र 14-15 वर्षों में ही सन् 1937 से 1939 तक तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' को गंभीरता से लेना शुरू किया था। होम डिपार्टमेंट इंटिलिजेंस ब्यूरो की रिपोर्ट के अनुसार सन् 1939 तक संघ की देश भर में 500 से अधिक शाखाएँ एवं 60 हजार से अधिक स्वयंसेवक बन चुके थे। यह देखकर ब्रिटिश सरकार ने 15 दिसम्बर 1932 को सरकारी कर्मचारियों को संघ से जुड़ने अथवा उसके किसी भी कार्यक्रम में भाग लेने पर प्रतिबंध लगा दिया था। डॉ. हेडगेवार के देहांत के पश्चात् 5 अगस्त 1940 को भी ब्रिटिश सरकार ने सुरक्षा कानून धारा 56 और 58 के अन्तर्गत देशभर में यह प्रतिबंध लगा दिया था[27]।

इसके अलावा हिन्दू रियासतों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की मजबूत पैठ जानकर ब्रिटिश सरकार ने सभी ब्रिटिश रेजीडेन्टों को संघ की गतिविधियों को रुकवाने और संघ के प्रमुख कार्यकत्ताओं के विषय में जानकारी एकत्र करने का निर्देश दिया था[28]।

अब इन उद्धरणों से स्पष्ट है कि, 'संघ के प्रति ब्रिटिश सरकार की क्या दृष्टि थी। फिर उनकी कौन सी कृपा के प्रकरण या चिन्ह प्रमाण संघ विरोधियों को मिले। जिन प्रमाणों के आलोक में वह संघ पर ब्रिटिश सरकार की कृपा दृष्टि का झूठा भ्रम जनमानस में फैलाते रहे हैं।

प्राय: यह कहा जाता है कि-स्वतंत्रता बाद संघ पर प्रतिबंध लगाया गया है। जबकि नेहरु ने भी ब्रिटिश सरकार के ही दृष्टिकोण का पालन करते हुए गांधी हत्या घटना का लाभ उठाकर तत्काल संघ पर प्रतिबंध लगाया था।

2. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ-देशराज गोयल

एक अन्य पुस्तक है-'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ'। सन् 1979 में राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली से सन् 1979 में इस पुस्तक का प्रथम संस्करण और वर्ष 2000 में इस पुस्तक का द्वितीय संस्करण प्रकाशित किया गया। इस पुस्तक के लेखक देसराज गोयल धर्मनिरपेक्षता के समर्थक भारतीय पत्रकार रहे है। वे सन् 1947 में संघ से अलग भी हो गए। तरुणाई के कुछ वर्ष राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के साथ गुजारने पर ही उन्हें संघ की पृष्ठभूमि, विचारधारा उसके उद्देश्य, संकल्प, सोच, समाज पर प्रभाव, राजनीतिक घुसपैठ तथाकथित रूप से सबकुछ सही और

स्पष्ट तरीके से समझ आ गया। जिसका विस्तृत वर्णन उन्होंने अपनी पुस्तक में किया है। तरूण आयु के बालक के इतने बृहद मस्तिषक पर आश्चर्य होता है।

ज्ञातव्य है कि इस पुस्तक को भारतीय इतिहासकार रामचंद्र गुहा ने 'आरएसएस पर सर्वाधिक प्रामाणिक पुस्तक कहकर अपनी शुभेच्छा प्रकट की है। मात्र कुछ समय में एक संगठन से जुड़ने वाले तरुण, अल्पज्ञ, किशोर जिसने बाद में संगठन का विस्तृत लेखा-जोखा तथाकथित प्रामाणिकता देने का दावा किया। वह कितना प्रामाणिक हो सकता है? यह सोचनीय विषय है? यह ऐसा ही है, जैसे कोई भारत से अलग विदेश में रहने वाला व्यक्ति जो कुछ समय भारत आकर रहा हो, वह भारत के भूत, वर्तमान और भविष्य को रेखांकित करते हुए जो कुछ बताए उसे प्रामाणिक बताने का प्रयास करे।

छः अध्यायों में विभाजित इस पुस्तक के कुछ अंश यहाँ विवेचनात्मक रुप से दिए जा रहे हैं। देसराज गोयल ने प्रारंभ में ही बताया है कि-सन् 1934 में ही अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटियों के सदस्यों को आरएसएस का सदस्य बनने से मनाही कर दी थी[29]।

लेकिन आश्चर्य इस बात का है कि तब भी सार्वजनिक मंच से कांग्रेसी नेताओं ने संघ की तारीफ की थी। इसका उल्लेख न करते हुए लेखक लिखते हैं कि- 'कुछ सार्वजनिक नेताओं ने कभी-कभार छुटपुट तौर पर आर. एस. एस. की तारीफ कर दी। इसे संघी बहुत जोर शोर से प्रचारित करते है[30]।

किन्तु यहाँ पुस्तक अध्ययन के पश्चात् मेरे विचार में यहाँ एक बार पुनः यह जानने की आवश्यकता है कि, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना के समय इसके संस्थापक डॉ. केशव बलिराम किस प्रकार राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीय आंदोलन और राष्ट्रीय स्वत्व पर गहरा चिंतन करते रहे? इस नियम में सी.पी. भिशिकर ने लिखा है कि- 'राष्ट्रीय स्वत्व के प्रश्न पर डॉ. साहब बहुत विचार करते रहे। संसार में इंग्लैंड, जर्मनी, फ्रांस आदि देशों में ब्रिटिश, जर्मन, फ्रैंच लोगों के राष्ट्रीयत्व के बारे में कोई भ्रम नहीं है फिर भारतीयों में ही संभ्रम क्यों रहे? समान हित, समान आकांक्षा, समान आदर्श, समान परंपरा को ना मानने वालों को एक ही राष्ट्रीय गठ्ठर में बाँधने का प्रयास क्यों किया गया।

'हिन्दू समाज इस देश में आदिकाल से रहता आया 'राष्ट्रीय समाज है और इस देश का सर्वोपरि दायित्व इस समाज पर है। इसी समाज ने यहाँ के जीवन मूल्यों, आदर्शों और संस्कृति का निर्माण किया है और इसलिए उनका राष्ट्रीयत्व स्वयं सिद्ध है[31]। अतः डॉ. केशव ने हिन्दू समाज को संगठित करने के उद्देश्य से 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' की स्थापना की।

किन्तु इसके विपरीत अपनी पुस्तक के प्रारंभ में देसराज गोयल ने लिखा है कि उस समय डॉ. केशव 'बहुत महत्त्वपूर्ण' व्यक्ति नहीं थे। उसके बाद की ही

पंक्तियों में वह लिखते है कि- डॉ. हेडगेवार ने मुस्लिम लीग की साम्प्रदायिक प्रवृत्ति का विकास किया[32]।

इन दोनों बातों में विरोधाभास स्पष्ट है कि कैसे 'एक महत्त्वहीन' व्यक्ति एक अन्य संगठन में 'प्रवृत्ति विकास' में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। डॉ. हेडगेवार का तत्कालीन क्रांतिकारियों सुभाषचंद्र बोस, वीर सावरकर आदि से सम्पर्क-संबंध ठीक था। नेताजी सुभाषचंद्र बोस के भी हृदय में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लिए स्थान था। एक बार ट्रेन से नागपुर होकर वर्धा जाते समय उन्होंने खिड़की से संघ-शाखा की परेड देखी थी और उसके बारे में जिज्ञासा भी प्रकट की थी। उन्होंने संगठन की प्रशंसा करते हुए यह भी कहा था कि- "इस तरह के संगठनों की देश को आवश्यकता है"[33]।

यहाँ यह जानना आवश्यक है कि निश्चित ही संघ संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार का व्यक्तित्व बहिर्मुखी था। वह अपने बचपन के दुष्प्रभावों से एक सीमा तक उबरने में सफल हुए थे। वह विद्वान भले ही नहीं थे किन्तु सांगठिक क्षमता के तीव्रतर बुद्धिमत्तायुक्त व्यक्तित्व के धनी थे। जगह-जगह घूमकर उन्होंने अपने विलक्षण व्यक्तित्व से ही **लोक संग्रह** करने में सफलता पायी थी। देसराज गोयल अपनी पुस्तक में **'संघ शिक्षण शिविर'** के विषय में लिखते है, "संघ स्थापना के पश्चात् पहली बार 15 अप्रैल से 15 जून तक संघ प्रशिक्षण शिविर चलाया। इसमें कबड्डी, खो-खो आदि विभिन्न प्रकार के खेलों के साथ ही व्यायाम, सूर्य नमस्कार आदि सिखाने के साथ ही शिवाजी की चतुराई और महाराणा प्रताप के बलिदान गाथा पर व्याख्यान हुए[34]।

जबकि संघ के इस शिविर के कार्यक्रमों/व्याख्यानों के विषय में अपनी ओर से टिप्पणी करते हुए देसराज लिखते है कि- इस प्रशिक्षण शिविर का मुख्य उद्देश्य यह बताना था कि- हिन्दू असंगठित है। इसलिए उन्हें अहिंदूओं के हाथों नुकसान उठाना पड़ रहा है। अत: हिन्दूओं को संगठित होने की आवश्यकता है[35]।

किन्तु यहां यह बताना मुझे बतौर लेखिका आवश्यक लगता है कि वर्ष 1927 में ही नागपुर में भीषण दंगा हुआ था। इस दंगों का मुँहतोड़ जवाब डॉ. हेडगेवार के नेतृत्व में संघ के स्वयंसेवकों एवं जनता ने दंगाइयों को दिया। कहा जा सकता है कि- पहली बार हिन्दू समाज में ऐसा आत्मविश्वास जागा था।

इस दंगे का विवरण संघ के वरिष्ठ प्रचारक सी. पी. भिशिकर ने इस प्रकार किया है। वह लिखते हैं- "डाक्टर जी के मकान पर पथराव होने लगा। उन्हें जान से मार देने की धमकी भरे पत्र आने लगे थे। वातावरण में तनाव बढ़ता जा रहा था। ऐसे में मुसलमानों ने योजना बनाई कि 4 सितंबर 1927 के दिन जब हिन्दू लोग महालक्ष्मी का त्यौहार मनाते है, तब एक प्रचंड जुलूस निकाल कर दंगा किया जाए।

यह जुलूस नागपुर में महाल भाग की सुशिक्षित मध्यमवर्गीय बस्ती से होकर जाने वाला था। जुलूस में हजारों मुसलमानों ने लाठी, बल्लम, चाकू, छूरे से लैस होकर 'अल्लाहो अकबर' और 'दीन-दीन' के उन्मत्त नारों के साथ संकरे गली-रास्तों से गुजरते हुए एक मकान पर धावा बोल दिया। हिंसा और लूटमार के उद्देश्य से चले दंगाई जानते थे कि, उनका प्रतिकार करने की क्षमता किसी में नहीं है।

लेकिन उसकी सोच के विपरीत उन्हें गली के सिरे पर ही जबरदस्त विरोध का सामना करने को मिला। फलतः दंगाईयों के जुलूस में बिखराव आ गया। इस समय अनेक हिन्दू लोग क्रोधित होकर घरों से निकले और हमलावरों को खदेड़ दिया। उसके बाद तीन दिन तक छुट-पुट वारदातें होती रहीं। किंतु फिर हिन्दू बस्ती पर आक्रमण नहीं हुआ। हिन्दू समाज में आत्म विश्वास जगाने वाली एकता और पराक्रम का परिचय दिया[36]।

लेकिन नागपुर के दंगों के दौरान हिन्दूओं के इस प्रतिकारात्मक रवैये और विजय पर प्रश्नचिन्ह खड़ा करते हुए तथा संघ को सवाल के कटघरे में लाकर खड़ा करते हुए लेखक देसराज गोयल लिखते है कि- 'किस बात से उत्तेजित होकर मुसलमानों ने साजिश की और आर. एस. एस. को इस साजिश का पता कैसे चला? वह आगे लिखते हैं कि- 'महाल क्षेत्र में जिसे वे (आर. एस. एस.) साजिश कहते हैं, कहीं वह हिन्दूओं के दिमाग को उत्तेजित करने के वास्ते उनके (आर. एस. एस.) द्वारा प्रचारित और कल्पित झूठ तो नहीं था? अंत में वह लिखते हैं कि- 'जानमाल की क्षति हिन्दू मुसलमान दोनों की हुई होगी। मगर लाभ केवल आर. एस. एस. के खाते में गया[37]।

जन नेताओं द्वारा संघ प्रशंसा पर प्रश्नचिह्न

संघ के कार्यक्रमों की खुली जानकारी सब तक पहुँचाने के लिए डॉ. हेडगेवार संघ के प्रशिक्षण शिविर, 'शरद शिविर' में नागपुर के प्रमुख व्यक्तियों को भी आमंत्रित करते। जिससे सभी संघ के शिविरों के बारे में जान सकें। संघ शिविरों में मराठी कोशकार, डॉ. एस. वी. केलकर और केन्द्रीय विधानसभा के अध्यक्ष विट्ठल भाई पटेल जैसे विख्यात लोग आ चुके थे। सभी आगंतुकों ने इन शिविरों में तंबू, भोजन आदि की व्यवस्था में लगे परिश्रमरत स्वयंसेवकों और उनके आचार व्यवहार की प्रशंसा की थी।

किन्तु विख्यात लोगों द्वारा संघ प्रशंसा करने के इस विषय पर देसराज गोयल आपत्ति जताते हुए लिखते है कि- "सार्वजनिक प्रतिष्ठा प्राप्त भोले-भाले व्यक्तियों से सदाचार की सनद बटोरने की कला में संघी उस्ताद रहे हैं। स्वयंसेवकों का

मनोबल भी ऊँचा होता है। शिष्टतावश कहे गए औपचारिक उत्साहबर्द्धक शब्दों को वे अपने विश्वास एवं कार्य का प्रमाण पत्र समझते हैं।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ-

निश्चय ही तमाम आरोप-प्रत्यारोप, प्रतिबंध आदि के बाद भी संघ की सांगठनिक क्षमता, कौशल और इसके प्रमुख समाज को तथा समाज से शीर्षस्थ व्यक्तियों को भी प्रभावित कर रहे थे। जिसका परिणाम था कि, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में भी संस्थापक, विद्वान हिन्दुत्व के प्रबल समर्थक पंडित मदनमोहन मालवीय जी ने भी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की नींव अपने परिसर में रखने का आश्वासन दिया था।

ज्ञातव्य है कि 8 अप्रैल, 1938 को रामनवमी के दिन महामना पंडित मदनमोहन मालवीय ने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में संघ के एक कार्यक्रम में कहा था कि- "संघ राष्ट्र के लिए काम कर रहा है"। इस कार्यक्रम में एक ही मंच पर संघ संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक पं. मदनमोहन मालवीय और माधव सदाशिवराव गोलवलकर बैठे थे। बी. एच. यू. में ही अध्ययन कर रहे माधवराव सदाशिव गोलवलकर के प्रयासों और महामना द्वारा संघ कार्य से प्रभावित होने के कारण ही लॉ कालेज के दो भवन संघ को दे दिए गए। जिसे 'संघ भवन' कहा जाने लगा। सन् 1942 में बी. एच. यू. में संघ की कई जगह शाखाएं लगने लगीं थीं।

लेकिन सन् 1975 में लगे आपातकाल के दौरान काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी (उत्तर प्रदेश) के तत्कालीन कुलपति तथा बाद में इंदिरागांधी की कृपा से शिक्षामंत्री बने कालूलाल श्रीमाली ने रातोंरात 'संघ भवन' को पूरी तरह तुड़वाकर समतल जमीन बना दिया[38]।

किन्तु आश्चर्य इस बात का है कि- दो बार कांग्रेस के अध्यक्ष रहे तथा भारत की शान माने जाने वाले लोग कांग्रेस समझौते का आधार तैयार करने वाले महामना पं. मदनमोहन मालवीय जी ने जिस संघ की राष्ट्रवादिता और कार्य शैली की प्रशंसा की थी। उसे भी स्वतंत्रता पश्चात् कांग्रेस एवं उसके समर्थकों ने पूरी तरह से हाशिये पर रख दिया। बी. एच. यू. संघ को स्थान देने की बात देसराज गोयल अत्यंत व्यंग्यात्मक रुप से करते हुए आगे बढ़ते हैं।

कांग्रेस का संघ विरोध-

संघ की अप्रत्याशित सफलता और भविष्य को देखते हुए जून 1934 में तत्कालीन कांग्रेस ने प्रस्ताव पारित करके अपने सदस्यों को आर. एस. एस. में जाने से मना

कर दिया। किन्तु सन् 1934 के ही दिसंबर माह में संघ के शिविर में गांधी जी का आगमन हुआ। दरअसल गांधी जी भी यह जानने को उत्सुक थे कि- मानव आचार विचारों में इतना परिवर्तन लाने वाले संगठन की प्रेरणाएँ क्या है? उसका काम कैसे चलता है? राजनीति से उसका नाता-रिश्ता क्या है? और संघ के सरसंघचालक कैसे आदमी हैं?[39]

स्पष्ट है कि संघ शिविर भ्रमण के पश्चात् गांधी जी ने भी कोई नकारात्मक टिप्पणी संघ के क्रियाकलाप, संगठन अथवा स्वयंसेवकों के प्रति नहीं की थी। सन् 1947 में भारत-पाक विभाजन का दंश भारत को आजादी की सौगात के बदले झेलना पड़ा। इस समय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के हजारों स्वयंसेवकों ने सैंकड़ो-हजारों हिन्दू एवं सिख वर्ग के परिवारीजनों की सुरक्षा में दिन-रात एक करके परिश्रम किया था। उस समय स्वयंसेवकों के कार्यो की सराहना नेताओं और जनता सबने किया था।

किन्तु इसी परिदृश्य को देसराज गोयल ने अपनी पुस्तक 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' में कुछ इस प्रकार से वर्णित किया है। वह लिखते हैं कि- विभाजनकालीन दंगों में आर. एस. एस. के स्वयंसेवकों ने पश्चिमी पाकिस्तान से आने वालों को वहाँ से निकाल लाने में अच्छा काम किया था। गोपीचंद भार्गव एवं भीमसेन सच्चर जैसे पंजाब के नेताओं ने अपने आपको लगभग पूरी तरह आर. एस. एस. के हवाले कर दिया था। ऐसे नेता विभाजन की समस्याओं से निपटने में अपने को सर्वथा असमर्थ महसूस करने लगे थे। उनकी सिफारिश पर सरदार पटेल ने पंजाब के आर. एस. एस. प्रमुख रायबहादुर दीवान बद्रीनाथ को पूर्वी पंजाब का कार्यवाहक गवर्नर बनाया और पाकिस्तान से आने वाले शरणार्थियों के लिए सुविधाएँ जुटाने का सारा काम पंजाब रिलीफ कमेटी को सौंप दिया गया[40]।

देसराज गोयल आगे लिखते हैं कि- 'पंजाब रिलीफ कमेटी वस्तुतः आर. एस. एस. का ही दूसरा नाम था। इससे इस संगठन ने इस अवसर का लाभ उठाकर **'हिन्दू रक्षक'** होने की प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली। सरकारी पैसा खर्च करने का अधि कार उनके पास था। जिससे उन्होंने पंजाब तथा जम्मू-कश्मीर राज्यों में शीघ्र ही अपने संगठन का जाल फैला लिया। जम्मू-कश्मीर में उन्हें महाराजा से सक्रिय सहयोग मिला[41]।

देसराज गोयल ने विभाजन के समय स्वयंसेवकों के सेवाकार्य को पूरी तरह से नकार दिया। जबकि विभाजन के दौरान संघ के स्वयंसेवकों की भूमिका पर स्पष्ट रुप से लेखक प्रोफेसर ए. एन. बाली ने अपनी पुस्तक **'नाउ इट कैन बी टोल्ड'** में टिप्पणी करते हुए लिखा है कि- 'ऐसी कठिन घड़ी में 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' ने जो निःस्वार्थ हिन्दू युवकों का संगठन तथा उनकी रक्षा की। इन लोगों ने प्रांत के हर नगर, मुहल्ले में हिन्दू और सिख महिलाओं-बच्चों को सुरक्षित निकालने

का बीड़ा उठाया। उन्हें संकटपूर्ण क्षेत्रों से हटाकर सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाया। उन लोगों के खाने-पीने, चिकित्सा, कपड़े आदि का प्रबंध किया। संस्थानों की रक्षा के लिए विभिन्न दल बनाए। विभिन्न नगरों में अग्निशामक दल बनाए गए। विस्थापित हिन्दू-सिखों को सुरक्षित ले जाने के लिए लॉरियों का प्रबंध किया गया। ट्रेंनों में सुरक्षा दल तैनात किए गए। लोगों को आत्मरक्षा का पाठ पढ़ाया गया। वह सचमुच अद्भूत और अविश्वसनीय था।

प्रोफेसर बाली जो विभाजन के समय लाहौर में थे तथा पंजाब विश्वविद्यालय में एक अकादमिक थे। उन्होंने आँखों-देखा हाल अंग्रेजी पुस्तक में लिखा था। जो सन् 1949 में प्रकाशित हुई थी। प्रोफेसर बाली ने आगे लिखा है कि- "अनुशासन, शारीरिक क्षमता और निःस्वार्थ भावना के बल पर संकट मोल लेकर उन्होंने (संघ के स्वयंसेवकों ने) पंजाब के लोगों की रक्षा की। उस समय समूचा प्रांत धू-धू करके जल रहा था। कांग्रेसी नेताओं की भूमिका पर टिप्पणी करते हुए प्रोफेसर बाली लिखते है कि- "कांग्रेसी नेता इस संकट के सामने टिक नहीं पा रहे थे। गवर्नर जनरल अपने हठ पर अड़ा हुआ था[42]।

अंत में प्रोफेसर बाली ने स्वयंसेवकों की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि- "पश्चिमी पाकिस्तान से आए शरणार्थी भारत में चाहे जहाँ भी रह रहे हों, एक स्वर में यही कहेंगे कि 'सच्चे मानव' राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के परम आज्ञाकारी हैं। जब सबने साथ छोड़ दिया था ऐसे समय में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने उनका साथ दिया[43]। ज्ञातव्य है कि प्रोफेसर ए. एन. बाली की पुस्तक की सभी प्रतियाँ तत्कालीन सत्तापक्ष द्वारा जब्त कर ली गयी थी। किन्तु उसकी 1 प्रति एक शोधकर्ता को मिली उसे ही अभी हाल में ही प्रभात प्रकाशन, दिल्ली ने पुनर्मुद्रित की प्रकाशित किया है।

गाँधी हत्या और संघ पर प्रतिबंध-

स्वतंत्र भारत में यद्यपि विभाजन के समय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों की असीमित ऊर्जा, उत्साह, सूझबूझ, राष्ट्रीयत्व, भाईचारे का उदाहरण शरणार्थियों की रक्षा और उनके हरसंभव मदद के रुप में देखा गया था। किन्तु इसके तत्काल बाद ही 30 जनवरी 1948 को महात्मा गाँधी की हत्या एक ऐसे व्यक्ति ने कर दी, जो वर्षो पहले संघ की शाखा में कभी-कभार गया था। अतः इसी बात का लाभ उठाकर संघ विरोधियों ने गाँधी हत्या का सारा आरोप सीधे संघ पर लगा दिया गया।

ज्ञातव्य है कि जवाहरलाल नेहरु ब्रिटिश नीतियों के समर्थक थे। अतः संघ की बढ़ती सामाजिक लोकप्रियता से उन्हें खतरा अनुभव होने लगा था। इस कारण गांधी हत्या से उत्पन्न शोकाकुल वातावरण में उन्होंने पूरी शक्ति लगाकर संघ को नष्ट कर देने का अपना संकल्प पूरा कर देने का अभियान छेड़ दिया। गांधी हत्या बाद

सत्ता द्वारा उत्पन्न राजनीतिक आक्रोश के फलस्वरुप राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्व में किए गए सारे सत्कर्म जमींदोज हो गए। संघ की शाखाओं पर हमला होने लगा। संघ के द"तरों, स्वयंसेवकों और उनके समर्थकों के मकानों में आग लगा दी गयी। हिंसा का भस्मासुर संघ को जलाकर राख कर देने के लिए दौड़ा[44]।

उस समय सरकार ने संघ गतिविधियों को जिस तरह आंका। उसका विवरण 4 फरवरी 1948 की विज्ञप्ति में बताया गया जो संघ पर प्रतिबंध लगाने हेतु जारी की गयी थी। 4 फरवरी 1948 को सरकारी विज्ञप्ति जारी की गयी। इसमें कहा गया कि- "2 फरवरी को अपने प्रस्ताव में भारत सरकार ने घृणा और हिंसा की उन शक्तियों को जड़ से उखाड़ देने के संकल्प की घोषणा की है। जो देश में सक्रिय है। राष्ट्र की आजादी को खतरे में डाल रही है। इस नीति के अनुसार भारत सरकार ने चीफ कमीश्नर द्वारा प्रशासित प्रदेशों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को गैर कानूनी घोषित करने का फैसला किया है"। इसमें आगे कहा गया है कि- " राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के घोषित उद्देश्य एवं लक्ष्य है- 'हिन्दुओं की शारीरिक, बौद्धिक व नैतिक भलाई एवं उनके बीच भाईचारे, प्रेम और सेवा की भावना पैदा करना। लेकिन सरकार को यह देखकर खेद होता है कि- संघ अपने घोषित आदर्शों पर कायम नहीं रहता। पता चला है कि- देश के कई हिस्सों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सदस्यों ने आगजनी, डकैती, लूटमार, हत्या की हिंसक कार्यवाहियाँ की है और गैरकानूनी रुप से गोला-बारुद इक्कठा किया है। यह गतिविधियाँ गुप्त तरीके से होती है"[45]।

जबकि यहाँ नेहरू सरकार ने उस समय यह स्पष्ट नहीं किया कि, संघ के स्वयंसेवकों ने कितनी मात्रा में कहाँ गोला बारुद इक्कठा किया था। फिर क्या सरकार को गोला-बारुद हथियारों के साथ स्वयंसेवक मिले थे। देश के किन हिस्सों में स्वयंसेवकों ने हत्या, आगजनी, लूटपाट की। जाहिर है कि संघ की ओर से यह सब प्रश्न उस समय सरकार से पूछने वाला कोई नहीं था? फलतः संघ पर प्रतिबंध लगाकर संभवतः सरकार ने देश को सांप्रदायिक हिंसा से पूरी तरह सुरक्षित कर लिया। और उस समय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने इस प्रतिबंध को सरकारी नियम मानकर चुपचाप सह लिया। गांधी हत्या का सीधा आरोप सरसंघचालक श्री गुरु जी को बनाकर तत्काल जेल में डाल दिया गया। सत्तापक्ष द्वारा माना गया था कि, संघ प्रमुख के ना होने पर पूरा संगठन छिन्न-भिन्न हो जाएगा।

किन्तु आज भी आश्चर्य इस बात का है कि, इतने प्रबल प्रयासों के बाद भी संघ का अस्तित्व नष्ट होने के बजाय संघ गतिविधियों को कुचल पाना सरकार के लिए संभव नहीं हो पाया। 6 अगस्त 1948 में आरोप सिद्ध ना हो पाने की दशा में संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्री गुरु जी को गांधी हत्या के आरोप से मुक्त करते हुए जेल से मुक्त कर दिया गया। उसके बाद उन्होंने जवाहरलाल नेहरु को पत्र लिखा। जो इस प्रकार था-

"इस दौर में आर.एस.एस. पर प्रतिबंध लगाने के बाद समझदार युवा वर्ग तेजी से कम्युनिज्म के फंदे में फँसता जा रहा है। बर्मा, हिंद, चीन सहित जो पड़ोसी देश में हो रहा है, उसको देखते हुए हम इस खतरे को समझ सकते हैं। इसको प्रभावशाली ढंग से रोकने वाला आर. एस. एस. अब है नहीं। कम्युनिस्टों ने आर. एस. एस. को हमेशा अपना मुख्य विरोधी माना, उसकी निंदा एवं दुष्प्रचार किया। उसकी प्रगति की खबरें खतरनाक है।

मुझे आशा है कि, आप इस समस्या पर शांतिपूर्वक विचार करेंगे। आर. एस. एस. पर लगाए गए आरोंपों को वापस लेने और उस पर लगाए गए प्रतिबंध को उदारता पूर्वक उठा लेने से इच्छित वातावरण को तैयार करने में बहुत सहायता मिलेगी"[46]।

उन्होंने गृहमंत्री सरदार पटेल को भी पत्र लिखा। जो इस प्रकार था– "दक्षिण राज्यों और यू. पी की खबरों से पता चलता है कि युवक विशेषतः विद्यार्थी वर्ग संघ पर प्रतिबंध लगने के बाद कम्युनिज्म की ओर अधिकाधिक झुकने लगा है। उनका प्रचार बढ़ रहा है। इस खतरे से आपको आगाह करना मेरा काम नहीं है। लेकिन आप समझ सकते है कि विदेशी ' वादों ' फैलते हुए देखकर असहाय, निष्क्रिय दर्शक बना रहने में मुझे कितने आत्मनियंत्रण से काम लेना पड़ता है। जबकि मैं अनुभव करता हूँ कि, यदि संघ को निष्कलंक घोषित करके सामान्य रुप से काम करने का अवसर दिया जाए तो देश के युवा वर्ग को बचाया जा सकता है। मुझे तो पूरा विश्वास है कि यदि आप अपनी सरकारी शक्ति और हम अपनी संगठित सांस्कृतिक शक्तियों को मिला दें, तो इस खतरे को शीघ्र दूर किया जा सकता है। अतः राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को पूर्ववत कार्य करने देने के लिए आप आवश्यक वातावरण करें[47]।

श्री गुरुजी द्वारा तत्कालीन सरकार को समझाने के लिए **निरंतर पत्रों द्वारा संघ की कार्यशैली, कार्य व्यवहार की चर्चा** की जा रही थी। उधर संघ का गाँधी हत्या में कोई साक्ष्य भी नहीं मिला।

पटेल को भेजे गए पत्र का उत्तर सरदार पटेल ने दिया। जो इस प्रकार था–

भाई श्री गोलवलकर,

आपका 12 अगस्त का पत्र मिला। जवाहरलाल ने भी आपका उसी तारीख का पत्र मुझे भेजा है। आर. एस. एस. ने हिन्दू समाज की सेवा की थी, इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता। ऐसे इलाकों में जहाँ उनके संगठन एवं सहायता की आवश्यकता थी, आर. एस. एस. के नौजवानों ने औरतों और बच्चों की रक्षा की और उनके लिए काफी काम किया। किसी भी समझदार आदमी को इस पर कोई शिकायत का मौका नहीं हो सकता।

मेरी जयपुर और लखनऊ के भाषणों पर ध्यान दीजिए और जो रास्ता मैंने आर. एस. एस. के लिए बताया था उसको स्वीकार कर लीजिए। उस रास्ते पर चलकर हम एक होकर देश की भलाई कर सकते हैं। मेरा पूर्ण विश्वास है कि आर. एस. एस. वाले अपने देश प्रेम को कांग्रेस से मिलकर ही निभा सकते हैं।[48]

वल्लभभाई पटेल

ज्ञातव्य है कि सरदार पटेल के मन में संघ के प्रति प्रारंभ से ही राष्ट्रवादी सकारात्मक छवि थी। गाँधी हत्या के मात्र 27 दिन बाद की ही जाँच रिपोर्टों के आधार पर उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को गाँधी हत्या के आरोप से मुक्त बता दिया था।

गाँधी हत्या बाद संघ पर प्रतिबंध लगने के समय ही संघ के स्वयंसेवकों ने संघ से प्रतिबंध हटाने हेतु **स्मरण पत्र पर हस्ताक्षर अभियान** चलाया था। इस विषय पर देसराज गोयल ने अपनी पुस्तक 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' में लिखा है कि– "आर. एस. एस. ने स्मरण पत्र पर हस्ताक्षर कराने का अभियान चलाया। लोगों से व्यक्तिगत पत्र भेजने को भी कहा गया। इस अभियान को व्यापक समर्थन नहीं मिल सका। केवल **नौ लाख** लोगों ने ही स्मरण पत्र पर हस्ताक्षर किए और व्यक्तिगत पत्रों की सँख्या भी इससे ज्यादा नहीं थी। सरकार को स्पष्ट हो गया था कि आर. एस. एस. को जनता की सहानुभूति प्राप्त नहीं थी [49]।

सन् 1948 में स्वयंसेवकों ने सत्याग्रह प्रारंभ करते हुए 60 हजार स्वयंसेवकों ने गिरफ्तारी दी। संगठन शिथिल हो रहा था। इस परिस्थिति में **'केसरी'** पत्र के संपादक जी. वी. केतकी, मद्रास के लिबरेशन फेडरेशन नेता टी. आर. वी. शास्त्री और मध्य प्रांत के भूतपूर्व मंत्री बी. जी. खपाड़े मध्यस्तता करके संघ की रक्षा हेतु सामने आए। वार्ता 7 माह तक चलती रही। अंत में 12 जुलाई 1949 को संघ पर से प्रतिबंध हटा दिया गया।

मैं यहाँ तथ्यों द्वारा यह स्पष्ट कर देना चाहती हूँ कि, जाने-माने पत्रकार देसराज गोयल ने अपनी पुस्तक 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' में यह लिखा है कि– व्यक्तिगत रुप से प्रधानमंत्री को करीब **नौ लाख** लोगों ने पत्र लिखकर आर. एस. एस. से प्रतिबंध हटाने को कहा था। इतने ही लोगों ने स्वयंसेवकों द्वारा प्रतिबंध हटाने संबंधी पत्रों पर हस्ताक्षर भी किया था। आश्चर्य इस बात का है जिस समय पुलिस, सेवा और सत्ता सभी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रबल विरोधी थे। उस समय भी **राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का समर्थन करने के लिए नौ लाख जनता कैसे तैयार हो गई?** हांलाकि लेखक ने लिखा है कि–"सरकार को विश्वास हो गया था कि– आर. एस. एस. को जनता का समर्थन प्राप्त नहीं है"। इसका अर्थ है कि **9 लाख जनता द्वारा संघ पर से** प्रतिबंध हटाने के अनुरोध पर नेहरु सरकार ने कोई ध्यान

नहीं दिया। हालांकि 17 माह बाद प्रतिबंध हटा। लेकिन तब तक सत्ताधारी नेताओं को विश्वास हो गया था कि अब दोबारा संघ पुनर्जीवित नहीं हो सकेगा। जबकि श्री गुरुजी ने प्रतिबंध के बाद अनेकों संगठनों का विकास कर समाज के प्रत्येक क्षेत्र में संघ के स्वयंसेवकों को भेजा।

संघ पर साम्प्रदायिकता का आरोप-

स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात से ही संघ पर साम्प्रदायिक हिंसा भड़काने का आरोप कम्युनिस्ट विचारधारा (जो तत्कालीन सत्ताधारी कांग्रेस के बहुत निकट थी।) हमेशा लगाती रही है। संघ के सेवा कार्य को झुठलाकर उस पर आरोप मढ़ना वैसे भी अत्यंत सरल था। क्योंकि संघ प्रसिद्धि परांङ्गमुखता की प्रबल धारणा के कारण अपने सेवा कार्य का जनता में व्यापक प्रचार-प्रसार नहीं करता था। जैसा कि संघ संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार का निर्देश भी था। क्योंकि उनका मानना था कि प्रचार के चक्रव्यूह में फंसकर संघ के स्वयंसेवक सेवा कार्य, संघ कार्य ही विस्मृत कर देंगे। और इसी का लाभ संघ विरोधियों ने भली-भांति उठाया।

गाँधी हत्या हो या देश के किसी भी भाग में दंगा हो। सबका आरोप सरलता से संघ पर मढ़ देना सबसे मुफीद था। सन् 1947-48 में तो देश भर में छोटे-बड़े 10 से अधिक दंगे हुए भी थे। इसके बाद सन् 1961 में भी जब साम्प्रदायिक हिंसा उत्तर-प्रदेश और मध्य प्रदेश में भड़की। तब आल इंडिया साम्प्रदायिकता विरोधी कमेटी उठ खड़ी हुई। इसका प्रारंभ सन् 1962 में सुभद्रा जोशी ने किया था। सुभद्रा जोशी ने साम्प्रदायिक एकता बनाए रखने के लिए आर. एस. एस. को साम्प्रदायिक दंगों का आरोपी बनाया। आर. एस. एस. पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने के उद्देश्य से सुभद्रा जोशी जो 4 बार लोकसभा की कांग्रेस सांसद भी थी। उनके प्रबल प्रयत्नों से 1972 में 'क्रिमिनल लॉ अमेंडमेंट बिल' संसद ने पास किया था[50]। यहाँ यह जानना होगा कि **'क्रिमिनल लॉ अमेंडमेंट बिल'** का वक्तव्य इस प्रकार है- साम्प्रदायिक और अन्य भेदवादी शक्तियों द्वारा संगठित कवायद, व्यायाम और इसी तरह की अन्य गतिविधियाँ अन्य धर्मों एवं समुदायों में आशंका, भ्रम अथवा असुरक्षा की भावना पैदा करती है। साथ ही वे सार्वजनिक शांति की रक्षा को भी पूर्वाग्रह के साथ प्रभावित करती है[51]।

यहाँ यह स्पष्ट है कि 'व्यायाम आदि केवल संघ की शाखाओं में कराए जाते है ना कि किसी अन्य संगठन में। यही आगे चलकर आर. एस. एस. के विरोध से आगे बढ़कर **हिन्दू विरोध** में बदल गया। जिसके परिणामस्वरुप कांग्रेस ने वर्ष 2011 में **'साम्प्रदायिक और लक्षित हिंसा रोकथाम (व्यय एवं क्षतिपूर्ति)** विधेयक का मसौदा तैयार किया था। इसका एक मात्र लक्ष्य-हिन्दू संगठनों और

हिन्दू नेताओं को कुचलने के लिए बनाया गया था। इस विधेयक के माध्यम से हिंसा कर रहे साम्प्रदायिक शक्तियों को संरक्षण एवं पीड़ित हिन्दूओं का दमन करना अत्यंत आसान हो जाता।

यह विधेयक भी यही मानता था कि-बहुसंख्यक समाज ही हिंसा करता है और अल्पसंख्यक इसके शिकार होते हैं। इसका प्रबल विरोध वर्तमान समय की भारतीय जनता पार्टी ने करके इस हिन्दू विरोधी बिल को परिवर्तित संशोधन पर बल दिया।

ज्ञातव्य है कि समय-समय पर संघ पर तमाम झूठे आरोप लगते रहे हैं। किन्तु यह भी सत्य है कि कपोल-कल्पना पर आधारित आरोपों की एक भी जाँच कमीशन में सत्यता स्थापित नहीं हो सकती थी। हतिया में हुए दंगे और तनावों का आरोप संघ पर लगाया गया। जिसकी जाँच करके रघुबर दयाल कमीशन ने अपनी रिपोर्ट दी। जिसमें तमाम आरोपों से संघ को मुक्त किया गया था। इस रिपोर्ट के पृष्ठ 55 पैरा 1.15 में लिखा है- "यह अभियोग लगाया गया है कि- हतिया की घटनाओं की योजना और उनका संगठन आर. एस. एस तथा जनसंघ के सदस्यों ने किया। इन संस्थाओं के सदस्यों द्वारा संगठित ऐसे हमलों के बारे में सुबूत नहीं मिला। हालांकि आरोप लगाया गया था कि- आर. एस. एस और जनसंघ से संबंधित कहे जाने वाले कुछ लोगों के घरों पर या अन्य जगहों पर प्राईवेट मीटिंग हुई है। अगर ये आरोप ठीक भी हों तो भी कुछ स्थलों पर प्राईवेट मींटिंगों के कारण ही इस संस्थाओं के खिलाफ आरोप साबित नहीं किया[52]।

किन्तु इस सबके बावजूद अपनी पुस्तक 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' में देसराज गोयल ने स्पष्ट रुप से स्वतंत्र भारत के तमाम दंगों का आरोप राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर लगाया था। इस विषय में वह लिखते हैं-"स्वतंत्र भारत में जो साम्प्रदायिक दंगे हुए हैं। उन पर विचार करें तो प्रकट होता है कि हमेशा यही तरीके अपनाए गए हैं। प्रत्येक छमाही में एक बार संघ का प्रशिक्षण शिविर लगता है। इससे प्रशासन एवं कानून और व्यवस्था का तंत्र प्रभावित हुआ है[53]। जबकि ज्ञात स्रोतों के अनुसार स्वतंत्र भारत में दक्षिण राज्यों में 10, पूर्व राज्यों में 12, पश्चिम राज्यों में 16, उत्तर भारत में 20 बड़े दंगे हुए थे। सन् 1990 के दशक में स्वतंत्रता बाद सर्वाधिक दंगे हुए। सन् 2000 में 13 बड़े दंगे हुए। इस तरह **सन् 2014 तक** देश के विभिन्न राज्यों में कुल 15 हजार से अधिक बड़े दंगे हो चुके थे जिनमें जानमाल की अपार क्षति हुई थी।

संघ शाखा का विरोध-

स्वतंत्रता पश्चात खुलेआम मस्जिदों से युद्ध की तैयारी के निर्देश अपने धर्म की रक्षा के नाम पर मौलवी देते रहते हैं। किन्तु इसका उल्लेख कोई लेखक कभी करने

की हिम्मत नहीं करता है। लेकिन संघ की शाखा जो खुले मैदान में खेलकूद और व्यायाम द्वारा लगाई जाती है उस का विरोध सामान्य है।

वस्तुतः किसी एक क्षेत्र के **स्वयंसेवकों के दैनिक एकत्रीकरण को संघ की शाखा** कहा जाता है। यह एकत्रीकरण एक पूर्व निर्धारित स्थान पर निर्धारित समय पर होता है। यह संघ की शाखा प्रातः काल ही लगती है। कभी कभी यह सायंकाल भी लगायी जाती है। शाखा में **'भगवा ध्वज'** को **'गुरु'** मानकर प्रणाम करके शाखा प्रारंभ की जाती है। इसमें प्रातः स्मरण या एकात्मता स्रोत, व्यायाम, योग, प्राणायाम, सूर्य नमस्कार और खेलकूद आदि विविध कार्यक्रम होते हैं। अंत में संघ की प्रार्थना के साथ ध्वज को प्रणाम करके शाखा का समापन किया जाता है। संघ में स्वयंसेवक अनुशासन का महत्व सीखते हैं।

इस कार्य पद्धति पर आधारित 'शाखा' पर देसराज गोयल लिखते हैं कि- यह पद्धति संघ स्थापना के बाद से शाखा प्रारंभ होने से अब तक हो रही है। संघ की शाखाएँ मकड़ी के जाले की तरह देश के सभी हिस्सों में फैली हैं- कुछ बाहरी देशों में है। जहाँ भारतीय-अभारतीय दोनों तरह के नागरिक रहते हैं और साथ-साथ काम करते हैं। देसराज गोयल ने लिखा है कि-संघ के गोलवलकर ने अपनी मृत्यु से पूर्व 'शाखा' के महत्त्व पर कहा था- "हम जो विभिन्न प्रकार के कार्य कर रहे हैं। उनमें शाखाओं के बिना सफल नहीं हो सकेंगे। जहाँ की प्रभावशाली शाखा है, वहाँ हम अपने काम में निश्चय ही सफल होंगे[54]।

शाखा क्या है? इस पर पूरी तरह जाने समझे बिना ही संघ विरोधी अपनी दृढ़ नीति को कायम रखते हुए लेखक देसराज गोयल लिखते हैं कि- "आर. एस. एस. के संस्थापक ने 12-15 लड़कों की शाखा शुरु की। तब से लेकर आज तक "शुरु में ही उन्हें फाँस लो" की नीति पर व्यवहार हो रहा है। यहाँ यह जानना भी आवश्यक है कि संघ की शाखा में जो भारतीय अस्मिता, गौरव व सनातन धर्म की बात की जाती है। जो भारतीय परिवेश में अत्यावश्यक भी है। किन्तु "भारत में, भारत की बात करने वालों" का विरोध स्वतंत्रता के बाद से सर्वाधिक बढ़ गया। इसी क्रम में देसराज गोयल संघ की शाखा में बच्चों और किशोरों के आकर्षण पर अपनी राय इस प्रकार रखते हैं। वह लिखते हैं कि- "बच्चे और किशोर खेलने-कूदने और वर्दी पहनने की आशा से संघ में आकृष्ट होते हैं। एक बार यहाँ आ जाने पर वे गीतों और कहानियों के रुप में ढेरों प्रलोभन पाते हैं।

किसी समूह में रहने से एक खास तरह का आत्मविश्वास पैदा होता है। इसी से नगरों में 'शाखाएँ' अधिक लोकप्रिय हैं। क्योंकि वहाँ के मध्यमवर्ग में अकेलेपन और अलगाव तथा मनोबल तोड़ने वाली भावना मौजूद रहती है। नगरों और कस्बों में भी शाखा जाने वाले लोग वह होते हैं। जो किसी कारणवश अपने परिवेश में असुरक्षा का अनुभव करते हैं और किसी कारणवश अपने परिवेश में असुरक्षा का

अनुभव करते हैं और किसी ग्रुप के देवता की छत्रछाया पाने को आकुल रहते हैं। संघ दोनों वस्तुएं प्रदान करता है।

लोग एक खास सांस्कृतिक ग्रुप में आ जाने से सुरक्षित होने के आभास से पुलकित होते हैं। उन्हें **'प्रतिज्ञा'** दिलाने का संस्कार होता है। जिससे उनका मोह और बढ़ जाता है। संघ अधिकारियों को रोजाना संपर्क, परस्पर संबोधन, आदर सूचक ढंग, बाहर जाने और कम या अधिक समय के प्रशिक्षण शिविरों के समय के साथ-साथ, रहने-सहने और इसी तरह के अनेक अन्य कार्यक्रमों की वजह से वे युवक शाखा के साथ "भावनात्मक सूत्र' में बंध जाते हैं।

ऊपर के अनुच्छेदों में देसराज गोयल ने लोगों के संघ के प्रति आकर्षण पर जो लिखा है उस पर सामान्य सा प्रश्न उठता है कि- 'क्यों नहीं' कोई और संगठन बाल, तरूण और युवाओं में इस प्रकार के तथाकथित **"भावात्मक सूत्र"** का जाल बिछाता है। ताकि लोग संघ से हटकर अन्य संगठनों से प्रभावित हों? जबकि शाखा में होने वाले साप्ताहिक बौद्धिकों के विषय में स्पष्ट बताया गया है कि- 'साप्ताहिक बौद्धिक' से स्वयंसेवकों को इतिहास, संस्कृति, साहित्य और धर्म का परिचय प्राप्त होता है। आर. एस. एस. के पास एक सुसंगत और संपूर्ण दर्शन है। जिससे दिमाग के अनेक अंधेरे कोनों को रोशनी मिलती है और पहले की अस्पष्ट चीजें सुस्पष्ट हो जाती है। स्वयंसेवक के दिमाग में संकल्प भर जाता है। इससे 'आत्मा' को टॉनिक मिलता है। गीता में कहा गया है कि- **'संशयात्मा विनश्यति'**। अर्थात् संदेह करने वाले नष्ट होते हैं और यहाँ संदेह करने वाले लोग होते ही नहीं है[55]। **संघ में संदेह नहीं संकल्प होता है।**

इस प्रकार तमाम कोनों से संघ और संघ विचार परिवार यानि संघ के विविध आनुषांगिक संगठनों को लेखक एवं विचारक देशराज गोयल ने जाँचा परखा है और सभी सही तथ्य और विवरणों को भी तोड़-मरोड़ कर एकांगी दृष्टि से और संघ विरोधी पूर्वाग्रह से ग्रसित होकर ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को एक अपराधी समान कटघरे में खड़ा कर के अपने लेखकीय कार्य की इतिश्री कर लिया है।

3. आर. एस. एस. परिवार-धर्म और राजनीति-मधु लिमए

मधु लिमए की पुस्तक है-'आर. एस. एस. परिवार धर्म और राजनीति। इसमें लेखक ने संघ परिवार के आनुषंगिक संगठनों के विस्तार, उनके कार्यकलाप सहित श्रीरामजन्मभूमि विवाद, बाबरी मस्जिद सहित हिन्दुत्व को घेरे में लेते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को धार्मिक असहिष्णु बताते हुए संघ और भाजपा के प्रमुखों से सवाल किया है। साथ ही इन लोगों के दिए गए वक्तव्यों पर अपनी राय देते हुए संघ को भारत एकता का विरोधी बताया है।

कुल छः अध्यायों में यह पुस्तक विभाजित है। पहले अध्याय में 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एक परिचय' में लेखक ने इस अध्याय में संघ स्थापना काल की कुछ चर्चा प्रारंभ करते हुए संघ को सीधे-सीधे हरिजन, किसान और दलित विरोधी बताने का प्रयास किया है।

दूसरे अध्याय में 'विश्व हिन्दू परिषद और संघ परिवार की संस्थाएं' में संघ विचार परिवार के विस्तार स्वरूप संघ के विभिन्न आनुषंगिक संगठनों की चर्चा है। इसमें मुख्य केन्द्र में सन् 1964 में 'विश्व हिन्दू परिषद' है। लेखक मधु लिमए ने यह बताने का प्रयास किया है। संघ के इस संगठन ने हिन्दुओं को मुसलमानों के बाहरी खतरे के खिलाफ केवल भड़काया[56]। इसके बाद देश में रामजन्म भूमि विवाद हुआ। इस विषय में मधु लिमए ने लिखा कि-

संघ ने हिन्दुओं की भावनाओं को उभारकर प्रमुख निशाना 'मुसलमानों की आक्रामकता' को बनाया। देश में जबरदस्त प्रचार किया गया कि, 11 वीं सदी रामजन्मभूमि स्थान पर एक 'राम मंदिर' था। उसे हमलावर बाबर के आदेश पर गिराकर उस पर मस्जिद बनायी गयी। यह काम हिन्दुओं को नीचा दिखाने के लिए किया गया था।

विश्व हिन्दू परिषद ने सोचा कि इस मुद्दे को उठाकर वह देश की एक बड़ी शक्ति बन सकती है। फैजाबाद के एक हिन्दुत्व प्रिय न्यायाधीश ने सन् 1949 में ही बाबरी मस्जिद के केन्द्रीय गुंबद में कुछ मूर्तियाँ रखवा दी थी[57]।

उपरोक्त वाक्यों को पढ़ते हुए यह स्पष्ट है कि लेखक एकांगी दृष्टिकोण रखते हुए एकमात्र हिन्दू धर्म और हिन्दुत्व को घेरते हुए विश्व हिन्दू परिषद को दोषी मान रहे हैं। आगे लेखक लिखते हैं-'फलतः 6 दिसम्बर 1992 को बाबरी मस्जिद का ढांचा गिरा दिया गया[58]।'

ज्ञातव्य है कि पिछले 600 वर्षों से अयोध्या(उ.प्र.) में श्रीराम जन्मभूमि-स्थल को नष्ट कर मुगलों द्वारा खड़ा किए गए ढांचे पर विवाद रहा है। लाखों हिन्दुओं ने अपने प्राण श्रीराम जन्मभूमि स्थान के नाम पर गंवा दिए। लेकिन मधु लिमए को उन लाखों हिन्दुओं के प्राणोत्सर्ग का कोई कष्ट नहीं है। ज्ञातव्य है कि लेखक ने स्वयं ही पहले अध्याय में लिखा है कि-आर. एस. एस. का जन्म 67 साल पहले 1925 को हुआ था। तो यह प्रश्न उठता है कि फिर इतिहास में दर्ज रामजन्म भूमि की रक्षार्थ हजारों-लाखों हिन्दुओं ने अपने प्राण क्यों गंवा दिए। उस समय जब संघ था ही नहीं तो कौन उनकी सांप्रदायिक भावनाओं को भड़का रहा था। ज्ञातव्य है कि रामजन्मभूमि पर हिन्दू समाज पिछले पांच सौ वर्षों से लगातार संघर्ष कर रहा है। जाहिर है कि उस समय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और विश्व हिन्दू परिषद तो थे नहीं। खैर, इसी अध्याय में श्रीरामजन्मभूमि पर हिन्दुओं की आस्था की व्यर्थता सिद्ध करते हुए वह लिखते हैं कि-"खेद की बात है कि, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और विश्व हिन्दू परिषद के नेता यह सोचने की जरूरत महसूस नहीं कर रहे हैं

कि, उनके कामों का क्या परिणाम होगा? क्या वे तेल उत्पादक सहित सारी इस्लामी दुनिया को अपना घोर शत्रु बना लेना चाहते हैं? क्या वे जागरूक पश्चिमी विश्व की नजर में भारत को बर्बर-देश सिद्ध करना चाहते हैं?[59]

लेखक की दूरदृष्टि जहाँ तक जाती है वहाँ वह हिन्दुओं तथा अन्य धर्मावलंबियों की अपेक्षा मुसलमानों की सुरक्षा और इस्लामी देशों की शत्रुता को खतरे में पड़ता देख-घबरा जाते हैं। यानि स्वयं को यदि आप बलवान करेंगे तो आपका पड़ोसी डरेगा। अतः आपको शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक दृष्टि से कभी मजबूत नहीं होना चाहिए। क्योंकि यदि आप से आपका पड़ोसी डरने लगेगा तो आप सहिष्णु नहीं है।

अन्य अध्यायों 'धार्मिक असहिष्णुता एवं पूजा स्थानों के विनाश की कहानी', 'छद्म धर्मनिरपेक्षता', और 'अल्पसंख्यवाद पर भाजपा नेताओं की थोथी बहस', आदि में लेखक मधु लिमए बार-बार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, जनसंघ, भाजपा को तरह-तरह की दलीलें देते हुए गलत साबित करने में ही ऊर्जा नष्ट करते हुए दिखते हैं।

हालांकि 'जनता पार्टी और विभिन्न जनसंगठनों का एकीकरण' अध्याय में लेखक स्वीकारते हैं कि, संघ के विभिन्न आनुषंगिक संगठनों के एकीकरण से राष्ट्र को लाभ मिलेगा। वह लिखते हैं-" 50 साल की अवधि में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने कई पारिवारिक संगठनों का विकास किया है। जैसे-विद्यार्थी परिषद, राष्ट्र सेविका समिति, भारतीय मजदूर संघ, विश्व हिन्दू परिषद आदि। छात्र एवं युवा संगठनों, स्त्री एवं मजदूर संगठनों और अंत में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सहित अन्य स्वयंसेवी संगठनों के एकीकरण से जनता पार्टी के भीतर एकीकरण की प्रक्रिया को बहुत बल मिलेगा। यदि हम राष्ट्रीय जीवन के सभी क्षेत्रों में मिलकर काम करना शुरु करें तो फूट के सभी स्रोतों को खत्म किया जा सकेगा[60]।

'धार्मिक असहिष्णुता एवं पूजा स्थानों के विनाश की कहानी में लेखक मधु लिमए ने मुस्लिम आक्रांताओं द्वारा हिन्दू मंदिरों को नष्ट करने का उल्लेख अवश्य किया है किन्तु फिर वह सफाई देते हुए यह भी लिखते हैं, कि-" लेकिन मैं कई शिक्षित मुसलमानों को जानता हूँ जो मंदिर ध्वंसकों की मतांधता को बेहिचक निंदा करते हैं[61]। इसके आगे वह पुनः राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को मुस्लिम विरोधी साबित करते हुए लिखते हैं कि-

"राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ विश्व हिन्दू परिषद और भारतीय जनता पार्टी के लोग शिवाजी और मराठा शासकों को बड़े सम्मान से देखते हैं। शिवाजी ने क्या किया था? क्या उन्होंने कट्टर मुसलमानों के अत्याचारों का बदला लेने के लिए मस्जिदों और दरगाहों को नष्ट किया था? नहीं उन्होंने ऐसा नहीं किया। वास्तव में उन्होंने कई मुस्लिम दरगाहों को दान किया।"

मधु लिमए आगे लिखते हैं-"इसी तरह क्या मराठा शासकों ने मुगल साम्राज्य

के ह्रास और अपने उत्कर्ष के काल में ऐतिहासिक अन्यायों का बदला लेने के लिए बनारस में मुसलमानों के धर्म स्थलों को नष्ट किया? नहीं।

सहिष्णुता तथा 'जिओ और जीने दो' की भावना ने ही शिवाजी, अहिल्याबाई और कई मराठा हस्तियों को प्रेरित किया[62]। यहाँ यह स्पष्ट है कि लेखक ने मुस्लिम आंक्रांताओं के दुष्कृत्यों को एक सिरे से नकार कर हिन्दुओं को उनके प्रति सहिष्णुता, धर्मनिरपेक्षता का पाठ पढ़ाने का प्रयास किया है। यानि आंखों पर पट्टी बांधकर आप आघातों से सुरक्षित हो सकते हैं। जबकि इतिहास गवाह है कि–धर्मांधों ने किस तरह दूसरे धर्मों को नीचा दिखाने के लिए उनके प्रतीकों, पूजा स्थलों को विनष्ट करके सांस्कृतिक क्षति पहुँचाने का प्रयास किया। इस बारे में ए. फयूर ने विस्तार से अपनी पुस्तक में लिखा है कि–"586 ईसापूर्व में नववेबीलोन सम्राट ने बुकदनेजार ने येरूशलम पर अधिकार कर, यहूदी मंदिर जला दिया।"

पुराने मंदिर के अवशेष के रूप में तीन तरफ की दीवारें बची हैं। इसमें पश्चिमी किनारे की दीवार 'रोती दीवार' के नाम से मशहूर है। यहाँ यहूदी लोग एकत्रित होकर शोर मनाते हैं। इसी तरह सीरिया के 'हमह' और इरान के 'येजदेक्वोस्त' में भी पुराने धर्म के पवित्र स्थलों को नष्ट किया गया। इन सबके पुरातत्वीय प्रमाण हैं। रोमन सम्राट थियोडोसियस ने सभी पैगान मंदिरों को बन्द कराकर उन्हें ईसाई चर्चो में बदला। इसी तरह भारत में महमूद गजनवी से लेकर अनेक तुर्क हमलावर मुस्लिम आक्रांताओं ने मूर्ति पूजा को धार्मिक उन्माद में नष्ट कर दिया[63]।

इसकी पुष्टि इतिहासकार अलबरूनी के लेखन से होती है– "हिन्दुओं की प्रसिद्ध मूर्ति मुल्तान में थी। जो सूर्य को समर्पित 'आदित्य' नाम से प्रसिद्ध थी। मुहम्मद इब्न अलकासिम ने मुल्तान पर कब्जा कर वहाँ 'आदित्य मंदिर' की मूर्ति के गले में उसने गोमांस का टुकड़ा लटका दिया। फिर वहीं मस्जिद बनायी[64]। महमूद ने सोमनाथ मंदिर की मूर्ति हिजरी संवत 416 में तोड़कर वहाँ के हीरे जवाहरात गजनी के निवास ले जाकर रखा। यही नहीं उसने सोमनाथ की मूर्ति का एक भाग गजनी की मस्जिद के दरवाजे पर रखा। जिस पर नमाजी अपने पैर रगड़ें[65]।

लेकिन इन उदाहरणों या इतिहास में हुई बर्बरता, असहिष्णुता हिन्दुओं या गैर धर्मियों के अपमान, उनके पूजा प्रतीकों के अपमान को शब्दशः बयान करने वाले लेखक ए. फयूरर की पुस्तक **'द मोनूमेंटल एंटी क्विटीज एंड इनिसक्रप्शंस इन द नार्थवेर्स्टन प्राविंसिस एंड अवध'** को लेखक मधु लिमए ने **'बहुत विषादकारक'** माना है[66]।

भारत में हुई धार्मिक उन्मदता की चर्चा ए. "यूरर ने अपनी उपरोक्त पुस्तक में करते हुए लिखा कि– "मथुरा (उ.प्र.) का सुप्रसिद्ध केशवदेव मंदिर सन् 1661 में औरंगजेब के शासनकाल में तोड़ा गया। उसके भग्नावशेषों पर मस्जिद बनायी गयी। यद्यपि उसका स्थापत्य कला की दृष्टि से महत्व नगण्य है। वह आगे लिखते हैं–

"उस कठोर धर्मांध सम्राट औरंगजेब के आदेश पर बनारस के प्रसिद्ध मंदिर खंडहर बन गए और उसके अर्धनष्ट नींवों पर मस्जिदें खड़ी की गईं[67]।

हालांकि इन सब पुख्ता ऐतिहासिक घटनाओं से किनारा करते हुए लेखक मधु लिमए ने अपने इस अध्याय एवं अपनी पुस्तक में मुस्लिम आंक्रांताओं के दुष्कृत्यों पर पर्दा डालने का प्रयास अवश्य किया है। लेकिन वह राष्ट्र की सेवा में लगे रहने वाले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों को किसी भी प्रकार से मुस्लिम विरोधी ओर देश के दुश्मन साबित करने के प्रयास में कहीं भी पीछे नहीं रहते।

आर एस. एस. की राष्ट्र विनाश यात्रा- शम्सुल इस्लाम 2002

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विरोध में लिखने वाले लेखकों की लंबी सूची है। जिन्होंने संघ को केन्द्र में रखकर भरपूर विषवमन कर उसकी राष्ट्रवादी छवि को धूमिल करने की कोशिशें लगातार पिछले 70 वर्षो से जारी रखी है। इन्हीं में एक प्रमुख नाम है लेखक शम्सुल इस्लाम का। इनकी पुस्तक का नाम ही है- 'आर. एस. एस. की राष्ट्र विनाश यात्रा'। अतः नाम से ही स्पष्ट है कि पूरी पुस्तक में किस प्रकार की विषयवस्तु होगी।

पुस्तक के प्रस्तावना में लेखक ने लिखा है कि- "यह एक ऐसा संगठन है जिस पर आजादी के बाद दो बार भारत सरकार ने प्रतिबंध लगाया"। वह आगे लिखते हैं कि अब समय आ गया है कि- "इस देश के लोग स्वयं आर. एस. एस. एस. की देशभक्ति तथा राष्ट्र के प्रति निष्ठा की जाँच करें[68]। आगे के पृष्ठों में लेखक ने संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्रीगुरुजी के एक भाषण का उल्लेख किया है। जिसमें उन्होंने कहा था कि- "हमने 'प्रतिज्ञा' में धर्म और संस्कृति की रक्षा कर राष्ट्र की स्वतंत्रता का उल्लेख किया है।"

इस पंक्ति का उल्लेख कर लेखक ने यह सिद्ध किया है कि, संघ की पूर्ण निष्ठा मात्र 'धर्म एवं संस्कृति' की रक्षा से ही था अंग्रेजों को भगाने से नहीं। लेखक के उपरोक्त कथन के संदर्भ में यहाँ पर मैं यह स्पष्ट कर देना आवश्यक समझ रही हूँ कि- जबकि, संघ की स्थापना के समय ही डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार जी ने स्पष्ट कर दिया था कि- "हमारा उद्देश्य अपने धर्म एवं संकृति का रक्षण करते हुए राष्ट्र का रक्षण करना है। बार-बार हिन्दू क्यों पराजित हुए? इस प्रश्न के उत्तर की खोज में शारीरिक-मानसिक रुप से बलिष्ठ होने की आंकाक्षा लेकर उन्होंने 'संघ' निर्माण की नींव रखी।

डॉ. साहब का मानना था कि- "एक बलवान व्यक्ति दूसरे बलवान पर आक्रमण नहीं करता। अतः हमें भी अपनी भावी पीढ़ी को कमजोर, कायर और परिस्थितिजन्य भीरु नहीं बनाना है। उसे दृढ़ संकल्पित होकर संगठित होकर अपने

राष्ट्र की रक्षा करना है"। इसी भाव का उल्लेख श्री गुरुजी ने 8 जून 1942 के एक भाषण में ही है। जब वे कहते हैं कि-"समाज की पतित अवस्था के लिए संघ दूसरों को दोष नहीं देना चाहता। जब लोग दूसरों के सिर पर दोष मढ़ने लगते हैं, तब उनके मूल में उनकी दुर्बलता रहती है। दुर्बलों पर होने वाले अन्यायों का दोष बलवानों के माथे मढ़ना व्यर्थ है। दूसरों को बदले में गाली देना या उसकी आलोचना करने में अपना अमूल्य समय नष्ट करने की संघ की इच्छा नहीं है"[69]।

लेकिन इसी भाषण के अंश का उल्लेख करते हुए शमसुल इस्लाम ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि संघ उपनिवेशी प्रभुत्व को अन्याय नहीं मानता था[70]। साथ ही लेखक यह भी लिखते हैं कि- "आर. एस. एस. को एक ऐसे संगठन के रुप में देखा जा सकता है जिसने स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान घोर विश्वासघाती भूमिका अदा की"[71]।

ज्ञातव्य है कि संघ के संस्थापक डॉ. केशव बलिराम के ब्रिटिश विरोध की गाथा उनके 9 वर्ष की आयु से प्रारंभ होती है। जब उन्होंने अपने स्कूल में जब उन्होंने ब्रिटिश समाज का विरोध करते हुए महारानी विक्टोरिया के जन्मदिवस पर मिली हुई मिठाई फेंक कर अपना विरोध जताया। फिर 11 वर्ष की आयु में अपने स्कूल के साथियों के साथ ब्रिटिश रेजीमेंट के आने पर प्राध्यापक के मना करने पर भी 'वंदेमातरम्' गाया था और उसका दंड भी भोगा था।

इसके साथ ही चौदह वर्ष की आयु में ही नागपुर से थोड़ी दूर 'सीताबर्ड़ी' किले पर भगवाध्वज फहराने और अंग्रेजी झंडा उतारने के लिए अपने घर से किले तक 2 किलोमीटर सुरंग खोद डाली थी। किन्तु संभवतः संघ विरोधी लेखकों की दृष्टि में यह सब कार्य उपनिवेशी प्रभुत्व के समर्थन के ही कार्य थे। जिससे संघ द्वारा ब्रिटिश राज्य को समर्थन देने के पुख्ता सुबूत इन लोगों को मिले होंगे।

भारत में रहने वाले व्यक्ति अपने सनातन धर्म, हिन्दू धर्म और संस्कृति की बात करें, उसके संरक्षण एवं संवर्धन की चिंता करें तो यह संघ का विरोध करने वालों की दृष्टि में सर्वथा अनुचित है। इसे अनेक उद्धरणों द्वारा पिछले 70 वर्षो से सत्तासीन सरकार समर्थित लेखकों ने तमाम प्रयासों द्वारा सिद्ध करने का प्रयास किया है। बंकिमचंद्र चटर्जी द्वारा लिखित बंगाली उपन्यास 'आनंदमठ' से भी लेखक शमसुल इस्लाम को खासी नाराजगी है क्योंकि यह हिन्दू राष्ट्र की अवधारणा में विश्वास करने वालों के लिए प्रमुख पुस्तक है। इसमें 18 वीं सदी के अंत में हिन्दू सन्यासी विद्रोह की कथा है। इस कृति का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और स्वतंत्रता के क्रांतिकारियों पर गहरा प्रभाव था। सन् 1882 में लिखे गए इसी उपन्यास से 'वंदेमातरम्' गीत को भी लिया गया था। इसकी विषयवस्तु में सन् 1770 से 1774 में बंगाल के अकाल का समय तथा इस समय की राजनीतिक, सामाजिक स्थिति का वर्णन इस उपन्यास में है। चूंकि इस समय बंगाल में मुस्लिम शासकों का राज

था अंग्रेजों का नहीं। अतः इस उपन्यास का सार यही है। हिन्दू सन्यासियों ने मुस्लिम शासकों को हराया साथ ही अंग्रेजी सेना से भी लोहा लिया।

किन्तु इस उपन्यास का गीत 'वंदेमातरम्' राष्ट्रवादियों की रगों में जोश भरता था। वास्तव में उसमें पहली बार 'भारत को माता' की संज्ञा दी थी। भारत माता को शासकों से मुक्त कराने का आहवान इस गीत में है। जिसके कारण मुस्लिम लीग को यह गीत (वंदेमातरम्) और उपन्यास नागवार लगा। इसी उपन्यास के कुछ अंशों का उल्लेख करते हुए लेखक ने सिलसिलेवार इस तरह उपन्यास को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जोड़ने की कोशिश की है। यहाँ लेखक ने यह बताया है कि संघ के संस्थापक डॉ. साहब तथा संघ प्रचारकों, कार्यकर्ताओं के कहने पर ही बंकिमचंद्र चटर्जी ने इस उपन्यास की रचना की और इसमें मुसलमानों और इस्लाम धर्म के प्रति दुराग्रह रखते हुए 'भारत' देश को **'माता'** रुप प्रतिस्थापित किया था।

पुस्तक में बार-बार लेखक शम्सुल इस्लाम आवश्यक रूप से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को पाकिस्तान के खुफियातंत्र **(ISI)** से जोड़ते रहते हैं[72]। यद्यपि इस संबंध में पुस्तक में कोई साक्ष्य और तथ्य नहीं है। लेकिन देश को राष्ट्र को 'माता' रुप में वंदना करने को लेखक फासिस्ट दृष्टिकोणों के साथ हिन्दू राष्ट्रवाद का उभार बताता है। इसी पुस्तक में लेखक शमसुल इस्लाम ने यह बताने की कोशिश की है कि-मुस्लिम शासन 400 से 500 वर्षो का बताया था। इस पृष्ठ पर 'इतिहास के अन्यायों' का बदला लेने की राजनीति लेख के अन्तर्गत लेखक लिखता है कि-"मुसलमान शासकों का हिन्दू शासकों एवं जनता से घनिष्ठ संबंध था"। इस मुस्लिम शासन में भी भूमि स्वामित्व हिन्दूओं के पास ही था तथा मुस्लिम शासन में भी हिन्दुओं का ही बोलबाला था।

यहाँ लेखक के इस उदाहरण पर ध्यान दें तो मुगलकाल में हिन्दुओं का उत्पीड़न, जबरन धर्मपरिवर्तन, सामूहिक नरसंहार, हिन्दुओं के धार्मिक स्थलों पर मस्जिद बनाना या हिन्दू स्मृतियों को नष्ट करने जैसे ऐतिहासिक घटनाएँ स्वतः झूठी पड़ जाती है। इसके साथ ही 713 ई. में अरब आक्रांताओं का भारत पर आक्रमण मुहम्मद बिन कासिम का सिंध पर हमला और वहाँ के राजा दहिस की हत्या कर हिन्दू मंदिरों को विनष्ट करना, 11 वीं शती में महमूद गजनवी द्वारा भारत के उत्तर-पश्चिम में हमला कर हिन्दुओं का भीषण नरसंहार एवं सोमनाथ मंदिर में लूट उसे विनष्ट करना[73] आदि बातें भी कपोल-कल्पित हो जाएंगी।

यह क्या इस्लाम का बर्बर प्रसार नहीं था? इसके साथ ही कुतुबुद्दीन एबक खिलजी वंश के जलालुद्दीन, फिरोज शाह, अलाउद्दीन खिलजी, द्वारा हिन्दू आबादी का भीषण नरसंहार, हिन्दू नारियों की बेइज्जती आदि घटनाएँ भी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ विरोधी लेखकों की दृष्टि में सरासर झूठी ही होंगी। जबकि यह इस्लाम की क्रूरता को दर्शाता है। यह उद्धरण जब काजी मुधीसुद्दीन बघाना शासक अलाउद्दीन

खिलजी को सलाह देता है कि- "हिन्दुओं को कुचलकर अपने अधीन रखना ही 'धर्मसंगत' है। क्योंकि वे पैगम्बर के सबसे बड़े दुश्मन रहे हैं और पैगम्बर के आदेशानुसार हमें हिन्दुओं को मारना, लूटना और कैद करना चाहिए या वे इस्लाम को स्वीकार करे या मार दिए जाएँ या गुलाम बना दिया जाए और उनकी तमाम संपत्ति को नष्ट कर दिया जाए[74]।

उसके बाद तुगलक वंश, तैमूरलंग इन सबका इतिहास हिन्दुओं के भीषण रक्तपात से सना है। किन्तु तथाकथित सांप्रदायिक सद्भाव की तलाश में इतिहास बदलते लेखक शमसुल इस्लाम ने सिद्ध किया है कि- 'मुसलमान शासकों का हिन्दुओं के साथ घनिष्ठ संबंध था[75]। यहाँ तक कि लेखक शमसुल इस्लाम को यह भी ज्ञात नहीं है कि बाबर, हुंमायु और सूरी साम्राज्य (1526-1556) के दौरान मुस्लिम शिविरों को **'काफिरों के सिरों की मीनारों'** के रुप में जाना जाता रहा है। दरअसल इन शिविरों में पराजित हिन्दू राजा और उसकी सेना के सिरों को काटकर एक लम्बी मीनार (**tower**) बनाया जाता था। पृथ्वीराज चौहान, महाराणा सांगा, महाराणा प्रताप, छत्रसाल बुंदेला, बंदा सिंह बहादुर, पेशवा बाजीराम, संभाजी, गुरु गोविंद सिंह, छत्रपति शिवाजी महाराज, रणजीत सिंह आदि एक लंबी भारत के वीरों की सूची है। जिन्होंने जीवन भर भारत को बाहरी आक्रांता मुस्लिम शासकों के आक्रमण से बचाने की कोशिश में अपना, अपने परिवार और अपने समुदाय का बलिदान कर दिया।

निश्चय ही शम्सुल इस्लाम जैसे तथाकथित धर्मनिरपेक्ष लेखकों की दृष्टि में यह पूरी भारतीय शूरवीरों की वीरगाथाएँ बेमानी ही होंगी। शमसुल इस्लाम ने आगे बताया है कि-'रामायण और महाभारत काल में तो मुसलमान नहीं थे। फिर क्यों हिंसा हुई[76]? वह आगे लिखते है कि- "हिन्दू धर्म ध्वजा रक्षकों को जानना चाहिए कि- मुस्लिम उत्पीड़न की भी अपनी सीमाएं है"। इन लेखकों से एक सामान्य प्रश्न यह उठता है कि यह सीमा क्या है? और इसकी परीधि कहाँ तक है? इसका लेखक ने उल्लेख नहीं किया है।

ज्ञातव्य है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कई आनुषंगिक संगठन है। इनका भी उल्लेख लेखक शम्सुल इस्लाम ने क्रमवार किया है। और बिना किसी आधार के ही संघ के प्रत्येक संगठन को राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में शामिल भी बता दिया है।

सेवा भारती का विरोध-

इसमें प्रमुख रूप से संघ के प्रमुख आनुषंगिक संगठन **'सेवाभारती'** के विषय में लेखक ने लिखा है कि- "सेवा भारती संगठन ने दिल्ली जैसे नगरों में भी जहाँ कांग्रेस की सरकार है। झोपड़पट्टी एवं गरीब इलाकों में सरकारी कल्याण कार्यक्रमों

को अपने हाथ में ले लिया है। ये मूलतः आर. एस. एस. एस. को सरकारी फंड पहुँचाने वाले मोर्चे है। इसने हाल ही में विदेशों को दत्तक बच्चों को भेजने का लाइसेंस भी प्राप्त कर लिया है[77]।

ज्ञातव्य है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में सेवा कार्य को चैरिटी नहीं माना जाता बल्कि **समाज से जो कुछ मिला है उसे चुकाने का प्रयास** कहा जाता है। 'सेवा भारती' की स्थापना 2 अक्टूबर 1979 को संघ के समर्पित कार्यकर्ता, विष्णु कुमार जी ने की थी। यह मुख्यतः वनवासी क्षेत्रों में शिक्षा, संस्कार, सामाजिक जागरुकता, स्वरोजगार के लिए कार्य करता है। भारतीय समाज के आर्थिक रुप से कमजोर वर्गों में सामाजिक, आर्थिक रुप से हाशिए वाले, जनजातीय और स्वदेशी समुदायों पर विशेष केद्रित करता है। देश भर में 'सेवा भारती' के हजारों केन्द्रों के माध्यम से मुफ्त चिकित्सा सहायता शिक्षा, साथ ही स्वावलंबन के लिए व्यवसायिक प्रशिक्षण केन्द्र चलाए जाते हैं।

'सेवा भारती' को 8 दिसम्बर 2003 में **'राष्ट्रीय** सेवा भारती' के रूप में रजिस्टर्ड कराया गया। वर्तमान समय राष्ट्रीय 'सेवा भारती' के साथ 1246 से ज्यादा संस्थाएँ एवं संगठन जुड़कर हर क्षेत्र के सेवाकार्य में लगे हैं। फिलहाल सेवा भारती के 90 हजार प्रोजेक्ट स्वास्थ्य के क्षेत्र में, 39 हजार प्रोजेक्ट समाज सेवा में, 25 हजार से ज्यादा प्रोजेक्ट शिक्षा के क्षेत्र में और 22 हजार प्रोजेक्ट महिला सशक्तिकरण के चल रहे हैं[78]। लेकिन इन तमाम सेवा कार्यो की पूरी तरह खारिज करके लेखक शम्सुल इस्लाम ने 'सेवाभारती' के नए कार्यो की कपोल-कल्पित सूची अपनी पुस्तक में दे दी। जिसका कोई आधार ही नहीं है।

आगे के पृष्ठों में 'दलितों और महिलाओं का तिरस्कार' परिशिष्ट के अन्तर्गत लेखक ने बताया है कि- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पूर्णतया दलित एवं महिला विरोधी संगठन है। अपनी इस विचारधारा को बल प्रदान करने के लिए वह कहता है कि- "उत्तर प्रदेश, बिहार, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा, राजस्थान, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, हरियाणा आदि ऐसे राज्य हैं। जहाँ या तो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का पर्याप्त सामाजिक आधार है या वे स्वयं का उनके सहयोगियों द्वारा शासित है[79]।

जबकि संघ स्थापना काल से ही जातिभेद रखता ही नहीं। यही कारण है कि जब महात्मा गांधी ने एक बार संघ शिक्षा वर्ग के दौरान स्वयंसेवकों से उनकी जाति पूछी तो वह बता नहीं पाए। क्योंकि पंक्ति में बैठकर बगल में भोजन करता व्यक्ति किस जाति का है यह संघ स्वयंसेवक को पता नहीं था।

संघ के जातिभेद कदापि नहीं है। वह समरसता के आधार पर समाज में संगठन की बात करता है। इसी तरह लेखक ने संघ को महिला विरोधी बताने का प्रयास किया है। जबकि संघ स्थापना के मात्र 11 वर्षो में ही भारतीय समाज में मातृशक्ति के महत्व को जानते हुए विजयादशमी के दिन लक्ष्मीबाई केलकर (मौसी जी) ने

25 अक्टूबर 1936 को **'राष्ट्र सेविका समिति'** की नींव रखी। इस संगठन का ध्येय सूत्र ही है- "स्त्री राष्ट्र की आधारशिला है"। यह संगठन आज भी महिलाओं को संगठित कर भारतीय धर्म संस्कृति सभ्यता के संरक्षण-संवर्धन की प्रेरणा देता हुआ उत्तरोत्तर विकास कर रहा है।

हाँ, यह अवश्य है कि, संघ का यह संगठन आधुनिक युग के नारीवादी आंदोलन, नारीमुक्ति, देहमुक्ति से सर्वथा विलग है। क्योंकि यह कर्त्तव्य एवं अधिकार में संतुलन की बात करने की प्रेरणा देता है न कि केवल 'नारी स्वच्छंदता' की। ज्ञातव्य है कि इस समय संघ के आनुषंगिक संगठन 'राष्ट्र सेविका समिति' की चार हजार नौ सौ (4900) शाखाएँ हैं जो महिलाओं के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक विकास के लिए निरंतर कार्य करती हुई परिवारों में भारतीय संस्कृति धर्म से जोड़ती हुई राष्ट्र के निर्माण हेतु योगदान देने में सक्षम बना रही हैं[80]।

लोकतांत्रिक भारत या हिन्दू राष्ट्र-संघ परिवार की राजनीति

राम पुनियानी (2004)

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के पूर्व प्रोफेसर डॉ. राम पुनियानी जो साम्प्रदायिक राजनीति को खतरा मानते हुए हिन्दूधर्म और इससे जुड़े तथ्यों और लोगों को भारतीय लोकतंत्र के लिए प्रबल खतरा मानते रहे है। क्योंकि उनका यह स्पष्ट मानना है कि-भारत पर जिन मुस्लिम शासकों ने शासन किया वे इसे अपना मानते थे। उनका कहना है कि-गांधी नेहरु सभी ने माना कि-अंग्रेजों के भारत में आने के पूर्व तक हिन्दू-मुस्लिम दोनों शांतिपूर्ण ढंग से रह रहे थे। साथ ही राम पुनियानी का मानना है कि-यदि मुगल शासकों ने भारतीय जनता का शोषण किया, यहाँ हिंसा, लूटपाट की भी तो इसमें बुरा क्या है? यह तो सभी राजा करते हैं[81]।

यहाँ यह समझना भी आवश्यक है कि-धर्मनिरपेक्षता का समर्थन करते-करते कब लेखक और विद्वान धर्म-शासन, शांति, सौहार्द की परिभाषा बदल देते हैं? कब किसी एक धर्म का तुष्टिकरण करने में अपनी पूरी जिंदगी लगा देते हैं? इसका पता उन्हें भी नहीं चल पाता। कुल मिलाकर एक ऐसे माता-पिता की भूमिका में आ जाते हैं। जो बच्चे की गलती पर 'दंड का प्रावधान' ना करके 'पुरस्कार देकर' बच्चे के अनुचित व्यवहार को सुधारने की कपोल कल्पना करते हैं। देश के तथाकथित साम्प्रदायिक सद्भाव बनाए रखने के लिए तथा धर्मनिरपेक्ष होकर देश के बहुसंख्यकों पर कड़ी दृष्टि रखते हुए उनके लिए 'दंड विधान की माँग का दृष्टिकोण लेकर लेखक राम पुनियानी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ परत-दर-परत विश्लेषण करने का प्रयास किया है।

उनकी पुस्तक "लोकतांत्रिक भारत या हिन्दू राष्ट्र' संध परिवार की राजनीति"

वाणी प्रकाशन-दिल्ली से वर्ष 2004 में प्रकाशित हुई थी। चूंकि वर्ष 2002 में गुजरात में दंगे हुए थे और साम्प्रदायिक सद्‌भाव के सभी पत्रकारों का मानना था कि इन दंगों में पहली बार मुसलमानों की जान-माल की क्षति हिन्दू वर्ग की अपेक्षा अधिक हो गयी थी। अतः राम पुनियानी ने भी इसी दृष्टि से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का निर्मम विश्लेषण किया है। क्योंकि गुजरात में संघ के राजनीतिक संगठन भाजपा की सरकार थी।

अपनी पुस्तक के प्रारंभ में ही लेखक ने संघ की स्थापना और इसके उद्देश्य पर अपना दृष्टिकोण रखते हुए लिखा है कि- "महाराष्ट्र एक ऐसा क्षेत्र था, जो भारत के अन्य राज्यों की तुलनात्मक दृष्टि से मुगलों से कम प्रभावित रहा। अतः इसी कारण 1925 में हेडगेवार ने कुछ उच्चवर्गीय ब्राह्मणों के साथ मिलकर नागपुर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की। शुरू-शुरू में उनकी खासियत थी- शारीरिक प्रशिक्षण पर बल देना, इस समझ पर कि अब ऊँची जातिवालों को भी लड़ाई के गुण सीखने चाहिए।

1. भगवा झंडा और मातृभूमि के गुणगान जैसे धार्मिक प्रतीकों का मिश्रण
2. ब्राह्मणों, बनिया और ऊँची जाति वालों के हित में अपील, जो बड़ी सँख्या में संघ के अंग थे।
3. नौजवान लड़कों को मिथकपूर्ण इतिहास, मुस्लिम विरोधी, धर्म निरपेक्षता विरोधी, कट्टर उच्चवर्गीय विचारों द्वारा शिक्षित किए जाने पर बल[82]।

यहाँ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा कराए जाने वाले शारीरिक प्रशिक्षण, इतिहास गाथाओं में भी लेखक राम पुनियानी को एक बड़े षडयंत्र का आभास मिलता है। संघ की शाखाओं के कार्यक्रम के विषय में लेखक आगे लिखते हैं कि- 'संघ का केन्द्रीय प्रशिक्षण उनकी शाखाओं में होता है। जो उसकी गतिविधियों की मुख्य इकाई है। आमतौर पर यह खुले मैदान में होता है। जहाँ पर भगवा झंडा फहराता है। जिसमें छोटी उम्र के बच्चे शामिल होते है। यहाँ अनेक पारंपरिक खेल खेलने का अवसर मिलता है और आगे चलकर उन्हें 'सड़क-लड़ाई' (लाठी चलाना आदि) सिखाया जाता है। सप्ताह में एक बार उनका 'बौद्धिक' होता है। जहाँ 'बिना संवाद', 'बिना बहस' की एकतरफा शिक्षा दी जाती है। यहाँ संघ परिवार के सिद्धांतों और विचारों को विभाग कूट-कूटकर भरा जाता है[83]।

संघ के आनुषांगिक संगठनों पर काल्पनिक आरोप-

संघ स्थापना काल के बाद से इसके अनेक आनुषंगिक संगठनों की स्थापना हुई थी। जिनका उद्देश्य समाज के हर क्षेत्र में सेवा कार्य करना तथा समाज के हर वर्ग को शारीरिक-मानसिक रुप से दृढ़ करते हुए 'राष्ट्र सेवा' में तत्पर करने हेतु तैयार

करना था। लेकिन संघ के अन्य आनुषंगिक संगठनों का वर्णन करते हुए लेखक राम पुनियानी संघ विरोध में अपना स्वस्थ दृष्टिकोण भी त्यागते हुए दिखते है। इसलिए संघ के अन्य संगठनों के प्रति उनकी लेखनी से निःसृत शब्द और वाक्य नफरत और घृणा, उपेक्षा से ओत-प्रोत दिखाई पड़ते हैं। संघ के प्रति अपने दुराग्रह के साथ वह लिखते हैं- "राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का प्रथम सहयोगी मातहत संगठन 'राष्ट्र सेविका समिति' का गठन सन् 1936 में हुआ। वह प्राथमिक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की 'धर्मपत्नी' का प्रारूप था[84]।

यहाँ लेखक राम पुनियानी के वक्तव्य पर यह स्पष्ट कर देना उचित होगा कि, संघ में स्त्रियों को 'मातृशक्ति' माना गया था पहले भी और आज भी। यहाँ तक कि संघ के प्रमुख प्रचारक भी अविवाहित रहकर राष्ट्रसेवा में प्राणोत्सर्ग करते हैं। ऐसे में 'राष्ट्र सेविका समिति' जो महिलाओं का संगठन है- क्या उसे 'धर्मपत्नी' कहना क्या उचित है? हाँ, हो भी सकता है क्योंकि धर्मनिरपेक्षता और साम्प्रदायिक सद्भाव के पक्षधर तथाकथित प्रगतिशील लेखक हर स्त्री में 'पत्नी' को तो देख सकते हैं किन्तु 'माँ, बहन, पुत्री को नहीं। क्योंकि प्रगतिशील लेखक संघ 'स्त्री को मात्र देह' ही मानता है और कुछ नहीं।

इसके आगे लेखक-राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अन्य संगठन, **'भारतीय मजदूर संघ'** का परिचय लिखते हैं कि-'भारतीय मजदूर संध की स्थापना मजदूरों के बीच कम्यूनिस्टों के बढ़ते प्रभाव तथा उनके जुझारू प्रवृत्ति का मुकाबला करने के लिए हुई[85]। विद्या भारती, सरस्वती शिशु मंदिर, जो संघ द्वारा स्थापित विद्या केन्द्र रहे हैं। उनके बारे में लिखा है कि- 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा स्थापित शिशु मंदिरों में छोटे-छोटे बच्चों के दिमाग में भारतीय देवी-देवताओं और भारतीय नायकों की गाथाओं के बारे में जानकारी की तगड़ी खुराक डाली जाती है[86]।

ज्ञातव्य है कि- संघ द्वारा कुरुक्षेत्र हरियाणा में **'गीता विद्यालय'** की स्थापना सन् 1946 में की गयी थी। सन् 1952 में नवोदित पीढ़ी को संस्कारित शिक्षा देने के उद्देश्य से गोरखपुर (उ.प्र.) में 'सरस्वती शिशु मंदिर' की स्थापना की गयी। सन् 1977 में 'विद्या भारती' की स्थापना की गयी थी। यह केन्द्र सद्संस्कार एवं सुशिक्षा के केन्द्र रुप में समाज में प्रतिष्ठा एवं लोकप्रियता पाते रहे। क्योंकि संघ का मानना था कि ज्ञानवान, संस्कारवान और चरित्रवान नागरिक ही निःस्वार्थ भाव से राष्ट्र सेवा कर सकते हैं।

'वनवासी कल्याण आश्रम' के बारे में राम पुनियानी लिखते हैं कि-"इसके द्वारा आदिवासियों में हिन्दू संस्कारों की शिक्षा संघ वाले फैला रहे हैं[87]। 'विश्व हिन्दू परिषद' को वह साम्प्रदायिकता के विस्तारीकरण का शीर्ष संगठन बताते हैं। वह कहते हैं कि, विश्वभर के हिन्दुओं से संबंध स्थापित करने, हिन्दुत्व का प्रचार करने का माध्यम **'विश्व हिन्दू परिषद'** है[88]। इस प्रकार स्पष्ट है कि संघ द्वारा

भारत के कोने-कोने में रह रहे वनवासियों की सहायता एवं उनमें हिन्दू संस्कार देना तथाकथित लेखकों को ठीक नहीं लगता।

कम्युनिस्ट विरोध पर आपत्ति-

अपने आधुनिक रुप में साम्यवाद (कम्युनिज्म) उन्नीसवीं सदी के यूरोप में समाजवादी आंदोलन से उभरा। जैसे-जैसे औद्योगिक क्रांति आगे बढ़ी, समाजवादी आलोचकों ने सर्वहारा वर्ग की दुर्दशा के लिए पूँजीवाद को दोषी बताया। इनका उद्देश्य समाज में उत्पादन, वितरण और विनिमय के समान सामान्य स्वामित्व के आस-पास केन्द्रित एक सामाजिक आर्थिक व्यवस्था लाना रहा है। वामपंथी अति वामपंथी रुप में इनको वर्णित किया जाता रहा है।

ज्ञातव्य है कि 20 वीं शती में साम्यवादी शासन के तहत बड़े पैमाने पर हत्याएँ विभिन्न तरीके से हुई। इनमें मृत्युदंड, अकाल, जबरन श्रम, कारावास शामिल हैं। भारत में जवाहरलाल नेहरु के तहत भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने सन् 1936 में सामाजिक-आर्थिक नीतियों के लिए समाजवाद, साम्यवाद (कम्यूनिज्म) को एक विचारधारा के रुप में अपनाया। वामपंथी राजनीति के पैरोकार समाज को बदलकर उसमें अधिक आर्थिक और जातीय समानता लाना चाहते हैं।

साम्यवाद के प्रबल समर्थक लेखक राम पुनियानी लिखते हैं कि- भारत-चीन युद्ध के समय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का मुख्य लक्ष्य था-कम्यूनिस्टों का विरोध[89]। वह आगे लिखते हैं कि- 'इन युद्धों के समय संघ को अपनी 'राष्ट्रभक्ति' एवं 'देशभक्ति' के प्रदर्शन का मौका मिला[90]।

दुष्प्रचार का माध्यम संघ पत्रिकाएँ-

भारत एवं भारतीयता का प्रचार-प्रसार में लगीं संघ समर्थित पत्र-पत्रिकाओं 'पाँचजन्य' 'आर्गनाइजर' 'हिन्दुस्थान समाचार' आदि के लेखक ने संघ द्वारा 'प्रचलित धारणाओं एवं समझ में दुष्प्रचार का माध्यम' माना है[91]।

आपातकाल में संघ-

सन् 1975 में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरागाँधी ने देश पर आपातकाल लगाया था। जिसका विरोध- जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सहित 23 संगठनों ने किया था। हालांकि संघ पर सत्ता की कुपित दृष्टि होने से संघ के प्रचारक, स्वयंसेवक, कार्यकर्ताओं सहित 1 लाख से अधिक सँख्या में डी. आई.

आर. और मीसा के अंतर्गत जेलों में भरे गए थे। इसके बाद भी संघ की भूमिगत पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन एवं जनता जागरुकता के कारण तत्कालीन सत्तासीन पार्टी को चुनावों में करारी हार का सामना करना पड़ा था। लेकिन स्वतंत्र भारत के परतंत्रकालीन इस स्थिति का वर्णन लेखक राम पुनियानी ने इस प्रकार किया है कि- "राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की 'सामाजिक पुनर्स्थापना' तब हुई जब 1974-75 में उन्होंने जे. पी. आंदोलन में हिस्सा लिया। जे. पी. ने उन्हें 'अच्छे चरित्र' प्रमाणपत्र भी दिया[92]। आपातकाल के दौरान जनसंघ जनता पार्टी में विलीन हो गई और चुनावी राजनीति में उसे अच्छी सफलता मिली। 1980 में दोहरी सदस्यता के सवाल पर उन्होंने 'जनता पार्टी' छोड़ दी और वर्तमान 'भारतीय जनता पार्टी' का गठन किया। लेखक ने 21 माह के आपातकाल के दौरान सत्तापक्ष को घेरने या स्थितियों का वर्णन करने के बजाय अपनी दृष्टि सिफ संघ पर केन्द्रित रखी।

हिन्दू धर्म और संघ-

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रखर विचारक तथा भारतीय जनता पार्टी के राज्यसभा सांसद डॉ. राकेश सिन्हा हिन्दू, हिन्दुत्व के बारे में कहते हैं कि- "हिन्दू अस्तित्व की पहचान के प्रति सजग होना और उसके प्रति चेतना का विकास होना 'हिन्दुत्व' है। हिन्दुत्व का तात्पर्य है- हिन्द की विशेषताओं, हिन्दू के अपने अस्तित्व के प्रति भीतरी और बाहरी चुनौतियों से लड़ना। वीर सावरकर ने विशेष परिस्थितियों में हिन्दुत्व के रुप में भू-सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की बात की।

संघ संस्थापक डॉ. हेडगेवार ने हिन्दुत्व को सभ्यता थी परिवेश में रखा और उसे पूजा पद्धति और आस्था से ऊपर किया। उनका मानना रहा कि- जो लोग भारत के प्रति आस्था रखते है, इस संस्कृति से जुड़े हुए हैं, विभिन्न पूजा-पद्धतियों के बावजूद वह सभी अपनी 'सभ्यता की राष्ट्रीयता' से वो भी हिन्दू है[93]। स्पष्ट है कि- संघ ने इस राष्ट्र की भूमि के प्रति निष्ठवान सभी वर्णो, धर्मो के लोगों को हिन्दू माना है।

वामपंथी इतिहासकार रोमिला थापर ने संघ परिवार द्वारा प्रचारित हिन्दूधर्म को **'संघ हिन्दूवाद'** कहा है। वह लिखती हैं कि- यह शक्तिशाली मध्यम वर्ग के सामाजिक आधार पर संघ परिवार द्वारा चित्रित किया गया है। जिसका उद्देश्य ग्रामीण धनी वर्ग तक पहुँचकर उन्हें राजनीति में लाकर उनको उपयोगी बनाने में लिए एक अखंडित समान हिन्दू धर्म पैदा करना है, वह हिन्दू धर्म जो कमोबेश एक सामाजिक दर्जा हासिल कर चुका है। जो मुख्य रुप से ब्राह्मणीय ग्रन्थों तथा धर्मशास्त्रों पर आधारित है[94]। वह आगे लिखती है कि- 'हिन्दू' मिशनरी संघों ने ईसाई मिशनरियों का काम अपने हाथ में ले लिया है। अब वे आदिवासियों अछूतों ओर आर्थिक रुप से पिछड़ी जातियों में सक्रिय है। उन्हें विगत दो शतकों चल रहे

उच्च जाति के आंदोलन की व्याख्या के अनुसार 'हिन्दू' बना रहे हैं। इसमें उन्होंने (संघ ने) आदिवासियों अछूतों की स्थिति सुधारने के लिए कुछ भी नहीं किया है[95]।

ज्ञातव्य है कि संघ परिवार आदिवासी, गिरीवासी, अछूतों और आर्थिक रुप से पिछड़े लोगों में अपने विभिन्न संगठन जैसे **राष्ट्रीय सेवा भारती, स्वदेशी जागरण मंच, वनवासी कल्याण आश्रम** आदि के द्वारा निरंतर शिक्षा, चिकित्सा, रोजगार, स्वावलंबन कार्य की प्रेरणा और व्यवस्था कर रहा है। हिन्दू धर्म में सामाजिक समानता के लिए संघ ने दलितों और पिछड़ों वर्गों को मंदिर में पुजारी पद के प्रशिक्षण का पक्ष लिया है। क्योंकि सामाजिक वर्गीकरण ही हिन्दू मूल्यों के हनन का कारण है[96]।

भारत में हिन्दू, हिन्दुत्व, हिन्दूधर्म के प्रति स्वतंत्रता प्राप्ति बाद से नकारात्मक, ऋणात्मक भाव समाज में बनता चला गया। इसका कारण यदि देखा जाए तो दरअसल स्वतंत्र देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु ने हिन्दू धर्म के प्रति उपेक्षापूर्ण और भ्रम उत्पन्न करने वाले उद्धबोधन दिए थे। उनका कहना था कि-"एक आस्था के तौर पर 'हिन्दुत्व' एक अस्पष्ट, अव्यवस्थित, बहुपक्षीय और सभी लोगों के लिए सभी कुछ जैसा है। इसकी व्याख्या कर पाना कठिन है कि यह एक 'धर्म है भी या नहीं'[97]।

स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात कांग्रेस के भी अंदर से भारत को 'हिन्दू राष्ट्र' घोषित करने की आवाज उठने लगी थी। क्योंकि धर्म के आधार पर हुए बंटवारे में इस्लाम धर्म के नाम पर 'पाकिस्तान' बनाया था। किन्तु नेहरु ने अपने भाषणों में कई बार यह कहा है कि- "जब तक भारत से जुड़े मामले मेरे अधिकार में है तब तक भारत एक 'हिन्दू स्टेट' नहीं बनेगा। 2 अक्टूबर 1947 को भी गांधी जयंती पर उन्होंने स्पष्ट कहा था कि 'मैं' हिन्दूराष्ट्र की माँग का एकदम विरोध करता हूँ। साथ ही उन्होंने हिन्दू राष्ट्र की माँग करने वालों की तुलना हिटलर और मुसोलिनी से की थी। जबकि उन्होंने पाकिस्तान की माँग के विरोध में ऐसा कभी कुछ नहीं कहा था। उन्होंने मुहम्मद अली जिन्ना जिसके कारण देश विभाजन हुआ। लाखों लोग बेघर हुए, भीषण नरसंहार हुआ। उस मुहम्मद अली जिन्ना की तुलना 'हिटलर और मुसोलिनी' से कभी नहीं की।

'हिन्दू' राष्ट्र को लेकर नेहरु में अनेक पूर्वाग्रह था। इसी कारण मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे द्वारिका प्रसाद मिश्रा ने अपनी पुस्तक **'द नेहरु एपोक'** में उनके हिन्दू राष्ट्र से चिढ़ की बात का जिक्र करते हुए लिखा है कि- 'नेहरु का मानना था कि धर्मनिरपेक्षता का अनुसरण केवल हिन्दू के लिए है। उन्हें प्राचीन हिन्दू चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद 'अवैज्ञानिक' नजर आती थी। सरदार पटेल भी नेहरु के हिन्दू धर्म के प्रति इस दृष्टिकोण से व्यथित थे। उन्होंने कहा भी था कि-"अकेला राष्ट्रवादी मुसलमान इस देश में बचा है तो वह है-जवाहरलाल नेहरु[98]। नेहरु की हिन्दुओं के प्रति यह सोच, नफरत घृणा के कारण ही तत्कालीन हिन्दू समाज का

संगठन करने वाले संगठन, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रति उनके प्रबल घृणा का होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। क्योंकि संघ हिन्दू समाज का रक्षण, संगठन करते हुए उनके अधिकारों के प्रति अपनी स्थापना काल से ही सजग रहा। स्वतंत्रता बाद नेहरु की इसी सोच को तत्कालीन साहित्यकारों, शिक्षाविदों, इतिहासकारों ने पूरी तरह आत्मसात करते हुए तथाकथित सांप्रदायिक सद्भाव की तलाश में 'हिन्दू संगठनों' विशेषकर संघ के प्रति अपनी दुराग्रही, नफरत भरी घटनाओं को दृढ़ करते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ विरोध को समाज में मौखिक एवं लिखित रुप से भ्रम फैलाना जारी रखा। साथ ही संघ प्रमुखों को भी इन लोगों ने नाजीवादी, फासीवादी, हिटलर और मुसोलिनी की संज्ञा से नवाजा।

राम पुनियानी हिन्दू धर्म और हिन्दुत्व के विषय मे लिखते हैं कि-"ब्राह्मणवादी हिन्दूवाद की अवधारणा को हिन्दूधर्म के रुप में चित्रित किया गया, जो कि वास्तव में विविध धार्मिक पुनरुत्थान/सुधारवादी आंदोलनों की जड़ था। इसका राजनीतिक रुपान्तरण 20 वीं शताब्दी के प्रथम दशक में शुरु किया गया। यह मुसलमानों के प्रति नफरत पर आधारित राष्ट्रवाद था। उसी दौर में एक नैतिक शक्ति के रुप में 'राम' और शारीरिक शक्ति के रुप में 'हनुमान' को लोकप्रिय किया गया। शिवाजी के गुरु रामदास को पुनः प्रतिष्ठित किया गया। जिनका उद्देश्य मुगल शासन को समाप्त करके ब्राह्मण सत्ता को फिर से प्रस्थापित करने का था। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्राथमिक गतिविधियों में गुरु रामदास को प्रमुख स्थान दिया गया। ब्राह्मणवाद के लिए समाज में उनके उद्देश्यों की पूर्ति तथा उनके प्रभुत्व को बनाए रखने के लिए शिवाजी की परंपरा एक प्रमुख साधन थी और है[99]।

यहाँ यह कहने का प्रयास किया गया है कि रामायणकालीन 'राम और हनुमान' चरित्र को जानबूझकर हिन्दू समाज में प्रतिस्थापित करके लोकप्रिय किया गया यानि वामपंथी तथाकथित बुद्धिजीवी इतिहासकार, साहित्यकार यह मानते हैं कि, राम, हनुमान कल्पित चरित्र है। जिनका प्रयोग हिन्दू लोगों द्वारा भारत के मुसलमानों से नफरत बढ़ाने के लिए किया गया या किया जा रहा है अथवा यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा लाए गए कोई चरित्र या पात्र हैं।

संघ और हिन्दूधर्म पर चर्चा लेखिका तनिका सरकार और सुमित सेन की पुस्तक में संघ परिवार आंदोलन की जड़ों को खोजने का प्रयास किया गया है। इसमें लेखक लिखते है कि- संघ परिवार ने आजकल के पैदा हुए 'जय माता दी', 'जय संतोषी माँ', जैसी नई पूजा पद्धतियों का धार्मिक देवियों तथा जगराता जैसे आयोजनों और वैष्णों देवी जैसी नई तीर्थयात्राओं को इससे जोड़ा है। इनकी शुरुआत उत्तरी राज्यों में छठे दशक के उत्तरार्ध और सातवें दशक के पूर्वार्द्ध में हुई। जिसे विश्व हिंदू परिषद के अभियान के रंग में रंग दिया गया[100]।

इन लेखकों तपन बासु, प्रदीप दत्ता, सुमित सरकार, तनिका सरकार, सम्बुद्ध

सेन ने बड़ी ही आसानी से सनातन धर्म परंपरा के देवी-देवताओं को खारिज करते हुए यह सिद्ध किया कि, इन सबकी प्रतिस्थापना संघ परिवार ने अपने हिन्दुत्व पक्ष को मजबूत करने के लिए की थी। यानि इस प्रकार यह माना जा सकता है, भारत में हिन्दू धर्म के 33 कोटि (प्रकार) के देवी-देवताओं का सृजन एवं पुनर्स्थापना छठे-सातवें दशक में ही प्रारंभ हुई थी अथवा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा ही पंचदेवों की स्थापना समाज में की गयी थी या हिन्दूधर्म संघ की परिकल्पना है। इसके पूर्व यह था ही नहीं। इस तरह वामपंथी लेखकों ने अति प्राचीन सनातन धर्म परंपरा को पूरी तरह नकार दिया है।

तुष्टीकरण राजनीति का लेखन-

यह आश्चर्य एवं दुख का विषय रहा है कि स्वतंत्रता बाद से हिन्दुओं को बहुसंख्यक और बौद्ध, जैन, यहूदी, ईसाई, पारसी, सिक्ख और मुसलमानों में से मात्र मुसलमानों को ही अल्पसंख्यक मानकर पूरी राजनीति इसके केन्द्र में की गई। क्योंकि शेष धर्मों के अल्पसंख्यक वोट बैंक की राजनीति में नेताओं के विशेष काम के नहीं थे। साथ ही तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरु एवं बाद में नेहरु की वंशावलियों ने भी मात्र मुसलमानों को ही अल्पसंख्यक मानकर उनके हितों की रक्षा के लिए ही जनता का धन, अपनी आंतरिक ऊर्जा, संवेदना तथा समय, श्रम सब कुछ लगाया। जैसा 'राजा वैसी प्रजा' की उक्ति को चरितार्थ करते हुए सत्ता की कृपादृष्टि पाने की उच्च्च लालसा में शिक्षाविदों, इतिहासकारों, कलमकारों तथा बुद्धिजीवियों को भी तुष्टिकरण के लेखन की प्रेरणा दी। फलतः सारे इतिहास, भूगोल, साहित्य में हिन्दू धर्म जो भारत का सनातन धर्म था दबता, कुचलता, पिसता गया और आयातित ध र्म इस्लाम को हर दृष्टिकोण से लाभ ही मिला। इसी का नमूना सन् 1947 से अब तक के तथाकथित साम्प्रदायिक सद्भाव और छद्म धर्मनिरपेक्षता के आग्रही विद्वानों के लेखन में भी स्पष्ट देखा जा सकता है।

राम पुनियानी की पुस्तक में संघ परिवार में प्रचलित 'हिन्दुत्व' के बारे में वह लिखते हैं कि-"हिन्दुत्व एक तरफ विगत इतिहास को लेकर हताश और अभागे मुसलमानों के रुप में **'काल्पनिक दुश्मन'** का निर्माण करता है। जिससे नफरत की जाए और बार-बार हिंसक तरीके से लड़कर उन्हें सिमटकर रहने के लिए मजबूर किया जाए। इस प्रक्रिया को बहुत ही तीव्र उन्मादपूर्ण तरीके से किया जा सकता है और इस आक्रामकता के सामने शोषित तबके की संवेदनशील आवाजें दब जाती हैं[101]। इतना ही नहीं स्वतंत्रता बाद हुए तमाम दंगे-फसाद का केन्द्र लेखक हिन्दुओं को मानते हुए लिखते हैं कि-"यह हिन्दू साम्प्रदायिकता है जो भारत में फांसीवाद लाने की क्षमता रखती है न कि मुस्लिम साम्प्रदायिकता[102]। इस प्रकार लेखक ने

सीधे-सीधे मुस्लिमों को 'क्लीन चिट' दे दी। तथा प्रत्येक काल की हिंसा में दोषी मात्र हिन्दुओं को बता दिया।

हिन्दू साम्प्रदायिकता को स्थापित करते हुए उदारवादी लेखक रामपुनियानी लिखते हैं कि-किस प्रकार मुसलमानों के विषय में झूठ का प्रचार किया जा रहा है। वह लिखते हैं कि-प्रभावशाली साम्प्रदायिक ताकतें विगत कुछ सालों से कई झूठ का प्रचार करती रही है-जैसे कि मुसलमानों को चार बीवियाँ रखने की इजाजत है और वे अधिक बच्चे पैदा करते है। वे परिवार नियोजन के तरीकों का विरोध करते हैं। इस्लाम के कारण उनकी वृद्धिदर अधिक है और अधिक वृद्धिदर के कारण वे जल्दी ही हिन्दुओं की आबादी को पीछे छोड़ देंगे, आदि[103]।

लेखक ने इन तमाम तथ्यों झूठलाने का प्रयास करते हुए मुस्लिम तुष्टिकरण की नींव मजबूत किया है। वह लिखते हैं कि-अगले शतक में भी मुसलमानों द्वारा हिन्दूओं की जनसंख्या को पार कर पाना न केवल कठिन है बल्कि असंभव है[104]। इसके लिए उन्होंने सन् 1971 का आंकड़ा दिया है कि उस समय हिन्दू 82.7 प्रतिशत और मुसलमान 11.2 प्रतिशत थे। उसके बाद लेखक ने तुर्की और इंडोनेशिया जैसे देशों का उदाहरण देकर स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि इन देशों में 'परिवार नियोजन' अपनाया जाता है। उसी प्रकार सभी परिवार 'परिवार नियोजन' अपनाते हैं[105]।

इसी तरह मुसलमानों की चार बीवियाँ रखने को भी राम पुनियानी नकारते हैं। वह लिखते हैं कि- 'सन् 1961 को जनगणना अनुसार बहुपत्नी प्रथा सबसे अधिक आदिवासियों में 15.25 प्रतिशत, बौद्धों में 7.9 प्रतिशत, जैनियों में 6.72 प्रतिशत, हिन्दूओं में 5.80 प्रतिशत ओर तब जाकर मुसलमानों में 5.70 प्रतिशत पाया गया[106]। अपनी बात की पुष्टि करते हुए लेखक ने गोखले इंस्टीट्यूट पुणे की मल्लिका बी. मिस्त्राी के शोध का उदाहरण दिया है कि- "इस शोध के अनुसार- "ऐसा कोई सुबूत नहीं है कि मुसलमानों में बहुपत्नीत्व का प्रतिशत हिन्दुओं से अधिक हो"।

गरीब मुसलमानों के प्रति अति उदारता व्यक्त करते हुए लेखक ने लिखा है कि- "गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले मुसलमानों की संख्या 45 प्रतिशत है। जहाँ पर निवास, शिक्षा, चिकित्सा, स्वास्थय आदि की समस्याएँ हैं। लेकिन साम्प्रदायिक हिंसा की घटनाओं के कारण इन्हें (एक मुहल्ले) में "सिमटकर" रहने को मजबूर कर दिया जाता है[107]। इस प्रकार मुस्लिम समाज को अत्यंत दीन-हीन, बेचारा बनाकर प्रस्तुत करने का सुनियोजित प्रयास लेखकों का एक बड़ा वर्ग करता रहा है। इस संबंध में यह कहना उचित होगा कि, जिस प्रकार मुगल शासकों ने राजपूतों को अपने दरबार में बड़े पदों पर बैठाकर उनके हाथ में इस्लाम की तलवार पकड़ा दी तथा इन हिन्दू राजपूतों को हिन्दू शासकों की ही गर्दनें उतारनी होती थीं। यही काम स्वतंत्रता बाद देश के धर्मनिरपेक्ष, वामपंथी हिन्दू भी करते हैं।

साम्प्रदायिक दंगों का विवरण हमेशा से सच छिपाकर झूठ फैलाने का रहा है। भारत में दंगों का लम्बा इतिहास हो चुका है। यहाँ तक कि एक बार कांग्रेस के ही शासन में संसद के गृह मंत्रालय की रिपोर्ट में कहा गया था कि- सन् 1968 से 1970 के बीच हुए 24 दंगों में 23 दंगे मुस्लिमों द्वारा शुरु किए गए। भारत के अधिकांश जिलों से हिन्दुओं के पलायन की खबरें आती रहती हैं। पूरे कश्मीर के साथ ही केरल और असम के अधिकांश जिलों में हिन्दुओं की आबादी समाप्त हो गयी है। जम्मू, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, और बिहार, पं. बंगाल के भी सीमावर्ती जिलों से हिन्दुओं का पलायन जारी है। लेकिन ऐसा कोई जिला पूरे भारतवर्ष में नहीं है जहाँ मुस्लिम आबादी को भगाया गया हो या मुस्लिमों ने पलायन किया हो। यहाँ तक कि कांग्रेस सरकार द्वारा **'साम्प्रदायिक और लक्षित हिंसा विधेयक'** (2011) बनाकर इस्लामी साम्प्रदायिकता को पूरी छूट और संरक्षण देने का कार्यक्रम सुनिश्चित किया गया था।

ज्ञातव्य है कि-' भारत में साम्प्रदायिक दंगे' अत्यंत गंभीर एवं संवेदनशील विषय है किन्तु सच्चाई छिपाने की भरपूर मानसिकता के कारण ही इस विषय पर शोध प्रबंध-तथ्यवार विवरण आदि उपलब्ध नहीं है। यद्यपि डॉ. कोएन रॉड एल्स्र्ट की पुस्तक 'कम्यूनल वायलेंस एंड प्रोपोगेंडा (वायस ऑफ इंडिया 2014) में साम्प्रदायिक दंगों का विवरण मिलता है। इस पुस्तक में भारत के सात दशकों के दंगों का विवरण एवं समीक्षा की गई है।

भारत में हिन्दू साम्प्रदायिकता की आधारहीन भूमि का निर्माण करने वाले शिक्षाविद्, इतिहासकार भारत के पड़ोसी देश बांग्लादेश और पाकिस्तान में लाखों हिन्दुओं की हत्या, स्त्रियों के दिन-दिहाड़े अपहरण एवं बलात्कार, हिन्दू मंदिरों को विनष्ट करने जैसी घटनाओं का भूलकर जिक्र कभी नहीं करते। विश्व प्रसिद्ध पत्रकार ओरियाना फलासी ने अपनी पुस्तकों 'रेज एंड प्राइड के पृष्ठ 101-02 तथा 'फोर्स ऑफ रीजन के पृष्ठ 129-30 में ढाका-बांग्लादेश में दस लाख हिन्दुओं के सामूहिक संहार का लोमहर्षक प्रत्यक्षदर्शी विवरण दिया है। किन्तु हर बात में पाश्चात्य देशों की ओर ताकने वाले बौद्धिक वर्ग की दृष्टि पाश्चात्य पत्रकारों की इन पुस्तकों की ओर नहीं जाती। क्योंकि भारत का बौद्धिक वर्ग अपनी पूरी क्षमता लगाकर हिन्दुओं को **साम्प्रदायिक** घोषित करने की नींव बनाने में ही जुटा रहता है।

नारी मुक्ति आंदोलन और संघ-

राम पुनियानी ने संघ के प्रत्येक दृष्टिकोण, कार्यशैली, सांगठनिक कौशल, आनुषंगिक संगठनों सभी का विश्लेषण करने का एकांगी प्रयास किया है। संघ किस प्रकार समाज के प्रत्येक वर्ग, वर्ण, जाति, सम्प्रदाय, धर्म तथा देश विरोधी गतिविधियों में

शामिल है। इसका 'काल्पनिक विवरण' राम पुनियानी की पुस्तक 'लोकतांत्रिक भारत का हिन्दू राष्ट्र : संघ परिवार की राजनीति' में मिलता है।

राम पुनियानी जैसे प्रबुद्ध विद्वान 'नारी को नारी' यानि नारी को मात्र देह ही मानते हैं। किन्तु संघ परिवार स्त्री को सीता, सावित्री का दर्जा देते हुए 'मातृशक्ति' मानकर अलग विशिष्ट स्थान देता है। इसे भारत के प्रगतिशील बुद्धिजीवी समस्या रुप में देखते हैं। अतः लेखक लिखते हैं कि– 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ महिलाओं के काम को राष्ट्र सेविका समिति के दायरे में सीमित रखता है। साथ ही साथ उसकी घरेलू मेहनत को 'विनम्र सेवा' के दायरे में रखा जाता है। यानि जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में औरत को पिता, पति, पुत्र के संरक्षण में रहना होगा[108]।

संघ परिवार महिलाओं को हिन्दू देवियों की छवि आज्ञाकारी त्यागमयी पत्नी और माता रुप में प्रस्तुत करता है और इसी भावना से भाजपा (संघ का राजनीतिक आनुषांगिक संगठन) महिलाओं को मातृशक्ति कहता है[109]। यहाँ लेखक राम पुनियानी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक गोलवलकर की स्त्रियों के प्रति दृष्टि का उल्लेख करते हुए लिखते है कि–"गोलवलकर सिद्धांत बघारते हैं कि चूंकि औरतें मुख्य रुप से माता होती हैं। इसलिए उन्हें संघ के उद्देश्य में मदद करनी चाहिए। महिलाओं को 'आदर्श माता' होना चाहिए। लेखक बताते हैं कि– दहेज और वधु दहन में संघ की भूमिका संदिग्ध है। सामाजिक जीवन के क्षेत्र पर उभरने के बजाय संघ परिवार महिलाओं को आदर्श माता और पत्नी रुप 'मर्द का मातहत' बन कर रहने को मजबूर करता है[110]। परंपरा और परिवर्तन के बीच यह एक चातुर्त्य पूर्ण संतुलन है। यह बात नारीवादियों के आंदोलन के विपरीत है। संघ से प्रेरित प्रभावित औरतें अपने प्रियजनों के विरोध में ना जाकर एक नियंत्रित, अंदरुनी तरीके से स्थान पाने में सफल हो जाती है।

अब संघ परिवार के नारी को माता मानने के दृष्टिकोण पर प्रश्न उठाते हुए लेखक संघ के अनुशासन एवं प्रभाव में रहने वाली नारी शक्ति को नारी मुक्ति आंदोलन से विलग देखकर उनकी स्थिति पर प्रश्न उठाते हैं। लेखक का मानना है कि–नाजीवादी भी स्त्री को आदर्श माता मानते थे। जर्मन महिलाओं को जर्मन संस्कृति का वाहक एवं वांशिक शुद्धता या रक्षक कहा गया। इसी प्रकार त्याग, बलिदान संस्कृति रक्षक बनाकर संघ परिवार ने महिलाओं को सीमित दायरे में बांध दिया है[111]।

अपनी बात की पुष्टि लेखक ने तनिका सरकार और उर्वशी बुटालिया की पुस्तक "वीमन एंड द हिन्दू राईटर' 1995 से की है। आश्चर्य इस बात का है कि भारत में रहने वाली महिलाएँ यदि जीजाबाई, रानी लक्ष्मीबाई, अहिल्याबाई होल्कर जैसी बनें तो भी स्वतंत्र भारत के बुद्धिजीवियों को यह आपत्ति है कि वे नारीमुक्ति आंदोलन की पैरोकार क्यों नहीं है। वे पाश्चात्य के कुसंस्कारों की अनुगामिनी क्यों

नहीं है। जबकि संघ परिवार तो सनातनी परंपरा के 'त्यागमयी जीवन की बात करता है' भोगमयी जीवन की नहीं[112]।

यहाँ मैं ध्यान आकृष्ट कराना चाहती हूँ कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और इसकी अच्छी बातों का प्रबल विरोध करने वाले राजनीतिज्ञ एवं बुद्धिजीवी कब **सभी 'अच्छी बातों'** का विरोध करने लगते हैं। इसका शायद उन्हें भी पता नहीं लग पाता।

खैर, यह पुस्तक 'लोकतांत्रिक भारत या हिन्दू राष्ट्र संघ परिवार की राजनीति' संघ का एकमात्र प्रबल विरोध करने से प्रारंभ होकर इसके विरोध पर ही समाप्त हो जाती है। लेकिन संघ के प्रति घृणावमन में लगे लेखक पाठक को 'कैसा भारत, कैसा राष्ट्र' होना चाहिए यह बता पाने में सर्वथा असमर्थ ही रह जाते हैं।

इस्लाम के रहनुमा-ए. जी. नूरानी

धर्मनिरपेक्ष मुस्लिम के रुप में राजनीतिक लेखक, टिप्पणीकार ए. जी. नूरानी ने 'आर. एस. एस. एंड भाजपा : ए डिविजन ऑफ लेबर एंड हिन्दुत्व' जैसे प्रलेखों के माध्यम से सदैव हिन्दुत्व की कटु आलोचना की है। वह अपने लेखों द्वारा हमेशा ही सिद्ध करते रहे हैं कि- "हिन्दुत्व" संविधान के धर्मनिरपेक्ष ताने-बाने, देश की एकता- अखंडता और अल्पसंख्यक (विशेषकर मुसलमानों) के अधिकारों एवं पहचान के लिए खतरा है। ए. जी. नूरानी ने बाबरी मस्जिद के विध्वंस की निंदा करते हुए उस पर मुसलमानों के दावे को साबित करने के लिए कानूनी सबूत भी पेश किए थे[113]।

ए. जी. नूरानी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विषय में लिखते हैं कि- 'संघ परिवार धार्मिक पुनरुत्थानवाद के लिए आंदोलन के लिए आंदोलन नहीं था, बल्कि धर्म के नाम पर राजनीतिक वर्चस्व और अन्य सभी पर सत्ता के लिए था। यह ब्रिटिश शासन के अंत में एक हिन्दू राज्य के कारण बढ़ावा देने के लिए था[114]। संघ की स्थापना के विषय में ए. जी. नूरानी लिखते हैं- एक श्रमसाध्य विद्वान ने उस वातावरण को दर्ज किया है। जिसमें **'जहरीले- आर. एस. एस.'** का जन्म हुआ था[115]।

लेखक ए. जी. नूरानी शम्सुल इस्लाम की राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ विरोधी पुस्तकों के उदाहरण से अपनी बात पुष्ट करते हुए इस नतीजें पर पहुँचते हैं कि- "करीब एक शताब्दी के रिकार्ड में आर. एस. एस. को वह बना दिया है, जो वह अब है[116]। आगे संघ के प्रबल विरोध लेखक शम्सुल इस्लाम के वक्तव्य को सहमतिपूर्वक नूरानी लिखते हैं कि-"...यह आवश्यक है कि- स्वयंसेवक सरसंघचालक की आज्ञा का पालन करें।....यही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सफलता का रहस्य है। एकमात्र नेता के प्रति यह आज्ञाकारिता जल्द ही नेता पूजा में बदल

गयी। वास्तव में यह तभी हो गया था जब नागपुर में आर. एस. एस. की बैठक में हेडगेवार को प्रणाम किया गया था। यह फासीवादी परंपरा आज भी कायम है[117]।

लेखक ए. जी. नूरानी ने अपनी बात की प्रामाणिकता शम्सुल इस्लाम के आर. एस. एस. सम्बन्धी विचारों को सामने रखते हुए की है। किन्तु यहाँ प्रश्न आता है कि- सभी दल या संगठन किसी न किसी एक नेता या व्यक्ति के प्रति दंडवत रहते हैं। कांग्रेसीजन- गांधी परिवार के प्रति, समाजवादीजन- मुलायम और उनके पुत्र अखिलेश यादव के प्रति, बहुजन समाजवादी पार्टी- मायावती के प्रति, आम आदमी पार्टी- के लोग केजरीवाल के प्रति, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी कार्यकर्ता- (राकांपा या एन. सी. पी.) शरद पवार के प्रति, बीजू जनतादल के कार्यकर्ता- नवीन पटनायक के प्रति, तृणमूल कांग्रेसी- ममता बैनर्जी के प्रति, राष्ट्रीय जनता दल से जुड़े लोग- लालूयादव और अब उनके बेटों तेजस्वी यादव ओर तेजप्रताप यादव के प्रति नतमस्तक रहते हैं। देश की सभी पार्टियों में एक ही परिवार के प्रति अपनी पूर्ण श्रद्धा और निष्ठा दिखाना दलों से जुड़े लोगों के यहाँ आवश्यक होता है।

यहाँ यह बताना आवश्यक है कि जबकि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में ना तो डॉ. हेडगेवार के परिवारीजनों के प्रति पूर्ण निष्ठा दिखाने की आवश्यकता इससे जुड़े लोगों में है, ना ही उसके बाद संघ के शीर्ष प्रमुखों के प्रति। हाँ, इस संगठन में व्यक्ति को अपनी पूर्ण निष्ठा एकमात्र राष्ट्र के प्रति अवश्य होनी चाहिए। हम जिस भूमि पर रहते है, जहाँ के अन्न, जल, वायु से पोषित होते हैं उसके प्रति श्रद्धानवत होना क्या "फांसीवाद" की श्रेणी में आएगा? जिसे बार-बार संघ विरोधी पूर्वाग्रह से ग्रसित मीडिया प्रस्तुत करता रहा है।

इसके अलावा अपने लेख में ए. जी. नूरानी ने बंकिमचंद्र चटर्जी के द्वारा रचित देशभक्ति गीत 'वंदेमातरम्' का भी कड़ा विरोध करते हुए लिखा है कि- बंकिमचंद्र चटर्जी और राकेशचंद्र दत्त ने मुस्लिम शासन के खिलाफ हिन्दू विद्रोह का महिमामंडन किया है और मुसलमानों को एक खराब रोशनी में दिखाया है। वह लिखते है कि-**"बंकिमचंद्र ने देशभक्ति को 'धर्म' में, और 'धर्म' को 'देशभक्ति**' में बदल दिया"। वह आगे लिखते हैं-"उपन्यास में 'वंदे मातरम' का प्रयोग आकस्मिक नहीं है। वह अनिवार्य रुप से एक देवता के रुप में कल्पना की गयी, देश के प्रति एक धार्मिक श्रद्धांजलि है[118]।"

बंगाल की भूमि और विस्तार से पूरे भारत को हिन्दू देवता के स्त्री पहलू के साथ पहचाना गया है और परिणाम 'दिव्य मातृभूमि' की अवधारणा थी। ऐसा गीत कितना धर्मनिरपेक्ष है? क्रांतिवीर लाला हरदयाल ने भी हिन्दू धर्म, हिन्दू वर्ग का समर्थन और सराहना की थी। इससे भी ए. जी. नूरानी जैसे बुद्धिजीवियों को खासी दिक्कत है। वे लिखते हैं कि- 'सन् 1925 में लाला हरदयाल ने लाहौर के पत्र

'प्रताप' में लिखा था कि- "मैं घोषणा करता हूँ कि हिन्दू जाति का, हिन्दुस्तान का और पंजाब का भविष्य इन चार स्तंभों पर टिका है-

1. हिन्दू संगठन
2. हिन्दू राज
3. मुसलमानों की शुद्धि
4. अफगानिस्तान ओर सीमांतों की विजय

ए. जी. नूरानी ने लिखा कि-सावरकर और हेडगेवार को यह विरासत, 'विरासत में मिली। जिसे मोदी एंड कंपनी जैसे उत्तराधिकारी आगे बढ़ा रहे हैं। ज्ञातव्य है कि लाला हरदयाल ने विदेशों में जाकर ओजस्वी भाषण द्वारा प्रवासियों को अपने देश वापसी के लिए प्रेरित किया था। अंग्रेजी शिक्षा को अपसंस्कृति का द्योतक मानने वाले लाला हरदयाल ने 'दैनिक पंजाबी' पत्र के द्वारा राष्ट्रचेतना जागरण का कार्य किया। इन्होंने जैनेवा से निकलने वाली 'वंदेमातरम्' पत्रिका संपादन द्वारा भारत में क्रांति की मशाल जलाए रखी थी। किन्तु लाला हरदयाल को भुलाकर तमाम देशभक्तिपरक कार्यो को भूलाकर ए. जी. नूरानी को उनसे केवल हिन्दुत्व के समर्थन पर घोर आपत्ति है।

ए. जी. नूरानी ने अशोक मेहता की पुस्तक (1857 द ग्रेट रिबेलियन) के संदर्भ द्वारा मुसलमानों की दीनता उनके तथाकथित शोषण को दर्शाया है। वह लिखते हैं कि-"इन रेजीमेंटों में कोई जन्म का मुसलमान प्रवेश नहीं कर सकता। सार्वजनिक सेवाओं में मुसलमान तत्व पहले की तरह हर साल कमजोर होता चला गया है। अब कलकत्ता में शायद ही कोई सरकारी कार्यालय हो, जिसमें एक मुसलमान कुली, संदेशवाहक, स्याही भरने वाले और कलम बनाने वाले के पक्ष से ऊपर किसी पद की उम्मीद कर सकता है। संक्षेप में, मुसलमान अब इतने नीचे गिर चुके हैं कि सरकारी नौकरी के योग्य होने पर भी उन्हें सरकारी अधिसूचनाओं द्वारा सावधानीपूर्वक बाहर रखा जाता है। उनकी लाचारी पर किसी का ध्यान नहीं जाता"।

ए. जी. नूरानी ने अपने लेख में मुसलमानों द्वारा स्वतंत्रता आंदोलन को समृद्ध करने की बात कहते हुए इसमें प्रमुख रुप से बदरुद्दीन तैयब और जिन्ना का नाम लिखा है। ज्ञातव्य है कि इसमें से बदरुद्दीन तैयब ने मुसलमानों के बीच सामाजिक संपर्क, बढ़ाने के लिए 'इस्लाम क्लब', 'इस्लाम जिमखाना' तथा 'अंजुमन-ए-इस्लाम' की स्थापना की। इतना ही नहीं भारत को विभाजित कर मुसलमानों के लिए पाकिस्तान बनाने वाले मुहम्मद अली जिन्ना को ए. जी. नूरानी ने स्वतंत्रता आंदोलनकारियों में बखूबी शामिल किया है। जबकि इन बररूदीन तैयब और जिन्ना दोनों में से किसी ने भी भारत की एकता, संप्रभुता या विकास में कोई योगदान नहीं दिया था। फिर भी ए. जी. नूरानी ने इनका समर्थन करने के साथ ही

मुसलमानों को ब्रिटिश शासकों का विरोधी बताते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को ब्रिटिश सरकार का समर्थनकारी सिद्ध किया है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ विरोध करते-करते भारतीय विद्वान इतने डूब जाते हैं कि उन्हें भारत समर्थक और भारत विरोधी भी याद नहीं रहते। यह भी अपने आप में विडंबना ही है कि-"धर्म निरपेक्षता हिन्दुओं में नियम है और सांप्रदायिक हिन्दू अपवाद है। किन्तु मुसलमानों में 'साम्प्रदायिक मुसलमान' नियम है और धर्मनिरपेक्ष मुसलमान अपवाद यही दोनों में अंतर है"[119]। ज्ञातव्य है कि लाखों हिन्दुओं ने देश के परमाणु वैज्ञानिक डॉ. अब्दुल कलाम आजाद को सहजता से स्वीकारते हुए पुरा आदर और सम्मान दिया किन्तु आज तक एक भी मुसलमान ने शिवाजी महाराज और स्वामी विवेकानन्द को नहीं स्वीकारा।

भारतीय मुसलमान अपने देश को और यहाँ की संस्कृति को आज तक नहीं अपना सके। जबकि यह तो स्पष्ट है कि भारतीय इतिहास महमूद गजनी से प्रारंभ नहीं होता[120]।

आर. एस. एस. का बहुजन चिंतन-कंवल भारती

कंवल भारती की पुस्तक है-'आर. एस. एस. का बहुजन चिंतन'। फारवर्ड प्रेस द्वारा वर्ष 2019 में प्रकाशित इस पुस्तक में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की दलितों के प्रति दृष्टिकोण को प्रकट करने का दावा लेखक ने किया है। दलित साहित्यकार कंवल भारती अपनी किशोर आयु से ही समाज के गरीब, पिछड़ेजनों की व्यथा के साक्षी ही ना होकर उनकी पीड़ा को अभिव्यक्ति देने वाले हस्ताक्षर बने। किन्तु समस्या यह है कि दलित चिंतक जब दलित समाज के लिए चिंतन करता है तो वह अपने घेरे में दलित वर्ग को और सभी दलितेतर लोगों को परिधि के बाहर रखकर ही दलित समाज के विषय में सोचता, बोलता या लिखता है।

दलित लेखक कंवल भारती भी इस पूर्वाग्रह से स्वयं को अलग नहीं कर पाए हैं। इसी संदर्भ में जब वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को अपनी दृष्टि से मापते हैं तो उन्हें लगता है कि- संघ के विचारों और ज्योतिबा फुले और बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर के विचारों में अंतर है। इस पुस्तक में यह सिद्ध करने का प्रयास करते है कि कैसे आर. एस. एस. समाज में वर्चस्ववादी जातिव्यवस्था और पितृसत्ता की स्थापना करना चाहता है? लेखक का कथन है कि ज्योतिबा फुले और आम्बेडकर ने ऐसे समाज की बात की थी, जहाँ सभी को आत्मसम्मान के साथ जीने का अवसर मिले। इस पूरी पुस्तक में वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को दलित विरोधी और आम्बेडकर विरोधी सिद्ध करने में लगे रहते हैं।

ज्ञातव्य है कि संघ सामाजिक समरसता मंच जो संघ के वरिष्ठ प्रचारक दत्तोपंत

ठेंगड़ी द्वारा 14 अप्रैल 1983 में स्थापित किया गया। पूरी तरह से दलितों के लिए कार्य करता है। **"सेवा भारती"** तथा **"अखिल भारतीय वनवासी कल्याण** आश्रम" द्वारा संघ लगातार दलितों के हितार्थ कार्य करता रहा है। इसके साथ ही "घुमंतू जाति कार्य द्वारा समाज के वंचितों, शोषितों, पीड़ितों के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार एवं स्थायित्व प्रदान करने की दिशा में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पिछले 20-30 सालों से अपने समर्पित कायकर्ताओं के साथ लगा है। इसी संबंध में जे.ए. कर्नर (1951) द्वारा संघ का पहला मोनोग्राफ-**"मिलिटेंट हिन्दुइज्म इन इंडियन पॉलिटिक्स : ए स्टडी ऑफ द आर. एस. एस."** में एक प्रसंग का उल्लेख करना आवश्यक है। इसमें 1936 में संघ संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार और डॉ. बी. आर. अम्बेडकर के बातचीत का विवरण इस प्रकार है-

"डॉ आम्बेडकर- प्रसिद्ध बहिष्कृत नेता ने सन् 1936 में हिन्दू त्यौहार 'मकर संक्रान्ति' में कार्यक्रम की अध्यक्षता की। तब उन्होंने डॉ. हेडगेवार से पूछा- "क्या सभी आर. एस. एस. सदस्य ब्राह्मण थे? डॉ. साहब ने उत्तर दिया, जब **संघ के स्वयंसेवक** अपने आदर्शों का प्रसार कर रहे थे, तब वे **ब्राह्मण** थे, जब नए सदस्यों की भर्ती कर रहे थे तब वह **'क्षत्रिय'** थे। जब भी उन्होंने संघ के लिए धन संबंधी मामलों को संभाला, तब वे **'वैश्य'** थे, और जब उन्होंने संघ के विभिन्न शिविरों और शाखाओं में सफाई कार्य किया। तब वे **'शूद्र'** थे"[121]।

यहाँ स्पष्ट है कि डॉ हेडगेवार यह बताना चाहते थे, कि एक ही व्यक्ति समय-समय पर अपने कार्यों के अनुसार विभिन्न भूमिकाओं में रहता है। इस प्रकार एक हिन्दू ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र हो सकता है। किन्तु यह भी सत्य है कि यह चारों एकमात्र 'हिन्दू' है। संघ की परियोजना में प्रारंभ से ही दलित अनिवार्य घटक रुप में शामिल रहा है। अयोध्यामें बाबरी मस्जिद विवाद (1992) के एक वर्ष बाद जब विश्व हिन्दू परिषद की बैठक हुई। तब शहर के हनुमान गढ़ी में डॉ. अम्बेडकर की फोटो भी हिन्दू महापुरुषों के साथ रखी गयी थी।

इसके साथ ही **'संघ के 'एकात्मता स्रोत'** में भी दलित चिंतक महात्मा ज्योतिबा फुले एवं डॉ. भीमराव अम्बेडकर का नाम प्रातः स्मरणीय में लिया जाता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखाओं में भारत की राष्ट्रीय एकता का उद्बोधक गीत संस्कृत में है। इसमें भारत की सनातन सभ्यता संस्कृति की रक्षार्थ योगदान देने वाले आदर्श महापुरुषों एवं वीरांगनाओं के नाम है। इस 'एकात्मता स्रोत' पाठ के श्लोक संख्या 30 में महात्मा ज्योतिबा फुले एवं अम्बेडकर के नामों का उल्लेख देखें-

सुभाषः प्रणवानन्दः क्रान्तिवीरो विनायकः।
ठक्करो **भीम रावश्च फुले** नारायणो गुरुः[122]।।

आश्चर्य तो यह है कि, संघ की शाखाओं में प्रातः स्मरणीय महापुरुषों में

महान दलित चिंतकों के नाम शामिल होने पर तथा संघ के सभी स्वयंसेवकों द्व ारा सम्मानपूर्वक प्रतिदिन स्मरण के बाद भी दलित चिंतकों का दावा है कि एक परिवार दलित वर्ग को उचित सम्मान नहीं दे सकता? बार-बार दलित लेखकों द्वारा संघ परिवार के दलित सम्मान को झूठ कहना या उन्हें दलित विरोधी सिद्ध करना बेमानी सा लगता है।

इसके साथ ही आज एकमात्र विश्व का सबसे बड़ा संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ही है जो समाज के प्रत्येक वर्ग के समान ही दलित वर्ग को भी उचित सम्मान प्रदान कर रहा है। हिन्दू समाज के संगठन के मुख्य उद्देश्य के साथ संघ परिवार ने अपने तरीके से समाज के भीतर जातिगत संघर्षों का सामना किया है। भारतीय जनता पार्टी का प्रतिनिधित्व बड़े पैमाने पर पिछड़ी जातियों के ही एक बड़े समूह द्वारा किया जाता है। इसमें वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी शामिल है। इस बड़े समूह में अधिकांश नेताओं में डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी एवं अटल बिहारी वाजपेयी की अपेक्षा अधिक आक्रामक हिन्दुत्व का भाव दिखता है।

(ग) प्रमुख चर्चित घटनाएँ और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ-

देश में स्वतंत्रता प्राप्ति के समय विभिन्न संगठन एवं दल अपनी-अपनी यथाशक्ति देश की स्वतंत्रता प्राप्ति में सहयोग दे रहे थे। कुछ अंग्रेजों का प्रबल विरोध करते हुए उन्हें बल प्रयोग द्वारा देश से बाहर निकालने में लगे हुए उनसे निरंतर लोहा ले रहे थे। जैसे- भगतसिंह, चंद्रशेखर आजाद आदि बलिदानी। वहीं कुछ देशभक्त देश की स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु वर्मा जैसे बाहर के देशों से सहायता लेकर अपना अलग संगठन या दल का निर्माण करते हुए ब्रिटिशों से लोहा ले रहे थे जैसे सुभाषचंद्र बोस। लेकिन देश में ब्रिटिशों से बातचीत करते हुए उनके मन और मत (विचार) परिवर्तन द्वारा देश की स्वतंत्रता की इच्छा महात्मा गाँधी सहित कांग्रेस कर रही थी।

वहीं देश स्वतंत्रता से ज्यादा केन्द्रीय सत्ता पाने, केन्द्रीय राजनीति में प्रमुख स्थान पाने की चाह में देश में धर्म आधारित विभाजन कराने में मोहम्मद जिन्ना जैसे नेता लगे थे। हालांकि मुस्लिम तुष्टिकरण करके अपमान का घूंट पीते हुए महात्मा गांधी लगातार पूरे भारतवासियों को एकसाथ स्वतंत्रता संग्राम में लाने का निरंतर प्रयास कर रहे थे। लेकिन जिन्ना इस एकीकरण के सर्वथा विपरीत जाकर 'द्विराष्ट्र' का स्वरूप देखने लगे। और उस स्वप्न को धरातल पर उतारने के लिए 'द्विराष्ट्रवाद' के नाम पर देश के दो टुकड़े भारत-पाकिस्तान हो गए।

इसी समय देश में कुछ लोग ऐसे भी थे जो विगत कई सदियों से चली आ रही भारतीयों की दासता का एकमात्र कारण भारत देश के मूल हिन्दुओं की सुप्तावस्था को मानते थे। इन लोगों का मानना था कि यदि देश की स्वतंत्रता मिल

भी गयी तो अपने अतीत की विस्मृति में देशवासी अपनी स्वतंत्रता फिर किसी और को सौंपने को विवश हो जाएंगे क्योंकि सत्य यह है कि-भारतीयों में अपना बल, पौरूष, सामर्थ्य शक्ति का अनुमान नहीं है।

अतः इसे बढ़ाना आवश्यक है। इसी विचार को लेकर डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार जैसे महापुरूषों ने हिन्दू समाज के संगठन का कार्य प्रारंभ किया। उनका उद्देश्य भी स्वतंत्रता प्राप्ति ही था। परंतु उसके लिए 'व्यक्ति चरित्र का निर्माण' उन्होंने आवश्यक माना था। क्योंकि 'स्व' की पहचान न होने पर व्यक्ति 'पराधीनता' शीघ्र स्वीकार कर लेता है। वर्षों दासता की बेड़ियों में बंधे रहने से भारतीयों की भी अपनी शक्ति, सामर्थ्य विस्मृत हो चुकी थी। अतः डॉ. साहब ने संघ शाखाओं में **व्यक्ति चरित्र निर्माण** की नींव रखी। यहाँ बौद्धिक, शारीरिक क्रियाओं द्वारा प्रत्येक स्वयंसेवक को निःस्वार्थ रूप से देशरक्षा का कर्त्तव्य बताया जाने लगा।

स्वतंत्रता प्राप्ति तक हुए अनेक घटनाक्रमों में देश की भयंकर त्रासदियों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक अपनी पूर्णनिष्ठा के साथ देश के प्रति अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुए सैनिकों की भांति 'राष्ट्रधर्म रक्षा' में तत्पर रहे। तथापि स्वतंत्रता प्राप्ति तथा उसके पश्चात् लगभग 70 वर्षों तक देश में घटी अनेक प्रमुख घटनाओं का मिथ्या आरोप संघ पर ही लगाता रहा।

यहाँ प्रस्तुत है देश में घटित होने वाली प्रमुख घटनाएँ और उन पर मीडिया की दृष्टि-

जब संघ के स्वयंसेवक बने थे गांधी रक्षक-

अपनी स्थापना काल से ही कांग्रेस के नतमस्तक ना होने का कारण राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को कांग्रेसी जन पसंद नहीं करते थे। यद्यपि यह भी सत्य है कि उस समय कांग्रेस की केन्द्रीय धुरी महात्मा गांधी थे। और वह संघ की शाखाओं और संघ शिक्षा वर्गों में जाकर वहाँ की कार्य पद्धति भी देख चुके थे और संघ के राष्ट्रसेवा कार्य से भी प्रभावित थे। इसीलिए उनके जीवित रहने भर में संघ के विरूद्ध प्रधानमंत्री पं. नेहरू ने कोई बड़ा और कड़ा कदम नहीं उठाया। लेकिन दुर्भाग्यवश महात्मा गांधी की हत्या हो गई और पं. नेहरू ने इसका फायदा उठाकर संघ पर अपना कुटिल निशाना साध लिया। जबकि जिन महात्मा गांधी की हत्या का आरोप कांग्रेस लंबे समय तक संघ पर लगाती रही है। जबकि एक समय उन्हीं महात्मा गांधी की रक्षार्थ संघ के स्वयंसेवक पूरी निष्ठा से लगे हुए थे। इसका उल्लेख एक घटना में इस प्रकार है-

सन् 1942 तक दिल्ली में भी संघ कार्य भली-भांति प्रारंभ हो चुका था। दिल्ली से अनेक संघ प्रचारक निकल रहे थे। इसी समय मुस्लिम की अलगाववादी

गतिविधियाँ तेजी से बढ़ने लगी। इन्हीं दिनों दिल्ली की भंगी कालोनी में गांधी जी रहने लगे। कालोनी में स्थित बाल्मिकी मंदिर के पास ही मुस्लिम लीग का अड्डा था। जिनसे गांधी जी के जीवन को खतरा था। अपनी रक्षा के लिए गांधी जी सेना और पुलिस की सुरक्षा नहीं चाहते थे। उस समय गांधी जी के निकट सहयोगी कृष्णा नायर (जो बाद में सांसद बने) तथा अन्य नेता दिल्ली के प्रांत प्रचारक बसंतराव ओक तथा संघ के अन्य पदाधिकारियों से मिले और गांधी जी की सुरक्षा की बात की। देशबंधु गुप्ता द्वारा गांधी जी की सुरक्षा हेतु संघ से सहयोग मांगने पर दिल्ली प्रांत प्रचारक बसंतराव ओक ने कहा कि-आपके पास तो सेवादल के स्वयंसेवक हैं। इस पर देशबंधु गुप्ता ने कहा कि- "उनमें मुसलमान भी है और उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता। यह दायित्व आप ही संभाले[123]।"

तब गांधी जी की सुरक्षार्थ विश्वासपात्र स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों की टोली लगा दी गयी। जो रात-दिन बारी-बारी से गांधी जी से आवास के बाहर पहरा देने लगे। फलतः सशस्त्र मुस्लिम लीग के गुण्डे संघ व्यवस्था से भयभीत होकर कोई गड़बड़ी और अव्यवस्था नहीं कर सके[124]।

दरबार साहब की रक्षार्थ अंतिम श्वांस तक लगे रहे संघ के स्वयंसेवक-

4 मार्च 1947 को होली पर्व था। अमृतसर के बहुत सारे हिन्दू और सिक्ख समुदाय के लोग आनंदपुर साहब गए हुए थे। दरबार साहब (स्वर्ण मंदिर) से गुरुद्वारा प्रबंध कमेटी के नेता सहित तमाम लोग आनंदपुर साहब में आयोजित सम्मेलन में भाग लेने के लिए गए थे[125]। उस दिन दोपहर में दंगा हो गया। उस दंगों में किस तरह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों ने अपनी जान की परवाह ना करते हुए सैकड़ों हिन्दुओं और सिक्खों की जान बचायी थी।

इसका उल्लेख-**पंजाब केसरी** पत्र में 31 मई 1982 के प्रकाशित अंक में हुआ था। वास्तव में यह **चंडीगढ़ सेक्टर 40 सी, मकान नंबर 322 निवासी सरदार हरवंश सिंह का मूल पत्र था**। जिसे **'पंजाब केसरी'** समाचार पत्र ने स्वतंत्रता प्राप्ति के लगभग 35 वर्षों बाद प्रकाशित किया था। इस पत्र में संघ के स्वयंसेवकों द्वारा दरबार साहब में फंसे श्रद्धालुओं को बचाने का पूरा विवरण रहा। इस पत्र में वर्णित है कि-4 मार्च होली पर्व 1947 को दोपहर 3 बजे चौक बाबा फरीद से मुस्लिम आतंकी भीड़ दरबार साहब की ओर बढ़ने लगी। उस समय दरबार साहब में 100 से अधिक हिन्दू व सिक्ख श्रद्धालु उपस्थित थे। जबकि सेवादार बमुश्किल से 10 की संख्या में थे। अपने पत्र में होली पर्व पर घटी लोमहर्ष घटना का आगे उल्लेख करते हुए सरदार हरवंश सिंह लिखते है कि-"मैं और मेरी साथी जोगेन्दर सिंह, धानासिंह तथा स्वर्ण सिंह जब दरबार साहब के चौक में गए, तो देखा कि

वहाँ श्रद्धालुओं की रक्षार्थ पुलिस दल आने के बजाय वहाँ **राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ** के 50 वर्दीधारी स्वयंसेवक खड़े थे[126]। जब उनके एक संचालक से सरदार हरवंश सिंह ने पूछा तो, उसने बताया कि–घबराने की आवश्यकता नहीं है, यहाँ दूर दूर तक संघ के कार्यकर्ता खड़े हैं। उनकी लाशों को लांघकर ही उपद्रवी हर मंदिर साहब में प्रवेश सकेंगे[127]।

एक सहयोगी द्वारा निकटवर्ती गांव में भी सूचना भेज दी गयी थी। वहाँ से रात 8 बजे तक सैंकड़ो हजारो हथियारबंद ग्रामीण भी दरबार साहब के श्रद्धालुओं की रक्षार्थ पहुँच गए। लेकिन दोपहर 3 बजे से रात के 8-9 बजे यानि 6 घंटे तक वहाँ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता और स्वयंसेवक जान हथेली पर लेकर हर खतरे से निपटने हेतु डटे रहे[128]। लेकिन उपरोक्त घटना केवल भुक्त भोगियों के मानस पटल पर ही अंकित रही। जिसका प्रचार नहीं हो सका। क्योंकि संघ **प्रसिद्धि परांङ्गमुखता** का आदशै लेकर चल रहा था इस कारण उसने स्वयं किसी भी सेवा कार्य का प्रचार नहीं किया।

सिंध (अब पाकिस्तान में) में संघ कार्य

विभाजन के समय किस तरह से संघ के स्वयंसेवकों ने विस्थापित हिन्दू/सिक्खों की रक्षा की। सिंध प्रांत के उदाहरण है–

मार्च 1937 तक सिंध भारत के मुबंई प्रांत का हिस्सा था। परन्तु ब्रिटिशों ने 31 मार्च 1937 को इसे प्रथम प्रांत का दर्जा दे दिया। सिंध में प्रारंभ में मुसलमान हिन्दू विरोधी नहीं था। लेकिन 1945-46 के चुनाव में जब देशभर में मुसलमानों पर लीग का प्रभाव बढ़ गया। तब सिंध भी अछूता नहीं रहा। वहाँ के मंत्री खुर्रो ने लीगी नेताओं को प्रभाव दिखाते हुए कहा था कि–"मैं उस दिन की प्रतीक्षा में हूँ जब सिंध के हिन्दू इतने गरीब हो जाएंगे और उनकी आर्थिक स्थिति इतनी दयनीय हो जाएगी कि उनकी महिलाएँ अपने पति और भाईयों को दोपहर का भोजन अपने सिरों पर रखकर ले जाने को मजबूर हो जाएंगी[129]। बाद में मंत्री बनने के बाद खुर्रो ने सिंध के हिन्दुओं को चेतावनी दी कि–**"सिंध के हिन्दू यथाशीघ्र सिंध छोड़कर चले जाएं[130]।**

लेकिन विभाजन बाद सिंध के पाकिस्तान का हिस्सा बनने के बाद सिंध छोड़कर हिन्दुओं का जाना इतना आसान भी नहीं था। हिन्दू भागकर सरलता से भारत न जा सके। इसलिए 15 फरवरी 1948 को यह आदेश निकला कि–**"बिना परमिट** के कोई हिन्दू सिंध को न छोड़े।" परमिट पाने के लिए भी आठ प्रकार के फार्म भरने पड़ते थे। जिसमें एक शर्त यह भी होती कि–**"परमिट भरने वाले का पाकिस्तान में 'कुछ देना' बाकी नही रह गया है। प्रायः जब कोई हिन्दू परमिट**

लेने जाता, तो कई लोग झूठे दावे पेश करते कि अमुक हिन्दू को इतना देना बाकी है और उस हिन्दू को वह रूपये चुकाने पड़ते।

यह हिन्दुओं को और भी बदहाल बनाने का एक सरल तरीका सिंध में रखा गया था। पाकिस्तान के सिंध प्रांत में हिन्दुओं का रह पाना असंभव हो गया था। 'हिन्दुस्तान टाइम्स' 19 जनवरी 1949 में पाकिस्तान में छपी विज्ञप्ति के अनुसार–**"विभाजन बाद सिंध छोड़कर 8 लाख 21 हजार हिन्दू भारत गए थे।" हांलाकि वास्तविक संख्या इससे कहीं ज्यादा थी।**

सन् 1947 के प्रारंभ में जगह-जगह अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के.... भाषणों में कहते कि-"देखो भाई तुम लोग 70 प्रतिशत से अधिक हो, और हिन्दू केवल 27 प्रतिशत। तुम्हारे खून-पसीने की कमाई से इन हिन्दुओं ने हवेलियां बनाई है। अत: इन पर तुम्हारा ही अधिकार है। इनकी जमीन, जायदाद, व्यापार धन संपत्ति सब तुम्हारे हैं।"[131]

अप्रैल 1932 में डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार कराची (पहले भारत का हिस्सा) में **अखिल भारतीय हिन्दू युवा सम्मेलन**' में भाग लेने गए थे। वहाँ संघ कार्य आरंभ करने हेतु उन्होंने च.प.भिशिकर को भेजा। चूंकि पहले सिंघ प्रांत मुंबई के अंतर्गत ही था। अत: वहाँ महाराष्ट्रियों की भारी संख्या थी। भिशिकर जी ने सिंधी युवाओं को संघशाला से जोड़ा। सिंध में सभी जातियों, व्यवसायों, वर्गो के हिन्दू संघ के साधारण स्वयंसेवक ही नहीं दायित्वधारी भी थे।

सन् 1999 में प्रकाशित पुस्तक **'ज्योति जला निज प्राण की'** माणिकचंद्र बाजपेयी और श्रीधर पराड़कर की संघ कार्यकर्ताओं के अनुभवों का सच्चा दस्तावेज है। इसी में एक संघ कार्यकर्ता विजय बाधवा जी विभाजन संबंधित संस्मरण है। जिसमें उन्होंने जिला दादू (सिंधु) मेहर के हिन्दुओं को बचाने संबंधी अनुभव को बताया है। हिन्दुओं को मुसलमानों से रक्षा करने के लिए संघ कार्यकर्ताओं ने भी मुसलमानों का वेश धरा था। इस कार्य के लिए बाकायदा उन्हें इस प्रकार का प्रशिक्षण भी दिया गया था।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के निष्काम कर्मयोगी ही नहीं बल्कि संघ का आनुषांगिक संगठन **'राष्ट्रसेविका समिति'** की सिंध शाखा की कार्यकर्ता जेठी दीवानी और समिति की प्रमुख संचालिका लक्ष्मीबाई केलकर उपाख्य मौसी जी ने सिंध की सेविकाओं का एकत्रीकरण कर उन्हें धीरज बंधाया और लगभग 1200 राष्ट्र सेविकाओं को सुरक्षित भारत लाने का समुचित प्रबंध भी किया[132]।

ए. एन बाली की पुस्तक 'नाउ इट कैन बी टोल्ड

अंग्रेजी भाषा में यह पुस्तक सन् 1947 के विभाजन पर है। इस पुस्तक में सत्ता की आलोचना करते लाहौर में पंजाब विश्वविद्यालय के प्रो. ए.एन. बाली ने तत्कालीन

प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को भी घेरा था। प्रो. अमरनाथ बाली की यह पुस्तक विस्थापितों की नृशंस हत्या, स्त्रियों का बलात्कार, विकलांग शरीरों की भीड़ आदि की डरावनी भयानक कथानकों से भरी है।

वह आगे लिखते है कि- **"पाकिस्तान के सूबों से हिन्दू और सिक्खों को भारत तक लाने के लिए लॉरी एवं बसों की व्यवस्था राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों ने की थी। यहाँ तक कि पंजाब के कई जिलों में कांग्रेस के नेताओं ने भी अपने परिवार और रिश्तेदारों को बचाने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से मदद मांगी थी।**

ज्ञातव्य है कि प्रो. ए.एन. बाली की इस पुस्तक को उस समय प्रतिबंधित कर दिया था। अभी कुछ वर्ष पूर्व जब इसकी एक प्रति जब प्राप्त हुई तब प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया है। यद्यपि संघ के स्वयंसेवक जो सेना में नहीं थे तथापि कश्मीर सीमा पर नजर रखे थे। ऐसे अनेक प्रसंगों से यह पुस्तक भरी है। जिनमें विस्थापितों की रक्षा में लगे स्वयंसेवकों की निष्ठा के वाक्य मिलते है।

जम्मू-कश्मीर की शेख अब्दुला सरकार और संघ-

स्वतंत्रतापूर्व संघ कार्य की संगठनात्मक रचना के अनुसार प्रारंभ में जम्मू-कश्मीर राज्य भी पंजाब प्रांत के अंतर्गत आता था। वह पंजाब का विभाग था। लाहौर में अध्ययनरत श्री बलराज मधोक छात्र जीवन से ही संघ संपर्क में रहे। अपने पैत्रिक आवास जम्मू में सन् 1939 में आए और जम्मू की प्रथम संघ शाखा दीवान मंदिर से प्रारंभ की। माणिकचंद्र बाजपेयी ने अपनी पुस्तक 'पार्टिशन डे, दा फियरी स्ट्रगल ऑफ-आर.एस.एस. में लिखा है कि-"कांग्रेसी नेता खुद तो पूर्वी/पश्चिमी पाकिस्तान से निकाले गए। लेकिन वहाँ के हिन्दू एवं सिक्खों को मुस्लिम लीगियों के भरोसे छोड़ दिया। इस समय संघ के स्वयंसेवकों ने लोगों को सुरक्षित निकाला।

मुस्लिम बहुल घाटी कश्मीर में भी बलराज मधोक की सूझबूझ तथा अथक परिश्रम से संघ कार्य प्रारंभ हुआ। अध्यापक बलराज मधोक के अनथक परिश्रम द्वारा सन् 1944 में श्रीनगर में भी संघ शाखा प्रारंभ हो गयी। बलराज मधोक ने अपनी पुस्तक **'जीवन का सफर'** के प्रथम खंड के पृष्ठ संख्या 72 पर लिखा है कि-"दो वर्ष संघकार्य फैलाने के लिए मैंने घोर परिश्रम किया।" फलत: 1946 तक श्रीनगर के 1 हजार स्वयंसेवक बन चुके थे। कश्मीर घाटी में संघ एक शक्ति बन चुका था। जिसकी कोई उपेक्षा नहीं कर सकता था। इसी कारण अनुशासित, संगठित शक्ति बल पर जब देश के किसी जिले, प्रांत क्षेत्र में संकट आया तो संघ हिन्दू समाज की रक्षा कर सका, विस्थापितों का पुनर्वास कर सका। संकट में घिरे

बंधुओं का पुनर्वास कर सका, माता-बहनों की सुरक्षा कर सका। यही नहीं इसी शक्ति के आधार पर उसने भारतीय सेना की भी मदद की।

संघ देशभक्त या देशद्रोही? इस शीर्षक के साथ अनेक लोगों ने संघ को घेरने की कल्पित कोशिशों के साथ मनगंढ़त बातें लिखते हुए एक स्वर से संघ सेवा कार्य और स्वतंत्रता आंदोलन तथा देश विभाजन में उनके तमाम सहयोग, मदद और सेवा कार्यों को बड़ी निर्ममता से खारिज करते हुए उन्हें इस आंदोलन से पृथक कर करने की भरपूर कोशिश की है। लेकिन उस समय भी संघ सेवाकार्य और उसकी राष्ट्रभक्ति से राजनीतिक लोग किस प्रकार से डरकर उससे दूरी बना रहे थे। इसका एक उदाहरण यहाँ दृष्टव्य है-

स्वतंत्रता प्राप्ति के समय ही जम्मू कश्मीर की शेख अब्दुला सरकार को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की बढ़ती शक्ति सामर्थ्य का पता चल गया था। ज्ञातव्य है कि "जम्मू कश्मीर को शेख अब्दुल्ला सरकार ने **'नेशनल मिलिशिया'** का गठन किया था। इस संगठन पर कम्युनिस्ट हावी थे। इसमें कम्युनिस्ट नवयुवक एवं नवयुवतियाँ दिल्ली व उत्तर-प्रदेश से आकर भर्ती होते थे। यहाँ इन लोगों को हथियार चलाना सिखाया जाता था। लीगियों की भी इसमें भरमार थी। परंतु इस 'मिलिशिया' में संघ स्वयंसेवकों की भर्ती पर पाबंदी थी। यहाँ तक कि भर्ती के समय हर सदस्य को एक प्रतिज्ञा करनी पड़ती थी, कि-"खुदा को हाजिर-नाजिर मानकर मैं कसम खाता हूँ कि- मैं कभी संघ में नहीं गया[133]। शेख अब्दुल्ला को संघ से क्यों और कैसे खतरा समझ में आने लगा। यह विचारणीय प्रश्न है?

अंग्रेजी दैनिक समाचार पत्र 'ट्रिब्यून और पंडित नेहरू-

यह सत्य है कि संघ से जुड़ी सेवाकार्य की खबरों का व्यापक प्रचार-प्रसार आम जनता के बीच नहीं हुआ। जिसका मुख्य कारण था-संघ संस्थापक आद्यसरसंघचालक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार तथा द्वितीय सरसंघचालक श्रीगुरुजी कि प्रसिद्धी परांङ्गमुखता। तथापि कुछ समाचार पत्र जो निष्पक्ष होकर मात्र घटनाओं और तात्कालिक वातावरण को देखकर सत्य लेखन कर रहे थे। उन्हें किस तरह स्वतंत्र भारत की सरकार अपने कोप का भाजन बना रही थी। और बाद में संघ सेवा कार्य को पूरी तरह नकारते हुए तथा उसकी प्रसिद्धि परांङ्गमुखता का अनुचित लाभ उठाकर लंबे समय तक भारत की सरकारों ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का मात्र दुष्प्रचार ही किया।

दरअसल विभाजन बाद **लाहौर का अंग्रेजी पत्र 'ट्रिब्यून'** शिमला (हि. प्र.) लाया गया था। इसके संपादक राणा जंग बहादुर सिंह थे। उन्होंने लाहौर में विभाजन के समय घटी घटनाओं का सत्य उद्घाटन करना जब अपने प्रारंभ किया

तो तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने कुपित होकर 'ट्रिब्यून' ट्रस्ट के अध्यक्ष मोहनलाल से इसकी शिकायत करके संपादक राणा जंग बहादुर को तत्काल 'ट्रिब्यून' से बाहर करवा दिया[134]।

जब पंडित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से घबराकर दमनात्मक कार्यवाही करने लगे, तब इसी अंग्रेजी दैनिक पत्र 'ट्रिब्यून' ने पं. नेहरू पर अपने संपादकीय में तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की थी। आजादी के बाद पं. नेहरू ने नवम्बर माह में पूर्व पंजाब के प्रधानमंत्री गोपीचंद भार्गव को निर्देश दिया कि वह अपने राज्य में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की गतिविधियाँ किसी कीमत पर ना चलने दें। इसी समय 25 नवम्बर 1947 को अंग्रेजी पत्र 'दैनिक ट्रिब्यून' ने प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए पंडित नेहरू के संघ की गतिविधियों को रोकने को दुर्भाग्यपूर्ण बताते हुए पंजाब सरकार के इस निर्देश का डटकर प्रतिरोध करने को कहा, तथा निवेदन किया कि पंजाब सरकार पं. नेहरू के निर्देशों का क्रियान्वयन ना करें।

'ट्रिब्यून' संपादकीय में स्पष्ट कहा गया है कि **'मुस्लिम लीग द्वारा हथियारों के जखीरों को तैयार करके देश भर में अशांति फैलाने और उनकी संदिग्ध गतिविधियों के प्रति पं. नेहरू के कोई चिंता नहीं है। परंतु राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और अकाली दल जो मुस्लिम लीग द्वारा देश में संचालित तोड़फोड़ कार्यवाही तथा बाहरी आक्रमण के विरोध में चट्टान की तरह खड़े होकर राष्ट्रसेवा में लगे हैं, वे उन्हें (पं. नेहरू को) असह्य पीड़ा पहुँचा रहे हैं**[135]।

इसी संपादकीय में आगे कहा गया है कि–

क्या हमें पं. नेहरू को यह स्मरण कराने की आवश्यकता है कि यदि यह राष्ट्रवादी संगठन पाकिस्तानी पाशविक्ता व नृशंसता का वीरतापूर्वक विरोध ना करते तो हजारों हिन्दू माता–बहनों का अपमान होता और असंख्य बच्चों को निर्दयतापूर्वक मौत के घाट उतार दिया जाता। यही नहीं जब पश्चिमी पंजाब धू–धूकर जलते हुए रक्त स्नान कर रहा था और सत्ताधीश लाखों हिन्दुओं की पुकार को अनसुना कर रहे थे। तब इस संगठन के जांबाज, बहादुर कार्यकर्त्ता ही जिन्ना के फासिस्ट अत्याचारों से पीड़ित जनों के जीवन रक्षार्थ अपने जीवन को दांव पर लगा रहे थे।

स्पष्ट है कि कुछ समाचार पत्र जो निष्पक्ष रूप से संघ सेवाकार्यों को जनता के बीच लाने का कार्य कर रहे थे। उन्हें तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरू के कोपभाजन का अनायास ही शिकार होना पड़ रहा था। धीरे–धीरे समाचार पत्रों में संघ सेवा के सकारात्मक समाचार नगण्य हो गए। किन्तु चर्चा तब भी संघ के बारे में चलती रही। इस बदलते समय में मीडिया ने संघ के विरोध में समाचार छापना प्रारंभ कर दिया। सत्ता द्वारा मिले प्रोत्साहन से समाचार पत्रों में संघ के प्रति नकारात्मक समाचारों की बाढ़ आती चली गयी। जिसने संघ की छवि धूमिल करने का तथा जनता में उसकी नकारात्मक छवि निर्माण का कार्य किया।

गोवा मुक्ति आंदोलन-

भारत देश को तो 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता मिल गयी। लेकिन इसके कुछ भू-भाग लगभग डेढ़ दशकों तक परतंत्रता की बेड़ियों में ही जकड़े रह गए। इसी में प्राकृतिक सौंदर्य के लिए विख्यात 'गोवा' राज्य भी था। जो उस समय पुर्तगाल के अधीन था। दरअसल स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात् भी भारत के भू-भागों पर विदेशी शिकंजे का प्रमुख कारण भारत के शीर्ष केन्द्रीय नेतृत्व की इस ओर घोर उदासीनता थी। सन् 1946में डॉ. राममनोहर लोहिया गोवा गए और उन्होंने देखा कि पुर्तगाली अंग्रेजों से भी क्रूर थे। तब उन्होंने पुर्तगाली प्रशासन को चुनौती दी। 13 जून 1955 को कर्नाटक से **भारतीय जनसंघ** के नेता और **राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ** के स्वयंसेवक जगन्नाथ राव जोशी ने 3000 कार्यकर्ताओं के साथ गोवा में प्रवेश किया। जहाँ पुर्तगालियों ने सत्याग्रहियों पर लाठीचार्ज कर गोलियां चलाई।

15 अगस्त 1955 को पुर्तगालियों द्वारा चलाई गोली से 5000 स्वयंसेवकों/ कार्यकर्ताओं में से 51 लोग मारे गए। ज्ञातव्य है कि राष्ट्रसेविका समिति की सरस्वती आप्टे 'ताई' के नेतृत्व में मातृशक्तियाँ सत्याग्रहियों के भोजन और चिकित्सा का प्रबंध कर रही थी। मुबंई में 'यूनाईटेड फ्रंट ऑफ गोवन **(UFAG)** नामक संगठन ने 'दादर' को स्वतंत्र कराया तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विनायक राव आप्टे, प्रभाकर वैद्य, प्रभाकर विठ्ठल से नारी ने आजाद गोमांतक दल एवं गोवा के कार्यकर्ताओं द्वारा 'नागर हवेली' को आजाद कराया।

यहाँ पर जानना आवश्यक है कि प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का मानना था कि गोवा में तैनात पुर्तगाल 'नाटो' का सदस्य था। तथा कश्मीर विवाद भी था तो इस कारण वह गोवा में सैनिक कार्यवाही नहीं चाहते थे। सन् 1955 में 'गोवा मुक्ति आंदोलन' का प्रारंभ हुआ। पुर्तगाली शासन के अत्याचारों के कारण ही भारतीय जनसंघ के मंत्री 'कर्नाटक केसरी' जगन्नानराव जोशी, महाराष्ट्र जनसंघ के उपाध्यक्ष अण्ण साहब कवड़ी, मथुरा (उ.प्र.) के अमीर चंद्रगुप्त सहित दो सत्याग्रहियों की मृत्यु हो गयी[136]।

'पुर्तगालियों भारत छोड़ो' के जयघोष के साथ 5000 सत्याग्रहियों ने गोवा की सीमा में प्रवेश किया और पुर्तगाली सैनिकों के स्टेनगनों, रायफलों से निकली गोलियों ने 51 सत्याग्रहियों के प्राण लिए तथा 300 स्वयंसेवक/कार्यकर्ता सत्याग्रही घायल हो गए[137]। इस घटना से दुखित होकर भारतीय जनसंघ के महामंत्री दीनदयाल उपाध्याय ने गृहमंत्री पं. गोविंद वल्लभ पंत को संघ के स्वयंसेवकों और कार्यकर्ताओं की मृत्यु तथा घायल होने की सूचना देते हुए उन्हें सुरक्षा देने की बात की। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्रीगुरुजी ने भी सरकार से मांग की कि-इस समय भारत सरकार ने गोवा मुक्ति आंदोलन में साथ ना देने की जो बात की है

वह उचित नहीं है। सरकार को चाहिए उचित सैन्य कार्यवाही करके मातृभूमि का जो भाग विदेशी दासता में सड़ रहा है। उसे अविलंब मुक्ति दिलाए[138]।

फलतः अंत में **भारतीय जनसंघ** और **संघ** के अनथक प्रयासों के फलस्वरूप 19 दिसंबर 1961 में भारतीय सेना ने गोवा, दमन दीव में 36 घंटे का **'आपरेशन विजय'** चला कर तिरंगा फहराया[139]। लेकिन यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि 'आजाद गोमांतक दल को व्यवस्थित सुदीर्घ संघर्ष नीति बनाकर साथ देने का जो महनीय कार्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ताओं, स्वयंसेवकों तथा भारतीय जनसंघ के प्रमुखों ने किया, उसका कहीं भी उल्लेख उस समय की मीडिया ने नहीं किया।

आपातकाल में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ-

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश में घटने वाली एक महत्वपूर्ण घटना रही-'आपातकाल'। 25 जून 1975 की मध्यरात्रि में बिना किसी पूर्व सूचना, आदेश, मंत्रणा के ही देशभर में **इंदिरा गांधी सरकार ने आपातकाल** लागू कर दिया। साथ ही इस दौरान **राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं इसके आनुषंगिक संगठनों' 'राष्ट्रीय सेविका समिति', 'हिन्दुस्थान समाचार', 'दीनदयाल शोध संस्थान', 'अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद', 'अखिल भारतीय कल्याण आश्रम', 'विद्या भारती', 'भारतीय जनसंघ', 'भारतीय मजदूर संघ', 'विश्व हिन्दू परिषद', एवं अन्य संगठनों में 'भारतीय लोक दल',** 'आनंद मार्ग' 'जमात-ए-इस्लामी', तथा सर्व सेवा संघ आदि पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

आपातकाल में जब सभी राजनीतिक नेताओं सहित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, भारतीय जनसंघ के प्रमुख कार्यकर्ताओं, नेताओं, स्वयंसेवकों को बंदी बना लिया गया। उस समय डॉ. सुब्रह्मण्यम स्वामी ने वैश्विक मंच पर भारत में सत्ता द्वारा थोपे गए आपातकाल का हाल बयान किया। लंदन में उन्होंने **'लोकतंत्र बचाओ'** बैनर तले विश्वभर के 300 प्रतिनिधियों के समक्ष कांफ्रेस को संबोधित किया। साथ ही अमेरिका के लगभग 24 राज्यों में भारत में लगे 'आपातकाल' के विरूद्ध आपातकाल की सत्यता को उद्घाटित करने वाली पुस्तिकाओं का वितरण किया तथा ओजस्वी भाषण दिए[140]।

आपातकाल का विरोध कर रही **'लोकसंघर्ष समिति'** के महासचिव थे- नानाजी देशमुख। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक नानाजी देशमुख ने भारत सरकार के मिथ्या प्रचार का भंडाफोड़ करने के लिए तथा कॉमनवेल्थ में शामिल सदस्यों को वास्तविकता बताने के लिए अंग्रेजी भाषा में आपातकाल की राजनीतिक समीक्षा, सरकार द्वारा राजनीतिक बंदियों का उत्पीड़न, आम नागरिकों का दमनचक्र,

विपक्षी दलों की रीति-नीति विषय संबंधी लघु पुस्तिकाओं का प्रकाशन एंव वितरण कराया। यह पुस्तिकाएँ थीं-

1. Indian Press Gagged
2. Facts (Nail India's Lies)
3. 20 Lines of Mrs. Anti Gandhi
4. When disobedience to law is a duty Mahatama Gandhi
5. A decade of Economic Chaos[141]

आपातकाल के दौरान लगभग सभी समाचार पत्र ओर इनके संपादक, देश के बुद्धिजीवी कलमकार प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के भय से तथा प्रक्षालन के कोप से बचने के लिए नतमस्तक हो चुके थे। लेकिन इस भयपूर्ण माहौल में भी कुछ अखबार और उनके संपादक अपनी बात प्रतीकात्मक रूप से जनता तक पहुँचाते रहे। विदेशी धरती पर भी भारतीय आपातकाल के दौरान भारतीय द्वारों प्रकाशित अखबारों में जैसे- **'ईवनिंगव्यू', 'स्वराज्य', 'सत्यवाणी', 'सत्य समाचार' और 'इंडियन ओपिनियन'** में भारत की आपातकाल के दौरान की राजनीतिक-सामाजिक स्थिति का वर्णन रहता था। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर लगे प्रतिबंध उचित, इंदिरा सरकार के बीस सूत्री कार्यक्रमों की प्रशंसा, आपातकाल की आवश्यकता, इसकी सार्थकता, आदि सरकार के प्रशंसात्मक वर्णनों, सूचनाओं वाले समाचार जनता तक पहुँचाए जा रहे थे। ऐसे समय में आम जनता तक सत्यता पहुँचाने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ लाखों प्रतियों में आपातकाल की सच्चाई बताने वाले पत्रकों का प्रकाशन एवं वितरण कराया। यह पत्र **'पढ़ो और पढ़ाओ', 'छापो बांटो'**, के नारे के साथ वितरित होते रहे।

संघ द्वारा वितरित की जाने वाली आपातकाल विरोधी सामग्रियों में-'द ट्रुथ अबाउट द इकोनॉमिक प्रोग्रेस', 'व्हेन डिसओबेडिएंस, टु लॉ इज ड्यूटी', ट्वेंटी लाइज ऑफ मिसेज एंटी गांधी, 'हू इज फॉसिस्ट आर. एस. एस. और शी' आदि[142]।

इसी समय संघ द्वारा भूमिगत पत्रों का भी प्रकाशन बड़ी संख्या में हुआ। क्योंकि इस समय संघ के समाचार एजेंसियो और प्रकाशन समूहों पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। **'पांचजन्य', 'राष्ट्रधर्म', 'हिन्दुस्थान समाचार'** आदि पूर्णतया बंद थे। इसीलिए **संघ** ने प्रत्येक राज्यों से **भूमिगत पत्रों** का प्रकाशन प्रारंभ किया। इनमें प्रमुख रहीं-हरियाणा से **'दर्पण'**, गुजरात से **'साधना'**, दिल्ली से **'न्यूज बुलेटिन', 'सत्य समाचार', 'मशाल', 'जनवाणी'**, केरल से **'कुरूक्षेत्र'**, हैदराबाद से **'ब्रजयुग'** मुबंई से **'असली समाचार'**, काशी से **'द्रोण'**, अन्य स्थानों से **'जनसमाचार'** और **'जनवाणी'** निकलते थे।

ज्ञातव्य है कि सन् 1977 के लोकसभा चुनावों में तत्कालीन इंदिरा सरकार को

चुनावी हार का सामना करना पड़ा था। तो इसका मुख्य कारण राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा निरंतर सरकार के आपातकाल लगाने और इस दौरान राजनीतिक बंदियों के साथ उसका व्यवहार, प्रेस पर पाबंदी, **'नो अपील नो दलील', नो वकील'** की क्रूरतम संवैधानिक दुरूपयोग, आपातकाल का विरोध करने वाले क्रूरतम दमन, प्रशासनिक कार्यवाही आदि का कच्चा चिठ्ठा जनता तक पहुँचाना ही रहा था।

यद्यपि इस दौरान सत्याग्रहियों के साथ-साथ पुलिस सत्ता, प्रशासन भूमिगत हुए संघकार्यकर्ताओं, स्वयंसेवकों, प्रचारकों सहित भूमिगत पत्रों के प्रकाशन से जुड़े तथा प्रचार-प्रसार करने वाले कार्यकर्ताओं ही नहीं इन भूमिगत पत्रों के पाठकों पर भी कड़ा शिकंजा कसती थी। इसके पकड़े जाने पर सूचनाएँ प्राप्त करने के लिए तीसरे दर्जे के यातनात्मक उपायों का प्रयोग करती थी[143]।

लेकिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने आपातकाल के दौरान **'Use Media'**, के फार्मूले को अपनाकर इंदिरा सरकार का सच घर-घर तक पहुँचाने में अपार सफलता हासिल की थी। फलतः 1977 के लोकसभा चुनावों में कांग्रेस सरकार को जबर्दस्त हार का सामना करना पड़ा।

श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन-

संसार में जो भी श्रेष्ठतम-दिव्यतम है, उसका आकार रूप है-**'श्रीराम'**। अयोध्या (उ.प्र.) में श्रीरामजन्मभूमि स्थल पर बने भगवान श्रीराम के मंदिर मुगल आक्रांताओं द्वारा धवस्त किया गया। इस तथ्य के पुरातात्विक प्रमाण रहे हैं। अतः अयोध्या(उ.प्र.) में रामजन्मभूमि स्थल पर भव्य राममंदिर का निर्माण सर्वोच्च महत्त्व का विषय रहा। लोक कल्याण को प्राथमिकता देने, नारी सम्मान की प्रतिष्ठा स्थापित करने के गुण से मुक्त, धर्म की रक्षा में रत, और एक आदर्श राजा, शिष्य, पुत्र, पति मित्र, भाई, ये रूप में उनका अद्वितीय शौर्यवान व्यक्तित्व, मूल्यों की सशक्त आधारशिला है तथा भारत में यह मूल्य पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचारित होते रहे है। अतः **'श्रीराम', 'हिन्दुत्व'** के श्रेष्ठ, उत्कृष्ट प्रतिरूप है।

भारत का पुनर्जागरण और राम जन्मस्थान पर मंदिर का निर्माण हिन्दुत्व के आंदोलन का आधार और उसके मील का पत्थर रहा है। यह राष्ट्र की सांस्कृतिक आवश्यकता की अभिव्यक्ति है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रारंभ से ही श्रीराम जन्मस्थान पर भव्य मंदिर निर्माण के लिए प्रतिबद्ध रहा है। किन्तु इसका निर्माण एक संवैधानिक व्यवस्था के अंतर्गत ही हो, यह भी उसका मानना रहा।

ज्ञातव्य है कि श्रीराम जन्मस्थान अयोध्या (उ.प्र.) रहा है। 16 वीं सदी में बाबर के मुगल सेनापति मीर बांकी ने रामजन्मभूमि स्थान पर बने हुए मंदिर को ध्वस्त करके मस्जिद का ढांचा खड़ा कर दिया। जिसे 'बाबरी मस्जिद' नाम से जाना गया।

सन् 1853 में निर्मोही अखाड़े द्वारा मस्जिद ढांचे पर मंदिर का दावा करने पर पहली बार हिन्दू मुस्लिम हिंसा भड़की थी।

सन् 1885 में मंदिर-मस्जिद विवाद अदालत में पहुँचा। इस बार हिन्दू संत **महंत रघुबरदास** ने फैजाबाद कोर्ट में बाबरी मस्जिद परिसर में 'राममंदिर' बनवाने की इजाजत मांगी। इस अपील को अदालत ने ठुकरा दिया। सन् 1934 में रामजन्म भूमि पर फिर विवाद हुआ। सन् 1949 में भगवान राम की इस विवादित स्थल पर मूर्तियाँ रखीं। मुस्लिम पक्ष ने इसका विरोध किया। तब सरकार ने इस स्थल को विवादित बताकर ताला लगवा दिया। सन् 1959 में निर्मोही अखाड़ा ने विवादित स्थल के हस्तांतरण हेतु मुकदमा दायर किया।

सन् 1984 को **'विश्व हिन्दू परिषद'** के नेतृत्व में **'रामजन्मभूमि मुक्ति समिति'** का गठन किया गया। सन् 1986 में मुस्लिम पक्ष द्वारा 'बाबरी मस्जिद संघर्ष समिति' बनायी गयी। सन् 1989 में विश्व हिन्दू परिषद ने नवम्बर माह में मस्जिद से कुछ दूर पर विश्व हिन्दू परिषद के नेता देवकीनंदन अग्रवाल ने राममंदिर का शिलान्यास किया तथा 'रामलला' की तरफ से मंदिर दावे का मुकदमा दायर किया गया।

25 सितंबर 1990 को राममंदिर, रामजन्मभूमि के बारे में विस्तार से हिन्दुओं को अवगत कराने हेतु भाजपा अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी ने गुजरात के सोमनाथ मंदिर से अयोध्या (उ.प्र.) तक 'रामरथयात्रा' निकाली। 30 अक्टूबर 1990 को अयोध्या में पहली बार **श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन के लिए कारसेवा** हुई। इसमें कारसेवकों द्वारा मस्जिद पर चढ़कर झंडा फहराने पर उत्तर प्रदेश की मुलायम सिंह सरकार ने गोली चलाने का आदेश दिया। इसमें 5 कारसेवकों की मृत्यु हो गयी थी। 6 दिसंबर 1992 को रामभक्त कारसेवकों की भारी भीड़ ने बाबरी मस्जिद ढहा दिया और अस्थाई राममंदिर भी बना लिया। 'हिन्दुस्थान' में हिन्दू देवता 'राम' के जन्मस्थान पर मंदिर निर्माण की मांग करने पर देश भर में दंगे हो गए। 6 दिसंबर 1992 को देशभर से 1.50 लाख कारसेवक अयोध्या में पहुँचे। पहली बार हिन्दू जनमानस में यह चेतना देखी गयी रामजन्म भूमि आंदोलन में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ विश्व हिन्दू परिषद, भारतीय जनता पार्टी की भूमिका मुख्य रही।

इस विषय में **'द टाइम्स ऑफ इंडिया'** के पूर्व संपादक गिरीलाल जैन ने कहा कि- 'गांधीवादी व्यवस्था में सबसे बड़ी कमजोरी यह रही कि उनके जाने के बाद उनके विचार का कुछ नहीं बचा। जबकि भारत की अन्तश्चेतना को जागृत करने वाले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और उसके विचार शिविर के संगठन-विश्व हिन्दू परिषद और भाजपा जैसे संगठनों में व्यक्ति विशेष के आने-जाने का विचारों की शक्ति ओर जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा और ना ही पड़ेगा[144]।

वह आगे कहते है कि-'भारत में 20 वीं शताब्दी में कोई यदि कोई हिन्दू

संगठन उभरा, जिसने **'व्यक्ति' से अधिक 'विचारों'** को महत्त्व दिया तो वह एकमात्र राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ था। संघ के डॉ. हेडगेवार श्रीगुरुजी, बालासाहब देवरस ने इस शक्ति को पहचाना[145]। रामजन्मभूमि आंदोलन ने बिखरे हुए राष्ट्रवाद को धर्म से जोड़कर इसे एक **हिन्दू राष्ट्रवाद** के राजनीतिक आंदोलन में बदल दिया। राम जन्मभूमि आंदोलन ने पहली बार भारत में हिन्दू राष्ट्रवाद को एक सामूहिक विवेक में बदल दिया।

रामसेतु विवाद–

भारत के दक्षिण–पूर्वी तट पर रामेश्वरम् और श्रीलंका के उत्तर–पश्चिमी तट के पास मन्नार द्वीप के बीच चूना पत्थर की 48 किलोमीटर बनी है। इसे हिन्दू पौराणिक गाथाओं में भगवान श्रीराम ओर उनकी वानर सेना द्वारा लंका पार करने हेतु बनाया गया, बताया है। वहीं इस्लामिक कथाओं के अनुसार एडम ने इस पुलमा उपभोग आदम की चोटी तक पहुँचने के लिए किया था। जहाँ वह एक पैर पर 1000 वर्षो तक पश्चाताप के कारण खड़ा रहा।

इसी रामसेतु को यूपीए सरकार के **'सेतु समुद्रम परियोजना'** के नाम पर तोड़ने की बात की थी। सेतु समुद्रम परियोजना का उद्देश्य 83 किलोमीटर लंबे गहरे पानी का चैनल निर्माण कर भारत और श्रीलंका के बीच एक शिपिंग मार्ग बनाना था। इसका उद्घाटन 2005 में तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने किया। लेकिन इसका दक्षिणपंथी हिन्दू संगठनों ने कहा विरोध किया।

'आर्गनाइजर' पत्र में वर्ष 2007 में एक लेख में लेखक गौतम सेन ने लिखा कि– 'रामसेतु' चैनल को इस आधार पर खोदना कि, ना तो राम थे और ना ही कोई और, ना ही कोई ऐतिहासिक पुल, बहुत अपमानजनक है, यह एक पूरी सभ्यता को उसकी नींव को नकारकर अनाथ करने के बराबर है।

ज्ञातव्य है कि इस विषय पर सत्ता के डर से हिन्दी, अंग्रेजी या अन्य किसी अखबार में सही सूचना नहीं दी गयी। केवल राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और इससे जुड़े संगठनों ने ही इसका कड़ा विरोध किया। प्रमुख विपक्षी दल भाजपा नेता सुब्रमण्यम स्वामी ने यूपीए–1 सरकार द्वारा शुरू की गयी विवादास्पद सेतु समुद्रम शिप चैनल परियोजना के खिलाफ अपनी जनहित याचिका में 'रामसेतु' को राष्ट्रीय स्मारक घोषित करने का मुद्दा उठाया था। इसका मामला शीर्ष अदालत तक पहुँचा, जिसने वर्ष 2007 में रामसेतु परियोजना के काम पर रोक लगा दी गयी[146]।

ज्ञातव्य है कि सन् 1993 में ही नासा ने इस रामसेतु की सैटेलाइट तस्वीरें जारी करके यह सुनिश्चित किया था कि–'रामसेतु' मानव द्वारा निर्मित पुल है। समुद्र विज्ञान के शोध अनुसार 'रामसेतु' 7 हजार साल पुराना मानवनिर्मित पुल है।

बाल्मिकी रामायण इस सेतु का नाम 'नलसेतु' था। इसके अलावा कालीदास के रघुवंश तथा पुराणों विष्णु पुराण, स्कंद पुराण, अग्नि पुराण एवं ब्रह्म पुराण में भी इस सेतु का उल्लेख किया गया है। उसी समय भाजपा डॉ. सुब्रह्मण्य स्वामी ने 'रामसेतु' को राष्ट्रीय धरोहर घोषित करने की मांग की थी।

हिन्दू आतंकवादः एक कल्पित कथानक-

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ चूंकि हिन्दू धर्म, हिन्दुत्व की बात करता रहा है। इसलिए समय-समय पर राष्ट्रविरोधी ताकतों द्वारा इस संगठन का उग्र विरोध होता रहा है। यद्यपि संघ में जाति और धर्म संबंधी कोई भेद नहीं है। यहाँ संघ की शाखाओं और संघ शिक्षा वर्गों में भी सभी वर्ग के लोग सम्मिलित होते रहे हैं। तथापि जानबूझकर इस संगठन की राष्ट्रवादी और सेवाभावी गतिविधियों को भी षडयंत्र का हिस्सा बनाकर कभी मुस्लिम विरोधी, कभी ईसाई विरोधी बनाकर प्रस्तुत किया जाता रहा।

इसमें कोई संशय नहीं है कि, स्वतंत्रता पूर्व तथा स्वतंत्रता पश्चात् भी लगभग 70 वर्षों तक स्वतंत्र भारत ने विभिन्न राज्यों में जो आतंकी गतिविधियों में एक बड़ा अर्थ और जन का नुकसान झेला। उसके पीछे मुख्य कारण इस्लामिक आतंकवाद था। किंतु मुस्लिम तुष्टिकरण में जुटी केन्द्रीय सरकारों ने वोट बैंक के लिए शुरु से ही हिन्दू जनता पर ही शिकंजा करना और इस्लामिक आतंकवाद को फलने-फूलने, पलने-बढ़ने का अवसर दिया।

लेकिन जब आतंकवाद अपने विकराल रूप में राष्ट्रीय खतरा बनने लगा। तब केन्द्रीय सरकार ने एक नया शब्द **'हिन्दू आतंकवाद'** गढ़ लिया। अब चूंकि हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुत्व की बात राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भारतीय जनता पार्टी ही एकमात्र पुरजोर तरीके से करती है। अतः उससे जुड़े लोगों, कार्यकताओं/ स्वयंसेवकों पर हिन्दू आतंकवादी होने का झूठा आरोप गढ़ा जाने लगा।

25 अगस्त 2010 को डीजीपी और आईजी के वार्षिक सम्मेलन को संबोधित करते हुए गृहमंत्री चिंदम्बरम ने कहा था- "मैं आपको सावधान करना चाहता हूँ कि भारत में आतंकवादियों की घुसपैठ कराने की कोशिशों में कोई कमी नहीं है। भारत में पुरूषों एवं महिलाओं को कट्टरपंथी बनाने के प्रयासों में कोई कमी नहीं आयी है। इसके अलावा हाल में **'भगवा आतंकवाद'** सामने आया है, जो अतीत में कई बम विस्फोटों में पाया गया है।

ज्ञातव्य है कि देश में वर्ष 2006 में महाराष्ट्र के मालेगाँव शहर में विस्फोट, हरियाणा में समझौता एक्सप्रेस में विस्फोट, हैदराबाद में मक्का मस्जिद में विस्फोट वर्ष 2007 में अजमेर शरीफ दरगाह बम विस्फोट हुए थे। बाद में चिदंबरम् के स्थान पर केन्द्रीय गृहमंत्री का प्रभार संभालने वरिष्ठ कांग्रेसी नेता सुशील कुमार

शिंदे ने भी 20 जनवरी 2013 को यह ब्यान दिया कि– 'भाजपा और आर.एस.एस. 'भगवा आतंकवाद फैलाने के लिए आतंकी प्रशिक्षण शिविर चलाते हैं। बाद में भी वह अपने ब्यान पर डटे रहे कि **'भगवा आतंकवाद'** है जो मैंने कहा[147]। इसके अलावा समय-समय पर कांग्रेस के वरिष्ठ दिग्विजय सिंह ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर **'संघी आतंकवाद'** और **'हिन्दू आतंकवाद'** का आरोप लगाने का निरंतर कार्य किया। ऐसे छद्म आरोपों का सही उत्तर देने के लिए संघ ने मीडिया का सकारात्मक प्रयोग करना प्रारंभ कर दिया। पूर्व केन्द्रीयमंत्री (कानून विदेश प्रभार) और अधिकवक्ता कांग्रेसी नेता सलमान खुर्शीद ने अपनी नई पुस्तक 'सनराइज ओवर अयोधया: नेशनहुड इन अवर टाईम्स' 2021 में हिन्दू, हिन्दुत्व की बात करने वाले संगठनों को इस्लामी कट्टर क्रूर आंतकी संगठनों-आई. एस. आई. एस. और नाईजीरियाई बोको हरम के समकक्ष बताया है।

जिन हिन्दू संगठनों विशेषकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल आदि को सलमान खुर्शीद ने कट्टर इस्लामिक संगठनों के समकक्ष बताया है। दरअसल इन संगठनों ने विभाजन के समय से लेकर वर्तमान समय तक यद्यपि हिन्दुओं और हिन्दू धर्म की रक्षा अवश्य की थी। जैसे-अयोध्या में भव्य राम मंदिर की पुनर्स्थापना, कश्मीरी पंडितों की घाटी में सकुशल वापसी, उसके लिए सहिष्णु वातावरण का निर्माण, लोकतांत्रिक-संवैधानिक व्यवस्था में हिन्दू हितों की बात आदि। किन्तु कभी इन संगठनों द्वारा क्या गैर हिन्दुओं के प्रति हिंसा, हत्या की कोई खबर आई? इसका उत्तर होगा **'नहीं'**। ज्ञातव्य है कि अगस्त 2010 में केन्द्रीय गृहमंत्री पी. चिदम्बरम् ने भगवा आतंकवाद का प्रयोग सबसे पहले किया था। इसी को गृहमंत्री सुशील कुमार शिंदे ने जनवरी 2013 में 'हिन्दू आतंकवाद' रूप में बदला। दिग्विजय सिंह ने भी 26 नवम्बर 2008 के मुबंई हमलों में पाकिस्तान समर्थित आतंकियों एवं आतंकवाद को क्लीन चिट देते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को ही कटघरे में खड़ा कर दिया। जबकि हिन्दू, हिन्दुत्व और हिन्दूवाद को न्यायिक प्रक्रिया में भी सहिष्णु बताया गया है।

14 जनवरी 1966 को स्वामी नारायण मामले में तत्कालीन प्रधान न्यायाधीश पी.बी. राजेन्द्र गड़कर की खंडपीठ ने कहा था कि- हिन्दू धर्म मोटे तौर पर जीवन के एक तरीके के रूप में वर्णित किया जा सकता है[148]। इसी तरह 1976 में भी मुख्य न्यायाधीश एन. एन. रे की खंडपीठ ने फैसला देते हुए कहा था कि-'हिन्दू दर्शन किसी के चयन या उन्मूलन के बिना ही अपने भीतर कई विश्वासों, प्रथाओं और विविध पूजा के रूपों को समाहित करता है[149]।

यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि 'मीडिया' जो प्रचार का माध्यम है। उसका प्रयोग हिन्दुस्थान में हिन्दू, हिन्दुत्व और हिन्दू धर्म के खिलाफ तथा हिन्दुत्व की बात करने वाले संगठनों के विरूद्ध दुष्प्रचार करने के लिए, वोट बैंक की

राजनीति के तहत बहुत ज्यादा किया गया। प्राचीन ऐतिहासिक दस्तावेजों को भी यदि खंगाला जाए तो कहीं भी 'हिन्दू समाज' आंतकी रूप में कभी भी कहीं नहीं दिखता। भारत में 'हिन्दू आतंकवाद' कांग्रेस पार्टी द्वारा मुस्लिम समाज के तुष्टिकरण के लिए गढ़ा गया एक ऐसा नैरेटिव था, जिसका आधार-बुनियाद झूठ पर रखी गयी थी। इस बारे में गृहमंत्रालय के पूर्व अधिकारी, आर. वी. एस. मणि ने लिखा है कि-**NIA** ने 2008 के मुबंई हमले के बाद 2010 तक जितनी भी जांच की, वह 'हिन्दू आतंकवाद' की थ्योरी को प्रमाणित करने के उद्देश्य से ही की[150]।

सत्ता प्राप्ति, सत्तासुख के लिए ही समझौता एक्सप्रेस विस्फोट, मालेगांव तथा अजमेर बलास्ट में पाए गए विस्फोटों में पाकिस्तान का हाथ होने पर भी जानबूझकर संघ विरोधी सरकार द्वारा **'हिन्दू आतंकवाद'** का नैरेटिव गढ़कर एक नया इतिहास बनाने की कोशिश की गयी।

बाटला हाउस एनकाउंटर-

स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात् वर्ष 2014 तक नरेन्द्र मोदी सरकार बनने से पूर्व देश में लगभग 2500 भयंकर दंगे/गोलीकांड और बमबाजी जैसी घटनाएँ हुईं। जिन्होंने देश के साम्प्रदायिक सद्भाव का ताना बाना छिन्न भिन्न कर दिया। इन्हीं में से एक प्रमुख घटना रही 'बाटला हाउस मुठभेड़' जिसने आतंकियों का समर्थन और देश की आतंरिक सुरक्षा पर प्रश्न चिन्ह खड़ा किया।

दक्षिणी दिल्ली का एक मध्यवृत्त **मुस्लिम बहुल इलाका** रहा है-**जामिया नगर।** शुक्रवार 19 सितंबर 2008 दिल्ली पुलिस की विशेष शाखा ने दक्षिण दिल्ली जामिया नगर स्थित बाटला हाउस मुहल्ले के मकान नंबर एल 18 घर धावा बोला। इसमें दो संदेहास्पद आतंकवादी जो जयपुर, अहमदाबाद हैदराबाद तथा हाल ही के दिल्ली धमाकों में अहम् भूमिका निभाने वाला आतंकवादी संगठन 'इंडियन मुजाहिदीन' के सदस्य थे। जो मुठभेड़ के दौरान गोलीबारी में मारे गए। इंस्पेक्टर मोहनचंद शर्मा, दिल्ली पुलिस के सम्मानित अधिकारी, जिन्होंने इस अभियान का नेतृत्व किया। वह भी गोली के शिकार होकर शहीद हो गए[151]। इस मुठभेड़ में 2 आतंकी मारे गए 1 पकड़ा गया, और 2 आतंकी फरार हो गए थे। बाटला हाउस मुठभेड़ जामिया नगर की चर्चित घटना बनी। इस घटना के तुरंत बाद स्थानीय मुस्लिम घटनास्थल पर पहुँचकर पुलिस कार्यवाही के विरूद्ध ही नारेबाजी करने लगा। चूंकि पुलिस की कार्यवाही में चलाई गयी गोली का शिकार हुआ आंतकी जामिया मिलिया विश्वविद्यालय का छात्र था। इसलिए स्थानीय मुसलमान नागरिक उन आतंकियों के पक्ष में नारे लगाकर इस घटना को मजहबी रंग देने लगे।

इस घटना की खबर अगले दिन समाचार पत्रों में आयी। अंग्रेजी अखबार 'द

टाइम्स ऑफ इंडिया' ने लिखा कि- "बड़ी चिंता का विषय है कि मुस्लिम बहुल जामिया नगर के कुछ व्यक्ति इस मुठभेड़ के विरोधी है। 'द इंडियन एक्सप्रेस', 'द हिन्दू', 'द ट्रिब्यून', 'द पायेनियर', 'द स्टेट्समैन' आदि समाचार पत्रों ने बाटला हाउस की घटना पर मुस्लिम पक्ष द्वारा आतंकियों को समर्थन देने के पक्ष पर आश्चर्य प्रकट किया। साथ इस मुठभेड़ में मारे गए इंस्पेक्टर शर्मा को एक वीर शहीद का स्थान दिया।

इस घटना के प्रति अंग्रेजी अखबारों से भी अधिक तीखी प्रतिक्रिया हिन्दी मीडिया ने की थी। तथा हिन्दी समाचार पत्रों सहित मीडिया ने देश में पनप रहे जेहादियों के विरूद्ध पुलिस कार्यवाही का समर्थन किया। 'अमर उजाला', 'दैनिक जागरण', 'राष्ट्रीय सहारा', 'दैनिक भास्कर', एवं 'जनसत्ता' सभी ने बाटला हाउस प्रकरण में आतंकवादियों का समर्थन करने वाले स्थानीय समर्थन को आड़े हाथों लिया। 'राष्ट्रीय सहारा' ने आतंकवाद पर कड़े कानून बनाने के मुद्दे पर सरकार के ढुलमुल रवैये की आलोचना की। परंतु **उर्दू मीडिया** ने पूरे बाटला हाउस मुठभेड़ को मात्र मुसलमानों के खिलाफ पुलिस एवं खुफिया एजेंसियों का पूर्वाग्रह माना। भारतीय पुलिस ने जिस इंडियन मुजाहिदीन के 21 आतंवादियों पर 2100 पृष्ठों की चार्जशीट 17 फरवरी 2009 को न्यायालय में प्रस्तुत किया। उसमें अधिकांश आजमगढ़ (उ.प्र.) के ही सुशिक्षित मुस्लिम नौजवान थे। किन्तु फिर भी 19 सितंबर 2008 से लेकर फरवरी 2009 तक **उर्दू मीडिया** लगातार आतंकियों को बेकसूर, मासूम ही ठहराते रहे। साथ ही स्वर्गीय मोहनचंद शर्मा की शहादत पर ही सवालिया निशान लगाते रहे।

बाटला हाउस एनकाउंटर पर **उर्दू समाचार पत्रों** के संपादकीय रिपोर्टिंग, विश्लेषण और आलेखों का स्वर पूरी तरह से मुख्यधारा की मीडिया-समाचार पत्रों का विरोध करने वाला रहा। धर्मनिरपेक्षता, राज्य की सुरक्षा, आतंकवाद से हटकर हिन्दू मुस्लिम के विवाद एवं राजनीति के सांप्रदायिक धरातल पर इस घटना की व्याख्या करने की कोशिश ही होती रही। मुंबई से प्रकाशित **'दैनिक उर्दू टाइम्स'** ने अपने संपादकीय में एनकाउंटर को फर्जी बताया[152]। इस संपादकीय मे दोनों संदिग्ध आतंकवादियों को **बच्चों** की संज्ञा दी गयी[153]। दैनिक **'सफाहत'** में जामिया मीलिया इस्लामिया के उपकुलपति द्वारा आतंकवादी छात्रों की मदद करने पर उनकी प्रशंसा की गयी थी[154]।

इस उर्दू मीडिया ने पूरा प्रकरण हिन्दू संगठनों की ओर मोड़ने का भी दुषचक्र रच दिया। **'नई दुनिया'** पत्र ने 'बाटला हाउस' मुठभेड़ पर प्रश्नचिन्ह लगाते हुए लिखा कि- 'सरकार संघ परिवार के दबाव में आतंकवाद विरोधी अभियान के तहत बेगुनाह लड़कों की हत्या कर रही है। **'रोजनामा राष्ट्रीय सहारा उर्दू'** ने भी बाटला हास एनकाउंटर को फर्जी मुठभेड़ ठहराने में पूरा जोर लगा दिया। उसने इस संबंध

में 1 महीने तक नियमित अभियान चलाया। जिसमें इस कठिन एनकांउटर और देश में हो रही आतंकवादी घटनाओं में **'हिन्दू उग्रवादी'** का हाथ होने के आरोप को सिद्ध करने के लिए जमकर समाचार और लेख प्रकाशित किए। वैसे तो इस समाचार पत्र ने जबकि एनकाउंटर हुआ था, तभी से इसकी सच्चाई पर प्रश्नचिन्ह लगाए थे।

इस समाचार पत्र के संपादक अजीज बर्नी ने 'मुसलमानाने हिन्द' 'माजी', 'हाल' और 'मुस्तकबिल' पर लगभग 100 से अधिक विशेष संपादकीय इस समाचार के प्रथम पृष्ठ पर छापे। इस समाचार पत्र में आर. एस. एस. (राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) हिन्दू संगठनों सहित मीडिया व सरकार पर मुस्लिम विरोधी होने का आरोप लगाया गया।

मुबंई में आतंकी हमला-

भारतीय इतिहास के सबसे काले दिनों में एक प्रमुख है- **26 नवंबर 2008** को पाकिस्तानी आतंकियों ने मुबंई में ताज होटल, ओबराय ट्राइडेंट और नरीमन हाउस में धावा बोलकर अंधाधुंध फायरिंग की। जिसमें 64 लोग मारे गए तथा 600 से अधिक घायल हुए। इसमें सभी आतंकी मारे गए। मगर एक आतंकी मोहम्मद अजमल आमिर कसाब जिंदा पकड़ा गया। अंग्रेजी अखबार 'द टेलीग्राम' 'ने इसे 'मुबंई पर युद्ध' कहा[155]। 'टाइम्स ऑफ इंडिया' ने इसे मुबंई में हो रहा युद्ध बताया[156]। 'स्टेट्समैन' ने इसको 'मुबंई की घेराबंदी' बताया[157]। 'द पायनियर' ने इसे राष्ट्र के विरूद्ध घोषित युद्ध बताया[158]। इसके बाद के दिनों में समाचारों के केन्द्र में सुरक्षा और खुफिया तंत्र की नाकामी प्रमुख रही। 'द स्टेट्समैन' ने कहा कि- मुबंई हमलों ने भारत के 7516 किलोमीटर लम्बी तटरेखा को असुरक्षित बताया[159]। 'द हिन्दू' अखबार ने कसाब के पूछताछ की पूरी रिपोर्ट छापी। जिसमें आतंकवादी प्रशिक्षण शिविरों में आतंकी तैयार करना, इंटरनेट का इस्तेमाल कर आतंकी घटनाओं को अमल करना आदि[160]। समाचार प्रकाशित होते रहे। हिन्दी समाचार पत्रों में **'आज', 'दैनिक जागरण', 'हिन्दुस्तान'** आदि ने भी मुंबई आतंकी हमले में प्रत्यक्ष रूप से पाकिस्तान की संलिप्तता, भारतीय खुफिया तंत्र की नाकामी, सुरक्षा व्यवस्था पर प्रश्नचिन्ह लगाया। हिन्दी समाचार पत्रों ने सभी राजनीतिक दलों को आतंकवाद की समस्या के हल निकालने हेतु एकजुट रहने को कहा। 'अमर उजाला' समाचार पत्र ने संसद में विपक्ष के नेता लालकृष्ण आडवाणी द्वारा उद्धृत एक वाक्य को प्रमुख खबर बनाया। जिसमें उन्होंने कहा था कि- **'वचं पंचाधिकम् शतम्'** इसका अर्थ था कि-कौरव 100 और पांडव पाँच थे। लेकिन बाहरी शक्ति से लड़ने के लिए वे **स्वयं को 105** मानते थे। आडवाणी ने कहा कि- आतंकवाद से लड़ने के लिए

हमें आपसी मतभेद मिटाने होंगे[161]। लेकिन इतनी बड़ी राष्ट्रीय आपदा के समय भी उर्दू अखबार की सोच उल्टी दिशा में ही चलती रही।

भारतीय **उर्दू प्रेस** ने इस हमले में इजराइल की गुप्तचर एजेंसी मोसाद और अमेरिकी गुप्तचर ऐजेंसी सी.आई.ए. का हाथ घोषित कर दिया। इन उर्दू अखबारों ने यह संदेश देने की कोशिश कि- मुंबई हमलों में पाकिस्तान एवं उसकी गुप्तचर ऐजेंसी आई. एस. आई. या इंडियन मुजाहिदीन का हाथ नहीं है। यही नहीं उर्दू अखबारों ने 26 नवंबर 2008 में हुए मुंबई में आतंकी हमलों को बाबरी मस्जिद, गुजरात दंगो, और मालेगांव प्रकरण से जोड़ने जैसा अनर्गल प्रलाप किया। साथ ही **मुंबई हमले के सीधे-सीधे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और हिन्दूवादी संगठनों** को इसका आरोपी बनाकर प्रस्तुत किया।

ज्ञातव्य है कि चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के मुख्य पत्र **'पीपुल्स डेली'** ने 28 नवंबर के अंक में अपनी संपादकीय में 'मुंबई में हुए हमलों के पीछे **'हिन्दू आतंकवादियों का हाथ'** बताया था। यही बात कई पाकिस्तानी समाचार पत्रों जैसे- 'जंग', 'नेशन', 'डान' और 'स्टार' ने भी यही बात कही थी। इन्हीं की लकीर पर चलते हुए भारतीय उर्दू समाचार पत्र **'रोजनामा राष्ट्रीय सहारा' (उर्दू)** के संपादक अजीज बर्नी ने भारत-पाकिस्तान संबंधों और इस्लामिक आतंकवाद को 'हिन्दू आतंकवाद' की ओर मोड़ने की कोशिश करते हुए लगभग 100 लेखों की श्रृंखला प्रकाशित की थी। इस अखबार ने आतंकवादी हमलों के पीछे मोसाद, इजराइल और हिन्दू कट्टरवादियों सहित संघ के हाथ होने का आरोप लगाया[162]।

'उर्दू टाइम्स' में अपने पत्र के मुख्य पृष्ठ पर अमरीश मिश्रा का लेख छपा। जिसमें लेखक ने आरोप लगाया था कि 'आर.एस.एस. मोसाद और छोटा राजन के दरम्यान गठजोड़ बताया[163]। अमरीश मिश्रा के इस लेख को कई अन्य उर्दू अखबारों जैसे 'रहनुमा-ए-मुल्क', 'सियासत', 'आजाद हिन्द सहाफत' आदि ने भी प्रमुखता से छापा। 'उर्दू टाइम्स' अखबार ने भारत के सबसे बड़े राष्ट्रवादी संगठन 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' की ओर मुंबई हमलों का आरोप लगाते हुए कहा कि-'कल से मुंबई में स्थानीय दहशतगर्दी का जो सिलसिला शुरु हुआ है। उस पर मोसाद की मोहर तो है ही, साथ ही मोसाद का भारतीय सहयोगी **संघ परिवार पागल** हो गया है[164]। 'उर्दू टाइम्स', सहित 'जदीद मरकज', 'दैनिक आजाद हिन्द', 'मशरिक' ने 5 दिसम्बर 2008 के समाचारों में मुंबई हमलों के पीछे **हिन्दू फिकरापस्तों** का हाथ बताया। इन्हीं समाचार पत्रों ने 6 दिसम्बर के अंक में भी हिन्दू उग्रवादियों की बात की। 'मुन्सिफ' समाचार पत्र ने पंजाब यूनिवर्सिटी की एक छात्रा बुशरा मुनीर का बयान उद्धृत करते हुए दावा किया गया कि 'यह हरकत' **'हिन्दू आतंकवादियों'** की है, जो कि इस आतंकवादी हमलों से हिन्दुस्तानी जनता का ध्यान **संघी आतंकवाद** की ओर से मोड़कर पाकिस्तान की ओर मोड़ना चाहते हैं[165]।

केन्द्रीय मंत्री द्वारा संघ परिवार पर आरोप-

17 दिसम्बर 2008 को केन्द्रीय अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री अब्दुल रहमान अंतुले ने 26 नवंबर 2008 में हुए मुंबई हमलों पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा था कि- 26/11 की रात को मुंबई एटीएस के चीफ हेमंत करकरे, अशोक काम्टे और विजय सालस्कर की हत्या के पीछे कोई गहरी साजिश हो सकती है। इसी ब्यान में उन्होंने दबी जुबान से **'हिन्दू आतंकवादियों'** की भी बात की[166]। यद्यपि अंतुले के बयान पर हिन्दी एवं अंग्रेजी मीडिया ने मिली-जुली प्रतिक्रिया ही दी। किन्तु उर्दू मीडिया ने उन्हें उर्दू अखबारों का प्रवक्ता बना दिया। देशभर में उर्दू समाचार पत्रों ने उनकी निडरता दिखाने के लिए उन्हें बधाई दी। उनके बयान पर 'हिन्दुस्तान एक्सप्रेस' के मुख्य समाचार पत्र का शीर्षक था- 'एटीएस चीफ का **कातिल भगवा ब्रिगेड** तो नहीं।

इसी तरह समाजवादी पार्टी के सांसद रशीद मसूद को भी एटीएस के अधि कारियों की हत्या में **'हिन्दू उग्रवादी'** का हाथ दिखाई पड़ा। राज्य सभा के जनता दल (यू) के सांसद एजाज अली, ओर उत्तर प्रदेश से राज्यसभा के निर्वाचित निर्दलीय उम्मीदवार मोहम्मद अदीब ने भी अंतुले की बात का समर्थन करते हुए **'हिन्दू उग्रवाद'** की बात की। 'दावत' समाचार पत्र ने भी लिखा, कि- देश में 90 प्रतिशत लोग अंतुले से सहमत हैं कि इन हत्याओं के पीछे **'हिन्दू उग्रवादियों'** का हाथ है[167]। इस तरह अंतुले के बयान का सहारा लेकर एक बार फिर से उर्दू मीडिया ने कोई तार्किक बयान देने के स्थान पर **सारा दोषारोपण हिन्दू संगठनों** और **हिन्दू संस्थाओं** पर ही लगा दिया। इस तरह बाटला हाउस एनकाउंटर जो 19 जुलाई 2008 को हुआ था। इसमें तमाम तथ्यों को दरकिनार कर मीडिया विशेषकर उर्दू मीडिया और राजनीतिज्ञों ने पुलिस व्यवस्था पर प्रश्नचिन्ह लगाते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को ही आरोपित बनाने का प्रयास किया।

इसी वर्ष मुंबई में हुए आतंकी हमलों के विरोध के स्थान पर भी उर्दू मीडिया हिन्दू संगठनों और हिन्दुओं को ही उग्रवादी, आतंकी बताता रहा। **'हिन्दू आतंकवाद'** और **'हिन्दू उग्रवाद'** को आरोप लगाने पर अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री अब्दुल रहमान अंतुले के साहस की तारीफ की गयी। आतंकवाद के प्रश्नों का विश्लेषण करने में उर्दू प्रेस/मीडिया ने अयोध्या के विवादित ढांचे के ढहने, गुजरात दंगों, अल्पसंख्यकों पर अत्याचार, मुसलमानों की गरीबी और बेरोजगारी के कारण में हिन्दू संगठनों का ही आधार बनाया और इसी परिप्रेक्ष्य में सामग्री को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया।

इस प्रकार देश की कुछ बड़ी घटनाओं के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि देश की मिडिया किस प्रकार षडयंत्र के तहत एक राष्ट्रवादी संगठन को हमेशा घेरे में लेकी काल्पनिक मोड़ देजी रही।

संदर्भ सूची

1. देवेन्द्र स्वरूप, संघ बीज से बृक्ष तक, पृ॰ 34।
2. वही, पृ॰ 44।
3. दैनिक तरूण भारत, नागपुर (महाराष्ट्र) स्वातंत्र्य-दिन रौप्य महोत्सव विशेषांक, सन् 1972 पृ॰ 17-19।
4. देवेन्द्र स्वरूप, 'पांचजन्य पत्र, 3 जुलाई 1994।
5. देवेन्द्र स्वरूप, संघ बीज से बृक्ष तक, पृ॰ 96।
6. वही।
7. वही।
8. वही, पृ॰ 99।
9. वही, पृ॰ 193।
10. वही।
11. वही, पृ॰ 195।
12. वही, पृ॰ 270।
13. नरेन्द्र ठाकुर, 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का दृष्टिकोण' प्रस्तावना, पृ॰ 5, विचार विनिमय प्रकाशन 2017।
14. वही, पृ॰ 10।
15. वही।
16. वही, 'संपूर्ण गांधी वाङ्गमय' खंड 89, पृ॰ 215-217, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार।
17. वही, पृ॰ 31।
18. वही।
19. वही, पृ॰ 44।
20. वही, पृ॰ 48।
21. वही, पृ॰ 49।
22. पूर्वोत्तर के ईसाइकरण के दुष्परिणाम, संपादकीय, दैनिक जागरण शुक्रवार, 7 जुलाई 2023।
23. नरेन्द्र ठाकुर, 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का दृष्टिकोण' प्रस्तावना, विचार विनिमय प्रकाशन 2017 पृ॰ 51।
24. वही।
25. 'राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ' बच्चा पकड़ने वाला गिरोह' साम्प्रदायिकता विरोधी समिति, गुरुद्वारा, खाबगंज, नई दिल्ली 1975, पृ॰ 4।
26. वही पृ॰ 11।
27. https//hi.m.wikipedia.org.
28. विकीपीडिया- 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और स्वतंत्रता संग्राम।
29. देशराज गोयल **RSS** अनुवाद विश्वनाथ त्रिपाठी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1979, पृ॰ 10।

30. वही पृ॰ 11।
31. सी. पी. भिशिकर 'केशव संघ निर्माता' पृ॰ निर्माता।
32. देशराज गोयल, वही पृ॰ 35।
33. जी. एस. हुद्दर, 'द आर. एस एस. एंड नेताजी' द इलस्ट्रेड वीकली ऑफ इंडिया, 7 अक्तूबर 1979।
34. देशराज गोयल– 'वही' पृ॰ 52।
35. वही।
36. सी. पी. भिशिकर – 'केशव संघ निर्माता' पृ॰ 43–44।
37. वही।
38. जी न्यूज डेस्क– 7 जून 2018।
39. सी. पी. भिशिकर 'केशव संघ निर्माता' पृ॰ 98।
40. देसराज गोयल वही पृ॰ 79।
41. वही।
42. "दि प्रिंट" में प्रकाशित अरुण चंद का लेख– "आत्मरक्षा की ट्रेनिंग, रात–दिन का पहरा विभाजन के समय आर. एस. एस ने क्या भूमिका निभाई" 5 सितंबर 2021।
43. वही।
44. देशराज गोयल, वही पृ॰ 81।
45. सरकारी विज्ञप्ति 4 फरवरी 1948।
46. जस्टिस ऑन ट्रायल : हिस्टोरिक डॉक्यूमेंट ऑफ गुरुजी, गवर्नमेंट कोरेस्पांडेंस।
47. वही, पृ॰ 24–25।
48. वही, पृ॰ 26–28।
49. देशराज गोयल, वही पृ॰ 83।
50. देशराज गोयल, वही पृ॰ 83।
51. वही पृ॰ 85।
52. वही पृ॰ 130।
53. वही पृ॰ 133।
54. इस कथन के विषय में स्वयं लेखक देसराज गोयल ने लिखा है कि– यह कथन गोलवलकर जी के हैं। इसका कोई लिखित प्रमाण नहीं हैं।
55. आर्गनाइजर, 8 अप्रैल 1971।
56. वही मधु लिमए 'आर. एस. एस. परिवार : धर्म और राजनीति' समता ट्रस्ट भोपाल (म.प्र.) सन् 1992, पृ॰ 18।
57. वही, पृ॰ 19।
58. वही, पृ॰ 20।
59. वही, पृ॰ 21।
60. वही, पृ॰ 37।
61. वही, पृ॰ 71।
62. वही।

63. ए. "यूरर, द मौनमेन्टल एण्डीक्विहीज एंड इन्स्क्रिप्शंस इन नार्थ वेस्टर्स प्राविंसिस एंड अवध, पृ॰ 98-99।
64. अलबरूनी इंडिया संपा. डॉ एडवर्ड सी सैकाऊ, खंड-1, पृ॰ 116-117।
65. वही।
66. मधुलिमए 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ : धर्म और राजनीति' समता ट्रस्ट भोपाल (म.प्र.) सन् 1992, पृ॰ 69।
67. ए. "यूरर, 'द मोनूमेंटल एंटी क्विटीज एंड इनिसक्रप्शंस इन द नार्थवेर्स्टन प्राविंसिस एंड अवध' पृ॰ 106।
68. शमसुल इस्लाम-' आर. एस. एस. एस. की राष्ट्र विनाश यात्रा ' प्रकाशक मीडिया हाउस दिल्ली, 2002, प्रस्तावना।
69. वही पृ॰ 17।
70. वही।
71. वही।
72. वही पृ॰ 29।
73. P.M. Chopra, B.N. Puri, M.N. Das, A.C. Pradhan, (2003) A Comprehensive History of India, Vol-2, New Delhi, p. 13.
74. Elliot and Powson 'The History of India as told by the its own Historians" The Muhammadan Period 2016, p. 4-10, Vol-3.
75. शमसुल इस्लाम 'आर. एस. एस. एस. की राष्ट्र विनाश यात्रा' मीडिया हाउस, दिल्ली, 2002, पृ॰ 37।
76. वही पृ॰ 37।
77. वही पृ॰ 57।
78. वही पृ॰ 81।
79. शमसुल इस्लाम- 'आर. एस. एस. एस. की राष्ट्र विनाश यात्रा' मीडिया हाउस दिल्ली, 2002, पृ॰ 54।
80. विजय त्रिवेदी 'संघम् शरणम् गच्छामि' वेस्टलैंड प्रकाशन, चेन्नई 2020, पृ॰ 66।
81. राम पुनियानी के लेख का अंश 'क्या मुगलकाल भारत का गुलामी दौर था? 27 सितंबर 2022 चौथी दुनिया पत्र।
82. राम पुनियानी 'लोकतांत्रिक भारत या हिन्दू राष्ट्र, 'संघ परिवार की राजनीति, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2002, पृ॰ 21
83. वही पृ॰ 23।
84. वही पृ॰ 24।
85. वही पृ॰ 24।
86. वही।
87. वही।
88. वही पृ॰ 25।
89. वही।

90. वही।
91. वही।
92. वही।
93. बी. बी. सी. न्यूज हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुत्व और हिन्दुवाद क्या है, आर. एस. एस. एस. का नजरिया? 19 दिसम्बर 2021।
94. राम पुनियानी, 'लोकतांत्रिक भारत या हिन्दू राष्ट्र : संघ परिवार की राजनीति, वाणी प्रकाशन, 2004, पृ॰ 39।
95. वही।
96. संग्रहित प्रति, मूल से 3 दिसंबर 2013 को पुरालेखित। www.hi.m.wikipedia.org.
97. देसराज गोयल, वही, पृ॰ 38।
98. hindi.oneindia.com, 30 September 2022.
99. राम पुनियानी, वही पृ॰ 41।
100. Khaki Shorts an Saffron Flag, by Sumit Sarkar, Tapan Basu, Publisher- Orient Logman limited 1993.
101. राम पुनियानी, वही, पृ॰ 57।
102. वही, पृ॰ 57।
103. वही, पृ॰ 78।
104. वही।
105. वही।
106. वही।
107. वही, पृ॰ 81।
108. राम पुनियानी पृ॰ 64।
109. वही।
110. वही पृ॰ 65।
111. वही।
112. वही, पृ॰ 68।
113. Milli Gazette, 29 मई 2015।
114. Frontline, पत्रिका, ए. जी नूरानी, 25 अक्टूबर 2017।
115. वही।
116. वही।
117. शम्सूल इस्लाम, हिन्दू राष्ट्रवाद और आर. एस. एस, पृ॰ 213।
118. वही।
119. श्री गुरु जी समग्र, खंड 9, पृ॰ 107।
120. वही।
121. **First Post.com** पर प्रकाशित- 10, अप्रैल, 2018।

122. संघ एकात्मता स्रोत, श्लोक सँख्या 30।
123. माणिकचंद्र वाजपेयी व श्रीधर पराड़कर 'ज्योति जला निज प्राण की, सुरूचि प्रकाशन, नई दिल्ली 1999 पृ॰ 359।
124. वही।
125. आनंदपुर साहब, यह गुरु गोविन्द सिंह का आवास तथा सिख धर्म के प्रचार का प्रमुख केन्द्र था, यह स्थान पंजाब राज्य के रूपनगर जिले में है। जिसे गुरुतेग बहादुर ने बसाया था। यह सतलुज नदी के समीप शिवालिक पर्वतमाला से लगा हुआ है।
126. माणिकचंद्र वाजपेयी व श्रीधर पराड़कर 'ज्योति जला निज प्राण की, सुरूचि प्रकाशन, नई दिल्ली 1999 पृ॰ 555।
127. वही 556।
128. वही।
129. ज्योति जला निज प्राण की।
130. वही पृ॰ 412।
131. वही पृ॰ 416।
132. वही पृ॰ 434।
133. दैनिक- आकाशवाणी पत्र, 16 जनवरी 1948, पृ॰ 1 में प्रकाशित।
134. यह जानकारी 'ट्रिब्यून' के सहायक निजी मैनेजर चंड़ीगढ़ निवासी, आर. के. गुप्ता ने दी। संकलित माणिकचंद्र वाजपेयी व श्रीधर पराड़कर 'ज्योति जला निज प्राण की, सुरूचि प्रकाशन, नई दिल्ली 1999 पृ॰ 343।
135. वही, पृ॰ 354।
136. पांचजन्य 1955।
137. 22 अगस्त 1955।
138. वही।
139. वही।
140. डॉ. चंद्र त्रिखा, डॉ. अशोक गर्ग, 'कैसे भूलें आपातकाल का दंश, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली 2018, पृ॰ 80।
141. नरेंद्र मोदी, 'आपातकाल में गुजरात' प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली 2014, पृ॰ 77-78
142. प्र. ग. सहस्रबुद्धे एवं माणिकचंद्र बाजपेयी, आपातकालीन 'संघर्षगाथा' सुरूचि प्रकाशन, नई दिल्ली 2015 पृ॰ 302।
143. वही।
144. पांचजन्य 'भारत सनातन की ओर बढ़ रहा है, गिरिलाल जैन, 27 जनवरी, 1991।
145. वही।
146. 'आउटलुक', बेब ब्यूरो 25 सितंबर 2018।
147. navbharattimesindiatimes.com.
148. बलवीर पुंज, हिन्दू, हिन्दुत्व को बदनाम करने का ाडयंत्र, vskbhart.com 24 नवंबर 2021।
149. वही।

150. यशार्क पाण्डेय, हिन्दू आतंकवाद एक शिगूफा। Opindia.com 18 अप्रैल 2019।
151. द हिन्दू- 'टू टेरोरिस्ट शॉट डेड इन दिल्ली, 20 सितंबर 2008।
152. 'उर्दू टाइम्स', संपादकीय 23 सितंबर 2008।
153. वही।
154. दैनिक 'सफाहत', मुशीर-उल-हसन की निर्भीकता, 27 सितंबर 2008।
155. द टैलीग्राफ, 'वार ऑन मुंबई', 27 नवम्बर 2008।
156. द टाइम्स ऑफ इंडिया, 'इट्स वार ऑन मुंबई' 27 नवम्बर 2008।
157. स्टेट्समैन, 'मुंबई अंडर सीज', 27 नवम्बर, 2008।
158. द पायनियर, 'दिस इज वार अंगेस्ट नेशन' 28 नवंबर 2008।
159. 'द स्टेट्समैन' ऑल एट सी, 28 नवम्बर, 2008।
160. 'द हिन्दू' मुबंई मेसाकर स्टोरी अनफोल्डस् इन टेरोरिस्ट इंटेरोगेशन, 2 दिसम्बर 2008।
161. अमर उजाला, 'हम एक सौ पांच', संपादकीय, दिसंबर 2008।
162. अजीज वर्नी 'भारतीय मुसलमान, अतीत वर्तमान और भविष्य, किस्त-100, 5 जनवरी 2009, रोजनाया राष्ट्रीय सहारा से विशेषांक।
163. सियासत, मुंबई हमला का जिम्मेदार कौन? 28 नवंबर 2008।
164. उर्दू टाइम्स, संपादकीय, 28 नवंबर 2008।
165. मुन्सिफ 'कौन मसुक है', लेखिका बुशरा आबिद, 15 दिसम्बर 2008।
166. द इंडियन एक्सप्रेस, 'अंतुले सेल्फ-गोल : सी ए मालेगांव माईसटरी इन करकरे मुंबई मर्डर, 18 दिसबंर 2008।
167. दावत, 'एक मरकजी वजरी के बयान पर खलबली' पृ॰ 3, 22 दिसंबर 2008।

सप्तम अध्याय

सूचना संप्रेषण के आधुनिक विकल्प और संघ

हमारी सभ्यता और संस्कृति के समान ही सूचना संप्रेषण तकनीकी सूचनाओं के एकत्रीकरण एवं संप्रेषण की कहानी पुरानी है। ज्ञातव्य है कि प्राचीन काल में यांत्रिक साधनों के अभाव में भी सूचनाओं का एकत्रीकरण, संग्रह एवं स्थानांतरण होता था। उस समय गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में भी समस्त ज्ञान कंठस्थीकरण के माध्यम से स्मृति रुप में मस्तिष्क में संजोया जाता था तथा स्मृति में संचित ज्ञान को मौखिक रुप से हस्तांतरित करवाया जाता था।

वर्तमान समय विश्व सूचना क्रांति में प्रवेश कर चुका है। इस क्रांति ने मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित किया है। भविष्य में उत्पन्न होने वाली अनेक चुनौतियों और अवसरों के लिए सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का अध्ययन आवश्यक होता जा रहा है। सूचना की व्युत्पत्ति प्रदत्त से होती है। संचार प्रौद्योगिकी को कम्प्यूटर के नित नये विकास ने और प्रभावी बना दिया है। साथ ही इसे विस्तृत आयाम दिया है। इनके द्वारा विवेचना करने, गणना करने, निर्णय लेने तथा मापन करने जैसे कार्य सरल हो जाते हैं। प्रदत्त वह मूल सामग्री मानी जाती है, जिससे सूचनाओं की उत्पत्ति होती है। चूंकि मूल रुप से प्रदत्तों का स्वयं में कोई अर्थ नहीं होता, अतः उन्हें अपूर्ण माना जाता है। दरअसल प्रदत्त तो वह है- जिसकी सहायता से शोध के निष्कर्ष को वैध और विश्वसनीय माना जाता है। प्रदत्तों की प्रक्रिया करके उनकी विवेचना द्वारा प्रदत्त के अर्थ को समझा जाता है। सूचनाएँ ही मूल सामग्री के रुप में कार्य करती हैं, जिन्हें भविष्यगत प्रदत्तों में परिवर्तित किया जाता है। यही बाद में 'सूचना' का रुप ले लेता है। जैसे-किसी कार्यालय में कार्यरत व्यक्तियों के नाम, आयु, शिक्षा, पद, कार्य आदि के अनुसार उस पूरे कार्यालय के बारे में जानकारी प्राप्त की जाती है।

सूचना सम्प्रेषण के आवश्यक तत्व–

1. सूचना संग्रहण (Information Storage)
2. सूचना सम्प्रेषण (Information Communication)
3. सूचना पुनरुत्पादन (Information Reproduction)

1. सूचना संग्रहण– (Information Storage)

सूचनाओं के संग्रहण में जब से मुद्रण का पदार्पण हुआ। तब से सूचना क्षेत्र में नई क्रांति आई है। आज मुद्रण यानि छपाई के अतिरिक्त सिनेमा, कम्प्यूटर में भी विश्वभर की जानकारियाँ एकत्र है। प्राचीनकाल में यद्यपि मौखिक रुप से सूचनाएँ हस्तांतरित होती थी। किन्तु समय के साथ वह सूचनाएँ अधिकांशत: नष्ट हो जाती थी। इस तरह ज्ञान के प्रचार–प्रसार में सूचनाओं के संग्रहण यानि उन्हें पीढ़ियों तक कण्ठहार बनाने में परेशानी होती थी। इस तरह जिस व्यक्ति तक सूचना पहुँचनी है वहाँ वह नहीं पहुँचती। वर्तमान समय में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी **(Information and Communication Technology) ICT** को **Information Technology** कहा जाता है। **ICT** में वह सभी साधन शामिल होते हैं, जिनका प्रयोग कम्प्यूटर और नेटवर्क हार्डवेयर दोनों और साथ ही आवश्यक सॉफ्टवेयर सहित सूचना एवं सहायता संचार के संचालन हेतु आवश्यक होते हैं। इसमें दूरभाष संचार, प्रसारण मीडिया और सभी प्रकार के आडियो/वीडियो प्रक्रमण एवं प्रेषण शामिल होता है।[1] इस अभिव्यक्ति का पहला प्रयोग सन् 1997 में डेनिस स्टीवेंसन द्वारा ब्रिटेन की सरकार को भेजी गई एक रिपोर्ट में किया गया था।[2]

ICT का उपयोग सभी संचार तकनीकों जैसे–इंटरनेट, वायरलेस नेटवर्क, सेलफोन, सॉफ्टवेयर, कम्प्यूटर, वीडियो कान्फ्रेंसिंग, सोशल नेटवर्किंग और अन्य मीडिया अनुप्रयोगों और सेवाओं के लिए किया जाता है। **ICT** की नवीनतम तकनीकों के कारण अब मुद्रित सामग्री, किताबों के साथ ही अन्य प्रौद्योगिकी साधनों द्वारा सूचना संग्रहण में मदद मिलती है।

2. सूचना संप्रेषण– (Information Communication)

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का दूसरा अनिवार्य तत्व प्राप्त सूचनाओं का हस्तांतरण या सम्प्रेषण है। सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी एवं व्यापक क्षेत्र है, जो सूचना के निर्माण, भंडारण एवं उपयोग तथा संचार के विभिन्न माध्यमों के द्वारा उसको दूसरों तक प्रेषित करने की सुविधा प्रदान करता है। सफल सूचना संचारण की संपूर्ण प्रक्रिया संप्रेषण एवं उसके माध्यम की प्रभाविता पर निर्भर करती है। इसके

लिए नवीनतम तकनीकों माइक, लाउडस्पीकर, सिनेमा, एलसीडी, एलईडी, वीडियो डिस्पले आदि का प्रयोग किया जाता है। इन नवीनतम तकनीकों से एक साथ हजारों-लाखों लोगों तक सूचना पहुँच जाती है। साथ ही उपग्रह की सहायता से एक देश की सूचना दूसरे देश तक पहुँच जाती है।

विभिन्न परिस्थितियों में उपयोग के आधार पर सूचना व संप्रेषण तकनीकों के घटकों का संसाधनों का वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है-

1. **सूचना सम्प्रेषण तकनीकी के आधुनिक उपकरण-**
   कम्प्यूटर, लैपटॉप, नोटबुक, सीडी, डीवीडी, प्रोजेक्टर, स्मार्ट बोर्ड, रिकार्डिंग एवं अन्य दृश्य, श्रव्य संबंधी उपकरण।
2. **सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीक पर आधारित शैक्षिक संसाधन-** ई-अधिगम, ओइआर **(Open Educational Resources)**, मूक्स **(Moocs and massive open online courses)** आदि।
3. **अप्लीकेशन सॉफ्टवेयर-**
   वर्ड प्रोसेसर, प्रेंजेंटेशन सॉफ्टवेयर (पावर प्वाइंट, प्रेंजेंटेशन ट्यूब) स्पीच रिकग्निशन, अडॉसिटी **(Audacity** डिजिटल ऑडियो एडिटर एवं रिकार्डर) हॉट पोटेटोज, काहूत, मेन्टीमीटर, मूडल्स आदि।
4. **सूचना सम्प्रेषण तकनीकी माध्यम-**
   इंटरनेट, इमेल, आडियो एवं वीडियों कांफ्रेसिंग, सोशल नेटवर्किंग साइट।
5. **सूचना सम्प्रेषण तकनीकी शैलियाँ-**
   वर्चुअल कक्षा मिश्रित अधिगम, (परम्परागत कक्षा शिक्षण में ई-अधिगम अथवा डिजिटल मीडिया का अनुप्रयोग कक्षा-कक्ष में किया जाता है फ्लिप्ड अधि गम ब्लेडेड का मिश्रित अधिगम के प्रकार के रुप में शिक्षण अधिगम शैली। आज तकनीकों की सहायता से त्वरित सूचनाएँ पहुँचाना संभव है। इसके कारण विश्व अब वास्तव में अब 'कुटुम्ब' अथवा 'ग्राम' की भांति होता जा रहा है।

सूचना सम्प्रेषण तकनीक का महत्व-

शिक्षा, अनुसंधान के क्षेत्र में सूचना सम्प्रेषण का लक्ष्य इस प्रकार है-

1. सही एवं सकारात्मक सूचना प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचाने में सूचना सम्प्रेषण तकनीक का महत्त्व सर्वाधिक है।
2. पारम्परिक पुस्तकालयों के स्थान पर डिजिटल पुस्तकालयों की स्थापना।
3. सूचनाओं का मूल्य पहचानकर उन्हें जनसंसाधन के लिए उपयोगी बनाना।
4. राष्ट्र के सांस्कृतिक विकास के साथ-साथ विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर उसकी पहचान को सुदृढ़ बनाना।

3. सूचना पुनरूत्पादन- (Information Reproduction)

सूचना संप्रेषण तकनीक का तीसरा एवं महत्वपूर्ण घटक संग्रहीत सूचनाओं की प्रोसेसिंग यानि 'पुनरुत्पादन' है। इससे नवीन अनुसंधानों को दिशा मिलती है। इस कार्य में नवीनतम तकनीकें जैसे- कम्प्यूटर अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वास्तव में संचार प्रोद्योगिकी समग्र सूचनाओं को प्रभावित करने वाली प्रक्रिया है। सूचना सम्प्रेषण तकनीक प्रारंभिक रुप से सूचनाओं का संकलन, प्रोसेसिंग एवं सम्प्रेषण संबंधी सभी कार्य करती है। यह तकनीक संपूर्णता के साथ सूचनाओं के संचार को क्रियान्वित करती है। अतः यह समग्र प्रकृति की भी है। सूचना सम्प्रेषण तकनीक का हस्तक्षेप जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में है। संक्षेप में इसमें शिक्षा, वाणिज्य, चिकित्सा, अभियांत्रिक एवं युद्ध आदि क्षेत्रों में इसका प्रसार है।

सूचना सम्प्रेषण तकनीकों की प्रक्रिया- सूचना सम्प्रेषण के महत्वपूर्ण चरण इस प्रकार है-

1. **सम्प्रेषण स्रोत- (Source of Communication)**
   किसी भी सूचना की जानकारी होने के बाद उसे दूसरे व्यक्ति या अन्य व्यक्तियों तक पहुँचाने की प्रक्रिया आरंभ हो जाती है। सूचना सम्प्रेषण प्रक्रिया का 'स्रोत' वह व्यक्ति होता है, जिसके द्वारा विचारों एवं भावों का आदान-प्रदान होता प्रारंभ होता है। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि- जब तक कोई व्यक्ति अपने भावों-विचारों को दूसरे व्यक्ति को प्रेषित करने को तैयार नहीं होता तब तक सम्प्रेषण प्रक्रिया आरंभ नहीं होती। इस प्रकार 'स्रोत' सम्प्रेषण प्रक्रिया का वह प्रारम्भिक बिन्दु है जिसके द्वारा विचारों-भावों को दूसरे व्यक्ति या व्यक्ति समूहों तक पहुँचाया जाता है।
2. **सम्प्रेषण सामग्री- (Content of Communication)**
   जिस स्रोत या माध्यम द्वारा एक व्यक्ति अपने विचारों-भावों तथा अनुभवों को जिस रुप में प्रेषित करता है। वही सम्प्रेषण सामग्री है। स्रोत द्वारा सामग्री का प्रस्तुतीकरण जितना अच्छा होता है। उसके प्राप्तकर्ता पर प्रभाव उतना ही अधिक होता है। सम्प्रेषण प्रक्रिया को प्राप्तकर्ता का सहयोग, अभिप्रेरणा तथा सामग्री की गुणवत्ता प्रभावित करती है।
3. **सम्प्रेषण माध्यम- (Medium of Communication)**
   एक व्यक्ति या समूह द्वारा व्यक्त किए गए विचारों, भावों को दूसरों तक पहुँचाने एवं दूसरों की भावनाओं एवं विचारों को ग्रहण करने तथा उनके प्रति अपनी अनुक्रिया व्यक्त/प्रकट करने के लिए जिन माध्यमों अथवा साधनों का प्रयोग किया जाता है। उन्हें सम्प्रेषण माध्यम कहते हैं। यह माध्यम शाब्दिक, अशाब्दिक, लिखित व मौखिक किसी भी रुप में हो सकते हैं।

4. **प्राप्तकर्ता- (Reciever)**

   एक व्यक्ति अथवा स्रोत द्वारा भेजे जाने वाले विचारों या संदेशों को जिस व्यक्ति या समूह द्वारा ग्रहण किया जाता है उसे प्राप्तकर्ता कहते हैं। सम्प्रेषण प्रक्रिया में प्राप्तकर्ता की भी भूमिका महत्वपूर्ण होती है। क्योंकि प्रभावकारी सम्प्रेषणकर्ता का स्रोत, साथ ही सम्प्रेषण प्राप्तकर्ता की भी रुचि योग्यता, दक्षता, क्षमता आदि इस प्रक्रिया में सहायक होती है। इस प्रकार नि:संदेह सम्प्रेषण व विचार ग्रहण करने हेतु प्राप्तकर्ता का पूर्ण सक्षम, क्रियाशील एवं अभिप्रेरित होना आवश्यक है।

5. **अनुक्रियात्मक व्यवहार या पृष्ठपोषण- (Responsive behaviour or Feedback)**

   किसी भी सम्प्रेषण माध्यम द्वारा सम्प्रेषित सामग्री को प्राप्तकर्ता द्वारा किस रुप में ग्रहण किया जा रहा है अथवा समझा जा रहा है। इसके साथ ही सम्प्रेषित सामग्री के प्रति प्राप्तकर्ता ने क्या अनुक्रिया **(Response)** दिया, इसी को अनुक्रियात्मक व्यवहार अथवा पृष्ठ पोषण **(Feedback)** कहते हैं। इसी अनुक्रियात्मक व्यवहार या सामग्री को उचित सम्प्रेषण माध्यम द्वारा स्रोत तक पहुँचाने की प्रभावशीलता पर सम्प्रेषणकर्ता और प्राप्तकर्ता के मध्य सम्प्रेषण की निरंतरता निर्भर करती है।

सम्प्रेषण को प्रभावित करने वाले तत्व-

सम्प्रेषण प्रक्रिया में सहायक एवं बाधक दो तत्व होते हैं। जिससे संप्रेषण की सफलता एवं असफलता निर्धारित होती है। जैसे- संप्रेषण प्राप्तकर्ता व्यक्ति की आयु, मूल आंकाक्षाएँ, बौद्धिक स्तर, मनोभाव आदि। इसके साथ ही संप्रेषणकर्ता का विषय या सामग्री विषयक ज्ञान, निष्पक्षता, विषयवस्तु का चयन, संप्रेषण प्राप्तकर्ता की क्षमता का ज्ञान, वातावरण, सिखाने हेतु अभिप्रेरणा, निरंतर-अभ्यास आदि की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जिस प्रकार किसी भी विषय के शिक्षण-प्रशिक्षण में गुरु के ज्ञान-व्यवहार के साथ ही शिष्य की भी क्षमता, बौद्धिक स्तर एवं सीखने की लगन महत्वपूर्ण होती है। उसी प्रकार संप्रेषण प्रक्रिया में भी सम्प्रेषणकर्ता ओर संप्रेषण प्राप्तकर्ता दोनों ही महत्वपूर्ण होते हैं।

संचार और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

संचार प्रणाली मानव सभ्यता के प्रारंभ से ही रही है। किन्तु समाज और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ नई अवधारणा है। ज्ञातव्य है कि सामाजिक-सांस्कृतिक संगठन

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सामाजिक परिवर्तन और पुनर्रचना के लिए प्रयासरत है। इस प्रकार समाज में मत-निर्माण, मत-परिवर्तन, विचार-परिमार्जन, लोकमत परिष्कार और व्यवहार परिवर्तन ही संघ का मुख्य कार्य है। इसके लिए लोगों के साथ निरंतर संपर्क और संवाद द्वारा संघ मजबूत जनसंचार प्रणाली को अपनाता रहा है। संघ के सभी आनुषंगिक संगठनों के संपूर्ण प्रयासों के केन्द्र में सुनियोजित, सुसंगत और सम्यक संचार तथा सम्प्रेषण ही है। संघ के योजनाकार और विचारकों की दृष्टि में मानव के लिए हवा-पानी के समान ही समाज के लिए संचार आवश्यक है। इसी कारण संघ ने संचार प्रक्रिया पद्धति और तकनीक पर प्रारंभ से ही गंभीर दृष्टि रखकर कार्य किया है। इसी श्रेणी में संघ ने समाज और संगठन की आवश्यकताओं के अनुसार संचार प्रविधि व प्रक्रिया में युक्तिसंगत परिवर्तन भी किए हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने शाखा, स्वयंसेवक और प्रचारक को संचार तंत्र के रुप में विकसित किया है। संघ का आधार ही संचार पर आधारित है।[3] संघ की स्थापना काल में जनसंचार के प्रचलित माध्यमों समाचार पत्र-पत्रिकाओं का उपयोग नहीं किया गया तथापि संघ के प्रमुख तथा प्रचारकों, स्वयंसेवकों ने अपने कार्यव्यवहार से ही समाज के विभिन्न लोगों को संदेश संप्रेषण दिया। जिससे समाज के अधिकांश लोग संघ से जुड़े।

स्वतंत्रता प्राप्ति तक संघ की अपनी प्रचलित जनसंचार प्रणाली/व्यवस्था न होने पर भी देश भर में उसके स्वयंसेवकों की संख्या लाखों में पहुँच चुकी थी। स्वयंसेवकों का व्यापक तंत्र ही संघ की सूचना प्रौद्योगिकी है। इसके उत्कृष्ट उदाहरण तब देखे जा सकते है- जब संघ पर प्रतिबंध लगाए गए। ऐसे में संघ कार्य भले ही प्रभावित हुआ किन्तु बंद नहीं हुआ। वह और भी अधिक व्यापक तौर पर समाज के सभी क्षेत्रों से जुड़कर सेवाकार्य में जुटा। क्योंकि स्वयंसेवकों के संचार माध्यम से संघ की विचारधारा प्रवाहित और संप्रेषित होती रही। संघ की नियमित शाखा तथा बैठकों से स्वयंसेवकों में सम्पर्क, परिचय और नियमित संवाद द्वारा विचारधारा को विस्तार दिया जाता रहा। इसी प्रभावकारी गुण द्वारा संघ कार्य विस्तार होता रहा है। संचार विशेषज्ञों के अनुसार, मनुष्य और समाज की ही तरह प्रोद्योगिकी की भी अपनी विचारधारा होती है। सामाजिक अन्तः क्रिया में **'विचारधारा'** प्रमुख है। विचारधारा के प्रचार-प्रसार में तकनीक और स्वयंसेवक संघ की तुलना की जा सकती है। किसी भी संगठन के कार्यकर्ता में यदि मानवीय गुण, दान, दया, क्षमा, दान, नैतिक मूल्य, संस्कार आदि का अभाव है। तो निश्चय ही ऐसा कार्यकर्ता सिर्फ मशीन या प्रोद्योगिक ही रह जाएगा।[4] जहाँ संघ के स्वयंसेवकों की विचारधारा मानवीय होती है। वहीं प्रौद्योगिकी की विचारधारा अमानवीय होती है।

मानव समाज को संगठित करने में सन् 1925 से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रौद्योगिकी के बारे में अन्य संगठनों से भिन्न विचार रखता रहा है। इसलिए राष्ट्रीय

स्वयंसेवक संघ ने सदैव मानव संसाधन को ही महत्व दिया। जबकि अन्य संसाधनों से निश्चित दूरी की परंपरा रही। इसलिए संघ के कार्यक्रमों, गतिविधियों और योजनाओं का समाचार पत्रकों, समाचार पत्रों आदि में भी देना आवश्यक नहीं माना जाता था। संघ में **'डोर टू डोर'**, **'मैन टू मैन'**, और **'हार्ट टू हार्ट'** संचार की सुदीर्घ नीति रही है। संभवतः इसी कारण संघ की जड़े इतनी मजबूत रही हैं।[5] जहाँ अन्य संगठनों ने अपने लघु कार्यों का भी बढ़ा-चढ़ाकर समाज में प्रचार-प्रसार किया है। वहीं संघ सदैव राष्ट्र कार्य में लगे रहने पर भी अपने कार्यों को कभी प्रचारित नहीं करता था। संघ के सिद्धांत और दर्शन में तो आज भी यह विद्यमान है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने संवाद की भारतीय पद्धति और मॉडल को ही अपनाया है। अनेक अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों में सूचना-सम्प्रेषण का यही मॉडल सफलतापूर्वक उपयोग में लाया जा रहा है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपनी अद्भूत संगठनात्मक गठ संरचना के कारण ही संघ के प्रतिबंध काल में भी संघ कार्य को निरंतर जारी रखा। गाँधी हत्या और आपातकाल में जबकि सत्ता पक्ष ने संघ को समूल नष्ट करने के उद्देश्य से संघ के सभी प्रमुखों को जेलों में अनिश्चित काल के लिए डाल दिया था। उस समय संघ को आंतरिक-सूचना-सम्प्रेषण प्रक्रिया द्वारा स्वयंसेवकों ने न केवल जनता को भूमिगत रहकर भी सत्तापक्ष की ज्यादतियों से परिचित कराया, बल्कि संघ के स्वयंसेवकों के परिवारजनों से भी निरंतर संपर्क बनाए रखा था। इसी दौरान संघ कार्यों के तथा सत्तापक्ष के विरोधी दलों एवं जनता पर प्रमाण भूमिगत पत्रों द्वारा ज्यादतियाँ जनता तक पहुँचने लगे। संघ के सूचना तंत्र की यह अतिशय सफलता ही कही जाएगी कि देश की आपातकाल की सही सूचना विदेशों तक पहुँची थी।

आज कम्प्यूटर युग में पूरी दुनिया भी महत्वपूर्ण सूचनाएँ त्वरित रुप से एक कोने से दूसरे कोने तक पहुँच रही हैं। फलतः पूरी दुनिया एक-दूसरे से जुड़ चुकी है। इसी प्रकार संघ स्वयंसेवकों का सूचना संप्रेषण जाल अल्प समय में ही अत्यंत तीव्र गति से देशों में सम्प्रेषित करता है।[6] हालांकि संघ की तमाम सूचना तंत्र की सफलताएँ सत्ता एवं प्रशासन को अक्सर परेशान कर देती है। संभवतः इसी कारण समाजवादी चिंतक तथा संघ के वैचारिक विरोधी मधु लिमले आर. एस. एस. को (रियुमर्स स्प्रेडिंग सोसायटी) कह देते है। यह उनके आलोचना करने का तरीका है।

पिछले 20-30 वर्षों में संचार और संचार तकनीक में अभूतपूर्व परिवर्तन होता दिखाई देता है। इसी प्रकार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भी कार्यशैली विशेषतः संपर्क और संवाद शैली में परिवर्तन हुआ है। सूचनाओं के तीव्र और गहन सम्प्रेषण के दौर में संघ के स्वयंसेवक साथ-साथ चल रहे हैं। संघ के विचारक प्रौद्योगिकी की विचारधारा एवं इसके प्रभावों से भली-भांति परिचित हैं।

संघ में बौद्धिक विभाग के साथ ही प्रचार विभाग भी है। जो वर्षों से

स्वयंसेवकों में प्रचार का महत्त्व प्रतिपादित करता आ रहा है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में विश्व संवाद केन्द्र प्रचार विभाग का कार्य देखता है। इसके अंतर्गत जागरण पत्रिकाएँ, सोशल मीडिया कंटेंट, पत्र-पत्रिकाएँ, प्रकाशन, साहित्य आदि विविध विभागों द्वारा संघ कार्य पद्धति का विस्तृत विवरण समाज के समक्ष लाया जाता है।[7]

ज्ञातव्य है कि यह प्रचार विभाग स्वयंसेवकों से अधिक समाज में विचार एवं सूचना सम्प्रेषण का कार्य करता है। इसके विभिन्न आयाम विश्वभर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का विरोध करने वाले तर्कों और बातों को जवाब देने में पूरी तरह सफल हो रहे हैं। इस कारण भी संगठन के आंतरिक सूचना प्रवाह में संचार प्रोद्योगिकी की भूमिका बढ़ गयी है। वर्तमान समय में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक, प्रचारक एवं संघ कार्यालयों में नवीन संचार माध्यमों का प्रयोग समाज से जुड़ने के लिए बखूबी किया जा रहा है। जैसे- ईमेल, फेसबुक, मैसेंजर, व्हाटसएप, एसएमएस, गूगल, हैंग आउट आदि कम्प्यूटर और मोबाइल फोन आधारित संचार तकनीक के द्वारा सूचनाओं का आदान-प्रदान सामान्य बात है।

संघ के आंतरिक स्तर पर भी बैठकों तथा महत्त्वपूर्ण सूचनाओं के सम्प्रेषण हेतु मोबाइल एसएमएस ग्रुप हेतु, या व्हाटसअप्प ग्रुप व्यवस्था का प्रयोग होता है। संघ में कनिष्ठ से वरिष्ठ व्यक्तियों तक स्मार्टफोन, आईपैड और लेपटॉप का प्रयोग कर रहे हैं।[8]

यद्यपि इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि संघ में सूचना संप्रेषण के अत्याधुनिक तकनीकों का उपयोग न केवल तेजी से बढ़ा बल्कि इससे अनभिज्ञ रहने वाले स्वयंसेवक एवं वरिष्ठ प्रचारक, कार्यकर्ता आदि सूचना संप्रेषण के तकनीकों को अपने कनिष्ठों से तेजी से सीख भी रहे हैं। तथापि संघ में कुछ लोगों का मानना है कि सूचना संप्रेषण तकनीक पर अधिक आधारित हो जाने के परिणाम नकारात्मक ही होंगे। यह दीर्घकालीन अवधि के लिए उपयुक्त नहीं है।

तकनीक पर निर्भरता उचित नहीं-

संचार तकनीक को ज्यादा अपनाने या इस पर अधिक निर्भर रहने को संघ का एक वरिष्ठ तबका उचित इसलिए भी नहीं मानता क्योंकि उसका विश्वास 'संघौ शक्ति कलियुगे' पर है। तकनीक पर अधिक निर्भरता से उसे भय है कि कहीं तकनीक की हावी होती विचारधारा से स्वयंसेवक और समाज इसका आश्रित न बन जाए। वह मानते हैं कि तकनीक पर अधिक निर्भरता से कहीं 'तकनीकौ शक्ति कलियुगे' ना बन जाए। क्योंकि निश्चित ही तकनीक का आकर्षण परंपरागत आचार-व्यवहार को बुरी तरह प्रभावित ही करता रहा है। हालांकि तकनीक के बढ़ते दायरे ने पूरे विश्व को ग्राम बनाकर 'विश्वग्राम' की संकल्पना को साकार करने का प्रयास किया

है। किन्तु यह भी सत्य है कि 'दुनिया मुठ्ठी' में भरने का यह कृत्रिम उपाय लोगों को एक-दूसरे से वास्तव में दूर ही कर रहा है।

महात्मा गांधी ने भी इसी कारण मशीनों, आधुनिकीकरण का प्रबल विरोध ही किया था और प्रकृति पर निर्भर मानव सभ्यता के विकास का समर्थन किया था। क्योंकि वह जानते थे कि, धीरे-धीरे मानव तकनीक के कारण सुविधा भोगी होने के साथ ही अकर्मण्य और समाज विमुखी भी होता जाएगा। तो मानव समाज एवं सभ्यता के लिए खतरा उत्पन्न होगा। यदि सभ्यता के विचारक गुणतेत्वां, संस्कृति, धर्म, नीति, मूल्य को बढ़ावा देना है, तो तकनीक आधारित कृत्रिम आभासी समाज को त्यागना ही बुद्धिमानी है। वैसे आज के समय में यदि किसी व्यक्ति पर घोर कष्ट आ जाए तो उसके फेसबुक के हजारों आभासी मित्रों में से कोई उसकी सहायता करने नहीं आएगा। अतः संघ के कुछ लोग वास्तविक दुनिया से ही संबंध प्रगाढ़ बनाने की सीख अन्यों को देते हैं।

तकनीक उपयोग में प्रवीण संघ-

वर्तमान समय में संघ के भीतर एवं संघ समर्थकों द्वारा आधुनिक सूचना तकनीक के उपयोग की प्रवृत्ति बढ़ी है। इसी कारण मोबाइल के अत्याधुनिक एप्लीकेशन प्रथा इंटरनेट अनुसमर्थित-वेबसाइट, ब्लॉग, सोशन नेटवर्क और इलेक्ट्रॉनिक जनमाध्यमों के उपयोग में संघ से जुड़े लोग अधिक-प्रवीणता कार्यकुशलता से कार्य कर रहे हैं। राष्ट्रीय-स्वयंसेवक संघ के वर्तमान सरसंघचालक मोहन भागवत ने भी संघ द्वारा आधुनिक तकनीक अपनाने की बात पर कहा कि-'यदि आधुनिक तकनीक द्वारा हम अपने अच्छे कार्यों का प्रसार नहीं करेंगे तो दूसरे कार्यों (नकारात्मक विचारों और कार्यों) का प्रसार होगा। अतः आधुनिक तकनीकी साधनों का प्रयोग करते हुए हमें देश के लिए उत्कृष्ट कार्य करने की आवश्यकता है।[9]

वर्तमान प्रधानमंत्री और सूचना तकनीक-

वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सर्वाधिक आधुनिक नवीन तकनीक प्रयोगकर्ता है। उनका कहना है कि- 'भारत एक आधुनिक डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर तैयार कर रहा है। जिससे डिजिटल क्रांति का लाभ सभी को मिले। उन्होंने आगे कहा- 5 जी और एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) तकनीक पर चर्चा की जा रही है, तैयारी की जा रही है। जिससे चिकित्सा, शिक्षा, कृषि आदि कई क्षेत्रों में आधुनिकता लाई जा सके।[10]

यद्यपि सूचना संप्रेषण के नए दौर में आधुनिक तकनीक से अपराध बढ़े हैं।

साथ ही नए तरह के भिन्न-भिन्न प्रकार के अपराध सामने आ रहे हैं तथापि वर्तमान सरकार 'ई गवर्नेंस मॉडल' को अपनाएं है। नरेंद्र मोदी का मानना है कि- 'यह सत्य है कि आधुनिक प्रौद्योगिकी के कारण अपराध भी वैश्विक हो रहे हैं। किन्तु भले ही आधुनिक तकनीक के कारण अपराध वैश्विक हो रहे हैं। किन्तु इसका समाधान भी है।[11] वह आगे कहते हैं कि-'हाल के तकनीकी नवाचारों और प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण जैसे नए गवर्नेंस माड्ल को अपनाने से गरीबों को बेहतर तरीके से सेवा देने में मदद मिली है।[12] यद्यपि यह भी सत्य है कि पवित्र साध्य के लिए साधन की पवित्रता को झुठलाया नहीं जा सकता। इसी कारण संघ में एक वर्ग परम्परावादी साधन की पवित्रता एवं मानवीयता पर बल देता है। तो वहीं दूसरा वर्ग संचार प्रौद्योगिकी के लाभों को पहचानकर अपनी विचारधारा को समाज के सम्मुख रखने में तकनीक की सहायता लेने का पक्षधर है।

संघ समाज के लिए, समाज में और समाज द्वारा कार्य करता है। आज संघ समाज के सभी क्षेत्रों में गतिमान है। संघ का उद्देश्य समाज को देवसभ्यता उन्मुखी बनाना है यानि प्रकृति उन्मुखी, ना कि दानव सभ्यता उन्मुखी यानि की मशीनोन्मुखी। इसी कारण संघ के योजनाकारों ने मानवीय गुणों से युक्त संवाद-संचार को ही श्रेष्ठ माना है। तकनीकीकरण, आधुनिकता का सहयोगी पर्याय है। इसलिए इंटरनेट, कम्प्यूटर, मोबाइल, आदि डिजिटल व तकनीकी उपकरण संघ के वर्तमान समय की आवश्यकताएँ हैं। हालांकि यह जानते हुए भी कि वर्तमान सूचना तकनीक ने वास्तविकता से पृथक लोगों की एक आभासी दुनिया बना दी है। ज्ञातव्य है कि इस संचारी आभासी दुनिया और वास्तविक दुनिया में बहुत अंतर है। तकनीकी दुनिया में कल्पना आधारित संसार में व्यक्ति ना तो समाज से ही जुड़ पाता है, ना ही सामाजिक ही बन पाता है।

इस दुनिया में उसके सहयोगी मात्र इलेक्ट्रॉनिक उपकरण जैसे-कम्प्यूटर, मोबाइल, चित्र, संकेत एवं ध्वनियाँ होते हैं। संघ को वास्तविकता के खुरदुरे धरातल पर कार्य करना है। इसीलिए संघ को मानवीय गुणों संवेदना, भावना आदि के साथ मानवीय संबंधों और गुणों की भी आवश्यकता है। मानवीय समाज की विकासात्मक लंबी यात्रा और सशक्तिकरण हेतु संघ प्रतिबद्ध है। डॉ॰ अनिल सौमित्र का कहना है कि-**"मानवों का अद्भुत सफल संचार तंत्र का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ"[13]।**

मोबाइल एप्स और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ-

भारतीय सभ्यता संस्कृति की पुरातन पहचान के साथ ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अब तकनीकी को तेजी से अपनाता जा रहा है। इसी क्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की

शाखा में अब शारीरिक और बौद्धिक के साथ ही नए-नए मोबाइल एप्स की भी जानकारी दी जा रही है। साथ ही संघ ने समाज के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े लोगों के लिए संघ विचारधारा पहुँचाने के उद्देश्य से ही आधा दर्जन से अधिक मोबाइल एप्स प्रारंभ किया है। इसमें **राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मोबाइल, श्रीगुरुजी, अमृतवचन, स्मरणीयम्, वंदना, प्रेरणा सुमन, अर्चना** आदि प्रमुख है।

वर्तमान समय में एन्ड्रायड स्मार्ट फोन हर हाथ में पहुँच चुका है। अत: इसी को माध्यम बनाकर संघ समाज में हर व्यक्ति तक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की वास्तविकता पहुँचा रहा है। संघ प्रमुख मोहन भागवत का भी कथन है कि- "बिना आधुनिक संचार तकनीक के भारत विश्वगुरु नहीं बन पाएगा"। संघ द्वारा लाँच मोबाइल एप्प में शामिल **"प्रेरणा सुमन"** में देश की महान विभूतियों के जीवन का वर्णन है। इसमें सभी संघ प्रमुखों- संघ संस्थापक डॉ॰ केशव बलिराम हेडगेवार से लेकर वर्तमान सरसंघचालक मोहन भागवत तक का वर्णन है। साथ ही देश के स्वतंत्रता सेनानियों और महापुरुषों की जीवनी है। इसी तरह **'श्रीगुरुजी'**- मोबाइल एप में संघ के द्वितीय सरसंघचालक माधव सदाशिव राव गोलवलकर का जन्म से मृत्यु तक का जीवन प्रसंग है। इसके साथ ही संघ द्वारा प्रारंभ किया गया एप स्वयंसेवकों और कार्यकर्ताओं को उनके आस-पास की शाखाओं का भी लोकेशन बताता रहता है।

अगले मोबाइल एप **'अमृत वचन'** में भारत के गौरवमयी इतिहास एवं इसमें रची-बसी हिन्दुत्व, सनातन धर्म की परंपरा एवं अवधारणा को बताया गया है। **'वंदना'** मोबाइल एप में मंत्र एवं उनके हिन्दी अनुवाद है। **'स्मरणीयम्'** में दोहा, श्लोक आदि है जबकि 'अर्चना' में शाखा गीतों की श्रृंखला है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख एप हैं-

(1) राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ
(2) आई टी मिलन
(3) ज्ञान का भंडार
(4) सूचना और पंचाग
(5) संघ शाखा खोजें
(6) संघ समाचार
(7) अमृत वचन
(8) संघ पुस्तकें
(9) संघ वालपेपर्स
(10) संघ गीत

(11) घोष ध्वनि
(12) सप्ताह का वीडियो
(13) संघ संचालक
(14) संघ परिवार
(15) शारीरिक
(16) संघ को जानें
(17) प्रार्थना
(18) सूर्य नमस्कार
(19) भोजन मंत्र
(20) बौद्धिक पत्र

अपने कार्यों की जन-जन तक जानकारी पहुँचाने के लिए संघ ने **'ई-शाखा'** एवं **'आई टी मिलन'** कार्यक्रमों का भी प्रारंभ किया है। फरवरी 2018 में जयपुर(राजस्थान) में संघ की 'अखिल भारतीय सेवा समन्वय' की बैठक में ही तकनीक के माध्यम से युवाओं के बीच संघ की जानकारी देने की बात की गयी थी। इसमें तय किया गया कि- **'गाथा'** एप के माध्यम से संघ अपने संगठन, इतिहास तथा क्षेत्रवाद, जिलावार स्थानीय स्तर पर लगने वाली शाखा कार्यक्रमों और गतिविधियों को प्रस्तुत करेगा।[14] इसके साथ ही संघ से जुड़ने के लिए **'ज्वाइन आर. एस. एस.'** प्रारंभ किया गया है।[15] तकनीकी दौर में आभासी दुनिया में रहने वाले लोगों के लिए **'वास्वविक शाखा'** एप का आयोजन किया जा रहा है। यह पहल विशेषकर आईटी, बी. पी. ओ. समेत आई सी. टी. क्षेत्र से जुड़े लोगों के लिए उपयोगी रही।

वर्ष 2015 की तुलना में वर्ष 2016 में 48 प्रतिशत अधिक लोग **'ज्वाइन आर.एस. एस.'** के माध्यम से जुड़े। 20 से 35 वर्ष के युवा 2017 में 6 प्रतिशत अधिक पिछले वर्ष की तुलना में जुड़े।[16] इसके अतिरिक्त संघ का एक और एप **'ऋतम'** काफी महत्वपूर्ण है। दरअसल तकनीकी दौर में सोशल मीडिया पर फेक न्यूज की भरमार पड़ी रहती है। यूट्यूब और सोशल मीडिया पर चलने वाली अधिकांश सनसनी खबरों से देश की अखंडता और एकता प्रभावित होती है। अतः इन खबरों की सच्चाई जन-जन तक पहुँचाने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने **'ऋतम'** मोबाइल एप बनाया है। वर्ष 2019 में लाँच किए गए इस एप को मात्र दो दिनों में ही 1 लाख से अधिक लोगों ने डाउनलोड कर लिया। इसमें हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, बांग्ला, मराठी व गुजराती सहित 12 भाषाओं में राष्ट्रवादी समाचार उपलब्ध है।[17]

राष्ट्रीय विचारकों द्वारा रचित पुस्तकों एवं उनके उद्बोधनों को संग्रहित कर **'आडियो कुंभ एप'** बनाया गया। इसके द्वारा राष्ट्रीय महत्व की पुस्तकों को अब

मुफ्त में सुना जा सकेगा। इस एप को वर्तमान समय के डिजिटल युग में स्मार्टफोन की उपलब्धता एवं व्यस्ततम दिनचर्या को ध्यान में रखकर डिजाइन किया गया है।[18] स्पष्ट है कि- वर्तमान समय में शिक्षा, रोजगार के लिए भागदौड़ बढ़ी है। ऐसे में लोगों के पास समय का अभाव हो गया है। इसीलिए आज के समय में तकनीक पर बढ़ती निर्भरता को ध्यान में रखकर ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने इस प्रकार के मोबाइल एप को युवाओं के बीच लाया है। इसके माध्यम से ना केवल व्यस्त लोग भी संघ से जुडेंगे बल्कि संस्कारवान और सच्चे राष्ट्र भक्त भी बनेंगे। इन एप्स के द्वारा लोग संघ के ध्वज प्रणाम से लेकर बौद्धिक तक ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं। समय के साथ तकनीक का प्रयोग कर लोगों को अपने साथ जोड़ने में संघ सफल हो रहा है।

माईक्रोब्लांगिंग प्लेटफार्म 'कू'- 'Koo'

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संध ने ट्विटर का देशी विकल्प **'कू'** को बनाया है। माईक्रोब्लांगिंग प्लेटफार्म **'कू'** पर अपने पहले पोस्ट में संघ ने संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार का संबोधन उद्धृत किया। जुलाई 2021 में संध ने लोगों से जुड़ने के लिए सोशल मीडिया प्लेटफार्म **'कू'** पर खाता खोला। संघ का **'कू'** पर **rss.org** नाम से खाता है। इस पर संघ अपने बैठक के फैसलों और विचारों को साझा करता है।[19]

वैश्विक हुआ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ-

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना 27 सितंबर 1925 में नागपुर(महाराष्ट्र) भारत में हुई थी। किन्तु वर्तमान समय में संध का प्रसार भारत के प्रत्येक राज्य, जिले, प्रांत तक होता हुआ विदेशों तक पहुँच चुका है। इस समय लगभग 80 देशों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का विस्तार सफलतापूर्वक हो चुका है। संघ की शाखाएँ 39 देशों में 'हिन्दू स्वयंसेवक संघ' नाम से चलती है। इसका कार्य रमेश सुब्रह्मण्यम देख रहे हैं। इन्होनें सन् 1996 से वर्ष 2004 तक मारीशस में संघ शाखा विस्तार का कार्य किया था। सेवा नामक संस्था के अध्यक्ष रमेश सुब्रह्मण्यम के अनुसार संध विदेशों में अन्य सभी हिन्दू संगठनों के साथ मिलकर कार्य करता है। इन संगठनों में 'चिन्मय' और 'रामकृष्ण मिशन' भी शामिल है। चूँकि विदेशी भूमि, भारत की भूमि नहीं है। इसलिए यहाँ 'राष्ट्रीय' शब्द प्रयुक्त नहीं होता। संघ से लगभग 40 अन्य संगठन जुड़कर विश्व भर के हिन्दुओं को जोड़ने में लगे है।

विदेशों में ई-शाखा-

फिनलैंड में संघ की **ई-शाखा** लगती है। यहाँ के देशों में चूंकि घर से बाहर खुले स्थानों पर शाखा लगाने की अनुमति नहीं है। अतः घर में ही लोग ई-शाखा

के माध्यम से भिन्न-भिन्न देशों के राष्ट्रवादियों, हिन्दुओं से जुड़ते हैं। फिनलैंड में 20 देशों के संघ से जुड़े लोग शामिल होते हैं। यूएस में 146 स्थानों पर संघ की ई-शाखाएँ लगती है। जबकि ब्रिटेन में 84 स्थानों पर सप्ताह में दो बार ई-शाखा लगती है।[20]

विदेशों में संघ का परिधान-

विदेशों में संघ शाखा के वस्त्र भी अलग हैं। यहाँ काली पैंट और सफेद कमीज संघ शाखा का परिधान है[21]।

नारा-

भारतीय संघ शाखा में **'भारत माता की जय'** का नारा लगता है। जबकि विदेशों में **'विश्व धर्म की जय'** का नारा लगता है। 21 वीं सदी में समय एवं आवश्यकता के अनुसार बढ़ते सूचना प्रौद्योगिकी के साथ परिवर्तनशील होता हुआ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ निरंतर गतिशील है। यद्यपि अब संघ के सामने सबसे बड़ी चुनौती आधुनिकता एवं तकनीक के बढ़ते प्रसार में अपने को सुग्राहय बनाता है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ विचार परिवार से संबंधित प्रचार विभाग की कुछ प्रमुख वेबसाईट इस प्रकार से है-

1. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (www.rssonnet.org)
2. विश्व संवाद केन्द्र (www.vskbharat.com)
3. विश्व हिन्दू परिषद (www.vhpt.org)
4. विद्या भारती (www.vidyabharti.org)
5. भारतीय मजदूर संघ (www.bms.org.in)
6. अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (www.abvp.org)
7. पांचजन्य (www.panchjanya.org)
8. आर्गनाईजर (www.organiser.org)

संदर्भ सूची

1. संचार प्रौद्योगिकी, विकिपीडिया।
2. वही।
3. इंसानियत का महामार्ग है- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ-डॉ. अनिल सौमित्र। Press information centre 15/09/2019.
4. वही।

5. वही।
6. डॉ. अनिल सौमित्र से वार्तालाप पर आधारित, 23 जून 2023।
7. श्री महीधर प्रताप, प्रांत समाचार प्रमुख (हिमाचल प्रदेश) से वार्ता पर आधारित– 28 जून, 2023।
8. इंसानियत का महामार्ग है– राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ– डॉ. अनिल सौमित्र, पीआईसी, 15/09/2023।
9. 'नकारात्मक सोच हावी ना हो, इस मकसद से आधुनिक तकनीक अपनायी– मोहन भागवत, दैनिक जागरण– 10 अक्टूबर 2018।
10. आधुनिक डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर प्रचार कर रहा भारत, अमर उजाला, 28 फरवरी 2023। आधुनिक तकनीक ने वैश्विक अपराध को बढ़ाया है।
11. **E.T. Government.com** 3 अप्रैल 2023।
12. वही।
13. डॉ॰ अनिल सौमित्र से वार्तालाप पर आधारित, 25 जून 2023।
14. ऐप के माध्यम से 'ई–शाखा' शुरु करेगा–आरएसएस नवभारत टाइम्स 25 फरवरी, 2018।
15. वही।
16. वही।
17. लाँच होते ही छा गया, आर. एस. एस. का ऋतम एप, दैनिक जागरण, ई पेपर फरवरी 2019।
18. आर. एस. एस. प्रमुख ने 'आडियो कुंभ' का लोकार्पण किया। नवभारत टाइम्स 9 सितंबर 2021।
19. Rss ने 'कू' एप पर खोला ऑफिशियल अकाउंट। जी हिन्दुस्तान बेब सीरीज, 10 जुलाई 2021।
20. www.jansatta.com 21 दिसम्बर 2015।
21. वही।

अष्टम अध्याय

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के साहित्य एवं साहित्यकार

श्री माधवराव सदाशिव गोलवलकर का चिंतन सर्वदा राष्ट्र समाज एवं ग्रंथों पर चलता रहता था। इससे चिंतन में एक दिन उनके मन में विचार आया कि साहित्य के क्षेत्र में कार्य प्रारम्भ करना चाहिए जिससे ग्रंथों का संरक्षण किया जा सके। दूसरी ओर तत्कालीन साहित्य में दो कमियाँ थी भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता को नकारना व सभी भारतीय भाषाओं का एक साझा मंच नहीं था। इन कारणों को देखते हुए सुप्रसिद्ध साहित्यकार जैनेन्द्र जी के साथ मिलकर 1966 में **अखिल भारतीय साहित्य परिषद** की स्थापना की गई।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख हिन्दी साहित्यकारों के विकास के लिए प्रचार माध्यम की व्यवस्था राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वारा की गई। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का उद्देश्य यह है कि व्यक्ति का चरित्रनिर्माण और समाज का संगठन तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ परिवार को सारे समाज में पहुँचाना राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का कार्य है। इस कार्य का प्रमुख साधन है–स्वयंसेवक जो व्यक्तिगत सम्पर्क और बंधुभाव का विस्तार करते हुए यह कार्य सम्पन्न करता है। फिर भी इसमें उसकी सहायता के लिए जनसंचार माध्यमों और लिखित साहित्य की भी अपनी उपयोगिता है। अतएव सन् 1947 में कुछ स्वयंसेवकों ने दिल्ली में भारत प्रकाशन नामक संस्था स्थापित कर **'ऑर्गेनाइजर'** साप्ताहिक पत्र प्रारंभ किया। फिर **'पाञ्चजन्य'** साप्ताहिक और राष्ट्रधर्म मासिक (लखनऊ) का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। बाद के वर्षों में विभिन्न प्रान्तों से **मदरलैण्ड, स्वदेश, युगधर्म, तरुण भारत** इत्यादि दैनिक समाचारपत्र तथा कुछ पत्रिकाएँ भी प्रकाशित होने लगी। अनेक वर्षों तक **'हिन्दुस्थान'** नामक समाचार अभिकरण भी चलाया गया। कतिपय कारणों से व्यवधान के उपरान्त अब

पुनः कार्यरत है। वर्तमान में आधुनिक सूचना माध्यमों से युक्त विश्व संवाद केन्द्र भी अनेक स्थानों पर स्थापित किये गये हैं।

पुस्तक रूप में राष्ट्रवादी साहित्य के प्रकाशन हेतु दिल्ली में **सुरुचि प्रकाशन**, लखनऊ में **लोकहित प्रकाशन**, जयपुर में **ज्ञानगंगा प्रकाशन**, भोपाल में **अर्चना प्रकाशन**, मुम्बई नागपुर-पूणे में **'भारतीय विचार साधना'**, विजयवाड़ा में **'साहित्य निकेतन'**, कुरुक्षेत्र में **'विद्याभारती प्रकाशन'** व जालन्धर में **अपना साहित्य** इत्यादि संस्थाओं की स्थापना की गयी।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख साहित्यकारों का परिचय इस प्रकार है-

1. डॉ केशव बलिराम हेडगेवार

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की नींव रखने के कारण राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में अनेक भाषण संवाद के माध्यम से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विचारों को आगे बढ़ाया। आपकी पुस्तक **'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तत्व और व्यवहार'** में आपने हिन्दुओं का भविष्य संगठन व स्वयंसेवकों के गुणों को बड़े ही प्रभावशाली लेखों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। यह लेख सुरुचि प्रकाशन के द्वारा संकलित है।

2. श्री माधवराव सदाशिव राव गोलवलकर

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख साहित्यकारों में इनका नाम लिया जाता है इन्हें 'श्री गुरुजी' के नाम से लोग अधिक जानते हैं। श्री गुरुजी की पुस्तक **'विचार नवनीत'** राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का आधार कही जा सकती है। इसमें अनेक लेखों व भाषणों का संग्रह है। इसमें उन्होंने राष्ट्र, संस्कृति, सांस्कृतिक, राष्ट्रवाद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का परिचय अधिकतर सभी विषयों से ये हमें परिचित कराते हैं। इनकी दूसरी पुस्तक **'गुरु दक्षिणा'** में इन्होंने गुरु दक्षिणा यज्ञ गुरुपूर्णिमा के विषयों को बड़े ही अच्छे ढंग से स्पष्ट किया है। संस्कृतनिष्ठ शब्दावली का प्रयोग इनकी पुस्तक में देखने को मिलता है।

3. श्री चन्द्रशेखर परमानन्द भिशीकर

श्री चन्द्रशेखर परमानन्द जी मूलतः नागपुर निवासी है। दैनिक **'तरुण भारत'** का सम्पादन 1949 में किया। इसी की एक शाखा पुणे में खुल गई वहाँ पर आपने कार्यकारी सम्पादन किया। आगे चलकर 1964 से 1978 में आप **'तरुण भारत'** के मुख्य संपादक रहे। विगत लगभग 12 वर्षों से वे रविवार के **'तरुण भारत'**

में चिंतनशील साहित्यिक स्तम्भ लिखते रहे हैं। आपने दो ग्रंथ–**'केशवः राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ निर्माता'** और **'श्री गुरुजी पं दीनदयाल उपाध्याय के विचार दर्शनः राष्ट्र की अवधारणा'** एक से अधिक भाषाओं में प्रकाशित हुई है। **'डॉ हेडगेवार परिचय एवं व्यक्तित्व'** पुस्तक में भी आपने डॉ हेडगेवार के व्यक्तित्व को बड़े ही प्रभावशाली ढंग से दिखाया है। आपके विचारों में आध्यात्मिकता देखने को मिलता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघप्रणीत जनकल्याण समिति के आप प्रांतीय उपाध्यक्ष है।

4. पंडित दीनदयाल उपाध्याय

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितम्बर 1916 में एक गरीब परिवार में प्रसिद्ध ज्योतिषी पं हरिराम उपाध्याय के वंश में उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले में नांग्ला चन्द्रभान ग्राम में हुआ। स्वयंसेवक वक्ता लेखक पत्रकार 1951 के बाद राजनीतिज्ञ साथ में चिंतक। पं. दीनदयाल उपाध्याय जीवनभर देश, जनता और उसकी समस्या इन्हीं चिन्ता में मग्न, आजन्म ब्रह्मचारी, स्नेहशील, विनोदप्रिय व्यक्ति थे। उनकी रचनाएँ **'पोलिटिकल डायरी'** **'राष्ट्र जीवन की दिशा'** **'जगद्‌गुरु शंकराचार्य'** लघु उपन्यास (मात्र 16 घण्टे में रचित) **'चन्द्रगुप्त मौर्य'** आदि हैं। दीनदयाल जी की भाषा सरल व स्पष्ट थी। यह भी संस्कृतनिष्ठ भाषा के पक्षधर थे। इन्होंने हर समसामायिक परिस्थितियों के अनुसार लेख भी अंग्रेजी पत्र **'आर्गनाईजर'** में लिखे हैं जिनका संकलन **'पोलिटिकल डायरी'** में है। राष्ट्र को दिशा देने के राष्ट्र राज्य व्यक्ति व समाज जैसे विषयों को उन्होंने **'राष्ट्र जीवन की दिशा'** में स्पष्ट किया है। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का स्वरूप भी स्पष्ट किया है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में प्रमुख साहित्यकारों में से इनका नाम बड़े ही आदर के साथ लिया जाता है।

5. श्री दत्तोपंत बालकृष्ण ठेंगड़ी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्कारों तथा स्वर्गीय श्री गुरुजी के निकट सहवास से जिस गुण समृद्ध नेतृत्व का अनेक क्षेत्रों में निर्णय हुआ। उनमें श्री दत्तोपंत बालकृष्ण ठेंगड़ी का उल्लेख प्रमुखता से करना होगा। कुशाग्र मेधा के अध्ययनशील तत्वचिन्तक, कुशल संगठन और राष्ट्र समर्पित जीवन के तपस्वी थे। श्री ठेंगड़ी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के आजीवन तपस्वी जीवनदानी प्रचारक थे। संगठन के कार्य को उलझाये रखने वाले दायित्व संभालते हुए भी ठेंगड़ी ने सैद्धान्तिक लेखन पर्याप्त मात्रा में किया है। उन्होंने अपने ग्रंथ दत्तोपंत **'बापूराव ठेंगड़ी के विचार दर्शन'** व **'पं दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शनः तत्व जिज्ञासा'** में दीनदयाल

के दार्शनिक विचारों को पाठकों तक सम्प्रेषित करने में सफल हुए हैं। जिसका अनुभव पाठक कर सकते हैं।

6. श्री भालचंद्र कृष्णा जी केलकर

सिद्धस्त पत्रकार लेखक तथा दिल्ली में महाराष्ट्र परिचय केंद्र के संस्थापकसंचालक श्री भालचंद्र कृष्ण जी केलकर ने नवशक्ति विवेक **'तरुण भारत'** आदि पत्र पत्रिकाओं में भरपूर लेखन किया है। 1983 में सरकारी सेवा से निवृत्त हो गये थे व स्वतंत्र लेखन शुरू किया है। इनकी रचनाएँ **'सुभाष चरित्र', 'तिलक विचार', 'समाजसुधारक सावरकर' 'सावरकर दर्शन व पं दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शनः राजनीतिक चिन्तन'** आदि प्रमुख हैं। दीनदयाल जी का राजनीतिक दृष्टिकोण उनके अनुभव के साथ लिखा है जो पाठकों को पढ़ने के लिए आकर्षित करता है।

7. डॉ जागेश्वर पटेल

डॉ जागेश्वर पटेल का जन्म मध्य प्रदेश के बालाघाट जिले में बैहर तहसील के चीनी ग्राम में 25 जून 1977 को हुआ। **इन्होंने माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर के राजनीति चिन्तन** पर अपना शोधकार्य पूर्ण किया था। 1999 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक बने। आप विभिन्न अकादमिक संस्थाओं के आजीवन सदस्य हैं एवं लेखन कार्य में सतत् संलग्न है। इनकी रचनाएँ हैं **'श्री गुरुजी एक राष्ट्रवादी संगठक'**, श्री गुरुजी एक बहुआयामी व्यक्तित्व है। जिसमें इन्होंने श्री गुरुजी के व्यक्तित्व दर्शन उनके दृष्टिकोण को उदाहरणों सहित अपनी पुस्तक में प्रस्तुत किया है। श्री गुरुजी को जानने के लिए यह पुस्तकें बहुत उपयोगी हैं।

8. श्री आनन्द आदीश

उत्तर प्रदेश के जिला मेरठ अन्तर्गत ग्राम खेकड़ा के संभ्रान्त सुशिक्षित समाजसेवी जमींदार वैष्णव परिवार में इनका जन्म हुआ। हिन्दी अंग्रेजी में स्नातकोत्तर तक शिक्षा प्राप्त की। आप पूर्व प्राचार्य निदेशक ब्यूरो आफ टैक्स्ट बुक्स हिन्दी अकादमी के सदस्य व अखिल भारतीय साहित्य परिषद के राष्ट्रीय महासचिव पद पर कार्य किया। आप का काव्य संकलन **'राष्ट्रमंत्र के उद्गाता'**! में आपने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जन्म विचारधारा व केशव जी का जन्म का वर्णन प्रभावशाली व आकर्षक ढंग से किया है।

9. डॉ कृष्ण कुमार बवेजा

24 सितम्बर 1949 में सोनीपत हरियाणा में डॉ कृष्ण कुमार बवेजा जी का जन्म हुआ। पिता का नाम श्री हिम्मत राम बवेजा व माता का नाम भागवंती देवी जी था। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्कार घर से ही मिले। गणित विषय में आपने पीएच. डी. की थी। हिन्दू कॉलेज रोहतक में आप प्राध्यापक थे। उसके बाद आप प्रचारक बने। आपातकाल में आपको जेल भी भेजा गया जहां पर आपको भीषण यातनाएं दी गयीं। पंजाब प्रांत में बौद्धिक प्रमुख दिल्ली में सह प्रान्त प्रचारक हरियाणा के प्रान्त प्रचारक व अनेक वर्षो तक उत्तर क्षेत्र के बौद्धिक प्रमुख भी रहे। इनकी पुस्तक **"श्री गुरुजी व्यक्तित्व एवं कृतित्व"** इन्होंने गुरुजी के जन्म शताब्दी के वर्ष में इस पुस्तक की रचना करके राष्ट्रीय स्तर के साहित्य में सहयोग किया। इस पुस्तक में गुरु जी की अनेक विचारधारा का वर्णन लेखक ने किया है।

10. श्री रूप सिंह भील

श्री रूप सिंह भील का जन्म 12 जुलाई 1934 को राजस्थान के उदयपुर जिले के खैरवाड़ा तहसील के बनवासी गाँव विलख में हुआ। राजस्थान में भूमि सुधार में आदिवासियों के अधिकार और वननीति संबंधी इनका लेख सम्मिलित है। सन् 1996 में कामनवेल्थ ह्यूमन राइट्स एण्ड माइनोरिटी ग्रुप द्वारा नई दिल्ली में आयोजित जनजाति व आदिम जातियों के अधिकार विषयक कार्यशाला में अपना प्रपत्र प्रस्तुत किया। जो संगठन द्वारा प्रकाशित पुस्तक में सम्मिलित है। जनजाति व अंग्रेजी शासन पर रचित उनकी पुस्तक **"अंग्रेजी शासन में सामग्री शोषण एवं जनजातीय भगत आन्दोलन"** एक सराहनीय पुस्तक है। 1998 में इन्हें जनजाति समाज की उल्लेखनीय सेवा के लिए महाराणा मेवाड़ फाउन्डेशन का राणा पूजा अवार्ड से नवाजा गया।

11. श्री शरद अनन्त कुलकर्णी

महाराष्ट्र प्रान्त में जलगाँव के निवासी श्री शरद अनंत कुलकर्णी आर्थिक विषयों अध्येता और अधिकारी लेखक है। बाल्यावस्था से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक रहते हुए अनेक वर्षो तक उन्होंने जिला कार्यवाह का दायित्व संभाला। आपकी पुस्तक **'पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन एकात्मक अर्थनीति'** दीनदयाल जी के आर्थिक दृष्टिकोण को समझने सहायक पुस्तक है।

12. श्री विश्वनाथ नारायण देवधर

श्री देवधर जी आरम्भ से ही पत्रकार थे। इन्होंने **'दैनिक भारत'** तथा **'केसरी'** पत्र से शुरुआत की थी। 1978 से 1984 तक पुणे के **'तरुण भारत'** के मुख्य संपादक रहे। सटीकता स्नेहपूर्ण स्वभाव उत्तम व्यक्तित्व राष्ट्रवादी विचारों का ठोस अधिष्ठान आदि गुणों एवं आकर्षक लेखन शैली के कारण आपने उल्लेखनीय प्रभाव अर्जित किया है। आप के द्वारा रचित पुस्तक **'पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन-व्यक्ति दर्शन'** एक सराहनीय पुस्तक है। जिसमें आपने अनेक लोगों से भेंट कर विविध स्मृतियों के रूप में पं दीनदयाल जी का उत्कृष्ट व्यक्ति दर्शन कराया है।

13. श्री बलवंत नारायण जोग

मुम्बई के रहने वाले श्री बलवंत जोग पत्रकारिता से जुड़े हुए थे। **'विवेक'** साप्ताहिक पत्रिका के सम्पादक के रूप में आपने काम किया। आपने भारतीय समाज में मुस्लिम समस्या का गहन अध्ययन किया है। जिस पर **'भारत का यक्षप्रश्न'** शीर्षक से पुस्तक भी लिखी। आपके द्वारा रचित **'पं दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन राजनीति-राष्ट्र के लिए'** में दीनदयाल जनसंघ में क्यों गये, राजनीति राष्ट्र के लिए ऐसे विषयों पर दीनदयाल के अनुभव हमारे साथ बाटें। जिससे दीनदयाल को जानने में सहायता मिलती है।

14. विजय कुमार गुप्ता

विजय कुमार गुप्ता का जन्म 1937 में उत्तर प्रदेश में हुआ। बाल्यावस्था में ही 1946 में आपका राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में प्रवेश हुआ। मा. भाऊराव देवरस व दीनदयाल जी के सम्पर्क से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ समझ आया। स्नातक बरेली कालेज से पास की। अगस्त 1961 में आप **'टाइम्स आफ इंडिया'** से जुड़ गये। आजकल आप सुरुचि प्रकाशन से जुड़े हैं। आपको लिखने की प्रेरणा मा. राजपाल वासन जी ने दी। आपके द्वारा रचित पुस्तक **'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रार्थना' और 'भारत की महान् क्रान्तिकारी महिलाएँ'** दोनों ही सराहनीय पुस्तक है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रार्थना में आपने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रार्थना की व्याख्या उच्चारण के नियम बड़े ही अच्छे ढंग से स्पष्ट किये हैं। 'भारत की महान् क्रान्तिकारी महिलाएँ' पुस्तक में आपने भारत की 36 नारियों की वीरता का वर्णन ओजमयी व प्रभावशाली ढंग से किया है।

15. सिद्धार्थ शंकर गौतम

2 फरवरी 1986 में महरौनी जिला ललितपुर उत्तर प्रदेश में सिद्धार्थ शंकर गौतम का जन्म हुआ। आपने एमए जनसंचार तक शिक्षा ग्रहण की है। आप पत्रकारिता से जुड़े हुए हैं। वर्तमान में आप **'नई दुनिया'** से सम्बद्ध हैं। गौतम जी की पुस्तक है-**'वैचारिक द्वन्द्व लोकतन्त्र का प्रधानसेवक व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ राष्ट्र भावना का जागृत प्रहरी'** इस पुस्तक में इन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रति लोगों की गलत सोच पर कटाक्ष करते हुए उनका सही उत्तर देने की कोशिश की है।

16. सुरेश सोनी

गुजरात प्रान्त के सुरेन्द्र नगर जिला स्थित चूड़ा गाँव में एक सामान्य परिवार में जन्मे श्री सुरेश सोनी 16 वर्ष की आयु में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सम्पर्क में आये। 1973 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक बने। यह तथा इनका परिवार आपातकालीन की परिस्थितियों का सामना किया व प्रताड़ना का शिकार भी हुआ। मध्यभारत प्रान्त प्रचारक व अखिल भारतीय भी हुआ। मध्यभारत प्रान्त प्रचारक व अखिल भारतीय सह प्रचार प्रमुख भी रहे। इनकी रचनाएँ हैं-**'भारत में विज्ञान की उज्ज्वल परम्परा' 'हमारी सांस्कृतिक विचारधारा के मूल स्त्रोत' 'भारत अतीत वर्तमान और भविष्य' 'गुरुत्व याने हिन्दुत्व'** इसमें इन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में गुरु का क्या महत्व है उसे स्पष्ट किया है। हिन्दुत्व सामाजिक समरसता में इन्होंने जैन बौद्ध और सिक्ख धर्मों के मूल चिन्तन के बारे में बड़े ही अच्छे ढंग से स्पष्ट किया है।

17. डॉ मोहनराव भागवत

वर्तमान सरसंघचालक मोहन भागवत जी जो आज राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को मार्गदर्शन कर रहे हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में समय समय पर अपने विचारों की प्रस्तुति देते रहते हैं। जैसे राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका संगठित हिन्दू, समर्थ भारत, समन्वय संकल्पना, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का आह्वान जगे राष्ट्रपुरुषार्थ, इनका संकलन सुरुचि प्रकाशन ने किया है। **'हिन्दुत्व हिन्दू राष्ट्र' 'हिंदुत्व सामाजिक समरसता'** दो भागों में हिंदुत्व नाम से स्वयंसेवकों के उपयोग के लिये लिखी है। जिसमें हिंदुत्व की अवधारणा को समझने में सहायता मिलती है।

18. डॉ हरिश्चन्द्र बड़थ्वाल

डॉ हरिश्चन्द्र बड़थ्वाल ने **'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एक परिचय'** में राष्ट्रीय

स्वयंसेवक संघ का परिचय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के समाज में भूमिका राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की संगठन का वर्णन स्पष्ट किया है।

19. देवेन्द्र स्वरूप–

प्रो. देवेन्द्र स्वरूप राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्व प्रचार, **'पांचजन्य'** पत्र के पूर्व संपादक, भारती इतिहास एवं संस्कृति के गहन अधयेता रहे। **'पांचजन्य', 'नवभारत टाइम्स'** एवं **'मंथन'** पत्र-पत्रिकाओं के निरंतर लेख लिखने वाले राष्ट्रीय स्वयंसवेक संघ के प्रख्यात विद्वान एवं इतिहासकार देवेन्द्र स्वरूप की पुस्तकें **'संघ बीज से वृक्ष तक' 'संघ राजनीति और मीडिया', 'अयोध्याका सच', 'जातिविहीन समाज का सपना', 'सभ्यताओं के संघर्ष में भारत कहाँ'** बहुचर्चित रहीं।

20. माणिकचंद्र वाजपेयी (मामा जी)–

धयेय साधना के मूक तपस्वी माणिकचंद बाजपेयी उपाख्य मामाजी का जन्म 7 अक्टूबर 1919 को बटेश्वर जिला आगरा (उ.प्र.) में हुआ। सन् 1944 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के यह प्रचारक बने। इन्होंने 9 वर्षो तक निरंतर प्रचारक जीवन में भिण्ड (म.प्र.) में राष्ट्रभक्ति की अलख जगाई। इन्होंने आपातकाल में अन्याय के विरूद्ध आवाज बुलंद की। फलतः इंदिरा सरकार ने इन्हें 20 माह तक कारावास में बंद रखा। धर्मपत्नी की मृत्यु पश्चात् सन् 1985 में यह पुनः प्रचारक बने।

सन् 1968 से 1985 तक **'स्वदेश'** इंदौर (म.प्र.) के संपादक के रूप में पत्रकारिता क्षेत्र में अपूर्व ख्याति अर्जित की। इनके बहुचर्चित लेखों में प्रमुख है– **'मार्क्स नहीं महेश', 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपने संविधान के आइने में', 'आपातकालीन संघर्षगाथा, 'प्रथम अग्निपरीक्षा', 'भारतीय नारी', 'विवेकानंद की दृष्टि में', 'कश्मीर का कड़वा सच', 'पोप का कसता शिकंजा',** इनकी प्रमुख पुस्तकें हैं। **'ज्योति जला निज प्राण की'** पुस्तक में इन्होंने देश विभाजन की विभिषिका में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों की भूमिका का विस्तृत ताजोमयी वर्णन प्रस्तुत किया है।

21. अटल बिहारी बाजपेयी–

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक जीवन को अपनाकर आजीवन अविवाहित रहने का संकल्प लेकर आजन्म राष्ट्रसेवा में लगे रहे भारत के तीन बार के यशस्वी प्रध ानमंत्री, हिन्दी कवि पत्रकार, प्रखर वक्ता, भारतीय जनसंघ के संस्थापकों में से एक अटल बिहारी बाजपेयी का जन्म 25 दिसम्बर 1924 को ग्वालियर (म.प्र.) में हुआ।

यह लंबी अवधि तक **'राष्ट्रधर्म' 'पांचजन्य'** (पत्र) और **'वीर अर्जुन'** आदि राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत पत्रिकाओं एवं समाचार पत्रों के संपादक रहे। इनकी प्रमुख राष्ट्रवादी रचनाओं में चर्चित रहीं- **'रग-रग हिन्दू मेरा परिचय', 'मृत्यु या हत्या', 'अमर बलिदान (लोकसभा में अटल जी के वक्तव्यों का संग्रह), कैदी कविराय की कुंडलियाँ, 'अमर आग है', 'कुछ लेख : कुछ भाषण', 'सेक्यूलरवाद' 'राजनीति की रपटीली राहें, 'बिन्दु-बिन्दु विचार', 'मेरी इक्यावन कविताएँ'** आदि। काव्य लेख एवं ओजस्वी राष्ट्रवादी भाषणों द्वारा इन्होंने देश के कोने-कोने में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विचारों का प्रचार-प्रसार किया।

22. नरेंद्र मोदी-

17 सितंबर 1950 को भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जन्म बड़नगर-गुजरात में हुआ। मात्र 8 वर्ष की आयु से यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े। अटल बिहारी बाजपेयी की तरह ही नरेंद्र मोदी भी कवि, लेखक एवं कुशल राजनेता हैं। 'विकास पुरूष' नाम से लोकप्रिय नरेंद्र मोदी की प्रमुख रचनाओं में हैं- **'सेतुबंध', 'आंख का अंध छे' (गुजराती कविताएँ), 'कर्मयोग', 'आपातकाल में गुजरात', 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत', ज्योतिपुंज (आत्मकथन), 'सामाजिक समरसता' (नरेन्द्र मोदी के लेखों का संकलन)** आदि। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्णकालिक कार्यकर्ता नरेन्द्र मोदी आपातकाल के दौरान वेश बदलकर संग के भूमिगत पत्रों का प्रचार-प्रसार करते रहे। गुजरात मे वह चार बार मुख्यमंत्री ओर देश में दूसरी बार सफल प्रधानमंत्री रूप में कार्य कर रहे हैं।

23. प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री-

भारत-तिब्बत सहयोग मंच के संरक्षक प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री लंबे समय से राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत लेखन, अध्ययन एवं अध्यापन कार्य में संलग्न रहे। हिमाचल प्रदेश में यह अनेक उच्च अकादमिक पदों पर आसीन रहे। जिनमें बाबा साहेब अंबेडकर पीठ के अध्यक्ष, पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष, हिमाचल केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति पदों पर इन्होंने महत्पूर्ण कार्य किया। इन्होंने बड़सर नगर (हि.प्र.) में पंडित दीनदयाल उपाध्याय महाविद्यालय की स्थापना किया।

इनकी महत्त्वपूर्ण पूस्तकों में-**'जम्मू कश्मीर की अनकही कहानी', 'जम्मू कश्मीर के जननायक', 'महाराजा हरिसिंह', 'श्री गुरुनानक देवजी', 'नरेंद्र मोदी होने का अर्थ', 'जम्मू कश्मीर का विस्मृत अध्ययन', 'कुशोक बकुलस रिपोंछे', 'मध्यकालीन भारतीय दशगुरु परंपरा', 'इतिहास का स्वर्णिम पृष्ठ',**

'गुरु गोविन्द सिंह व्यक्तित्व कृतित्व' रही। प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री ने हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति कार्यकाल के समय सामाजिक विज्ञान संकाय में **पं. दीनदयाल उपाध्याय अध्ययन केन्द्र** की स्थापना की। संपूर्ण भारत में **पहली बार** यह अध्ययन केन्द्र स्थापित हुआ। जिसके द्वारा पं. दीनदयाल उपाध्याय विचार को देशभर में विस्तृत करने का प्रयास सफल हो रहा है।

24. तरूण विजय–

भारतीय लेखक सामाजिक कार्यकर्ता और पत्रकार तरूण विजय का जन्म 2 मार्च 1956 को हुआ। वह सन् 1986 से फरवरी 2008 तक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के साप्ताहिक हिन्दी अखबार **'पांचजन्य'** के संपादक रहे। वह **'पायनियर'** के लिए भी लिखते रहे। इनकी प्रमुख पुस्तकों में है– **'तिब्बत के एक ओड़िसी', 'कैलाश मानसरोवर की तीर्थयात्रा', और 'सैफ्न सर्ज', 'वैश्विक परिदृश्य' 'हिन्दू लोकोचार पर भारत का पुनः उदय'** आदि।

तरूण विजय राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत पत्रकार एवं चिंतक रहे। राष्ट्रीय भावना की प्रेरणा से लिखवायी। इनकी कृति **'वामपंथी कलुस यात्रा'** अपने आप में महत्त्वपूर्ण रही।

25. रतन शारदा–

बाल्यावस्था से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बाल सदस्य रहे रतन शारदा ने संघ के विभिन्न दायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वहन किया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ विषय पर ही अपना शोध कार्य भी पूर्ण किया। इनकी प्रमुख पुस्तकें हैं– **'आर.एस.एस.-360 डिग्री', 'संघ और स्वराज' (अंग्रेजी व हिन्दी में)', 'स्वतंत्रता संग्राम में संघ की भूमिका', 'ग्लोबल हिन्दू-एक संस्मरण', 'प्रो. राजेन्द्र सिंह-चतुर्थ सरसंघचालक की जीवनी (हिन्दी)', 'श्रीगुरुजी (द्वितीय सरसंघचालक) श्री रंगाहरि की पुस्तक'** का हिन्दी से अंग्रेजी अनुवाद। यह संघ के मुखपत्र **'आर्गनाइजर'** में समसामयिक विषयों पर लिखते रहे हैं।

26. प्रो. राकेश सिन्हा–

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर अनेक पुस्तकों का लेखन करने वाले प्रो. राकेश सिन्हा वर्तमान समय में संसद में राज्यसभा के सदस्य तथा गृह मामलों की संसदीय समिति के सदस्य हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर इनकी विशेषज्ञता एवं कार्यों के

कारण यह संघ विचार रूप में स्थापित है। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद में गहरी आस्था वाले राकेश सिन्हा की चर्चित पुस्तक **'डा. केशव बलिराम हेडगेवार की जीवनी'** है। उदारवादी-राष्ट्रवादी विचारक डॉ. राकेश सिंहा की महत्वपूर्ण पुस्तकों में है **'अंडरस्टैडिंग आर.एस.एस.' 'विचारों के स्वराज', 'भारतीय मन का विच्छेदन', 'धर्म निरपेक्ष भारत : अल्पसंख्यकवाद की राजनीति', 'सामाजिक क्रांति का दर्शन', 'भ्रामक समानता', 'आतंकवाद और भारतीय मीडिया', 'संघ और राजनीति', (हिन्दी), 'आतंकवाद और भारतीय मीडिया', 'संघ और राजनीति' (हिन्दी), 'धर्मनिप्रांत और राजनीति' (हिन्दी), 'सच्चर आयोग की रिपोर्ट के महत्त्वपूर्ण विश्लेषण पर मोनोग्राफ', 'समान अवसर आयोग', 'साम्प्रदायिक हिंसा विधेयक-2011',** आदि। इसके साथ ही इनके संपादन की महत्त्वपूर्ण कृति है- **'क्या हिन्दू एक मरती हुई कौम है, 20 वीं शताब्दी की शुरुआत में' 'हिन्दू सुधारकों का एक सामाजिक और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य' तथा 'साम्प्रदायिक फांसीवाद'** बंगाल की संस्कृति एवं बहुलता की घेराबंदी आदि है।

इन साहित्यकारों के अतिरिक्त संघ के अनेकों साहित्यकार है। जिन्होंने हिन्दी तथा हिन्दीतर भाषा जैसे मराठी, गुजराती आदि में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विचारों को प्रस्तुत किया है। उनमें नरेंद्र ठाकुर, डॉ बजरंग लाल गुप्ता, श्री सुभाष सरवटे मागो, वैद्य हो.वे. शेषाद्रि, एकनाथ रानडे, उमाकान्त, केशव आप्टे, विनोद बजाज यशवंत, गोपाल. भावे, दामोदर शाण्डिल्य, मोहनलाल रुस्तगी प्रशांत बाजपेई अमरनाथ डोगरा कुप सी सुदर्शन, प्रो राजेन्द्र सिंह, बालासाहब देवरस जी, स्वामी विज्ञानानंद, डॉ केवी पालीवाल, लक्ष्मण श्रीकृष्ण भिड़े, महामहोपाध्याय बाल शास्त्री हरदास, अनिल कुमार, श्री सुरेश जोशी, डॉ कृष्ण गोपाल, आशा धानकी, लज्जाराम तोमर आदि हैं। जिनके कारण आज समाज में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का स्वरूप स्पष्ट हो सका है। इन व्यक्तिगत साहित्यकारों के अतिरिक्त सुरुचि प्रकाशन, प्रभात प्रकाशन, शरद प्रकाशन, विद्या भारतीय प्रकाशन, ज्ञान गंगा प्रकाशन, प्रकाशन, आदि भी व्यक्तिगत रूप से अपनी पुस्तकों का निर्माण तथा प्रकाशन करते रहते हैं। जिससे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विचारों का विकास हो सके। पत्रिकाओं का योगदान भी बराबर है जैसे-**पान्चजन्य**, **म्हारा देश-म्हारी माटी**, **सेवा साधना** आदि।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एक सांस्कृतिक संगठन है न कि राजनीतिक। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ समाज में फैल रही कुरीतियों के खिलाफ खड़ा एक विश्व का सबसे बड़ा गैर सरकारी संगठन है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ आज विश्व का सबसे बड़ा स्वयंसेवी संगठन है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का वर्तमान स्वरूप अर्थात् शून्य से विराट स्वरूप तक पहुँचने का एकमात्र कारण संगठन का स्वरूप है। इस व्यवस्था का स्वरूप अन्य संगठनों के प्रचलित स्वरूप से भिन्न अर्थात् पारिवारिक

है। परिवार संविधान के आधार पर नहीं अपितु परम्परा, कर्तव्य पालन त्याग सभी के कल्याण–विकास की कामना व सामूहिक पहचान के आधार पर चलता है। परिवार के हित में अपने हित का, सहज त्याग तथा परिवार के लिये अधिक से अधिक देने का स्वभाव व परस्पर आत्मीयता ही परिवार का आधार है। डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की आधार शिला ही एक पारिवारिक ढंग से की है। यहाँ सब मिल कर रहते हैं। कोई जाति–पाति का यहाँ भेद नहीं है। सारे कार्यक्रम व्यवस्थित ढंग से चलते हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा में स्वयंसेवको को प्रतिज्ञा, प्रार्थना, यज्ञ, एकात्म मंत्रों, का उच्चारण आदि कराया जाता है जिससे स्वयंसेवकों को भारत की संस्कृति की रक्षा करने का अपना कर्तव्य याद रहता है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने देश को आजाद कराने में भी अपनी अहम भूमिका निभाई है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रतिज्ञा में भी देश को आजाद कराने की बात कही गयी है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्राकृतिक आपदाओं में भी सहायता कर यह दिखा दिया है कि वह राष्ट्र जीवन के हर क्षेत्र में सहायता करने का अग्रसर रहेगा। कश्मीर की समस्या हो या आतंकवाद की हर समस्या में वह राष्ट्र के साथ खड़ा है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने हिन्दू संस्कृति की रक्षा करने का अपना उद्देश्य पूरा करने के लिए भी **विश्व हिन्दू परिषद** की भी स्थापना की। भैया जोशी ने भी सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की धारणा को स्पष्ट करने के लिए संगोष्ठी की। मोहन भागवत जी भी हिन्दू धर्म की रक्षा करने में सदा अग्रसर रहे हैं। श्री गुरुजी बाला साहब देवरस, सुदर्शन जी, प्रो. राजेन्द्र सिंह उपाख्य रज्जू भैया जी ने भी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विचारधारा को आगे बढ़ाया है। इस प्रकार हम देखते हैं कि संघ के साहित्यकारों ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की संकल्पना को इतने अच्छे ढंग से स्पष्ट किया है कि पाठक उसे पढ़कर एक बार सोचने पर विवश अवश्य हो जाता है। हिन्दी साहित्य में ऐसे ही साहित्यकारों की आवश्यकता अधिक है जिनके साहित्य को पढ़कर पाठकों के अन्दर सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की भावना पैदा हो और देश के प्रति कुछ कर गुजरने की चाह। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के साहित्यकार अपने इसी दृष्टिकोण के विकास में अग्रसर हो रहे हैं और आगे भी होते रहेंगे।

नवम अध्याय

उपसंहार

विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से श्रेष्ठ भारतीय संस्कृति है। इसकी श्रेष्ठता का मूल कारण ही विविधता में एकता से है। कबीर के शब्दों में यह 'मरजीवा', तांत्रिकों के शब्दों में 'छिन्नमस्ता', वैष्णव भक्तों के शब्दों में 'दरददीवानी' व गीता के शब्दों में 'ब्रह्मकवि' है। यह मूल से भी उखड़कर कभी खत्म नहीं हो सकती, क्योंकि इसमें जीने की अदम्य आकांक्षा है। **'सर्वे भवन्तु सुखिनः, एकं सद्विप्रा बहुधा बदन्तिस्म'** और **'वसुधैव कुटुम्बकम'** इसी भारतीय संस्कृति के आधार स्तम्भ हैं। जिसमें संपूर्ण विश्व को अपने में समाहित करने की अपार शक्ति, सामर्थ्य है। यह 'मैं नहीं तू ही' तथा 'मैं नही हंम में' विश्वास करने वाली संस्कृति है और आज इसी भारतीय संस्कृति का प्रमुख संवाहक **राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ** है। बयानबाजी, व्यर्थ प्रचार और नाम-सम्मान प्राप्ति की इच्छा से विलग संघ और उसके स्वयंसेवक प्रतिकूल परिस्थितियों में भी सांस्कृतिक संक्रमण के बीच अपनी राष्ट्रभक्ति की लौ जलाये हुए है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एक निष्काम कर्म आंदोलन है। जिसके संगठन का आधार सक्षम, स्थायी, आत्मनिर्भर तथा कालजयी राष्ट्र है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का लक्ष्य कश्मीर से कन्याकुमारी तक प्रत्येक व्यक्ति के अंतःकरण में भारत के अनादि, अनंत और अति प्राचीन राष्ट्रजीवन को जागृत करना ही मूलगामी कार्य है। भारत का राष्ट्रजीवन हिन्दू जीवन है। इस सत्य को ध्यान में रखकर ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ नामक विश्वव्यापी संगठन खड़ा है।

इसका प्रारंभ सन् 1925 में विजयादशमी के दिन डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार द्वारा किया गया। बीबीसी के अनुसार-" राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ विश्व का सबसे बड़ा गैर सरकारी स्वयंसेवी संस्थान है।" भारत में मानव कल्याण का एक व्यापक एवं उदार जीवन-दर्शन प्रकट हुआ। इस भेद को समझकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने समाज संगठन के लिए भगवाध्वज को अपना गुरू माना है क्योंकि भगवा भारत का मन है, वह जीवन है, वह दर्शन है, वह ईश्वर है, वह त्याग है, वह तप है,

वह पुरूषार्थ है, वह सबकुछ है। वह प्राचीन भारत की त्यागमयी परंपरा का प्रतीक है। उसे पहनकर एक संन्यासी 'विश्व मानव' बन जाता है तथा वह विश्वकल्याण के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर देता है।

नागपुर (महाराष्ट्र)के गरीब ब्राह्मण बलीराम पंत हेडगेवार के घर 1 अप्रैल, 1889 पैदा हुए डॉ केशव बलीराम हेडगेवार युग प्रवर्तक, क्रांतिकारी, युगदृष्टा, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, पत्रकार, लेखक, संपादक, संगठक, जन्मजात देशभक्त तथा भावी भारत के निर्माता थे।

1915 में हेडगेवार ने आजीवन ब्रह्मचारी रहकर देशसेवा का व्रत लिया तथा अपने चाचा को एक लंबा पत्र लिखा, ''मेरे मन में जो भावना है, वह है राष्ट्र के प्रति तन-मन-धन से सेवा करने की। मैं राष्ट्र को विदेशी दासता से मुक्त देखना चाहता हूं। हमें एक राष्ट्र, शुद्ध राष्ट्रीयता और भ्रातृत्व का बोध नहीं है और इसका समाधान मुझे राष्ट्र के लिए सर्वस्व न्योछावर करने में दिखायी पड़ रहा है। मेरे मन, तन, बुद्धि, विवेक और आत्मा सब में एक ही बात का बोध है कि यदि राष्ट्र को संगठित करने, राष्ट्रीयता का प्रसार करने, लोगों में से हीनता का भाव दूर करने का कार्य किया जाए, तो जीवन का इससे बड़ा सकारात्मक सदुपयोग और कुछ भी नहीं हो सकता है। मुझे हर क्षण सामाजिक एवं राष्ट्रीय दायित्वों का बोध रहता है।''

डॉ हेडगेवार एक निष्काम कर्मयोगी थे। उन्होंने व्यक्तिनिष्ठा के स्थान पर तत्वनिष्ठा को सर्वोपरि माना। वे इतने प्रसिद्धि परांङ्गमुख थे कि उन्होंने मध्यप्रांत के लेखक दामोदर पंत भट्ट को लिखा, ''आपके मन में मेरे एवं संघ के लिए जो प्रेम व आदर है, उसके लिए मैं आपका हृदय से आभारी हूं। आपकी इच्छा मेरा जीवन-चरित्र प्रकाशित करने की हैं। परंतु मुझे नहीं लगता कि मैं इतना महान हूं या मेरे जीवन में ऐसी महत्वपूर्ण घटनाएं हैं जिनको प्रकाशित किया जाए। उसी प्रकार मेरे अथवा संघ के कार्यक्रमों की तस्वीरें भी उपलब्ध नहीं हैं। संक्षेप में मैं यही कहूंगा कि जीवन-चरित्रों की श्रृंखला में मेरा चरित्र तनिक भी उपयुक्त नहीं बैठता। आपके द्वारा ऐसा न करने से मैं उपकृत होऊँगा।''

डॉ. हेडगेवार ने क्रांतिकारी गांधी मार्ग के साथ ही स्वातंत्र्य के संपादन का निर्णय लिया। 1924 से पूर्व महाराष्ट्र में 'महाराष्ट्र' 'संकल्प', 'प्राणवीर', हितवाद, प्रजापक्ष, स्वातंत्र्य हिन्दुस्थान, उदया, यंग पेट्रियट, रणसंग्राम इत्यादि पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन हो रहा था। इनमें से कुछ ब्रिटिश सरकार के, तो कुछ उग्र राष्ट्रवाद के समर्थक थे। डॉ. हेडगेवार क्रांतिकारी नीति के प्रबल पक्षधर थे। जनवरी, 1924 के प्रथम अंक में संपादकीय नीति के संबंध में लिखा, ''हमारा स्वतंत्रता का जो उद्देश्य है वह किसी खास दल मात्र का लक्ष्य न होकर पूरे राष्ट्र का लक्ष्य है। और यह आशा की जाती है कि सभी दल अपने मतभेदों को भूलकर इस समान उद्देश्य की प्राप्ति हेतु एकताबद्ध होकर कार्य करेंगे।''

वृत्तपत्र में नाम छपेगा, पहनूंगा स्वागत समुहार।
छोड़ चलो यह क्षुद्र भावना, हिन्दू राष्ट्र के तारनहार।।
कंकड़-पत्थर बन-बन हमको, राष्ट्र नींव को भरना है।
ब्रहमतेज के क्षात्र तेज के, अमर पुजारी बनना है।।

उपर्युक्त पंक्तियों में समाहित भारतीय संस्कृति की भावना ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों, कार्यकर्ताओं तथा प्रचारकों के कर्मपथ का पाथेय रही है।

सन् 1947 से पहले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में प्रचार-प्रसार का कोई माध्यम नहीं था तथा समाचार पत्रों में उसकी नाम मात्र की चर्चा होती थी। हां, यदि चर्चा होती थी तो वह नकारात्मक ही। परंतु 1948 में जब महात्मा गांधी की हत्या हुई तो पंडित जवाहर लाल नेहरू ने एक सोची-समझी योजना के तहत संघ पर मिथ्यारोप गढ़ने शुरू किये। पंडित जवाहर लाल नेहरू तथा उनके मित्र संघ के विरोध में बोला करते थे कि- "यह हिंसा में विश्वास रखने वाला, राष्ट्रद्रोही, महात्मा गांधी का हत्यारा, सांप्रदायिक, हिन्दू राष्ट्र में विश्वास रखने वाला संगठन हैं। संघ और हिन्दू महासभा के विचार एवं इसके द्वारा बनाये गये वातावरण के कारण ही महात्मा गांधी की हत्या हुई।"

कांग्रेस के बड़े-बड़े नेताओं ने अपने समर्थकों के साथ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यालयों पर हमले किये, स्वयंसेवकों को मारा पीटा तथा घरों को जलाया। पंडित नेहरू तथा सरकार के भय से समाचार-पत्रों ने भी चुप्पी साध ली थी। पंडित नेहरू ने यहां तक कई बार सार्वजनिक रूप से कहा कि मैं सारी शक्ति का उपयोग करके संघ को समाप्त कर दूंगा। ....पुलिस, सेना, रेडियो, पत्र-पत्रिकाएं, पैसा सब कुछ उनके पास था। 30 जनवरी, 1948 को गांधी जी की हत्या हुई। 2 फरवरी को गुरु जी को जेल में डाल दिया गया, 3 फरवरी को स्वयंसेवकों को जेल में डालने के बाद 4 फरवरी, 1948 को तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने संघ पर प्रतिबंध लगा दिया।

अब गलत ही सही, संघ अखबारों एवं पत्र-पत्रिकाओं में छाने लगा। समाचार-पत्रों में केवल सरकारी पक्ष ही प्रसारित होता था। भयवश तथा पूर्वाग्रह से ग्रसित समाचार-पत्र संघ के विरूद्ध तरह-तरह की खबरें छापते थे। ऐसे समय में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को सही सूचना पहुँचाने के लिए संघ ने मीडिया में प्रवेश किया। हिन्दी में 'दैनिक स्वदेश' ग्वालियर से, साप्ताहिक 'पांचजन्य', और 'आर्गनाइजर' दिल्ली से मासिक 'राष्ट्रधर्म' लखनऊ से 'तरूण भारत' मराठी में नागपुर, मुंबई, सोलापुर और औरंगाबाद से, मासिक 'विवेक' हिन्दी व मराठी में मुंबई से, अंग्रेजी में 'मदरलैंड' दिल्ली से एवं केरल के एर्नाकुलम व कालीकट से मलयालम भाषा में 'दैनिक जन्मभूमि', बंगलौर से कन्नड़ में 'दैनिक होसदिगंत',

मलयालम भाषा में कोच्चि से 'केसरी', तमिल में चेन्नई से 'विजय भारतम्', कन्नड़ में बैंगलौर से 'विक्रम', तेलगु में हैदराबाद से 'जागृति', उड़िया में कटक से 'राष्ट्रदीप', कर्णावती से गुजराती में 'साधना', कोलकाता से बंगला भाषा में 'स्वस्तिका' गुवाहाटी से असमिया में 'आलोक', बेलगांव से मराठी में 'चीरवाणी', पणजी से मराठी में 'गोमंत्र शक्ति' से प्रकाशित होना प्रारंभ हुआ। पाक्षिक पत्रों में नयी दिल्ली से 'हिन्दू विश्व' तथा जयपुर से 'पाथेय कण' का प्रकाशन हो रहा है। मासिक पत्रों में 'राष्ट्रधर्म' लखनऊ से, बैंगलौर से कन्नड़ में 'उत्थान' व संस्कृत में 'संभाषण संदेश', मंगलौर से अंग्रेजी में 'असीमा', विजयवाड़ा से तेलगु में 'हिन्दू राष्ट्र' पुणे से मराठी में 'एकता', जयपुर से संस्कृत में 'भारती' नई दिल्ली से हिन्दी व अंग्रेजी में 'वनबंधु', हैदराबाद से अंग्रेजी में भारतीय प्रज्ञा, इंदौर से बालपत्रिका, देवपुत्र, जम्मू से अंग्रेजी में द्वैमासिक 'वायस ऑफ जम्मू-कश्मीर' तथा नई दिल्ली से पहले हिन्दी व अंग्रेजी में मासिक 'मंथन' (अब केवल हिन्दी में) तथा लखनऊ से त्रैमासिक 'विश्व संवाद केन्द्र पत्रिका' का प्रकाशन हो रहा है।

संघ पर से प्रतिबंध हटने के बाद विभिन्न स्थानों पर पूज्य श्री गुरूजी के स्वागत में बड़े-बड़े कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। गुरूजी जब जेल से छूटे तो नागपुर रेलवे स्टेशन पर ही एक लाख से अधिक लोगों की भीड़ थी। दिल्ली में जब उनका स्वागत हुआ तो उस कार्यक्रम में दस लाख से भी लोग आये थे। श्री गुरूजी देश के विभिन्न भागों में जहां भी जाते थे आरती, माल्यार्पण, फोटो तथा उनका भाषण भी होता था। लेकिन श्री गुरूजी इतने प्रसिद्धि-परांड्मुख थे कि वे इस प्रकार के सत्कारों से दुखी होते थे। एक बार तो फोटो खींचते समय उन्होंने मुंह पर तौलिया रख लिया। वे देश एवं समाज की सेवा को लेकर फोटो खींचवाने तथा वृत्त-पत्रों में नाम छपवाने के सख्त खिलाफ थे। एक वर्ष के बाद ही उन्होंने यह सब बंद करवा दिया।

सन् 1971 में पाकिस्तान से युद्ध के अवसर पर स्वयंसेवकों द्वारा किये गये कार्य पर एक केन्द्रित पुस्तिका स्वयंसेवक लेखक द्वारा परम पूज्य श्री गुरूजी को भेंट में देने का प्रयत्न किया गया तो उन्होंने लेने से इनकार कर दिया तथा कहा- "दूसरे वर्णन करें तो कोई बात है, हम स्वयं ही अपने कार्यों का बखान करें, यह कहां तक उचित है?"

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तपस्वी पत्रकार एवं वरिष्ठ प्रचारक दादा साहब आप्टे राष्ट्रीय आंदोलन में अंग्रेजी समाचार पत्रों के अराष्ट्रीय प्रवृत्ति से बहुत व्यथित थे। उनके मन में एकमात्र स्वप्न था कि हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं में भारत, भारतीयता तथा भारतीय संस्कृति के सूत्र विद्यमान है। जनता से संवाद का माध्यम हिन्दी तथा भारतीय भाषाएं ही हो सकती हैं। क्योंकि भारतीय जनता की भाषा तो अंग्रेजी नहीं है। ये तो गुलामी की भाषा है। प्रभुता की भाषा है। यह मैकाले की

भाषा है। हमें भारतीय भाषाओं के संरक्षण और संवर्धन के लिए भारतीय भाषाओं की संवाद समिति चाहिए। श्री गुरूजी के मार्गदर्शन तथा बाला साहेब देवरस के आदेश से मुंबई में 1 दिसंबर, 1948 को मुंबई में शिवराम शंकर उर्फ दादा साहेब आप्टे ने **बहुभाषी संवाद समिति हिन्दुस्थान समाचार** की स्थापना की। दादा साहेब आप्टे बहुमुखी प्रतिभा से संपन्न थे। वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक, पत्रकार, लेखक, साहित्यकार, कुशल प्रबंधक, चित्रकार तथा वकील भी थे। उन्होंने बहुत ही अल्प समय में टेलीप्रिंटर द्वारा समाचारों का संप्रेषण प्रारंभ किया। उनके बनाये हुए चित्र तथा छायाचित्र आज भी अपनी संजीवता के लिए जाने जाते हैं।

हिन्दुस्थान समाचार के दूसरे शिल्पकार हुए–श्री बापूराव लेले। जिन्होंने अपने जीवन के 60 वर्ष मातृभूमि की निःस्वार्थ सेवा में व्यतीत किया। राष्ट्रवादी तथा सकारात्मक विचारों से ओत-प्रोत श्री लेले जी ने 1948 में हिन्दुस्थान समाचार बहुभाषी सहकारी संवाद समिति में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने जीवन पर्यंत अनेक पत्रकारों को प्रेरणा प्रदान करके उन्हें विविध क्षेत्रों में स्थापित करने में अपनी विशेष भूमिका का निर्वहन किया। कांग्रेस नेताओं को संघ के स्वयंसेवकों द्वारा स्थापित हिन्दुस्थान समाचार बहुभाषी संवाद समिति कभी पसंद नहीं आई। इसलिए कुछ समय बीतने के बाद बदलती राजनीतिक स्थितियों के परिप्रेक्ष में सरकार ने 'हिन्दुस्थान समाचार' को कारण बताओ नोटिस जारी किया। जिसके विरोध में हिन्दुस्थान समाचार के टाइपिस्ट श्री चंद्रमोहन भारद्वाज ने दिल्ली उच्च न्यायालय में एक रिट याचिका दायर की। लगभग आठ वर्षों की लम्बी कानूनी लड़ाई के बाद दिल्ली उच्च न्यायालय ने हिन्दुस्थान समाचार समिति को पुनः प्रारंभ करने का निर्देश जारी किया।

इस कार्य हेतु राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक एवं तृतीय सरसंघचालक माननीय बाला साहेब देवरस के सचिव, पूर्व अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख तथा हिन्दुस्थान समाचार बहुभाषी संवाद समिति के संरक्षक, माननीय श्रीकांत जोशी शंकर जोशी जी ने 1985 से मूर्छित पड़ी हिन्दुस्थान समाचार संवाद समिति का नवोत्थान करने का व्रत लिया तो पत्रकारिता जगत से बहुत से लोगों ने कहा कि यह असंभव कार्य है। लेकिन आपने कठिन परिश्रम, आत्मविश्वास तथा समन्वय की भावना से इसे संभव किया। आज संपूर्ण देश में एकमात्र संवाद समिति है जो एकमात्र संस्कृत में समाचार देती है।

हिन्दुस्थान समाचार भारत की एकमात्र तथा सबसे बड़ी बहुभाषी सहकारी संवाद समिति है। बीसवीं शताब्दी के नौंवे दशक में संवाद समिति का समाचार संकलन व प्रेषण कार्य अनेकानेक कारणों से बाधित हो गया था। इक्कीसवीं शताब्दी के आगमन पर हिन्दुस्थान समाचार ने हिंदी व मराठी भाषा में अपना कार्य पुनः प्रारंभ किया। अगले दो वर्षों में ही गुजराती, असमिया, उड़िया, कन्नड़, बांग्ला

नेपाली तमिल, मलयालम, तेलुगु, सिंधी, पंजाबी और संस्कृत भाषा में समाचारों का प्रेषण कर रही है।

हिन्दुस्थान समाचार ने समाचार संकलन के लिए देश तथा विदेशों में आधुनिक सुविधाओं से युक्त कार्यालयों को स्थापित किया है। नई दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, चेन्नई, बंगलुरू, अहमदाबाद, भुवनेश्वर, भोपाल, इलाहाबाद, लखनऊ, बनारस, जयपुर, देहरादून, गुवाहाटी, हैदराबाद, ईटानगर, रांची, पटना, शिमला, चंडीगढ़, जम्मू, गंगटोक, सिलीगुड़ी में तथा 100 स्थानों पर यथा – नागपुर, पोर्ट ब्लेयर, त्रिवेन्द्रम, इंदौर, ग्वालियर, जबलपुर, कानपुर, आगरा, हरिद्वार, उधमपुर, हमीरपुर, धर्मशाला, लुधियाना, अमृतसर एवं विदेशों में नेपाल, थाईलैंड व मॉरीशस इत्यादि देशों से समाचार संकलन करके वहां के समाचार-पत्रों को उन्हीं के भाषा में खबरें देती हैं। इसके अतिरिक्त अंतरताना के द्वारा समाचार सेवा, छाया चित्र सेवा, न्यूज स्कैन सेवा, कियोस्क सेवा, नवोत्थान लेख सेवा तथा दैनंदिनी द्वारा संप्रेषण कार्य कार्य कर रही है। लगभग 400 से उपर समाचार-पत्र, पत्रिकाएं उपर्युक्त सूचनाओं को ले रहे हैं।

राष्ट्र के सनातन जीवन मूल्यों के संरक्षण, संवर्धन एवं प्रसार हेतु राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचार के महत्व को ध्यान में रखते हुए देशभर में आधुनिक संचार सुविधाओं से युक्त **विश्व संवाद केन्द्रों** की स्थापना की है। प्रथम विश्व संवाद केन्द्र की स्थापना रामजन्मभूमि आंदोलन के समय लखनऊ में सन् 1992 में हुई। आज विश्व संवाद केन्द्र लखनऊ के अलावा देश के तमाम और स्थानों (राज्यों) यथा – नई दिल्ली, कलकत्ता, मुम्बई, चेन्नई, जम्मू, गुवाहाटी, कोच्चि, बंगलोर, हैदराबाद, भुवनेश्वर, पुणे, नागपुर, कर्णावती, भोपाल, रायपुर, जबलपुर, जयपुर, उदयपुर, चण्डीगढ़, पटना, वाराणसी, मेरठ, अल्मोड़ा में स्थापित होकर सफलता का इतिहास रच रहे हैं।

अपने जन्मकाल से ही विश्व संवाद केन्द्र बहुआयामी गतिविधियों का संचालन कर रहा है। प्रति सप्ताह नेपाल, भूटान और मारिशस सहित देश के विभिन्न भाषा-भाषी पत्र-पत्रिकाओं को समाचार एवं प्रसंग लेख, सम्प्रेषण, सामयिक लेख उपलब्ध कराने के साथ ही, सामयिक विषयों पर गोष्ठियां, पत्रकारिता प्रशिक्षण, संदर्भ पुस्तकालय, दृश्य-वेबसाइट का प्रयोग, समाचार पत्रों की विषयानुसार फाइलिंग, पत्रकार वार्ताओं के सफल आयोजन, पत्रकार बंधुओं की सामयिक विषयों पर विचारार्थ बैठकें, महत्वपूर्ण सामयिक विषयों पर पुस्तक प्रकाशन, समय पर महत्वपूर्ण विषयों पर सर्वेक्षण आदि गतिविधियां विश्व संवाद केन्द्रो के प्रमुख कार्य कलाप हैं। इसके साथ ही यहां से फीचर एजेंसी एवं समाचार एजेंसी के रूप में समाचार व लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं को प्रेषित किए जा रहे हैं।

विभिन्न विश्व संवाद केन्द्रों द्वारा निकलने वाले जागरण पत्र एवं पत्रिकाओं का दूरगामी प्रभाव देखने में आया है। उदाहरण के लिए-मेरठ के जाट बहुल क्षेत्र

छपरौली में जागरण पत्र राष्ट्रदेव पढने के बाद लोगों ने कहा कि-यहां संघ शाखा का काम बढ़ाओ। देवबंद के एक मौलाना इंडोनेशिया के इस्लाम का रूप पढ़कर प्रसन्न हुए। वे अब नियमित रूप से राष्ट्रदेव मंगाते ही नहीं वरन् उसे अन्य लोगों को बांटते भी हैं। अपिरचित वनवासी गांव में राष्ट्रबोध का पाठक होने के कारण ही प्रचारक को रात्रि में रूकने का अवसर मिला। **सफल जनसंपर्क का ही परिणाम है कि आज 38 विश्व संवाद केन्द्र देश में 34 जागरण पत्रिकाएँ 2,72,452 गांवों में तथा नेपाल के 1500 गांवों में पहुंच रही है।** आतुरता, तत्परता, सर्तकता, परस्परता, मित्रता, सम्पर्क, विश्वसनीयता, सहभागिता, आवश्यकता तथा प्रामाणिकता सफल संतुलित प्रयास के कारण ही विश्व संवाद केन्द्र अपनी समस्त गतिविधियों में सफलता पा रहा है।

मा. सुदर्शन जी कहा करते थे कि-विश्व संवाद केन्द्र हिन्दुओं पर होने वाले आक्रमण, उन आक्रमणों का हिन्दुओं द्वारा प्रतिकार, विकास की सकारात्मक बातें अपने प्रांत में घटी अखिल भारतीय महत्व की घटना का समाचार शीघ्रता से ईमेल द्वारा आदान प्रदान होना चाहिए।

आजादी के पहले तथा आजादी के बाद भी मीडिया में संघ के प्रति पूर्वाग्रह दिखाई देता है। आज के परिवेश और परिदृश्य में पत्रकारिता अपने मूलभूत सिद्धान्तों से हटी ही नहीं, अपितु उससे विलग एक नयी धारा लेकर राजनीति के मार्ग पर चल पड़ी है, जिसका मूल उद्देश्य सत्ता पक्ष को मात्र प्रसन्न करना है। आज इसी दुराग्रही पत्रकारिता के कुचक्र में राष्ट्र के प्रति समर्पित, वास्तविक अर्थों में, जनसेवी 'स्व' और 'पर' का भेद भुलाकर विपरीत स्थिति-परिस्थतियों में पीड़ित जन की सेवा करने वाले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और उसके कार्यकर्ताओं को बुरी तरह उनकी राष्ट्रीय सेवी छवि बिगाड़कर मीडिया प्रस्तुत कर रहा है। आज सभी प्रमुख राष्ट्रीय अखबारों 'हिन्दुस्तान', 'जनसत्ता', 'हंस', 'विषयान्तर', 'Times of India', 'Hindustan Times', 'The Indian Express', 'Outlook', 'The Hindu', 'Asian Age', 'DNA', 'Mail Today', के समाचार वास्तविकता से दूर मेज पर ही गढ़े जाते हैं। जिनका एकमात्र उद्देश्य संघ के प्रमुख जनहित कार्यक्रमों, कार्यो को जनता, पाठक की निगाह से दूर कर, एकमात्र उद्देश्य संघ की छवि को विकृत करना, आज की अल्पसंख्यक तुष्टिकरण की स्वार्थपूर्ण, दूषित राजनीति और उसके पोषकों की आत्म संतुष्टि करना है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए संघ द्वारा किये उत्कृष्ट कार्यो का प्रमुख अखबारों में कोई समाचार नहीं होता। यदि कहीं होता भी है तो मात्र 'कमेन्ट्री' के रूप में आधी-अधूरी, जानकारी के साथ।

मार्क्सवादी, संघ विरोधी पत्रकार अरुण माहेश्वरी बड़े गर्व से अपने लेख में स्पष्ट करते हैं कि 'संघ के हिंसक', 'साम्प्रदायिक और ध्वन्सकर्ता चरित्र' तथा ईसाई

मिशनरियों के सेवा-भावी, सहिष्णु एवं रचनात्मक कामकाज के बीच कोई बराबरी या तुलना नही हो सकती है।'

आज मीडिया का एकमात्र प्रमुख कार्य संघ के विरोध में लिखना और छापना है। उसे यह दिखाई नहीं देता कि जम्मू-कश्मीर के आतंकवाद से ग्रस्त होकर कैसे वहाँ के पंडित भागकर दिल्ली और आस-पास के राज्यों में अपनी भूमि से कटकर जीवन बिताने को मजबूर हैं। जम्मू में आज भी किस विपरीत स्थिति, विशेष मानवाधिकार के दोहरे चाल और केन्द्रीय सत्ताधारियों व राजनीतिज्ञों के कूटनीति का शिकार हमारे देश के जांबाज सिपाही हो रहे हैं। मीडिया को यह नहीं दिखता कि, पड़ोसी देश बांग्लादेश और पाकिस्तान में लोग किस तरह अपने देश के मात्र कुछ बचे हुए हिन्दुओं पर अत्याचार कर रहे हैं। वहाँ जबरन धर्मान्तरण, संपत्तियों पर कब्जा तथा जबरन विवाह कराए जा रहे हैं। यहाँ तक कि मीडिया को भारत में बांग्लादेशी और रोहिंग्या घुसपैठ भी दिखायी नहीं देता।

आज जनता को जागृत करने वाले मीडिया की चेतना और आत्मा सो गयी है, दूषित राजनीति के दंश से ग्रसित वह बीमार और अपाहिज होकर जन-जागरण का शंखनाद कैसे करेगी? यह विचारणीय यक्ष प्रश्न है।

श्री अटलबिहारी वाजपेयी ने मा. लक्ष्मणराव ईनामदार के जीवन पर आधारित पुस्तक के लोकार्पण अवसर पर कहा- 'मुझे मीडिया से शिकायत है कि उन्होंने त्रिपुरा राज्य में संघ के चार समर्पित कार्यकर्ताओं के अपहरण और हत्या के समाचार को दबाया क्यों? ये कार्यकर्ता त्रिपुरा में पैसा कमाने, राजनीति करने या सत्ता पाने के लिए नहीं गये थे। वे निस्वार्थ समाज सेवा में लगे थे। जिस प्रकार ईसाई मिशनरियों के सेवा कार्यों की हम सराहना करते हैं, उसी दृष्टि से उनकी ओर देखा जाना चाहिए था। मीडिया में संघ की केवल निंदा ही क्यों छपती है, उसके रचनात्मक सेवा कार्यों की प्रशंसा क्यों नहीं? आप संघ से वैचारिक मतभेद रख सकते हैं, किन्तु क्या मतभेद को इतनी दूर तक खींचा जाना चाहिए।

आपातकाल में लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ माने जाने वाले मीडिया, समाचार-पत्रों को डटकर लड़ना चाहिए था लेकिन वे ऐसा नहीं कर पाए। क्या कुछ कर पाना संभव था? भूमिका तो ठीक नहीं थी। सभी मीडिया संगठनों को दृढ़तापूर्वक खड़ा होना चाहिए था लेकिन वे खड़े नहीं हुए। आपातकाल स्थिति में शिथिलता के बाद कई समाचार-पत्रों ने लिखा कि, वह अपनी अंतरात्मा के खिलाफ कुछ भी नहीं करेंगे। अब हमको जो भी लिखना है, वह लिखेंगे। हमें यह आश्वासन दिया जाना चाहिए कि, इसे दोबारा सहन नहीं किया जाना चाहिए।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सर संघचालक श्री गुरुजी उपाख्य माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर समाजसेवी, संत, समाज सुधारक, वैज्ञानिक, शिक्षाविद होने

के साथ ही उत्कृष्ट पत्रकार दृष्टि भी रखते थे। उनके मन में मात्र एक ही भाव था कि भारतमाता किस प्रकार परम वैभव के पद को प्राप्त करें तथा कोटि-कोटि स्वयंसेवकों में 'स्व' के स्थान पर 'राष्ट्रभाव' का विकास हो, इन्हीं विचारों को गांठ बांधकर वे सदा चला करते थे। प्रसिद्धि परांङ्गमुखता या आत्मश्लाघा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रकृति में नही है। संघ भारतीय संस्कृति का वाहक है? यदि हमें देश के लिए कुछ करना है, तो हमें लोग अखबारों के माध्यम से नहीं बल्कि कर्म के माध्यम से जानें। बात 28 अगस्त, 1954 की है।

श्रीगुरुजी ने **'आर्गेनाइजर'** में छपे एक समाचार में कहा था कि यद्यपि आप सभी ने वहां तन, मन एवं धन से सेवा की, परंतु वर्षा एवं बाढ़ में जो सेवा आप सभी ने किया है, वह आनंद देने वाला है। किंतु समाचार देते समय आत्मश्लाघा एवं अहंकार प्रदर्शित करना उचित नहीं है। समाचार देते समय 'समाज में सभी लोग संघ की प्रशंसा कर रहे हैं', ऐसा कहना आपके मुंह से शोभा नहीं देता। यही समाचार यदि वहां के किसी मान्य नागरिक के नाम से दिया गया तो बहुत ही अच्छा होता।

आज पत्रकारिता के समक्ष सबसे बड़ी समस्या है। किसी भी घटना को बढ़ा-चढ़ाकर देना। क्या यह किसी भी समाचार या घटना के साथ खिलवाड़ नहीं है? क्योंकि इस प्रकार के समाचारों से समाज में गलत संदेश जाता है। यह ठीक है कि पत्रकारिता का आधार सत्य एवं किसी घटना के 'एक्सक्लूसिव रिपोर्टिंग' से है। लेकिन सत्य घटनाओं को दबाकर तथा गलत घटनाओं को छापना भी समाज हित में नहीं है। पत्रकारिता मात्र विरोधियों का छिद्रांवेषण करना तथा अपने समर्थकों का यशोगान नहीं है। श्री गुरुजी ने कहा - पत्रकारिता सत्य बोलने का प्रण लेकर किया जाने वाला वह माध्यम है। जिसमें समाज को एक लक्ष्य के तरफ उन्मुख होना पड़े। सत्य तो हम बोले लेकिन वह सत्य रूक्ष, अनृत तथा दूसरों को चुभने वाला भी न हो। उपरोक्त बातों से ऐसा प्रतीत होता है कि श्रीगुरुजी सत्य घटनाओं के संप्रेषण को सही तो मानते थे। लेकिन जिस सत्य घटना से व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र में विघटन की स्थिति पैदा हो जाए, समाज में हिंसा, संघर्ष एवं सांप्रदायिक दंगों की स्थिति उपस्थित हो जाए, वह पत्रकारिता नहीं है। श्रीगुरुजी ने कहा है कि सत्य की साधना **'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय'** ही होती है। पत्रकारिता सामाजिक क्षेत्र की साधना है, यह आध्यात्मिक क्षेत्र का तप नहीं है। सामाजिक क्षेत्र का सत्य वही है जिनसे जन का कल्याण होता है, देश का कल्याण होता है'।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना काल से लेकर मात्र पंद्रह वर्षो के भीतर ही समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ने लगा था। यद्यपि इसका सकारात्मक/नकारात्मक प्रभाव दोनों तरह से था। लेकिन यह निश्चित है कि उस समय के प्रबुद्ध साहित्यकारों के मनोमस्तिष्क को झंझोड़ना शुरु कर दिया दिया था। अतः साहित्यकारों में इस संगठन के प्रति विचारोतेजना जागृत हो गयी। फलतः इन

साहित्यकारों/ बुद्धिजीवियों में संघ के विभिन्न आयामों पर अपनी लेखनी चलानी प्रारंभ की। जहाँ कुछ बुद्धिजीवी लेखकों से संघ से जुड़े होने के कारण अथवा संघ से प्रभावित होने के कारण संघ के बारे में उसके उद्देश्य, क्रियाकलाप तथा प्रभाव पर सकारात्मक लेखन किया।

वहीं अधिकांश बुद्धिजीवी तत्कालीन सत्ता से प्रभावित होकर संघ के बारे में लंबे समय तक भ्रमात्मक और नकारात्मक लेखन करते रहे। किन्तु सत्य यह है कि स्वतंत्रता पूर्व एवं स्वतंत्रता पश्चात् संघ पर समय समय पर सत्ता द्वारा प्रतिबंध लगाने पर भी समाज पर संघ का व्यापक प्रभाव पड़ रहा था। जिसके कारण बुद्धिजीवी लेखक, विचारक संघ के समर्थन अथवा विरोध में लेखनी चलाते रहे।

ज्ञातव्य है कि संघ स्थापना काल से ही इसके संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार 'प्रसिद्धि पराङ्गमुख' रहे। वह अपने कार्यों से समाज में स्थान बनाने के पक्षधर थे। इसी कारण वह प्रचार एवं मीडिया से दूर रहते थे। किंतु स्वतंत्रता बाद जब संघ के स्वयंसेवकों ने यह महसूस किया कि समाज में इस संगठन द्वारा किए जाने वाले वृहत्तर कार्यों को भी नगण्य मानकर उसके विपरीत भ्रमात्मक तथ्यों का प्रचार किया जा रहा है। तब उन्होंने संघ के बारे में समाज में सकारात्मक तथ्य प्रसार हेतु 'प्रचार' को अपनाया। **हिन्दुस्थान समाचार** की स्थापना, **पांचजन्य**, **स्वदेश**, **आर्गनाइजर** आदि संघ के मीडिया की आवश्यकता पूर्ति में एक-एक सोपान बने।

इसके पश्चात् यद्यपि संघ से संबंधित सामग्री प्रायः 10-20 पन्नों की पुस्तिका रूप में छपकर पाठकों के सम्मुख आती रही। क्योंकि पत्रिकाएँ, पुस्तिकाएँ आदि छापने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पास आवश्यक आर्थिक साधन उपलब्ध नहीं थे। इसी समय कुछ प्रमुख बुद्धिजीवियों ने समाज में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ संबंधित सही तथ्यों को लेखनी द्वारा समाज लाने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से संबंधित उपलब्ध-समर्थित साहित्य जिसमें संघ से संबंधित आवश्यक तथ्यों का उल्लेख किया गया है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बारे में ठीक तरह से जानने समझने में लेखक एवं इतिहासविद् श्री देवेन्द्र स्वरूप की पुस्तक **'संघ : बीज से वृक्ष तक'** काफी महत्वपूर्ण है।

श्री नरेन्द्र ठाकुर ने **'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' का एक दृष्टिकोण'** पुस्तक का संपादन किया है। इसके संपादक ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का विस्तार से परिचय देते हुए संघ पर प्रतिबंध की सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों का विवरण दिया है। इस पुस्तक को लिखने की आवश्यकता पर बात करते हुए नरेन्द्र ठाकुर ने लिखा है कि- 'संघ के विरोधियों ने संघ के खिलाफ अनेक बार **झूठा** प्रचार अभियान चलाया था। इसके बावजूद का संघ का समाज में व्यवहार देखकर वह निष्प्रभावी साबित हुआ और संघ का समाज में स्वागत, स्वीकार्यता एवं समर्थन

लगातार बढ़ता ही गया है। ऐसे कुछ विषयों के बारे में संघ की अधिकृत भूमिका की जानकारी परिशिष्ट रूप में देने का प्रयास किया है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना से वर्तमान समय तक की वृहद यात्रा का वर्णन **'कृतिरूप संघ दर्शन'** हो. वे. शेषाद्री द्वारा लिखा गया। जिसका नवीन संस्करण वर्ष 2018 में संघ के सरसंघचालक मोहनराव भागवत एवं सरकार्यवाह भैया जी जोशी ने किया।

संघ का परिचय कराती एक अन्य पुस्तक है 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ **की पहली अग्नि परीक्षा'।** ज्ञातव्य है कि स्वतंत्रता पश्चात् राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सेवारथ को रोकने में गांधी हत्या प्रकरण और उसके झूठे आरोप जो संघ पर लगाए गए, उसकी प्रमुख भूमिका रही है। इसी घटना से उत्पन्न संघ की संघर्षगाथा की पूरी सामग्री संघ के स्वयंसेवक श्रीवझे ने सन् 1950 में ही संकलित कर लिया था। उस समय इस घटना से संबंधित प्रमुख समाचार पत्रों की खबरें, जाँच रिपोर्टो आदि का विस्तृत संकलन कर इस पांडुलिपी के प्रकाशन की योजना रही। किन्तु तत्कालीन गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल द्वारा श्रीगुरुजी से कहकर पुस्तक प्रकाशन रूकवा दिया गया।

अंतत: 45 वर्षों बाद सन् 1993 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जो विश्व का सबसे बड़ा स्वयंसेवी संगठन है, इस संगठन के बारे में अधिकाधिक सही जानकारी देने के लेखक विजय कुमार की पुस्तक 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ : क्या, क्यों, कैसे? वर्ष 2020 में प्रभात प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित की गयी। इस पुस्तक में संघ के बारे में जानने वाले के लिए प्राथमिक जानकारी दी गयी है। इसमें सिद्धांत की बातों के स्थान पर व्यवहारिक बातें अधिक है।

पत्रकार एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक नरेन्द्र सहगल की यह पुस्तक **'भारतवर्ष की सर्वांग स्वतंत्रता'** संघ के 'अखंड भारत' की परिकल्पना को प्रस्तुत करती है।

माणिकचंद्र बाजपेयी और श्रीधर पराड़कर की पुस्तक- **'ज्योति जला निज प्राण की'** सन् 1999 को सुरूचि प्रकाशन, नई दिल्ली ने प्रकाशित किया था। देश विभाजन के मूल्य पर मिली स्वतंत्रता के साथ देश को मिला था अभूतपूर्व विस्थापन और क्रूरतम नरसंहार का इतिहास।

ज्ञातव्य है कि स्वतंत्रता पूर्व की अवधि में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपनी सकारात्मक राष्ट्रसेवा कार्यों द्वारा आम जनमानस में तेजी से अपनी विशिष्ट पहचान बनाता जा रहा था। देश विभाजन और स्वतंत्रता प्राप्ति बाद देश की उथल-पुथल हो चुकी सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, सामरिक अव्यवस्था को भी यथासंभव सहायता देने तथा लाखों हिन्दू शरणार्थियों की सुरक्षा, उनके खान-पान, चिकित्सा

सहायता पहुँचाने में संघ के स्वयंसेवकों की बड़ी भूमिका रही। तथापि केन्द्रीय सत्ता द्वारा बढ़ती संघशक्ति से घबराहट स्वाभाविक थी। इसी समय महात्मा गांधी की हत्या हुई। जिसने पूरे जनमानस को झकझोर दिया।

इसका लाभ उठाकर तत्कालीन सरकार ने संघ को समूल नष्ट करने के लिए तरह-तरह के हथकंडे अपनाए। उसमें संघ विरोधी सत्ता प्रभावित तथा सत्तापक्ष से लाभान्वित बुद्धिजीवियों, इतिहासकारों, पत्रकारों द्वारा संघ के प्रति नकारात्मक लेखन भी महत्वपूर्ण रहा। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद लगभग 70 वर्षों में संघ के प्रति नकारात्मक लेखन में 11 हजार से अधिक छोटा-बड़ा साहित्य रचा गया।

किसी एक संगठन विशेषकर जो राष्ट्रभक्ति की बात करते हुए जनरक्षा में अनुशासन पूर्वक लगा हो, उसे बदनाम करने के लिए सत्तापोषित कलमकारों ने हजारो पन्ने काले कर दिए। ऐसी अनेक साहित्य और पुस्तको में कुछ का विवरण शोध परियोजना के षष्ठ अध्याय में दिया गया है। जिसमें प्रमुख है- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ बच्चा पकड़ने का देश में कौमी एकता स्थापित करने का प्रयास करती साम्प्रदायिकता विरोधी समीति- नई दिल्ली ने भी 'राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ' पर अपना दृष्टिकोण रखते हुए **'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ- बच्चा पकड़ने वाले का गिरोह'** पुस्तक सन् 1975 में प्रकाशित की थी। संघ का परिचय इस पुस्तक में अत्यंत वैचारिक घृणात्मक रूप में दिया है।

एक अन्य पुस्तक है-**'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ'।** सन् 1979 में राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली से सन् 1979 में धर्मनिरपेक्ष लेखक देसराज गोयल की इस पुस्तक का प्रथम संस्करण और वर्ष 2000 में इस पुस्तक का द्वितीय संस्करण प्रकाशित किया गया।

'हिन्दू समाज इस देश में आदिकाल से रहता आया 'राष्ट्रीय समाज है और इस देश का सर्वोपरि दायित्व इस समाज पर है। इसी समाज ने यहाँ के जीवन मूल्यों, आदर्शों और संस्कृति का निर्माण किया है और इसलिए उनका राष्ट्रीयत्व स्वयंसिद्ध है। अतः डॉ. केशव ने हिन्दू समाज को संगठित करने के उद्देश्य से 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' की स्थापना की।

किन्तु इसके विपरीत अपनी पुस्तक के प्रारंभ में देसराज गोयल ने लिखा है कि उस समय डॉ. केशव 'बहुत महत्त्वपूर्ण' व्यक्ति नहीं थे। उसके बाद की ही पंक्तियों में वह लिखते है कि- डॉ. हेडगेवार ने मुस्लिम लीग की साम्प्रदायिक प्रवृत्ति का विकास किया।

मधु लिमए की पुस्तक है-**'आर. एस. एस. परिवार धर्म और राजनीति।** इसमें लेखक ने संघ परिवार के आनुषंगिक संगठनों के विस्तार, उनके कार्यकलाप सहित श्रीरामजन्मभूमि विवाद, बाबरी मस्जिद सहित हिन्दुत्व को घेरे में लेते हुए

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को धार्मिक असहिष्णु बताते हुए संघ और भाजपा के प्रमुखों से सवाल किया है। साथ ही इन लोगों के दिए गए वक्तव्यों पर अपनी राय देते हुए संघ को भारत एकता का विरोधी बताया है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विरोध में लिखने वाले लेखकों की लंबी सूची है। जिन्होंने संघ को केन्द्र में रखकर भरपूर विषवमन कर उसकी राष्ट्रवादी छवि को धूमिल करने की कोशिशें लगातार पिछले 70 वर्षों से जारी रखी है। इन्हीं में एक प्रमुख नाम है लेखक शम्सुल इस्लाम का। इनकी पुस्तक का नाम ही है- **'आर. एस. एस. की राष्ट्र विनाश यात्रा'।** अतः नाम से ही स्पष्ट है कि पूरी पुस्तक में किस प्रकार की विषयवस्तु होगी।

पुस्तक में बार-बार लेखक शम्सुल इस्लाम आवश्यक रूप से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को पाकिस्तान के खुफियातंत्र **(ISI)** से जोड़ते रहते हैं। यद्यपि इस संबंध में लेखक शम्सुल संघ का खुफियातंत्र **(ISI)** से वह कोई साक्ष्य और तथ्य नहीं प्रस्तुत कर पाते। लेकिन देश को राष्ट्र को 'माता' रुप में वंदना करने को लेखक फासिस्ट दृष्टिकोणों के साथ **हिन्दू राष्ट्रवाद** का उभार बताता है। इसी पुस्तक में लेखक शमसुल इस्लाम ने यह बताने की कोशिश की है कि- मुस्लिम शासन 400 से 500 वर्षों का बताया था। इस पृष्ठ पर 'इतिहास के अन्यायों' का बदला लेने की राजनीति लेख के अन्तर्गत लेखक लिखता है कि-"मुसलमान शासकों का हिन्दू शासकों एवं जनता से घनिष्ठ संबंध था"। इस मुस्लिम शासन में भी भूमि स्वामित्व हिन्दूओं के पास ही था तथा मुस्लिम शासन में भी हिन्दुओं का ही बोलबाला था।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के पूर्व प्रोफेसर डॉ. राम पुनियानी जो साम्प्रदायिक राजनीति को खतरा मानते हुए हिन्दूधर्म और इससे जुड़े तथ्यों और लोगों को भारतीय लोकतंत्र के लिए प्रबल खतरा मानते रहे है। उनकी पुस्तक **"लोकतांत्रिक भारत या हिन्दू राष्ट्र संघ परिवार की राजनीति"** वाणी प्रकाशन-दिल्ली से वर्ष 2004 में प्रकाशित हुई थी।

लेखक राम पुनियानी ने भारत एवं भारतीयता का प्रचार-प्रसार में लगीं संघ समर्थित पत्र-पत्रिकाओं 'पाँचजन्य' 'आर्गनाइजर' 'हिन्दुस्थान समाचार' आदि को संघ द्वारा 'प्रचलित धारणाओं एवं समझ में दुष्प्रचार का माध्यम' माना है।

जनता के बीच संघ के प्रति दुराग्रह और भ्रम फैलाने में तथाकथित पत्रकारों लेखकों ने कोई कमी नहीं रखी थी। धर्मनिरपेक्ष मुस्लिम के रुप में राजनीतिक लेखक, टिप्पणीकार ए. जी. नूरानी ने **'आर. एस. एस. एंड भाजपा : ए डिविजन ऑफ लेबर एंड हिन्दुत्व'** जैसे प्रलेखों के माध्यम से सदैव हिन्दुत्व की कटु आलोचना की है।

जनता के बीच ए. जी. नूरानी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विषय में लिखते हैं कि- 'संघ परिवार धार्मिक पुनरुत्थानवाद के लिए आंदोलन के लिए आंदोलन नहीं

था, बल्कि धर्म के नाम पर राजनीतिक वर्चस्व और अन्य सभी पर सत्ता के लिए था। यह ब्रिटिश शासन के अंत में एक हिन्दू राज्य के कारण बढ़ावा देने के लिए था। संघ की स्थापना के विषय में ए. जी. नूरानी लिखते हैं- एक श्रमसाध्य विद्वान ने उस वातावरण को दर्ज किया है। जिसमें **'जहरीले- आर. एस. एस.'** का जन्म हुआ था।

कंवल भारती की पुस्तक है-**'आर. एस. एस. का बहुजन चिंतन'।** फारवर्ड प्रेस द्वारा वर्ष 2019 में प्रकाशित इस पुस्तक में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की दलितों के प्रति दृष्टिकोण को प्रकट करने का दावा लेखक ने किया है। जब वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को अपनी दृष्टि से मापते हैं तो उन्हें लगता है कि-संघ के विचारों और ज्योतिबा फुले और बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर के विचारों में अंतर है। इस पुस्तक में यह सिद्ध करने का प्रयास करते है कि कैसे आर. एस. एस. समाज में वर्चस्ववादी जातिव्यवस्था और पितृसत्ता की स्थापना करना चाहता है? लेखक का कथन है कि ज्योतिबा फुले और आम्बेडकर ने ऐसे समाज की बात की थी, जहाँ सभी को आत्मसम्मान के साथ जीने का अवसर मिले। इस पूरी पुस्तक में वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को दलित विरोधी और आम्बेडकर विरोधी सिद्ध करने में लगे रहते हैं।

जबकि ज्ञातव्य है कि संघ सामाजिक समरसता मंच जो संघ के वरिष्ठ प्रचारक दत्तोपंत ठेंगड़ी द्वारा 14 अप्रैल 1983 में स्थापित किया गया। पूरी तरह से दलितों के लिए कार्य करता है। **"सेवा भारती"** तथा **"अखिल भारतीय वनवासी कल्याण** आश्रम" द्वारा संघ लगातार दलितों के हितार्थ कार्य करता रहा है। इसके साथ ही "घुमंतू जाति कार्य द्वारा समाज के वंचितों, शोषितों, पीड़ितों के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार एवं स्थायित्व प्रदान करने की दिशा में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पिछले 20-30 सालों से अपने समर्पित कायकर्ताओं के साथ लगा है।

संघ का कभी महात्मा गांधी से कभी विरोध नहीं था। बल्कि एक समय संघ के स्वयंसेवकों ने उनकी रक्षा ही की थी। दरअसल सन् 1942 में दिल्ली की भंगी कालोनी में गांधी जी रहने लगे। कालोनी में स्थित बाल्मिकी मंदिर के पास ही मुस्लिम लीग का अड्डा था। जिनसे गांधी जी के जीवन को खतरा था। अपनी रक्षा के लिए गांधी जी सेना और पुलिस की सुरक्षा नहीं चाहते थे। उस समय गांधी जी के निकट सहयोगी कृष्णा नायर (जो बाद में सांसद बने) तथा अन्य नेता दिल्ली के प्रांत प्रचारक बसंतराव ओक तथा संघ के अन्य पदाधिकारियों से मिले और गांधी जी की सुरक्षा की बात की और तब संघ के स्वयंसेवकों ने गांधी जी की रक्षा की थी।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ विभाजन के समय हिन्दू और सिक्खों की रक्षार्थ दिन-रात तत्पर रहा। इसका एक उदाहरण है दरबार साहब की घटना। इसी तरह एक अन्य घटना है 4 मार्च 1947 को होली पर्व था। अमृतसर के बहुत सारे हिन्दू और

सिक्ख समुदाय के लोग आनंदपुर साहब गए हुए थे। दरबार साहब (स्वर्ण मंदिर) से गुरुद्वारा प्रबंध कमेटी के नेता सहित तमाम लोग आनंदपुर साहब में आयोजित सम्मेलन में भाग लेने के लिए गए थे। उस दिन दोपहर में दंगा हो गया। उस दंगों में किस तरह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों ने अपनी जान की परवाह ना करते हुए सैकड़ों हिन्दुओं और सिक्खों की जान बचायी थी।

भारत देश को तो 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता मिल गयी। लेकिन इसके कुछ भू-भाग लगभग डेढ़ दशकों तक परतंत्रता की बेड़ियों में ही जकड़े रह गए। इसी में प्राकृतिक सौंदर्य के लिए विख्यात 'गोवा' राज्य भी था। जो उस समय पुर्तगाल के अधीन था। दरअसल स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात् भी भारत के भू-भागों पर विदेशी शिकंजे का प्रमुख कारण भारत के शीर्ष केन्द्रीय नेतृत्व की इस ओर घोर उदासीनता थी। सन् 1946में डॉ. राममनोहर लोहिया गोवा गए और उन्होंने देखा कि पुर्तगाली अंग्रेजों से भी क्रूर थे। तब उन्होंने पुर्तगाली प्रशासन को चुनौती दी। 13 जून 1955 को कर्नाटक से **भारतीय जनसंघ** के नेता और **राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ** के स्वयंसेवक जगन्नाथ राव जोशी ने 3000 कार्यकर्ताओं के साथ गोवा में प्रवेश किया। जहाँ पुर्तगालियों ने सत्याग्रहियों पर लाठीचार्ज कर गोलियां चलाई।

15 अगस्त 1955 को पुर्तगालियों द्वारा चलाई गोली से 5000 स्वयंसेवकों/कार्यकर्ताओं में से 51 लोग मारे गए। ज्ञातव्य है कि राष्ट्रसेविका समिति की सरस्वती आप्टे 'ताई' के नेतृत्व में मातृशक्तियाँ सत्याग्रहियों के भोजन और चिकित्सा का प्रबंध कर रही थी। मुबंई में 'यूनाईटेड फ्रंट ऑफ गोवन **(UFAG)** नामक संगठन ने 'दादर' को स्वतंत्र कराया तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विनायक राव आप्टे, प्रभाकर वैद्य, प्रभाकर विठ्ठल से नारी ने आजाद गोमांतक दल एवं गोवा के कार्यकर्ताओं द्वारा 'नागर हवेली' को आजाद कराया।

स्वतंत्रता बाद देश में घटने वाली एक महत्वपूर्ण घटना रही-'आपातकाल'। 25 जून 1975 की मध्यरात्रि में बिना किसी पूर्व सूचना, आदेश, मंत्रणा के ही देशभर में **इंदिरा गांधी सरकार ने आपातकाल** लागू कर दिया। साथ ही इस दौरान **राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं इसके आनुषंगिक संगठनों' 'राष्ट्रीय सेविका समिति', 'हिन्दुस्थान समाचार', 'दीनदयाल शोध संस्थान', 'अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद', 'अखिल भारतीय कल्याण आश्रम', 'विद्या भारती', 'भारतीय जनसंघ', 'भारतीय मजदूर संघ', 'विश्व हिन्दू परिषद', एवं अन्य संगठनों में 'भारतीय लोक दल',** 'आनंद मार्ग' 'जमात-ए-इस्लामी', तथा सर्व सेवा संघ आदि पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

संघ द्वारा वितरित की जाने वाली आपातकाल विरोधी सामग्रियों में-'द ट्रुथ अबाउट द इकोनॉमिक प्रोग्रेस', 'व्हेन डिसओबेडिएंस, टु लॉ इज ड्यूटी', ट्वेंटी लाइज ऑफ मिसेज एंटी गांधी, 'हू इज फॉसिस्ट आर. एस. एस. और शी' आदि।

इसी समय संघ द्वारा भूमिगत पत्रों का भी प्रकाशन बड़ी संख्या में हुआ। क्योंकि इस समय संघ के समाचार एजेंसियो और प्रकाशन समूहों पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। **'पांचजन्य', 'राष्ट्रधर्म', 'हिन्दुस्थान समाचार'** आदि पूर्णतया बंद थे। इसीलिए **संघ** ने प्रत्येक राज्यों से **भूमिगत पत्रों** का प्रकाशन प्रारंभ किया। इनमें प्रमुख रहीं-हरियाणा से **'दर्पण'**, गुजरात से **'साधना'**, दिल्ली से **'न्यूज बुलेटिन', 'सत्य समाचार', 'मशाल', 'जनवाणी'**, केरल से **'कुरूक्षेत्र'**, हैदराबाद से **'ब्रजयुग'** मुबंई से **'असली समाचार'**, काशी से **'द्रोण'**, अन्य स्थानों से **'जनसमाचार'** और **'जनवाणी'** निकलते थे।

भारत का पुनर्जागरण और राम जन्मस्थान पर मंदिर का निर्माण हिन्दुत्व के आंदोलन का आधार और उसके मील का पत्थर रहा है। यह राष्ट्र की सांस्कृतिक आवश्यकता की अभिव्यक्ति है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रारंभ से ही श्रीराम जन्मस्थान पर भव्य मंदिर निर्माण के लिए प्रतिबद्ध रहा है। किन्तु इसका निर्माण एक संवैधानिक व्यवस्था के अंतर्गत ही हो, यह भी उसका मानना रहा।

सन् 1885 में मंदिर-मस्जिद विवाद अदालत में पहुँचा। इस बार हिन्दू संत **महंत रघुबरदास** ने फैजाबाद कोर्ट में बाबरी मस्जिद परिसर में 'राममंदिर' बनवाने की इजाजत मांगी।

सन् 1984 को **'विश्व हिन्दू परिषद'** के नेतृत्व में **'रामजन्मभूमि मुक्ति समिति'** का गठन किया गया। सन् 1986 में मुस्लिम पक्ष द्वारा 'बाबरी मस्जिद संघर्ष समिति' बनायी गयी। सन् 1989 में विश्व हिन्दू परिषद ने नवम्बर माह में मस्जिद से कुछ दूर पर विश्व हिन्दू परिषद के नेता देवकीनंदन अग्रवाल ने राममंदिर का शिलान्यास किया तथा 'रामलला' की तरफ से मंदिर दावे का मुकदमा दायर किया गया।

6 दिसंबर 1992 को कारसेवकों की भारी भीड़ ने बाबरी मस्जिद ढहा दिया और अस्थाई राममंदिर भी बना लिया। 'हिन्दुस्थान' में हिन्दू देवता 'राम' के जन्मस्थान पर मंदिर निर्माण की मांग करने पर देश भर में दंगे हो गए। 6 दिसंबर 1992 को देशभर से 1.50 लाख कारसेवक अयोध्या में पहुँचे। पहली बार हिन्दूजनमानस में यह चेतना देखी गयी रामजन्म भूमि आंदोलन में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ विश्व हिन्दू परिषद, भारतीय जनता पार्टी की भूमिका मुख्य रही।

इसमें कोई संशय नहीं है कि, स्वतंत्रता पूर्व तथा स्वतंत्रता पश्चात् भी लगभग 70 वर्षो तक स्वतंत्र भारत ने विभिन्न राज्यों में जो आतंकी गतिविधियों में एक बड़ा अर्थ और जन का नुकसान झेला। उसके पीछे मुख्य कारण इस्लामिक आतंकवाद था। किंतु मुस्लिम तुष्टिकरण में जुटी केन्द्रीय सरकारों ने वोट बैंक के लिए शुरु से ही हिन्दू जनता पर ही शिकंजा कसना और इस्लामिक आतंकवाद को फलने-फूलने, पलने-बढ़ने का अवसर दिया।

लेकिन जब आतंकवाद अपने विकराल रूप में राष्ट्रीय खतरा बनने लगा। तब केन्द्रीय सरकार ने एक नया शब्द **'हिन्दू आतंकवाद'** गढ़ लिया। अब चूंकि हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुत्व की बात राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भारतीय जनता पार्टी ही एकमात्र पुरजोर तरीके से करती है। अतः उससे जुड़े लोगों, कार्यकताओं/स्वयंसेवकों पर हिन्दू आतंकवादी होने का झूठा आरोप गढ़ा जाने लगा।

समाचार माध्यम का स्थान समाज में जैसे जीवन-शैली बदलती रही है वैसे ही माध्यम का स्थान भी बदलते रहे हैं। पहले यह वार्ता का माध्यम था, वार्ताएं मिलती थी कहां क्यो हो रहा है और इसीलिये इसको समाचार जगत कहते थे। बाद में वह केवल समाचारों तक नही रहा, वह सूचना और प्रसारण हो गया। आजकल इसको जनसंवाद का माध्यम मान लिया गया है, यह एक से एक बढ़ती स्थिति है, अच्छी स्थिति है। लेकिन बढ़ती स्थिति के साथ दायित्व भी बढ़ते है। जब समाचार जगत था, तब के पत्रकारों की तपस्या यह है कि यह सूचना और प्रसार का माध्यम बन गया।

नागपुर में 04 अगस्त, 2012 को सरसंघचालक श्री मोहन भागवत जी ने कहा- 'सूचना और प्रसार चलाने वालों की यह तपस्या है कि यह **संवाद** का माध्यम बन गया। पहले केवल घटनाक्रम बताते थे अब जानकारी बढ़ाते हैं और केवल जानकारी नहीं बढ़ाते अब संवाद करते हैं और संवाद में से प्रबोधन होता है। पत्रकारिता का भी धर्म है, पत्रकारिता का जो धर्म है, जो 'तिलक' ने किया जो 'केसरी' ने किया, आज के समय में वह करना ही होगा। शैली बदली है, माध्यम बदला है, उसका प्रयोग भी करना चाहिये।

सिर्फ अपना पेट भरना ही कर्तव्य नहीं है सब समाज को साथ लेकर सबकी चिंता करते हुए चलना ही धर्म है, यही सेवा है। जब हम सेवा के भाव से कर्तव्य का निर्वहन करते हैं तो उसका कोई मूल्य नहीं होता, पारिश्रमिक नहीं हो सकता। यदि आजीविका के लिये सेवा शुरु की, तो वह व्यापार हो गया। पत्रकारिता में भी बहुत सारे लोग अच्छा कार्य कर रहे हैं, सब तरह के अभाव और कष्टों को सहकर कार्य कर रहे हैं।

एक कार्यकर्ता ने प्रश्न किया कि नागपुर में ऐसे एक आदमी भी नही हैं जो समाज की निःस्वार्थ भाव से सेवा कर रहा हो। लेकिन जब उसने पता किया तो ऐसे 40 लोग मिले, जो अपने परिवार को कष्ट में अभाव में होने के बावजूद समाज का कार्य कर रहे हैं। यह सब कुछ अथवा समाज के लोगों द्वारा किए जाने वाले सकारात्मक कार्य मीडिया में नहीं आते।

वर्तमान समय में विश्व सूचना क्रांति में प्रवेश कर चुका है। इस क्रांति ने मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित किया है। भविष्य में उत्पन्न होने वाली अनेक चुनौतियों और अवसरों के लिए सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का अध्ययन

आवश्यक होता जा रहा है। सूचना की व्युत्पत्ति प्रदत्त से होती है। संचार प्रौद्योगिकी को कम्पयुटर के नित नये विकास ने और प्रभावी बना दिया है। साथ ही इसे विस्तृत आयाम दिया है।

संचार प्रणाली मानव सभ्यता के प्रारंभ से ही रही है। किन्तु समाज और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ नई अवधारणा है। ज्ञातव्य है कि सामाजिक-सांस्कृतिक संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सामाजिक परिवर्तन और पुनर्रचना के लिए प्रयासरत है। इस प्रकार समाज में मत-निर्माण, मत-परिवर्तन, विचार-परिमार्जन, लोकमत परिष्कार और व्यवहार परिवर्तन ही संघ का मुख्य कार्य है। इसके लिए लोगों के साथ निरंतर संपर्क और संवाद द्वारा संघ मजबूत जनसंचार प्रणाली को अपनाता रहा है। संघ के सभी आनुषांगिक संगठनों के संपूर्ण प्रयासों के केन्द्र में सुनियोजित, सुसंगत और सम्यक संचार तथा सम्प्रेषण ही है। संघ के योजनाकार और विचारकों की दृष्टि में मानव के लिए हवा-पानी के समान ही समाज के लिए संचार आवश्यक है। इसी कारण संघ ने संचार प्रक्रिया पद्धति और तकनीक पर प्रारंभ से ही गंभीर दृष्टि रखकर कार्य किया है। इसी श्रेणी में संघ ने समाज और संगठन की आवश्यकताओं के अनुसार संचार प्रविधि व प्रक्रिया में युक्तिसंगत परिवर्तन भी किए हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने **शाखा, स्वयंसेवक और प्रचारक को संचार तंत्र** के रुप में विकसित किया है। संघ का आधार ही **संचार** पर आधारित है। संघ की स्थापना काल में जनसंचार के प्रचलित माध्यमों समाचार पत्र-पत्रिकाओं का उपयोग नहीं किया गया तथापि संघ के प्रमुख तथा प्रचारकों, स्वयंसेवकों ने अपने कार्यव्यवहार से ही समाज के विभिन्न लोगों को संदेश संप्रेषण दिया। जिससे समाज के अधिकांश लोग संघ से जुड़े।

स्वतंत्रता प्राप्ति तक संघ की अपनी प्रचलित जनसंचार प्रणाली/व्यवस्था न होने पर भी देश भर में उसके स्वयंसेवकों की संख्या लाखों में पहुँच चुकी थी। **स्वयंसेवकों का व्यापक तंत्र ही संघ की सूचना प्रौद्योगिकी है।** इसके उत्कृष्ट उदाहरण तब देखे जा सकते है- जब संघ पर प्रतिबंध लगाए गए। ऐसे में संघ कार्य भले ही प्रभावित हुआ किन्तु बंद नहीं हुआ। संघ की नियमित शाखा तथा बैठकों से स्वयंसेवकों में सम्पर्क, परिचय और नियमित संवाद द्वारा विचारधारा को विस्तार दिया जाता रहा। इसी प्रभावकारी गुण द्वारा संघ कार्य विस्तार होता रहा है। **संघ में 'डोर टू डोर', 'मैन टू मैन', और 'हार्ट टू हार्ट' संचार की सुदीर्घ नीति रही है।** संभवतः इसी कारण संघ की जड़े इतनी मजबूत रही हैं।

भारतीय सभ्यता संस्कृति की पुरातन पहचान के साथ ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अब तकनीकी को तेजी से अपनाता जा रहा है। इसी क्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा में अब शारीरिक और बौद्धिक के साथ ही नए-नए मोबाइल एप्स की भी जानकारी दी जा रही है। साथ ही संघ ने समाज के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े

लोगों के लिए संघ विचारधारा पहुँचाने के उद्देश्य से ही आधा दर्जन से अधिक मोबाइल एप्स प्रारंभ किया है। इसमें **राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मोबाइल, श्रीगुरुजी, अमृतवचन, स्मरणीयम्, वंदना, प्रेरणा सुमन, अर्चना** आदि प्रमुख है।

अपने कार्यो को जन-जन तक जानकारी पहुँचाने के लिए संघ ने **'ई-शाखा'** एवं **'आई टी मिलन'** कार्यक्रमों का भी प्रारंभ किया है। फरवरी 2018 में जयपुर (राजस्थान) में संघ की 'अखिल भारतीय सेवा समन्वय' की बैठक में ही तकनीक के माध्यम से युवाओं के बीच संघ की जानकारी देने की बात की गयी थी। इसमें तय किया गया कि- **'गाथा'** एप के माध्यम से संघ अपने संगठन, इतिहास तथा क्षेत्रवाद, जिलावार स्थानीय स्तर पर लगने वाली शाखा कार्यक्रमों और गतिविधियों को प्रस्तुत करेगा। इसके साथ ही संघ से जुड़ने के लिए **'ज्वाइन आर. एस. एस.'** प्रारंभ किया गया है। तकनीकी दौर में आभासी दुनिया में रहने वाले लोगों के लिए **'वास्वविक शाखा'** एप का आयोजन किया जा रहा है। यह पहल विशेषकर आईटी, बी. पी. ओ. समेत आई सी. टी. क्षेत्र से जुड़े लोगों के लिए उपयोगी रही।

वर्ष 2015 की तुलना में वर्ष 2016 में 48 प्रतिशत अधिक लोग **'ज्वाइन आर.एस. एस.'** के माध्यम से जुड़े। 20 से 35 वर्ष के युवा 2017 में 6 प्रतिशत अधिक पिछले वर्ष की तुलना में जुड़े। इसके अतिरिक्त संघ का एक और एप **'ऋतम'** काफी महत्वपूर्ण है। दरअसल तकनीकी दौर में सोशल मीडिया पर फेक न्यूज की भरमार पड़ी रहती है। यूट्यूब और सोशल मीडिया पर चलने वाले अधिकांश सनसनी खबरों से देश की अखंडता और एकता प्रभावित होती है। अतः इन खबरों की सच्चाई जन-जन तक पहुँचाने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने **'ऋतम'** मोबाइल एप बनाया है। वर्ष 2019 में लाँच किए गए इस एप को मात्र दो दिनों में ही 1 लाख से अधिक लोगों ने डाउनलोड कर लिया। इसमें हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, बांग्ला, मराठी व गुजराती सहित 12 भाषाओं में राष्ट्रवादी समाचार उपलब्ध है।

राष्ट्रीय विचारकों द्वारा रचित पुस्तकों एवं उनके उद्‌बोधनों को संग्रहित कर **'आडियो कुंभ एप'** बनाया गया। इसके द्वारा राष्ट्रीय महत्व की पुस्तकों को अब मुफ्त में सुना जा सकेगा। इस एप को वर्तमान समय के डिजिटल युग में स्मार्टफोन की उपलब्धता एवं व्यस्ततम दिनचर्या को ध्यान में रखकर डिजाइन किया गया है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने **ट्विटर का देशी विकल्प 'कू'** को बनाया है।

सभ्यता के विकास के साथ पत्रकारिता और मीडिया के क्षेत्र में भी बहुत महत्वपूर्ण और आश्चर्यजनक विकास हुआ हैं। ऐसे समय में जिज्ञासु व्यक्तियों के लिए मीडिया तंत्र को जानना-समझना, समीक्षा करना तुलनात्मक अध्ययन एवं विश्लेषण करना एक तरह से अनिवार्य हो गया है। वर्तमान युग सूचनाओं का युग है। सूचनाओं के निरंतर संप्रेषण पर ही सारा संसार टिका है। सूचनाओं की इस कमी को संचार-माध्यम अर्थात् मीडिया पूरा करते हैं। मीडिया व्यक्ति से व्यक्ति

को जोड़ता है (समाज से समाज को जोड़ता है) क्षेत्र को क्षेत्र से जोड़ता है और परस्पर विचार-विमर्श के लिए आधारभूमि देता है। सुंदर संसार के नकारात्मक मल्यों को उजागर कर संसार को स्वच्छ छवि प्रदान करता है। यद्यपि आज मीडिया की छवि नकारात्मक होती जा रही है और वह जनता की मनोवृत्ति को नकरात्मक करते जा रहा है। परिणाम यह है कि आज लोगों में अविश्वास, दुर्भावना, संकुचन और आलोचक की प्रवृत्ति घर करती जा रही है। तथापि इतना तय है कि मीडिया का सकारात्मक दृष्टिकोण अधिक मुखर हो।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्री माधवराव सदाशिव गोलवलकर का चिंतन सर्वदा राष्ट्र समाज एवं ग्रंथों पर चलता रहता था। इससे चिंतन में एक दिन उनके मन में विचार आया कि साहित्य के क्षेत्र में कार्य प्रारम्भ करना चाहिए जिससे ग्रंथों का संरक्षण किया जा सके। दूसरी ओर तत्कालीन साहित्य में दो कमियाँ थी भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता को नकारना व सभी भारतीय भाषाओं का एक साझा मंच नहीं था। इन कारणों को देखते हुए सुप्रसिद्ध साहित्यकार जैनेन्द्र जी के साथ मिलकर 1966 में **अखिल भारतीय साहित्य परिषद** की स्थापना की गई।

समय-समय पर संघ से जुड़े स्वयंसेवकों और प्रचारकों ने अपनी लेखनी द्वारा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और इसके उद्देश्य तथा विचारधारा को समाज में लाने का कार्य प्रारंभ किया। हिन्दी तथा हिन्दीतर भाषा जैसे मराठी, गुजराती आदि में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विचारों को प्रस्तुत किया है। उनमें नरेंद्र ठाकुर, डॉ बजरंग लाल गुप्ता, श्री सुभाष सरवटे मागो, वैद्य हो.वे. शेषाद्रि, एकनाथ रानडे, उमाकान्त, केशव आप्टे, विनोद बजाज यशवंत, गोपाल. भावे, दामोदर शाण्डिल्य, मोहनलाल रुस्तगी प्रशांत बाजपेई अमरनाथ डोगरा कुप. सी. सुदर्शन, प्रो राजेन्द्र सिंह, बालासाहब देवरस जी, स्वामी विज्ञानानंद, डॉ केवी पालीवाल, लक्ष्मण श्रीकृष्ण भिड़े, महामहोपाध्याय बाल शास्त्री हरदास, अनिल कुमार, श्री सुरेश जोशी, डॉ कृष्ण गोपाल, आशा धानकी, लज्जाराम तोमर आदि हैं। जिनके कारण आज समाज में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का स्वरूप स्पष्ट हो सका है। इन व्यक्तिगत साहित्यकारों के अतिरिक्त सुरुचि प्रकाशन, प्रभात प्रकाशन, शरद प्रकाशन, विद्या भारतीय प्रकाशन, ज्ञान गंगा प्रकाशन, प्रकाशन, आदि भी व्यक्तिगत रूप से अपनी पुस्तकों का निर्माण तथा प्रकाशन करते रहते हैं। जिससे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विचारों का विकास हो सके। पत्रिकाओं का योगदान भी बराबर है जैसे-पान्चजन्य, म्हारा देश-म्हारी माटी, सेवा साधना आदि।

ज्ञातव्य है कि इसी कड़ी में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अब तक अपने हजारों कार्यकर्ताओं की आहुति देकर सत्ता एवं सत्ता पोषित बुद्धिजीवियों इतिहासकारों, और संचारकों के प्रोपेगेंडों से पिछले सत्तर वर्षों से लड़ता रहा है। समाज में नकरात्मक समाचारों के सापेक्ष संघ ने मीडिया का उपयोग समाज हित में,, राष्ट्र हित में समाचारों के संप्रेषण, प्रसारण द्वारा किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

(क) हिन्दी ग्रंथ

1. सी.पी. भिशीकर, डॉ. हेडगेवार परिचय एवं व्यक्तित्व, सुरूचि प्रकाशन, दिल्ली.
2. महात्मा गांधी, नवजीवन.
3. बी. एल ग्रोवर, आधुनिक भारत का इतिहास, एस चंद एंड कम्पनी लि., दिल्ली.
4. डॉ. वि.रा. करन्दीकर, तीन सरसंघचालक, स्नेहल प्रकाशन, पुणे.
5. ना. ह. पालकर, डॉ. हेडगेवार चरित्र, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ.
6. नारायण हरि पालकर 'डॉ॰ हेडगेवार चरित' (पंचम संस्करण) लोकहित प्रकाशन, लखनऊ.
7. विनायक दामोदर सावरकर 'मेरा आजीवन कारावास'.
8. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का संविधान हेडगेवार भवन, महाल, नागपुर.
9. बाला साहब देवरस, सामाजिक समरसता और हिंदूत्व सुरूचि प्रकाशन.
10. प्रभाकर बलवन्त दाणी, संघ दर्शन, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ.
11. हो. ये शेषाद्रि मूल्यांकन, सुरूचि प्रकाशन, नयी दिल्ली, युगाब्द-5099, पृ॰ 13.
12. बाबा साहब आपटे, संघ चितंन, जागृति प्रकाशन, नोएडा.
13. बा. ना. वन्हाडपांडे, संघ कार्यपद्धति का विकास, भारतीय विचार साधना, नागपुर.
14. इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका 1980.

15. डॉ॰ अजय कुमार सिंह 'मीडिया की बदलती भाषा' लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद (उ॰ प्र॰).
16. कुलदीप कुमार 'गांधी, टैगोर और राष्ट्रवाद', आउटलुक पत्रिका.
17. प्रो॰ सूर्यप्रसाद दीक्षित 'जनपत्रकारिता जनसंचार एवं जनसंपर्क' संगम प्रकाशन, दिल्ली.
18. प्रो॰ सूर्यनारायण दीक्षित– 'जनपत्रकारिता जनसंचार एवं जनसंपर्क' संजय प्रकाशन, दिल्ली.
19. पी॰ के आर्य 'इलेक्ट्रॉनिक मीडिया' प्रतिभा प्रकाशन, नयी दिल्ली.
20. डॉ॰ संजीव भानावत–'भारत में संचार माध्यम' राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर.
21. प्रो॰ रमेश जैन–'हिन्दी पत्रकारिता : इतिहास एवं संरचना' आविष्कार पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर.
22. काशीनाथ–गोविन्दराव जोगलेकर 'संवाद समिति की पत्रकारिता' राधाकृष्ण प्रकाशन, 44 नई दिल्ली.
23. डॉ॰ सुशीला जोशी 'हिन्दी पत्रकारिता : विविध आयाम, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी.
24. राजेंद्र–'संवाद और संवाददाता, हरियाणा अकादमी चंडीगढ़.
25. लालकृष्ण आडवाणी 'मेरा देश मेरा जीवन' प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली.
26. एम. जी. देवी सहायम् 'जय प्रकाश की आखरी जेल'–आपातकाल का कुचक्र, वितस्ता प्रकाशन, नई दिल्ली.
27. डॉ॰ अरूण कुमार भगत 'आपातकालीन मीडिया' शोध प्रबंध.
28. प्र. ग. सहस्रबुद्धे एवं माणिक चंद वाजपेयी 'आपातकालीन संघर्ष गाथा'.
29. नाना पालकर, डॉ. हेडगेवार–चरित्र, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ (उ. प्र) पृष्ठ 505.
30. बापूराव वन्हाड पाण्डेय, संघ कार्यपद्धति का विकास, भारती विचार साधन, (महाराष्ट्र).
31. भारतीय समाचार पत्रों पर रिपोर्ट, मध्यप्रांत और बरार, संख्या–3, राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली.
32. चं. पं. भिशिकर, केशव : संघ निर्माता, सुरुचि प्रकाशन, नई दिल्ली.
33. ना. ह. पालकर, डॉ. हेडगेवार चरित, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ (उ.प्र.).
34. चं. पं. भिशिकर, केशव : संघ निर्माता, सुरूचि प्रकाशन, नई दिल्ली.
35. भारतीय विचार साधना, नागपुर (महाराष्ट्र).
36. श्रीगुरुजी समग्र, खंड–2, सुरुचि प्रकाशन, नई दिल्ली.
37. 'शब्द रंजन' का प्रथम अंक.

38. वचनेश त्रिपाठी– भारतमाता की उपासना, नीलकंठ प्रकाशन, नई दिल्ली.
39. डॉ॰ सुशीला जोशी, हिन्दी पत्रकारिता : विकास और विविध आयाम, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी.
40. सं॰ मंगल पाण्डेय– राष्ट्रीय चुनौतियां और समाधान, प्रकाशन हिन्दुस्थान समाचार, रांची, झारखंड.
41. डॉ॰ कुलदीप चंद अग्निहोत्री 'स्वर्ण महोत्सव स्मारिका', 1957–2007, प्रकाशन–हिन्दुस्थान समाचार, नई दिल्ली, पृ॰ 32, प्रकाशन वर्ष–2007.
42. वृत्तचित्र– 'हिन्दुस्थान समाचार की विकासयात्रा.
43. नवोत्थान अंक– पृ॰ 40, प्रकाशन हिन्दुस्थान समाचार, नई दिल्ली.
44. लेख श्रीकांत जोशी, स्वर्ण महोत्सव स्मारिका', 1957–2007, प्रकाशन–हिन्दुस्थान समाचार, नई दिल्ली.
45. बसंत आपटे 'बापूराव लेले : व्यक्ति और कार्य, राष्ट्रीय पत्रकारिता, कल्याण, न्यास दिल्ली.
46. श्रीकांत शंकरराव जोशी : कृतार्थ जीवन, राष्ट्रीय पत्रकारिता कल्याण न्यास, हिन्दुस्थान समाचार, नई दिल्ली.
47. विश्व संवाद केन्द्र, एक परिचय, महाकोशल, जबलपुर, पृ॰ 23.
48. सुनील अंबेकर, 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली.
49. देवेन्द्र स्वरूप, संघ बीज से बृक्ष तक.
50. नरेन्द्र ठाकुर, 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का दृष्टिकोण' प्रस्तावना, विचार विनिमय प्रकाशन.
51. जस्टिस ऑन ट्रायल : हिस्टोरिक डॉक्यूमेंट ऑफ गुरुजी, गवर्नमेंट कोरेस्पांडेंस.
52. वही मधु लिमए 'आर. एस. एस. परिवार : धर्म और राजनीति' समता ट्रस्ट भोपाल (म.प्र) सन् 1992.
53. ए. फ्यूरर, द मौनमेन्टल एण्डीक्विहीज एंड इन्स्क्रिप्शंस इन नार्थ वेस्टर्स प्राविंसिस एंड अवध, संपा. डॉ एडवर्ड सी सैकाऊ अलबरूनी इंडिया, खंड–1.
54. मधु लिमए 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ : धर्म और राजनीति' समता ट्रस्ट भोपाल (म.प्र.).
55. ए. फ्यूरर, 'द मोनूमेंटल एंटी क्विटीज एंड इनिसक्रिप्शंस इन द नार्थवेस्र्टन प्राविंसिस एंड अवध' शमसुल इस्लाम–'आर. एस. एस. की राष्ट्र विनाश यात्रा' प्रकाशक मीडिया हाउस दिल्ली, 2002, प्रस्तावना.
56. P. M. Chopra, B. N. Puri, M. N. Das, A.C. Pradhan, *A Comprehensive History of India*, Vol. 2, New Delhi.
57. Elliot and Powson 'The History of India as told by the its own Historians- The Muhammadan Period'.

58. विजय त्रिवेदी 'संघम् शरणम् गच्छामि' वेस्टलैंड प्रकाशन, चेन्नई.
59. राम पुनियानी 'लोकतांत्रिक भारत या हिन्दू राष्ट्र, 'संघ परिवार की राजनीति, वाणी प्रकाशन, दिल्ली.
60. Khaki shorts an saffron flag, by Sumit Sarkar, Tapan Basu, Publisher- Orient Logman Limited.
61. शम्सउल इस्लाम, हिन्दू राष्ट्रवाद और आर. एस. एस.
62. माणिकचंद्र वाजपेयी व श्रीधर पराड़कर 'ज्योति जला निज प्राण की, सुरूचि प्रकाशन, नई दिल्ली.
63. डॉ. चंद्र त्रिखा, डॉ. अशोक गर्ग, 'कैसे भूलें आपातकाल का दंश, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली.
64. नरेंद्र मोदी, 'आपातकाल में गुजरात' प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली.
65. पांचजन्य 'भारत सनातन की ओर बढ़ रहा है, गिरिलाल जैन.
66. बलवीर पुंज, हिन्दू, हिन्दुत्व को बदनाम करने का षडयंत्र.
67. यशार्क पाण्डेय, हिन्दू आतंकवाद एक शिगूफा.
68. अजीज वर्नी 'भारतीय मुसलमान, अतीत वर्तमान और भविष्य.
69. संपूर्ण गांधी वांग्मय, खंड 1-100, प्रकाशन विभाग भारत सरकार ,नई दिल्ली, 1976.
70. सिन्हा, प्रो. राकेश, आतंकवाद और भारतीय मीडिया, भारत नीति प्रतिष्ठान प्रकाशन, दिल्ली, 2007.
71. सिन्हा, प्रो. राकेश, न्यू मीडिया-चुनौतियां और संभावना, संपादित, भारती नीति प्रतिष्ठान प्रकाशन, दिल्ली, 2012.
72. शर्मा, डॉ. महेश चंद्र, पत्रकारिता और दीनदयाल उपाध्याय, प्रभात प्रकाशन, 2011.
73. अग्निहोत्री, डॉ. कुलदीप चंद, श्री गुरूजी और पत्रकारिता, राष्ट्रीय पत्रकारिता कल्याण न्यास, दिल्ली, 2006.
74. देवेन्द्र स्वरूप, संघ राजनीति और मीडिया, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004.
75. देवेन्द्र स्वरूप, जाति विहीन समाज का स्वप्न, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004.
76. देवेन्द्र स्वरूप, संघ-बीज से वृक्ष तक, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004 2004.
77. गंगाधर, इंदूकर, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघरू अतीत व वर्तमान, सूर्य प्रकाशन, दिल्ली, 1985.
78. करंदीकर डॉ. वि. ए., तीन सरसंघचालक, स्नेहल प्रकाशन, पुणे, 2001.

79. वाजपेयी, मणिक चन्द्र/श्रीधर पराडकर, 'ज्योति जला निज प्राण की, सुरूचि प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2005.
80. सप्रे, डॉ सदानंद, 'परम वैभव के पथ पर', सुरूचि प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2006.
81. उपाध्याय, दीनदयाल, 'राष्ट्र जीवन की दिशा', लोकहित प्रकाशन लखनऊ, 1996.
82. पं. दीनदयाल उपाध्याय, 'विचार दर्शन', सुरूचि प्रकाशन, नई दिल्ली, 1991.
83. आप्टे, बाबासाहब, 'संघ चिंतन', जागृति प्रकाशन, नोएडा, 2003.
84. आप्टे, बाबासाहब, 'हमारे राष्ट्र जीवन की परंपरा', जागृति प्रकाशन, नोएडा, 2003.
85. दीक्षित, हृदय नारायण, 'राष्ट्र सर्वोपरि', लोकहित प्रकाशन, लखनऊ, 2003.
86. नानाजी देशमुख, 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ', प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011.
87. दाणी, प्रभाकर बलवंत, 'संघ दर्शन', लोकहित प्रकाशन लखनऊ, 2008.
88. हेडगेवार, डॉ. केशव बलिराम, 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ', लोकहित प्रकाशन, लखनऊ, 2008.
89. देवरस, बालासाहब 'हिन्दू संगठन और सत्तावादी राजनीति', जागृति प्रकाशन, नोएडा, 2004.
90. हो.वे. शेषाद्रि, 'एक कर्मयोगी का गाँव', नयी दिल्लीः सुरूचि प्रकाशन, झंडेवालान, 2004.
91. माधव गोविन्द वैध, अपनी संस्कृति, नयी दिल्लीः प्रभात प्रकाशन, 2006.
92. श्री गुरूजी समग्र, सुरूचि प्रकाशन झंडेवालान, नयी दिल्ली, खंड 1–12.
93. तिवारी, डॉ अर्जुन, आधुनिक पत्रकारिता, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1994.
94. तिवारी, डॉ अर्जुन, जनसंचार और हिन्दी पत्रकारिता जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 1994.
95. मिश्र, डॉ चंद्रप्रकाश, संवादः संरचना और प्रकार्य, गिरीश चंद्र, नो,डा, प्रथम संस्करण, 2002.
96. मिश्र, डॉ. चंद्रप्रकाश, मीडिया लेखन, सिद्धान्त और व्यवहार, संजय प्रकाशन, दिल्ली, 2003.
97. वर्मा, धनंजय, हिन्दी कहानी का रचना शास्त्र, प्रवीण प्रकाशन, महरौली, प्रथम संस्करण, 1998.
98. वर्मा, धीरेन्द्र (सं), हिन्दी साहित्य कोश, ज्ञानमंडल प्रकाशन, वाराणसी, 1985.
99. त्रिखा, नंदकिशोर, समाचार संकलन और लेखन, उळारप्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, तृतीय संस्करण, 1997.

100. मिशल, डॉ महेन्द्र, भारतीय चलचित्र, अलंकार प्रकाशन, दिल्ली.
101. राजेन्द्र, संवाद और संवाददाता, हरियाणा साहित्य अकादमी, 1964.
102. भनावत, डॉ संजीव, संपादन कला, विश्वविद्यालय प्रकाशन, जयपुर, प्रथम संस्करण, 1988.
103. सविता, नई पत्रकारिता, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1989.
104. तिवारी, डॉ. रामचन्द्र, विज्ञापन व्यवसाय एवं कला, आलेख प्रकाशन, दिल्ली, 2004.
105. त्रिखा, डॉ. नंदकिशोर, प्रेसविधि, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2012 लालकृष्ण आडवाणी.
106. सिद्धांतालंकार, प्रो. सत्यव्रत, ब्रह्मचर्य संदेश, विजय कुमार गोलवदराम, हासानंद, नई दिल्ली, 2003.

(ख) English Books

1. Rss, Media & Other Books.
2. Curran's, Militant Hinduism in Politics : A Study of RSS, New York, 1951.
3. H.V. Sheshadri & Dr. Hedgewar; The Epoc Maker, Sahitya Sindhu, Bangaluru, 1972.
6. Dhooria, Ramlal, I Was a Swamsevak : An insider view of RSS, Sampradaiykta to Virodhi Commitee, New Delhi, 1970.
7. Ghosh, Partha, BJP and Evolution of Hindu Nationalism : from Periphery to centre, New Delhi, 1999.
8. Joshi, Subhadra, RSS : Is it a Cultural organization \ New Delhi, 1966.
9. Joshi, Subhadra, RSS A Danger to Democracy, New Delhi, 1967.
10. Kanungo, Pralay, RSS Tryst with politics from Hedgewar to Sudarshan, New Delhi, 2002.
11. Katju, Manjari, Vishwa Hindu Parishad and Indian politics, Orient long man, Hyderabad, 2003.
12. Kohali R., Policitical Idea of M.S Golwalkar, Deep and Deeo Prakashan, New Delhi, 1993.
13. Madhok, Balraj, RSS and Politics Hindu world Publication, New Delhi, 1986.
14. Mahajan, Sucheta, Adivasi in Hindu Rashtra, 2006.
15. Noorani, A.G, The RSS and BJP : A Division of Labour, New Delhi, 2006.

16. Puninay, Ram, Facism of Sangh Pariwar, Media House, New Delhi, 2002.
17. Anderson, Walter and damle, Shridhar, The brotherhood of safron: 1974.
18. Bacheta, paola, Gender in Hindu Nation : RSS women as ideologues, New Delhi, 2004.
19. Basu, Tapan, Pradip dutt, Sumir sarkar, Tanika sarkar and sambudha sen, Khaki shorts and saffron flags : A critique of the Hindu Right, Orient Longman, 1993.
20. Bhatt, Chetan, Hindu Nationalism : Origins of Ideologies and modern myths, Berg Publishers Oxford, 2001.
21. Chandra, Bipin& Communalism in modern india V.P House, New Delhi, 1984.
22. Bhishikar, C.P, Keshav: Sangh nirmata, Suruchi prakashan, New Delhi, 1970.
23. Gandhi, Rajmohan, The good boatman: A Portrait of Gandhi, Viking, 1995.
24. D. Lawrence, Communication Theory : eastern & western perspective, Academic Press, Inc. San Diego, 1987.
25. Kumar J. Keval, Mass Comuunication in India, Jayco Publishing House, Mumbai.
26. Ghosh Subir, Mass Media Today, In the Indian content profile publisher, Calcutta, 1991.
27. Joshi, P.C, Communication and National development, Anamika Publication, New Delhi, 2002.
28. George, T.J.S, (editing), A handbook for the journalist, IIMC New Delhi, 1989.
29. Shrivastava. K.M. News Writing, Kanishka Publication, New Delhi, 1998.
30. Chatterjee, P.C. Broadcasting in India Sage, New Delhi, 1990.
31. Prof. K.R. Balon, Corporate Public Relations, Sterling Publishers Pvt. Ltd. New Delhi, 1976.
32. Sam Black, Practical public Relation, Universal Book Stall, Delhi, 1976.
33. Srinivas, R. Mel, Communication for development in the third world, Theory practice, 1991.
34. D.S Mehta & Handbook of Public Relations in India allied publication, Delhi, 1980 (B)- Journals and view papers.
35. Organiser Weekly: 1950.
36. Motherland: 1950.

37. The Times of India, 1950.
38. The Hindustan Times, 1950.
39. The Hindu, 1950.
40. Ecomomic and Policitical Weekly, 1980.

हिन्दी पत्र-पत्रिकाएं

1. दैनिक जागरण, कानपुर, 1980.
2. दैनिक भास्कर, इंदौर, 1990.
3. अमर उजाला, आगरा, 1980.
4. राष्ट्रधर्म मासिक, लखनऊ 1950.
5. राजस्थान पत्रिका, जयपुर 1980.
6. नयी दुनिया, इंदौर, 1990.
7. इंडिया टूडे, नयी दिल्ली, 1990.
8. कांग्रेस संदेश, नयी दिल्ली, 1980.

परिशिष्ट

6 मार्च 1947 को श्री हरमंदिर साहब, अमृतसर की रक्षा के लिए संघ के स्वयंसेवक डॉ. बलदेव प्रकाश के नेतृत्व में गए स्वयंसेवकों की सूची :

1. सर्व श्री हरबंसलाल खन्ना, पूर्व विधायक भाजपा
2. ओमप्रकाश वैद्य, नमक मण्डी, देवीवाली गली
3. अम्बाप्रसाद, पटेल चौक, चीरस्ती अटारी
4. श्यामसुन्दर चड्ढ़ा, गली तिवारियां
5. ओमप्रकाश मेहरा, गली कलालो, कटड़ा दूलो
6. तिलकराज खन्ना, गली छती, कटड़ा दूलो
7. किशनचंद कपूर, गली जसवंत, कटड़ा दूलो
8. रामनाथ खन्ना, कटड़ा स्फेद, कूचा तारालसह
9. यशपाल मेहरा, कटड़ा भाई संतलसह
10. तन्मुखराम, गुरु के महल, गली पंडितां
11. विश्वनाथ मेहरा, कटड़ा भाई संतलसह
12. रामलुभाया मल्होत्रा, परेनवाले, कटड़ा मोतीराम
13. हीरालाल कपूर, कटड़ा मोतीराम
14. तिलकराज कपूर, कटड़ा मोतीराम
15. भद्रसेन (घोषप्रमुख), किशनगढ़ सायंविभाग कार्यवाह
16. रामचन्द कुमार (साईकिलवाले), गली छज्जूमिश्र
17. स्वर्णमूलृत दरबार, प्रभात विभाग कार्यवाह
18. दुर्गादास अरोड़ा, गली छज्जूमिश्र
19. अमरनाथ धवन, नमक मण्डी

20. हरिवंश भल्ला, गली लालावाली
21. हेमराज शर्मा, गली लालावाली
22. भोलाराम पोदार, गली लालावाली
23. सरदार दयालसह सोढी, दुकान हाल बाजार
24. सरदार संतोख लसह, प्रचारक
25. सरदार अरिदमन लसह, मुख्यशिक्षक, स्वर्णमंदिर सायं शाखा
26. सुरेन्द्र कुमार बहल, 160/5 कूचा ताराचंद कत्याल, कटड़ा मीतलसह
27. नरेन्द्र कुमार वर्मा, गली लालावाली
28. सर्वश्री
29. देवराज खन्ना, सिरकी बंदा, कार्यवाह, प्रभात शाखा, रामानंद बाग
30. अमरनाथ अग्रवाल, दुकान वैष्णो मार्केट, प्रतापबाजार
31. अमीरचन्द बर्तनवाले, बाजार कसेरिया
32. विश्वनाथ, मजीठा मण्डी
33. तिलकराज, पांच पाण्डव की दुकान, राम मार्केट, कटड़ा अहलुवालिया
34. हरिवंश सिंह, 322, से. 40 सी, चण्डीगढ़
35. रामप्रकाश मेहरा, कटड़ा भाई संतसिंह
36. ईश्वरी प्रसाद खन्ना, विस्तारक, कटड़ा भाई संतलसह
37. प्राणनाथ खन्ना, सिरकी बन्दा
38. सरदार सुखनलसह, नेत्र चिकित्सक, दुकान नमक मण्डी
39. मोतीलाल सेठी, गली तरेग, घण्टाघर
40. रामप्रकाश चोपड़ा, सुल्तान विण्ड
41. रघुनाथ टण्डन, चौक पासियां
42. मंगतराम, गली चायवाली, कटड़ा दुलो
43. किशोरचन्द साड़ियांवाले, शास्त्री नगर
44. रामप्रकाश कपूर उस्ताद, गली जग्गूखण्ड, कटड़ा स्फेद
45. सतपाल रेशमवाले, गली खाईवाली, कटड़ा खजाना
46. अनन्तराम शर्मा (स्वर्णमूलत के भाई)
47. हीरानंद शर्मा, (स्वर्णमूलत के भाई)
48. दयाराम (गदाधर यादव के साथी)
49. विशनदास, खुंट बम्बेवाले
50. केवलकृष्ण, खुंट बम्बेवाले
51. सतपाल काला, खुंट बम्जेवाले
52. प्यारालाल भीडीवाले, खुंट बम्बेवाले
53. बैजनाथ रेली, प्रचारक, चमनलाल कोहली, सुलतानविण्ड

54. फूलचन्द, सिवास गली, वाणियों
55. चमनलाल मुनियारीवाले, चौक फव्वारियाँ, निवास प्रताप गली
56. हरिचंद मारवाड़ी, गली लालावाली
57. इन्द्र कुमार, बिजलीवाले, गली लालावाली
58. सर्वश्री मदनलाल मेहरा, शक्तिनगर
59. केवलकृष्ण, करयानावाले, बाजार मोचियाँ
60. फेरुमल, उच्ची बेड़ा, मानलसह मार्ग
61. सरदारीलाल भाटिया, भटेवाले, गली मज्जासिंह अत्तार
62. कस्तूरीलाल जैन, चौक दरबारसाहब
63. तिलकराज कपूर, कपड़ेवाले, गली तिवाड़ियाँ
64. मोतीलाल तालवाड़, गली मज्जासिंह अत्तार
65. धर्मवीर पहलवान, खुर कौड़ियाँ
66. वैशाखीराम, खुर कौड़ियाँ
67. द्वारकादास (धन्ने कटेवाले), बाजार कसेरिया
68. सीताराम बग्गा, गली छत्ती, कटड़ा दूलो
69. केवल, गली लाहौरिया, कटड़ा कर्मसिंह
70. जगीरीमल खन्ना, गली लाहौरिया, कटड़ा कर्मसिंह
71. सोहनलाल अरोड़ा, शिकारपुरी, गली हंसली, कटड़ा दलसिंह
72. बृजलाल अरोड़ा, नमक मण्डी
73. मदनलाल मेहरा, सुपुत्र श्री साईदास (बिजली पहलवान)
74. बृजलाल मेहरा, सुपुत्र श्री साईदास (बिजली पहलवान)
75. मनोहरलाल, कटड़ा भाई संतलसह, गली दलाला

सरकार द्वारा नियंत्रित हो जाने के बाद भी लाहौर आदि के विस्थापित शिविरों में स्वयंसेवकों की सेवाएं ली गयी। उनकी सेवाओं से प्रभावित होकर सरकारी अधिकारियों ने प्रशंसा प्रमाण-पत्र भेंट किये। इसी प्रकार का चुन्नीलाल को दिया गया प्रमाण-पत्र प्रस्तुत है।